श्रीः ।

बृहन्निघण्टुरत्नाकरे

चतुर्थभागः ४.

(चिकित्साखण्डः)

मथुरानिवासिमाथुरचतुर्वेदिकृष्णलालतनय-

पण्डित-दत्तरामविरचितः ।

स च

श्रीकृष्णदासात्मज-गङ्गाविष्णोः

अध्यक्ष "लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" मुद्रणागारे

मैनेजर प० शिवदुलारे वाजपेयी इत्यनेन स्वाम्यर्थं

मुद्रयित्वा प्रकाशितः ।

संवत् १९७६, शकाब्दाः १८४१.

कल्याण-मुंबई.

प्रस्तावना.

धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यं साधनं मतम् ।

समस्त पीयूषपाणि भिषग्वरोंको हम अत्यंत विनयपूर्वक वडे उत्साहके साथ आज विदित करते हैं कि, अहो समस्तभूमंडलनिवासिसद्वैद्यमहाशयो ! यद्यपि इस भूतलमें आयुर्वेदका प्रकाश प्रायः सर्वत्र सुप्रसिद्धही है तथापि जिसके प्रभावसे यावज्जीवमात्रोंके प्राणधारणादिक व्यापार यथावत् चलरहे हैं. जिससे इस क्षणभंगुर मानवीय शरीरमें धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ये चारों पुरुषार्थ सिद्ध होते हैं, उस आयुर्वेदके अनेक आचार्योंने अनेक संहिताग्रंथ बनाकर प्रसिद्ध किये हैं परंतु उन ग्रंथोंके अनेक मतोंके अनुरोधसे अनेक प्रकारके निदान, लक्षण, चिकित्सा आदिक प्रकरणोंका क्रमसे ज्ञान होना कठिन था, इसलिये हमने पंडित दत्तरामजी चौबे मथुरा निवासीके द्वारा सर्व वैद्यकशास्त्रके संहिताग्रंथोंको मंथन करके ऐसा एक ग्रंथ बनवायाहै कि, जिसमें शरीरचिकित्साके अनेक उपायोंको सर्वभिज्ञानभिज्ञ वैद्य व सर्व साधारण जनभी अक्षरमात्रकी पहँचानसे वेप्रयास जान लें, जिस ग्रंथका नाम "बृहन्निघंटुरत्नाकर" रक्खा है, और जो इस सर्व भारतखंडमें सुप्रसिद्ध है, वर्तमानसमयमें विद्याके अभावसे लुप्तप्राय होगयाथा उसका यह चतुर्थ भाग " चिकित्साखंड " जो चिकित्साप्रकरणमें आदिसे अंततक सब प्रकारकी चिकित्साओंसे बिलकुल परिपूर्ण है, सो यह आप महाशयोंके सेवन करनेके योग्य तयार होकर प्रकाशित हुआहै. इसमें जो विषय हैं, उनमें अनेक २ उपायोंके साथ चिकित्सा कही है, जिनका बृहत् विस्तार अनुक्रमणिकासे आप महाशयोंके चित्तको प्रसन्न करेगा, ऐसी हम आशा करते हैं और उम्मेद रखते हैं कि, इस सर्वोपयोगी अत्यंत उपकारी चिकित्साके ग्रंथ सरीखा दूसरा कोईभी वैद्यक ग्रंथ इस भूतलमें आजतक छपाभी नहीं होगा, इसलिये सर्व सुयोग्य महाशय इस ग्रंथका उदार आश्रय लेकर सर्व प्राणिमात्रके रोग नष्ट करके धर्म आदिक चतुर्विध पुरुषार्थको सिद्ध कर अपने जन्मको सार्थक करेंगे.

इस बृहत् ग्रन्थके आठ भाग हैं तिनमें १, २, ३, ४, ५, ६ ये छः भाग मथुरानिवासी विज्ञ पंडित–दत्तरामजी द्वारा निर्माण हुए हैं. और ७, ८ इन दोनों भागोंको परमोदारचरित श्रीधन्वन्तरि शास्त्रपारावारपारीण मुरादाबादनिवासी श्रीलालाशालिग्रामजीने बनाया है. जिनमें संपूर्ण औषधियोंके अनेक देश

देशांतर (भाषा) प्रसिद्ध नाम और गुणदोषोंका सविस्तर वर्णनके अतिरिक्त इसमें संपूर्ण औषधियोंके विज्ञानार्थ चित्रभी दिये हैं. जिसका नाम " शालिग्राम-निघण्टुभूषण " रक्खाहै ऐसे १ से लेकर ८ भागोंमें यह " बृहन्निघंटुरत्नाकर " ग्रन्थ सर्वाङ्गसुन्दर परिपूर्ण हुआहै हमारी दृढ आशा है कि, इन आठों भागों सहित " बृहन्निघण्टुरत्नाकर " ग्रंथको संग्रह करनेसे फिर आयुर्वेदके कोई विषय जाननेकी आवश्यकता न रहेगी, इसलिये संसारको बडाही उपकारक जान मैंने निज " लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर " छापेखानेमें मुद्रित कर प्रसिद्ध कियाहै.

अंतमें सर्व सज्जन महाशयोंको निवेदन है और आशा करतेहैं कि, इस संपूर्ण ग्रंथको संग्रह करके उपरोक्त दोनों विद्वानोंके परिश्रमसे संस्कृत सह भाषाका अपार आनन्द अनुभव कर जन्मपर्यंत इस पुस्तककी पूर्ण शक्तिसे निरोग रहेंगे और हमारे हृदयोत्साहको बढावेंगे ॥

आपका कृपाभिलाषी-

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,

" लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर " स्टीम् प्रेस.

कल्याण-मुंबई.

श्रीः ।

अथ बृहन्निघण्टुरत्नाकरचतुर्थभागविषयानुक्रमः ।

प्रवाहिका ।

संग्रहणी ।

इति बृहन्निघण्टुरत्नाकरचतुर्थभाग-
विषयानुक्रमणिका समाप्ता.

श्रीः ।

बृहन्निघण्टुरत्नाकरे--चतुर्थो भागः ।

जलधरादिकाढा ।

जलधरदशमूलं वारिशुंठीसमेतं मलयजकृतमालं वासकं पर्पटं च ॥
समधरणघृतांशः क्काथ एष प्रभाते शमयति समुदीर्णं पीतमात्रः प्रलापम् ॥

अर्थ-नागरमोथा, दशमूल, नेत्रवाला, सोंठ, चंदन, अमलतासका गूदा, अडूसा और पित्तपापडा ये प्रत्येक पाव तोला ले इनका काढा करके लेनेसे शीघ्र प्रलापक दूर हो ॥

दूसरा तगरादिकाढा ।

सतगरवरातिक्तारेवतांभोदतिक्तानलदतुरगगंधाभारतीहारहूराः ॥
मलयजदशमूलीशंखपुष्प्यः सुपक्काः प्रलपनमवहन्युः पानतो नातिदूरात् ॥

अर्थ-तगर, पाढ, अमलतासका गूदा, नागरमोथा, कुटकी, जटामांसी, असगंध, ब्राह्मी, दाख, चंदन, दशमूल और शंखाहूली इनका काढा पीवे तो प्रलापक सन्निपातको तत्काल हरण करे ॥

उपचार ।

सांत्वनैरंजनैर्नस्यैस्तीक्ष्णैस्तामिरसेवनैः ॥
सर्वतो विकृतं चित्तमस्य प्रकृतिमानयेत् ॥

अर्थ-शांतिपूर्वक बोलना, अंजन, तीक्ष्ण नस्य, अंधकारका सेवन इन उपायोंसे विकृत हुए चित्तको प्रकृतिपर लाना चाहिये ॥

मृतोत्थापनरस ।

शुद्धसूतं द्विधा गंधं शिला च विषहिंगुलौ ॥ मृतकांताभ्रताम्राय-स्तालकं माक्षिकं समम् ॥ अम्लवेतसजंबीरचांगेरीनागरेण च ॥ निर्गुंड्या हस्तशुंड्याश्च रसैर्मर्द्यं दिनद्वयम् ॥ रुद्ध्वाथ भूधरे पक्त्वा

दिनांते तत्समुद्धरेत् ॥ चित्रकस्य कषायेण मर्दयेत्प्रहरद्वयम् ॥ माषमात्रं प्रदातव्यो हिंगुत्र्यूषार्द्रकद्रवैः ॥ सकर्पूरानुपानैः स्यान्मृतोत्थापनको रसः ॥ पीडितः सन्निपातेन गतो वापि यमालयम् ॥ तत्क्षणाज्जीवदः सत्यं पथ्यं क्षीरं प्रयोजयेत् ॥

अर्थ-शुद्ध पारा १ भाग, गंधक २ भाग, मनसिल, विष, हिंगलू, कांतलोहकी भस्म, अभ्रकभस्म, ताम्रभस्म, हरतालभस्म और माक्षिक भस्म ये एक २ भाग ले सबको एकत्र कर अमलवेत, जंभीरी, चूका, अदरख, सह्मालू इन प्रत्येकके रसमें एक २ दिन खरल करे और मुंडीके रसमें दो दिन खरल कर शरावसंपुटमें धर कपडमिट्टी चढाय भूधरयंत्रमें चार प्रहर पचावे सायंकालको निकाल चीतेके काढेसे दो प्रहर खरल करे तो (मृतोत्थापन) रस बने इसमेंसे १ मासे अदरखके रसमें हींग, त्रिकुटा और कपूर डालके देय तो संनिपात करके मृतप्राय हुआभी तत्क्षण सावधान होय इसके ऊपर दूधभात पथ्य देवे ॥

जिह्वकसन्निपातनिदान ।

श्वसनकासपरितापविह्वलः कठिनकंटकवृतो जिह्वकः ॥
बधिरमूकबलहीनलक्षणो भवति कष्टतरसाध्यजीवकः ॥

अर्थ-श्वास, खाँसी, संताप और विह्वल, कठिन और काँटेयुक्त जिह्वा, बहरापन, गूंगा और बलहानि इन लक्षण करके युक्त ऐसा जिह्वकसन्निपात कष्टसाध्य है ॥

उग्रादिकाढा ।

उग्रासिंहीयासरास्नामृताह्वाशुंठीतिक्ताभृंगिकापौष्कराणाम् ॥
ब्राह्मीभार्गीतिक्तवासासठीनां क्वाथो हन्याज्जिह्वकं संनिपातम् ॥

अर्थ-वच, कटेरी, धमासा, रास्ना, गिलोय, सोंठ, कुटकी, काकडासिंगी, पुहकरलमूल, ब्राह्मी, भारंगी, चिरायता, अडूसा और कचूर इनका काढा जिह्वक संनिपातको दूर करे ॥

क्षुद्रादिकाढा ।

क्षुद्रानागरपुष्करामृतलताब्राह्मीवचासुव्रताभार्गीवासकयासतोयसुरसाक्वाथो जयेज्जिह्वकम् ॥ विश्वाचर्मविभावरीयुगवरावत्सादनीवारिदव्याघ्रीनिंबपटोलपुष्करजटारुग्दारुभिर्वा कृतः ॥

अर्थ-कटेरी, सोंठ, पुहकरमूल, गिलोय, ब्राह्मी, वच, कपूरकचरी, भारंगी, अडूसा, धमासा, नेत्रवाला, तुलसी इनका अथवा सोंठ, पित्तपापडा, हलदी, दारुहलदी, त्रिफला, नागरमोथा, कटेरी, नीमकी छाल, पटोलपत्र, पुहकरमूल, कूठ और देवदारु इनका काढा देय तो जिह्वक संनिपातको जीते ॥

सिंह्यादिकाढा ।

सिंहीनागरपुष्करैः सकटुकै रास्नागुडूचीयुतैर्भार्गीकर्कटशृंगिका-
सठिसमैर्दुःस्पर्शवासाघनैः ॥ पीतं जिह्वकहारि वारि भवति ब्रा-
ह्मीवचामिश्रितैः प्रोक्तं वैद्यवरेण वंद्यमुनिभिर्भूनिंबमिश्रं शृतम् ॥

अर्थ-कटेरी, सोंठ, पुहकरमूल, कुटकी, रास्ना, गिलोय, भारंगी, काकडा-सिंगी, कचूर, धमासा, अडूसा, नागरमोथा, ब्राह्मी, वच और चिरायता इनका काढा जिह्वक संनिपातको हरण करे ॥

देवदार्वादिकाढा ।

सुरतरुकटुनिंबै रूक्षपथ्यापटोलीरजान्युगुलविश्वासिंहिकापुष्क-
राह्वैः ॥ सलिलधरगुडूचीवासकैः सर्वमेभिः प्रशमयति कषायो
जिह्वकं कष्टसाध्यम् ॥

अर्थ-देवदार, नीमकी छाल, बहेडा, हरड, पटोलपत्र, हलदी, दारुहलदी, सोंठ, कटेरी, पुहकरमूल, नागरमोथा, गिलोय और अडूसा इनका काढा कष्ट-साध्य ऐसा जिह्वकका नाशक है ॥

किरातकवल ।

किराततिक्ताकुलकृत्कालिंजकचूर्रकृष्णाकटुतैलयुक्तः ॥
अम्लद्रवः संशमयेद्रसज्ञा दोषांस्तुतो दाशरथिर्यथाघम् ॥

अर्थ-चिरायता, अकरकरा, कुलीजन, कचूर और पीपल इनका चूर्ण सर-सोंके तेल और बिजोरेके रससे एकत्र कर मुखमें रक्खे तो जिह्वाका दोष शमन करे जैसे रामचंद्रकी स्तुति करनेसे पाप शमन होते हैं ॥

शालूरपर्ण्यादि अवलेह ।

शालूरपर्णीमालूरमूलामयमधुप्लुता ॥
शंबूकपुष्पीस हृता सेव्या वाचां विशुद्धये ॥

अर्थ-कमलकंद (भसींडे), पिठवन, कूठ और शंखपुष्पी इनका चूर्ण शहत मिलायके चाटे तो वाणी शुद्ध होय ॥

त्रिपुरभैरवरस ।

विश्वाभर्मविभावरीयुगवरावत्सादनीवारिदव्याघ्रीनिंबपटोलपुष्क-
रजटारुग्दारुभिर्वा कृतः ॥ विषमहौषधमागधिकोषणाद्युमणि-
रक्तकमार्द्रकमर्दितम् ॥ क्रमविवर्धितमुद्दलितं ज्वरं त्रिपुरभैरव
एष रसो वरः ॥

अर्थ—सोंठ, सुवर्णभस्म, हलदी, दारुहलदी, त्रिफला, गिलोय, नागरमोथा, कटेरी, नीमकी छाल, पटोलपत्र, पुहकरमूल, कूठ और देवदार इनका काढा देय तो जिह्वक संनिपात दूर होय अथवा विष, सोंठ, पीपर, गजपीपर, आक और लाल अंडौआ ये औषध क्रमसे वढती लेवे (जैसे विष १ भाग, सोंठ २ भाग, पीपर ३ भाग) इस प्रकार ले अदरखके रसमें खरल करे तो इसे त्रिपुर-भैरव रस कहते हैं इसको चाटनेसे जिह्वक सन्निपात दूर होय ॥

सामान्य उपचार ।

गुंजैकं मधुनाप्यत्र देयो ह्यानंदभैरवः ॥
दध्यन्नं दापयेत्पथ्यं त्रिनेत्राख्यो रसो हितः ॥

अर्थ—आनंदभैरव रस शहतसे चाटे और दहीभात पथ्य देवे अथवा त्रिनेत्राख्य रस देय तो जिह्वक संनिपात नाश होय ॥

अभिन्याससन्निपातनिदान ।

दोषत्रयास्निग्धमुखत्वनिद्रावैकल्यनिश्चेष्टनकष्टवाग्मी ॥
बलप्रणाशः श्वसनादिनिग्रहोऽभिन्यास उक्तो ननु मृत्युकल्पः ॥

अर्थ—दोषत्रयोंके कोप करके मुखपर चिकनाई, निद्रा, अंगोंमें विकलता, निश्चेष्टता, बडे कठिनतासे बोलना, बलनाश, दमका चढना ये लक्षण अभिन्यास सन्निपातमें होते हैं यह केवल मृत्युही है ॥

औषधोंकी अवधि ।

यावच्च श्वसते जीवो यावत्क्रामति भेषजम् ॥
तावत्क्रिया प्रकर्तव्या दैवस्य कुटिला गतिः ॥

अर्थ—यावत्पर्यंत यह प्राणी श्वासोच्छ्वास लेता है और औषध कंठमें उतरती है, तबतक औषधके विषयमें उपेक्षा न करे; अर्थात् तावत्काल पर्यंत औषध दी जाय क्यों कि दैवकी गति विचित्र है कदाचित् रोगी बच जावे ॥

इसमें दृष्टांत ।

दुर्गेऽम्भसि यथा मज्जन् भाजनं त्वरया बुधः ॥ गृह्णीयात्तलमप्राप्तं तथाभिन्यासपीडितम् ॥ निद्रोपेतमभिन्यासं क्षिप्रं विद्याद्धतौजसम् ॥

अर्थ-जैसे अथाह जलमें वरतन गिरे हुएको तलमें न पहुँचने पावे उससे प्रथमही पकड ले उसी प्रकार अभिन्याससंनिपातपीडित रोगीका बहुतही शीघ्र यत्न करना चाहिये अभिन्यासमें निद्रा आतेही हतवीर्य जानना ॥

सामान्य उपचार ।

सन्निपातांतकं चात्र माषैकं दापयेद्रसम् ॥
पथ्यं पूर्वोदितं देयं रसो ह्यानंदभैरवः ॥

अर्थ-अभिन्यास संनिपातमें एक मासा संनिपातांतक रस देवे किंवा आनंद-भैरव रस और पूर्वोक्त पथ्य देवे ॥

सिंह्यादिकाढा ।

सिंही व्याघ्री मृता द्राक्षा अजाजी सकटु त्रिकम् ॥ भृंगी विडंगं च समं पक्त्वा विश्वां व्यसाधयेत् ॥ घृताक्तैस्तंडुलैर्भ्रष्टैः पेयामुष्णां ज्वरी पिबेत् ॥ हिक्काश्वासी च कासी च तथाभिन्यासपीडितः ॥ विबद्धवातविण्मूत्रो पानमस्मिन् प्रयोजयेत् ॥

अर्थ-कटेरी, बडी कटेरी, गिलोय, दाख, जीरा, सोंठ, मिरच, पीपर, काकडासिंगी, वायविडंग इनका काढा कर उस काढेमें चावल घीमें भून उनकी पेया करावे उस पेयाको गरमागरम ज्वरवालेको देय तो हिचकी, श्वास, खाँसी, अभिन्यास संनिपात और वायु मलमूत्र इनका अवरोध ये दूर होंय ॥

कंटकार्यादिकाढा ।

बृहती पौष्करं भार्ङ्गी सठी शृंगी दुरालभा ॥
पक्त्वा पानं प्रशंसंति श्लेष्मा तेनोपशाम्यति ॥

अर्थ-कटेरी, पोहकरमूल, भारंगी, कचूर और धमासा इनका काढा देय तो इससे कफशांति होय ॥

त्रिवृतादिकाढा ।

त्रिवृद्विशालात्रिफलाकटुकारग्वधैः कृतः ॥
सक्षारो भेदनः क्वाथो ज्ञेयः सर्वज्वरापहः ॥

अर्थ-निसोथ, इन्द्रायनकी जड, त्रिफला, कुटकी और अमलतासका गूदा इनके काढेमें जवाखार डालके देय तो रेचक और सर्व ज्वरनाशक है ॥

त्रायंत्यादिकाढा ।

त्रायंतीदशमूलपुष्करजटावातारिभिः कारवीभांर्गी स्यादमृताटरूषकशटीगामूत्रसंयोजितैः ॥ शृंगीव्योषपुनर्नवाभिराचिरादुष्णः कषायो हरेत्साभिन्यासगदं कफज्वरहरं निःसंशयं पाययेत् ॥

अर्थ-त्रायमाण, दशमूल, पुहकरमूल, अंडकी जड, सोंफ, भारंगी, गिलोय, अडूसा, कचूर, काकडासिंगी, सोंठ, मिरच, पीपल, पुनर्नवा इनका गोमूत्रमें काढा कर किंचित् उष्ण पिवावे तो अभिन्यास संनिपात कफज्वरको नाश करे ॥

सुरभ्यादिकाढा ।

सुरभिसलिलयुक्तः सिंहिकाश्रीफलाभ्यां प्रवरलवणयासो विश्वपाषाणभेदैः ॥ पवनरिपुजटाभिः संयुतः क्काथ एषां प्रतिदिनमपि पीतो हंत्यभिन्यासशूलम् ॥

अर्थ-कटेरी, बेलगिरी, सैंधानिमक, धमासा, सोंठ, पाखानभेद, अंडकी जड, जटामांसी इनका काढा करके गोमूत्रके साथ देवे तो अभिन्यास सन्निपात और शूल इनको नाश करे ॥

शृंग्यादिकाढा ।

शृंगीभार्ग्यभयाजाजीकणाभूनिंबपर्पटैः ॥ देवदारुवचाकुष्ठयासकट्फलनागरैः ॥ मुस्तधान्यकतिक्तेंद्रयवपाठाहरेणुभिः ॥ हस्तिपिप्पल्यपामार्गपिप्पलीमूलचित्रकैः ॥ विशालारग्वधारिष्टशठीवाकूचिकाफलैः ॥ विडंगरजनीदार्वीयवानीद्वयसंयुतैः ॥ समांशैर्विहितः क्काथो हिंग्वार्द्रकरसान्वितः ॥ अभिन्यासज्वरं घोरं हंति तंद्रां च तत्क्षणात् ॥ प्रमोहं कर्णमूलं च सन्निपातांस्त्रयोदश ॥ हिक्कां श्वासं च कासं च तथा सर्वानुपद्रवान् ॥

अर्थ-काकडासिंगी, भारंगी, हरड, जीरा, पीपल, चिरायता, पित्तपापडा, देवदारु, वच, कूठ, धमासा, कायफल, सोंठ, नागरमोथा, धनिया, कुटकी, इन्द्रजौ, पाढ, रेणुकाद्रव्य, गजपीपर, ओंगा, पीपरामूल, चीतेकी छाल, इन्द्रायनकी जड, अमलतासका गूदा, नीमकी छाल, कचूर, बावची, वाय-

विडंग, हलदी, दारुहलदी, अजमायन, अजमोद ये औषध सब समान भाग ले काढा करके उसमें हींग और अदरखका रस डालके पीवे तो अभिन्यास संनिपात, ज्वर, तंद्रा, मोह, कर्णमूल, तेरह प्रकारके संनिपात, हिचकी, श्वास, खांसी और ज्वरके सर्व उपद्रव इनको नाश करे ॥

शृंग्यादिकाढा ।

शृंगीधन्वयवासपुष्करजटाभार्ङ्गीशठीसिंहका-
क्वाथः पानविधानतः कफहरोऽभिन्यासविध्वंसकः ॥

अर्थ-कांकडासिंगी, लाल धमासा, पुहकरमूल, भारंगी, कचूर, कटेरी इनका काढा पीवे तो कफ और अभिन्यास संनिपात इनका नाश करे ॥

तिक्तादिकाढा ।

तिक्ताभयाबृहद्दंतीत्रायंतीराजवृक्षकः ॥
क्षाराढ्यः सैंधवोपेतः क्वाथो भेदी ज्वरापहः ॥

अर्थ-कुटकी, हरड, बडी दंती, त्रायमाण और अमलतासका गूदा इनका काढा जवाखार और सेंधानिमक डालके देय तो भेदी और ज्वरनाशक होय ॥

व्याघ्र्यादिकाढा ।

व्याघ्रीदुरालभाभार्ङ्गीसठीशृंगीसपौष्करम् ॥
पक्त्वांबुश्लेष्महृदयमभिन्यासप्रशांतये ॥

अर्थ-कटेरी, धमासा, भारंगी, कचूर, कांकडासिंगी और पुहकरमूल इन औषधोंका काढा करके पीवे तो कफ, पेटका दूखना और अभिन्यास संनिपात शांत होय ॥

भार्ग्यादिकाढा ।

भार्ङ्गी पुष्करमूलं च रास्ना बिल्वं समुस्तकम् ॥ नागरं दशमूलं च पिप्पल्या विश्वसाधितम् ॥ हिंग्वार्द्रकरसोपेतं पिप्पलीचूर्णसंयुतम् ॥ सन्निपातज्वरं घोरमभिन्यासं च दारुणम् ॥ हृत्पार्श्वशूलमात्राहं सद्यः पीतं नियच्छति ॥

अर्थ-भारंगी, पुहकरमूल, रास्ना, वेलगिरी, नागरमोथा, सोंठ, दशमूल, पीपल, अतीस इन औषधोंका काढा करके उसमें हींग और अदरखका रस तथा पीपलका चूर्ण मिलायके देवे तो संनिपातज्वर, अभिन्यास, हृदय और पार्श्व इनका शूल इनको नाश करे ॥

बीजपूरादिकाढा ।

बीजपूरकबिल्वाश्मभेदकं बृहतीद्वयम् ॥ सकार्षिकं तथैरंडं जले चाष्टगुणे शृतम् ॥ पक्वगोमूत्रसंयुक्तं बिडसौवर्चलान्वितम् ॥ हृद्बस्तिशूले सानाहे अभिन्यासे ज्वरे हितम् ॥

अर्थ–बिजोरा, बेलगिरी, पाषाणभेद, कटेरी बडी, कटेरी छोटी प्रत्येक एक २ तोला ले, इसमें अंडकी जड आठ तोले डालके अठगुने जलमें काढा करे, इसमें गोमूत्र, बिडलोन और संचरनोन डालके पीवे तो हृदय और बस्ती इनके शूलको मलबद्धता और अभिन्यास ज्वर इनपर हितकारक है ॥

मातुलुंगादिकाढा ।

मातुलुंगाश्मभिद्बिल्वव्याघ्रीपाठारुबूकजः ॥
क्वाथो लवणमूत्राढ्योऽभिन्यासानाहशूलनुत् ॥

अर्थ–बिजोरेकी केशर, पाषाणभेद, बेलगिरी, कटेरी, पाढ और अंडकी जड इनके काढेमें निमक और गोमूत्र मिलायके पीवे तो अभिन्यास संनिपात अफरा और शूल दूर हो ॥

कारव्यादिकाढा ।

कारवीपौष्करैरंडत्रायन्तीनागरामृता ॥ दशमूलसठीशृंगीवासा-भार्गीपुनर्नवा ॥ तुलया मूत्रेण निःक्वाथ्य पीताः स्रोतोविशो-धिनी ॥ अभिन्यासज्वरायासमाशु घ्नन्ति समुद्धतम् ॥

अर्थ–कलौंजी, पुहकरमूल, त्रायमाण, सोंठ, गिलोय, दशमूल, कचूर, काकडा-सिंगी, अडूसा, भारंगी और सांठकी जड सब समान ले गोमूत्रमें काढा करके पीवे तो नाडियोंके मार्गको शुद्ध करे और अभिन्यास ज्वर परिश्रम इन सबको तत्काल दूर करे ॥

पटोलादिक्वाथ ।

पटोलपत्रं बृहती सुषवी कण्टकारिका ॥ मरीचं पिप्पली बिल्वं चिरिबिल्वं सचित्रकम् ॥ करंजबीजं मंजिष्ठा त्रायंती विश्वभेष-जम् ॥ गलप्रबोधनं श्रेष्ठमभिन्यासज्वरापहम् ॥

अर्थ-पटोलपत्र, कटेरी बडी, कलौंजी, छोटी कटेरी, काली मिरच, पीपल, बेलगिरी, कंजेकी छाल, चीता, कंजेके बीज, मॅजीठ, त्रायमाण और सोंठ इनका काढा करके पीवे तो कंठको शुद्ध करे और अभिन्यास ज्वर दूर हो ॥

जयमंगलरस ।

मृतसूताभ्रकं निंबं क्षारं मरिचमुंडकम् ॥ तालकं माक्षिकं व्योषं विषं टंकणचित्रकम् ॥ समांशं मर्दयेत्खल्वे पाठानिर्गुंडिबिल्वजैः ॥ द्रवैर्यष्टचा दिनैकं तु रुद्धा पाच्यं तु भूधरे ॥ पुटकेन भवेत्सिद्धो रसोऽयं जयमंगलः ॥ दशमूलकषायेण माषैकः संनिपातजित् ॥ अंजने वाथ वा नस्ये अभिन्यासांनको भवेत् ॥

अर्थ-पारद, अभ्रक इनकी भस्म, नीम, जवाखार, मिरच, मुंडलोहकी भस्म, हरताल, सुवर्णमाक्षिक, त्रिकुटा, विष, सुहागा और चीतेकी छाल सब बराबर ले सबको पाढ निर्गुंडी और बेल इनके रसमें एक दिन खरल करे, एक दिन मुलहटीके रसमें खरल कर भूधरयंत्रमें धरके पचावे तो एकही पुटमें यह (जयमंगलरस) सिद्ध होय । १ मांसे दशमूलके काढेमें सेवन करे तो संनिपात जीते । इसके अंजन करनेसे अथवा नास लेनेसे अभिन्यासको दूर करे ॥

स्वच्छंदनामकरस ।

शुद्धसूतं द्विधा गंधं सूतांशं मृतहेमकम् ॥ मृतरौप्यं च ताम्रं च सूततुल्यं पृथक्पृथक् ॥ सूर्यावर्तस्य निर्गुंड्यास्तुल्यं चार्द्रार्द्रक-द्रवैः ॥ भृंगोन्मत्ताखुकर्णीनामग्निकण्योग्निमंथयोः ॥ तिलपर्णी-चित्रकयोः काकमाच्या रसैः सह ॥ मर्दयेत्त्रिदिनं खल्वे शुष्कं पित्तैर्विभावयेत् ॥ मत्स्यमाहिषवाराहछागमायूरजैर्दिनम् ॥ अंधमूषागतं पाच्यं वालुकायंत्रगोर्दिनम् ॥ आदाय चूर्णितं खादे-न्माषैकं चार्द्रकद्रवैः ॥ निर्गुंड्या दशमूलानां कषायं मारिचं पिबेत् ॥ अभिन्यासं निहंत्याशु रसः स्वच्छंदनामकः ॥ पथ्यं स्यान्मुद्गयू-षेण क्षीरैवाज्यैर्विधापयेत् ॥

अर्थ-शुद्ध पारा तोलेभर, गंधक २ तोले, सुवर्णभस्म ३ मासे, रूपरस, ताम्र-भस्म दोनों तोले तोले भर ले सबको एकत्र कर हुलहुल, निर्गुंडी, अदरख,

भांगरा, धतूरा, मूसाकर्णी, अग्निकर्णी, अरनी, तिलपर्णी, चीता और मकोय इनके रसमें ३ दिन खरल करे जब सूख जाय तब रोहू मछली, भैंसा, सूअर, बकरा और मोर इनके पित्तेकी भावना देय फिर शीशीमें भर वालुकायंत्रमें अंधमूषामें १ दिन पचावे, फिर निकाल चूर्ण कर १ मासे अदरखके रससे खाय ऊपरसे निर्गुंडी, दशमूल, मिरच इनका काढा पीवे तो यह (स्वच्छंदरस) अभिन्यास सन्निपातको दूर करे इसके ऊपर मूंगका यूष दूध और घी देवें ॥

मातुलुंग्यादिरस ।

मातुलुंगरसं तस्य हिंगुशुंठीयुतं मुखे ॥
दद्यात्प्रधमनं तीक्ष्णं कटुतीक्ष्णोपसंहितम् ॥

अर्थ—बिजोरेके रसमें हींग और सोंठ मिलायके मुखमें रक्खे और तीखी तथा चरपरी औषध नेत्र तथा नाक कानमें फूंके तो सन्निपातकी बेहोशी दूर हो ॥

आर्द्रकादि नस्य ।

आर्द्रकं स्वरसोपेतं सिंधूत्थं सकटुत्रिकम् ॥
प्रबोधाय मुखे दद्यान्नस्यं वा मरिचेन च ॥

अर्थ—अदरखके रसमें त्रिकुटा और सैंधानिमक इनका चूर्ण मिलाय मुखमें धरनेको देय और अदरखके रसमें मिरच मिलाय नास देवे तो संनिपातवाला रोगी सावधान होय ॥

रामठादि नस्य ।

रामठनागरसहितं भृंगरसाम्लं तु लेहतः प्रातः ॥
अथ कटुतिक्तोपयुतं भवति सुखप्रबोधनं नस्यम् ॥

अर्थ—हींग और सोंठ इन औषधोंको भांगरेके और नींबूके रसमें मिलाय चाटे अथवा तीक्ष्ण और कडुई औषधोंकी नस्य देवे तो रोगी सावधान होय ॥

मरीचादिनस्य ।

मरिचलवणकृष्णाभूतकेशीमधूकैः कटुफलमृदु कृत्वा
कोष्णनीरेण नस्यम् ॥ प्रकटयति विकीर्णश्चाष्टभिर्वा
चतुर्भिः सकलकरणबोधं बिंदुभिर्दीयमानम् ॥

अर्थ—काली मिरच, सैंधानिमक, पीपल, निर्गुंडी, महुएके फूल और काय-

फल इन औषधोंका चूर्ण कर गरम जलमें डाल उसके आठ अथवा चार बूंदकी नास लेय तो संनिपातका रोगी चैतन्य होय ॥

लशुनादि अंजन ।

लशुनमरिचकृष्णामाणिमंथोग्रगंधाशुकतरुफलबीजैर्विश्व-
गोमूत्रपिष्टैः ॥ कफपवनविकारे रक्तपित्तप्रभेदे गदितम-
गदविद्भिर्नेत्रयोरंजनं स्यात् ॥

अर्थ-लहसन, काली मिरच, पीपल, सैंधानिमक, वच, सिरसका फूल और सोंठ इन औषधोंका चूर्ण गोमूत्रमें खरल कर अंजन करे तो कफ, वायु और रक्तपित्त इनको दूर करे ॥

जात्यादि अंजन ।

जातीपुष्पं प्रवालं च मरिचं रोहिणीं वचाम् ॥
सैंधवं बस्तमूत्रेण तंद्रानाशनमुत्तमम् ॥

अर्थ-चमेलीके फूलोंका रस, काली मिरच, कुटकी, वच और सैंधानिमक इनका चूर्ण कर उसको बकरीके मूत्रमें घिसकर अंजन करे तो तंद्रा दूर होय ॥

शिरीषबीजादि अंजन ।

शिरीषबीजं मरिचं बस्तमूत्रेण तत्समम् ॥
अंजनं तदभिन्यासे संज्ञाबोधनमिष्यते ॥

अर्थ-सिरसके बीज और मिरच ये समान भाग ले बकरेके मूत्रमें पीस अंजन करे तो अभिन्यास सन्निपातमें उत्तम संज्ञा प्रबोध करे ॥

दंभ अथवा दाग ।

संज्ञा यस्य न जायते चरणयोर्द्वंद्वं समादह्यते ॥
भाले लोहशलाकया सति कृते सर्वक्रियाकर्मणि ॥

अर्थ-सन्निपातमें जिसकी संज्ञा जाती रहे उसके दोनों पैर और कपाल इनमें लोहकी सलाईसे दाग देवे ॥

दाग देनेके अनन्तर उपाय ।

एवंविधेऽस्मिन् विहिते विधाने न याति संज्ञां यदि यश्च जंतुः ॥
तं पादमूले भृकुटौ ललाटे शलाकया लोहजया दहेत्तु ॥

अर्थ—इस प्रकार दाग देने पर भी जिसको होश न होवे उसके तरवा, भौंह और ललाट इनमें लोहकी सलाईसे दाग देना चाहिये ॥

हारिद्रकसन्निपातनिदान ।

हारिद्रदेहनखनेत्रकरांघ्रितापनिष्ठीवनादिकसनैरुपलक्षितो
यः ॥ हारिद्रकः स कथितः किल सन्निपातः साध्यो न चैष
भिषजां ज्वरकालरूपः ॥

अर्थ—देह, नख, नेत्र, हाथ, पैर ये हलदीके समान पीले हो जाँय, ज्वर, थूकना और खांसी ये लक्षण जिस संनिपातमें होय उसको (हारिद्रक) संनिपातज्वर जानना यह कालरूप है अर्थात् वैद्यसे साध्य नहीं हो सकता यह तरह संनिपातोंसे पृथक् है ॥

सन्निपातकी मर्यादा ।

सद्यस्त्रिपंचसप्ताहाद्दशाहाद्द्वादशादपि ॥
एकविंशद्दिनैः शुद्धः सन्निपाती सुजीवति ॥

अर्थ—संनिपात प्रकट होनेके अनंतर तत्काल अथवा तीन, पांच, सात, दश और बारह दिन व्यतीत होनेपर २१ दिन जब हो जावे तब संनिपातसे मुक्त हुआ रोगी अच्छे प्रकार बचता है ॥

त्रिदोषज्वरोंकी साधारणमर्यादा ।

सप्तमी द्विगुणा यावन्नवम्येकादशी तथा ॥ एषा त्रिदोषमर्यादा
मोक्षाय च वधाय च ॥ पित्तकफानिलवृद्ध्या दशदिवसद्वादशाह-
सप्ताहात् ॥ हंति विमुंचति पुरुषं त्रिदोषतो धातुमलपाकात् ॥

अर्थ—त्रिदोष होनेसे वह रोगी ७, १४, ९, १८, ११, २२ इतने दिनमें कि तो मर जावे, अथवा इतने दिनके पश्चात् बचनेसे ज्वरमुक्त होय तिनमें सात, नौ और ग्यारह ये तीन मर्यादा वाताधिक, पित्ताधिक और कफाधिक इस क्रमसे हैं, इस मर्यादामें त्रिदोषज्वरमें धातुपाक होनेसे रोगी मरे और मलपाक होनेसे रोगी संनिपातसे छूटे । धातुपाक और मलपाकका होना ईश्वरके अधीन है ॥

धातुपाकलक्षण ।

निद्रानाशो हृदि स्तंभो विष्टंभो गौरवारुची ॥
अरतिर्बलहानिश्च धातूनां पाकलक्षणम् ॥

अर्थ-निद्राका नाश, हृदयका स्तंभित होना, मलमूत्रका रुकना, शरीर भारी, अरुचि, मनका न लगना, बलक्षीणता ये धातुपाकके लक्षण हैं ॥

मलपाक ।

दोषप्रकृतिवैकृत्यं लघुता ज्वरदेहयोः ॥
इंद्रियाणां च वैमल्यं दोषाणां पाकलक्षणम् ॥

अर्थ-पूर्व दोषोंका पलटना, ज्वर और देहमें हलकापना, इंद्रियोंकी शुद्धता ये मलपाकके लक्षण हैं ॥

सन्निपातके असाध्य लक्षण ।

दोषे विबद्धे नष्टेऽग्नौ सर्वसंपूर्णलक्षणः ॥
सन्निपातज्वरोऽसाध्यः कृच्छ्रसाध्यस्ततोऽन्यथा ॥

अर्थ-मलादि और पित्तादि दोष बद्ध होनेसे तथा अग्नि शांत होनेसे वातादि सर्व दोषोंके संपूर्ण लक्षण होकर संनिपातज्वर असाध्य होता है और इसके विपरीत अर्थात् दोषोंकी प्रवृत्ति होकर अग्नि थोडीसी दीप्त हो, सबके लक्षण थोडे २ होंय तो संनिपातज्वर कष्टसाध्य होता है ॥

आगंतुकज्वर ।

अभिचाराभिघाताभ्यामभिषंगाभिशापतः ॥
आगंतुर्जायते दोषैर्यथास्वं तं विभावयेत् ॥

अर्थ-मारणादि प्रयोग, ताडन, भूतप्रेतबाधा, तथा ब्राह्मण, गुरु, वृद्ध इनके कोपसे और शाप इन कारणोंसे वातादि दोष कुपित हो आगंतुक ज्वरको उत्पन्न करते हैं वह ज्वर वात, पित्त और कफ इन भेदोंसे तीन प्रकारका है ॥

आगंतुकज्वरचिकित्साक्रम ।

आगंतुकज्वरे नैव नरः कुर्वीत लंघनम् ॥
शुद्धवातक्षयागंतुजीर्णज्वरिषु लंघनम् ॥

अर्थ-आगंतुक ज्वरमें मनुष्यको लंघन नहीं करावे, केवल शुद्धवातक्षयदोषजन्य आगंतुक ज्वर और अजीर्ण ज्वर इनपर लंघन करावे ॥

अभिचाराभिघातज्वरनिदान ।

अभिचाराभिघाताभ्यां मोहस्तृष्णा च जायते ॥

अर्थ-अभिचार और अभिघात इनसे प्रकट हुए ज्वरमें मोह होता है और प्यास लगती है ॥

अभिचारज्वरपर चिकित्सा ।

अभिचाराभिशापोत्थौ ज्वरौ होमादिना जयेत् ॥
देहं स्वस्त्ययनैस्तीर्थैरुत्पातग्रहपूजनैः ॥

अर्थ-अभिचार और अभिघात इनसे उत्पन्न हुए ज्वरको होम, देवपूजा, तथा देहमें मंगलकारी मणि आदिका धारण, तीर्थस्नान और जिससे पीडा हो उस ग्रहका पूजन इत्यादि यत्नोंसे जीते ॥

अभिघातज्वरपर चिकित्सा ।

अभिघातज्वरे युंज्यात्क्रियामुष्णाविवर्जिताम् ॥
कषायं मधुरं स्निग्धं यथादोषमथापि वा ॥

अर्थ-अभिघात ज्वरपर उष्णवर्जित और कषैली, मधुर, स्निग्ध ऐसी अथवा जो दोष होय उसपर जो चिकित्सा लिखी है वह करनी चाहिये ॥

सामान्य उपचार ।

अभिघातज्वरो नश्येत्पानाभ्यंगेन सर्पिषः ॥
रक्तावसेकैर्मद्यैश्च तथा मांसरसोदनैः ॥

अर्थ-अभिघात ज्वरपर घृतका पान, तथा देहमें घीकी मालिश, रुधिर निकलवाना, सेंक देना ये उपचार करके पथ्यमें मांसरस और भात देवे ॥

व्यधादिकोंपर ।

व्यधबंधश्रमात्यध्वभंगभ्रंशसमुद्भवान् ॥
ज्वरानुपचरेत्पूर्वं क्षीरमांसरसौदनैः ॥

अर्थ-वेध, बंधन, श्रम, बहुत मार्ग चलना, गिरना इन कारणोंसे उत्पन्न ज्वरपर प्रथम दूध, मांसरस और भात देवे ॥

मार्गश्रमजन्यज्वरपर ।

अध्वश्रांतेषु चाभ्यंगं दिवा निद्रां च कारयेत् ॥

अर्थ-बहुत चलनेसे जो थकगया हो इस कारणसे जो ज्वर आया हो उसको मालिश कर दिनमें सुलाना चाहिये ॥

दूसरा प्रकार ।

व्यधबंधसमावेशभग्ननष्टसमुद्भवान् ॥
ज्वरानुपाचरेत्पूर्वं मदिराक्षीरभोजनैः ॥

अर्थ-वेध, बंध, भूतबाधा, चोट लगनेसे और प्रिय वस्तुके नाश होनेसे जिसको ज्वर आया हो उसको प्रथम मद्य और दूध पिलाना चाहिये ॥

भूताभिषंगज्वरनिदान ।

कामशोकभयाद्वायुः क्रोधात्पित्तं त्रयो मलाः ॥
भूताभिषंगात्कुप्यंति भूतसामान्यलक्षणम् ॥

अर्थ-काम शोक और भय इनसे वात कुपित होता है क्रोधसे पित्त कुपित होता है और भूताभिषंगसे तीनों दोष कुपित होते हैं इसमें औरभी लक्षण होते हैं अर्थात् उन्मादनिदानमें जिस जिस देवग्रहोंके लक्षण (हास्यरोदनकंपादिक) कहेहैं वे लक्षण होते हैं ॥

दूसरा प्रकार ।

भूताभिषंगादुद्वेगो हास्यरोदनकंपनम् ॥

अर्थ-भूतबाधा करके ज्वर आनेसे चित्तमें उद्वेग हो, हँसे,रोवे और काँपता है॥

सामान्यचिकित्सा ।

शीतभंजीरसो वात्र ह्यनुपाने द्विगुंजकः ॥

अर्थ-भूतज्वरपर शीतभंजी नामकरस यथायोग्य अनुपानसे दो रत्ती देवे ॥

त्रिकट्वादियोग ।

गंधकं त्रिकटुं साज्यं पिबेद्भूतज्वरापहम् ॥

अर्थ-गंधक और त्रिकुटा इनके चूर्णको घीमें मिलायके देवे तो भूतज्वर दूर हो ।

गंधकादियोग ।

गंधकेन समा धात्री भुक्ता सा भूतजं ज्वरम् ॥
कर्षमात्रं प्रदातव्यं सर्वभूतज्वरे हितम् ॥

अर्थ-गंधक और आमले इनके समभाग चूर्णको १० मासे पर्यन्त देवे । यह सर्वभूतज्वरोंपर हितकारक है ॥

अष्टमूर्त्तिरस ।

हेम रूप्यं ताम्रनागं मृतं गंधकमाक्षिकम् ॥ विमला च शिला शुद्धा सर्वांशं शुद्धसूतकम् ॥ अम्लेन मर्दयेद्यामं पुटे कुंभधरे पचेत् ॥ अष्टमूर्तिरसो नाम गुंजैकं भूतिके ज्वरे ॥ देयश्चातुर्थिकं त्र्याहं द्व्याहिकं च विनाशयेत् ॥

अर्थ–सुवर्ण, चांदी, तामा और शीशा इनकी भस्म, गंधक, विमला, मनासिल ये शुद्ध करी हुई समान भाग ले, इन सबकी बराबर शुद्ध पारा ले, सबको एकत्र कर नींबूके रसमें एक प्रहर घोटके फिर कुंभपुट देवे यह (अष्टमूर्ति रस) १ रत्ती ज्वरवालेको देय तो भूतज्वर, चातुर्थिक, त्र्याहिक, द्व्याहिक इनको दूर करे ॥

मधुकनस्य ।

मधुकसारमारिचं सैंधवं पिप्पली वचा ॥
संज्ञाप्रबोधनं नस्यं देयं भूतज्वरे सदा ॥

अर्थ–महुएका गोंद, काली मिरच, सेंधानिमक, पीपल और वच इनकी नस्य भूतज्वरमें सदैव देवे ॥

व्योषादिनस्य ।

कुर्याद्भूतज्वरे नस्यं व्योषाष्टतुलसीदलैः ॥

अर्थ–सोंठ, मिरच, पीपल और तुलसीके आठ पत्र इनके रसकी नस्य देवे तो भूतज्वर दूर होय ॥

सहदेवीमूलिकाबंध ।

सहदेवाया मूलं विधिना कंठे निबद्धमपहराति ॥
एकाद्वित्रिचतुर्भिर्दिवसैर्भूतज्वरं पुंसाम् ॥

अर्थ–सहदेईकी जडको विधियुक्त कंठमें बाँधे तो एक, दो, तीन, चार दिनमें भूतज्वर दूर हो ॥

सूर्यावर्तबंध ।

सूर्यावर्तस्य मूलं च कर्णे भूतज्वरापहम् ॥

अर्थ–हुलहुलकी जडको कानमें बाँधे तो भूतज्वर दूर हो ॥

विजयाबंध।

सायंकालेऽभिमन्त्र्यैव विजयां प्रातरुद्धरेत् ॥
बद्धा शिरसि तन्मूलं भूतज्वरहरं परम् ॥

अर्थ-भांगके वृक्षको सायंकालमें निमंत्रण कर आवे प्रातःकाल उखाड उसकी जडको मस्तकमें बाँधे तो भूतज्वरको नाश करे ॥

पुष्यार्कयोग।

पूष्यार्कें काकतुंड्याश्च मूलं भूतज्वरापहम् ॥
बंधयेद्रक्तसूत्रेण बाहौ शिरसि वा गले ॥

अर्थ-पुष्यार्कमें काकडोडीकी जडको लावे उसको लाल सूतसे भुजामें अथवा मस्तकमें वा गलेमें बाँधे तो भूतज्वरको दूर करे ॥

मृत्तिकातिलक।

कर्कटस्य बिलोद्भूतमृदा तु तिलके कृते ॥

अर्थ-केकडेके बिलेकी मिट्टीका तिलक करनेसे भूतज्वर दूर हो ॥

मंत्र।

गोमयं मंडलं कृत्वा पुष्पगंधाक्षतादिभिः ॥ अर्चयेन्मंत्रवित्सम्यक्स्वहस्तं मंडलोपरि ॥ स्थापयित्वा जपेन्मंत्रं स्पृशेत्साध्यस्य मस्तकम् ॥ स्पृष्ट्वा तत्र जपेन्मंत्रं यावदष्टोत्तरं शतम् ॥ अथ मंत्रः ॥ काल काल महाकाल कालदंड नमोऽस्तु ते ॥ कालदंडनिपातेन भूम्यंतर्निहितं ज्वरम् ॥ त्रिदिनं कारयेदेव हन्याद्भूतादिकाञ्ज्वरान् ॥

अर्थ-गौके गोबरका चौका देकर उसका गंधाक्षतसे पूजन कर उसके ऊपर हाथ धरके "काल काल महाकाल" इस मंत्रको १०८ बार जपके उस हाथको रोगीके मस्तकपर धरके फिर १०८ बार मंत्रको जपे इस प्रकार तीन दिन करे तो भूतज्वरादिक दूर हो ॥

अभिषंगज्वरपर चिकित्सा।

भूतविद्यासमुद्दिष्टैर्बंधावेशनताडनैः ॥
जयेद्भूताभिषंगोत्थमनुशांत्यादिभिर्ज्वरम् ॥

अर्थ-भूतविद्यामें कहे जो गाडना, देहमें भराना और मारना इत्यादि प्रयोग इनसे अथवा शांति आदि करके भूतबाधाजनित ज्वरको जीते ॥

अभिशापज्वरपर चिकित्सा ।

लंघनं न हितं कामशोकचिंताप्रहारजे ॥ भयभूतश्रमक्रोधलंघनैश्च कृते ज्वरे ॥ किंतु दीप्ताग्नये तत्र दद्यान्मांसरसौदनम् ॥

अर्थ-काम, शोक, चिंता, प्रहार, भय, भूतबाधा, श्रम, क्रोध और लंघन इनसे उत्पन्न ज्वरवालोंको लंघन हितकारी नहीं है इसका यह कारण है कि, रोगीकी जठराग्नि प्रदीप्त होती है इसवास्ते उसको मांसरस तथा भात पथ्यमें देवे ॥

दूसरा प्रकार ।

अभिचाराभिशापोत्थौ ज्वरौ होमादिभिर्जयेत् ॥
दानस्वस्त्ययनातिथ्यैरुत्पातग्रहदूषितौ ॥

अर्थ-अभिचार (घात मूठ आदि), अभिशाप, उत्पात और दुष्टग्रह इनसे प्रगट हुए ज्वरको होम, दान, पुण्याहवाचन तथा आतिथ्य इन उपचारोंसे जीते ॥

विषजन्य आगंतुक ज्वर ।

श्यावास्यता विषकृते दाहोऽतीसार एव च ॥
भक्तारुचिः पिपासा च तोदश्च सह मूर्च्छया ॥

अर्थ-विषके संबंधसे उत्पन्न हुए ज्वरमें मुख काला, दाह, अतिसार, अरुचि, तृषा, चोटनी और मोह ये लक्षण होते हैं, इसकी चिकित्सा विषनिदानमें कही है ॥

औषधीगंधसे होनेवाले ज्वर ।

औषधीगंधज मूर्च्छा शिरोरुग्वमथुः क्षवः ॥

अर्थ-दुष्ट विषैले औषध सूंघनेसे जो ज्वर होता है उसमें मूर्च्छा, मस्तकशूल, भ्रांति, हल्लास और छींक ये लक्षण होते हैं ॥

चिकित्सा ।

औषधीगंधविषजौ विषपित्तप्रबाधनैः ॥
जयेत्कषायैर्मतिमान्सर्वगंधकृतैर्भिषक् ॥

अर्थ-औषधिगंध और विष इनसे प्रगट हुए ज्वरमें विष और पित्तनाशक औषध इन करके अथवा सर्वगंधादिगणके क्वाथ इत्यादि करके जीते ॥

अब सर्वगंध कहते हैं ।

चातुर्जातककर्पूरं कंकोलागरुकुंकुमम् ॥
लवंगसहितं चैव सर्वगंधं विनिर्दिशेत् ॥

अर्थ—इलायची, दालचीनी, तालीसपत्र, नागकेशर, कपूर, कंकोल, काली अगर, केशर और लौंग ये एकत्र करनेसे इसको सर्वगंध कहते हैं ॥

कामज्वरनिदान ।

कामजे चित्तविभ्रंशस्तंद्रालस्यमभोजनम् ॥
हृदये वेदना चास्य गात्रं च परिशुष्यति ॥

अर्थ—चित्तका डामाडोल होना, तंद्रा, आलस्य, भोजनमें अरुचि, हृदयमें वेदना और देहमें शुष्कता ये लक्षण कामज्वरमें होते हैं ॥

चिकित्सा ।

श्रीखंडमंडितकलेवरवल्लरीणां मुक्ताफलाकुलितलोलकुचस्थलीनाम्[1] ॥
वैदग्ध्यमुग्धवचसां सुविलासिनीनामालिंगनं सकलदाहमपाकरोति ॥

अर्थ—चंदन करके चर्चित देह, मोतियोंके हार जिसके स्तनोंपर गिरे हुए तथा शृंगाररसभरित मिष्टभाषण करनमें चतुर और रूपलावण्यसंपन्न ऐसी प्यारी स्त्रियोंके आलिंगन करनेसे कामज्वर और पित्तज्वर शांत होता है ॥

दूसरा प्रकार ।

शय्या पल्लवपद्मपत्ररचिता वासो वयस्यैः समं
कांतारे कुसुमस्फुरत्तरुवरे वापीजलालोकनम् ॥
आलापाश्च शुकालिकोकिलकृताः कांताश्च कांताः कथा
वाताश्चामलवालकव्यजनजा दाघं निराकुर्वते ॥

अर्थ-वृक्षकी नवीन कोमल उलहाती पातीसे अथवा कमलके पत्रोंकी सेजसे रके बिछाकर उसपर निद्रा लेना, मित्रोंके साथ रहना, बागोंमें डोलना, बावडी अथवा सरोवरके किनारे बैठकर पवन लेना, सुंदर स्वरयुक्त गान[2], तथा तोता मैना इनके मंजुल शब्द सुनना, परस्पर हाँसी ठठोरीकी वार्ता करना, तथा खसके पंखोंसे पवनका करना ये उपचार कामज्वरकी शांति करते हैं ॥

---

१ मुक्ताफलाकुलविशालकुचस्थलीनाम् इति मुख्यपाठः ।
२ वीणान्वित गायनम् इति मुख्यपाठः ।

तीसरा प्रकार ।

अयि नितंबिनि गायनलालसे मधुरचारिणि काममदालसे ॥
वपुषि दाहवतां विहितं हितं हिमाहिमांशुजलैरनुलेपनम् ॥

अर्थ—हे नितंबिनि ! चंदन, कपूर और खस इनके जलका लेप करना दाहको दूर करता है ॥

चौथा प्रकार ।

शुभ्राभ्रविभ्रमधरे शशांककरसुंदरे ॥
चंदनैश्चर्चिते हर्म्ये स्वापस्तापमपोहति ॥

अर्थ—मेघके समान शुभ्र, तथा चंद्राकिरणों करके सुंदर और चंदनसे पुता हुआ ऐसे घरमें शयन करनेसे ताप शमन होता है ॥

पाचवाँ प्रकार ।

यदि पर्युषितं धान्यसलिलं सितया सह ॥
प्रभातसमये पीतमंतर्दाहं विनाशयेत् ॥

अर्थ—सायंकालमें धनियेंको कोरे कुलहडेमें भिगो देवे दूसरे दिन प्रातःकाल हाथोंसे मसलकर कपडेमें छान ले फिर इसमें मिश्री मिलायके पीवे तो दाह दूर हो ॥

छठा प्रकार ।

पित्तज्वरे किं रसफांटलेपैः किंवा कषायैरमृतेन किंवा ॥ पेयं प्रियाया मुखमेकमेव लोलिंबराजेन सदानुभूतम् ॥ प्राणप्रेयसि मा पिबंतु पुरुषाः पित्तज्वरव्याकुला नानावल्लिजलं विलंबितफलं पाने विषादप्रदम् ॥ तैस्तैः किं क्रियतां चिकित्सकपते मुग्धे सुखं सेव्यतां सद्यस्तापहरः सुधाधिकतरः कांताधरः केवलम् ॥

अर्थ—हे प्रिये ! पित्तज्वरपर अर्थात् कामज्वरपर रस, फांट, लेप किंवा काढे अथवा अमृत देनेसे भी क्या उपयोग है, कुछ नहीं ? किंतु उस रोगीको प्यारी मृगनयनीके मुखका चुंबन करनाही इस रोगकी उत्तम औषध है लोलिंबराज अपनी स्त्रीसे कहते हैं कि यह प्रयोग मेरा अनुभव करा हुआ है । हे प्राणप्यारी ! कामज्वरपीडित पुरुषोंको बहुत कालमें गुणकर्त्ता ऐसे अनेक प्रकारकी वेलोंका रस, तथा कडुए काढे दुखदाई नहीं पीने चाहिये किंतु

---

१ राति दाघमवर्मकराननं इति मुख्यपाठः ।

उस रोगीको तत्काल तापहरणकर्त्ता और अमृतसे भी अधिक मिष्ट तथा सुखसे सेवन करा जाय ऐसा अपनी प्यारीका अधरोष्ठ चुंबन करना चाहिये ॥

सातवाँ प्रकार।

कांताकटाक्षदग्धानां वद वैद्य किमौषधम् ॥
दृढमालिंगनं पथ्यं क्वाथश्चाधरचुंबनम् ॥

अर्थ-स्त्रीके कटाक्ष अग्निसे झुरते हुओंको यही औषध हितकारी है कि सुंदर स्त्रीका अधरचुंबन यह काढा और आलिंगन करना यह पथ्य ॥

भय शोक कोप इनसे पैदा हुए ज्वरका निदान।

भयात्प्रलापः शोकाच्च भवेत्कोपाच्च वेपथुः ॥

अर्थ-भय और शोकसे प्रगट ज्वरमें रोगी बकवाद करे और क्रोधसे उत्पन्न ज्वरमें देह कॉपता है ॥

सामान्य उपचार।

व्याघ्रचित्तकघातार्थं स्थापयेज्जलमध्यगम् ॥
अनया शीतक्रियया भयरोगः प्रशाम्यति ॥

अर्थ-व्याघ्रादिकोंकी भय चित्तसे दूर करनेके लिये रोगीको जलमें खडा करे इस शीतल क्रियाके करनेसे भय दूर होय ॥

चिकित्सा।

हर्षणैश्च समं यांति कामशोकभयज्वराः ॥
कामैरथो मनोज्ञैश्च पित्तघ्नैश्चाप्युपक्रमैः ॥

अर्थ-काम, शोक और भय इनसे उत्पन्न हुए ज्वर हर्षोत्पादक पदार्थ करके अथवा मित्रमंडलीमें बैठनेसे दूर होता है, अथवा मनवांछित पदार्थके मिलनेसे अथवा पित्तनाशक यत्न करनेसे शांत होय ॥

आश्वासनेष्टलाभेन वायोः प्रशमनेन च ॥
हर्षेण च शमं यांति कामशोकभयज्वराः ॥

अर्थ-धीरज बँधाना, इष्ट वस्तुका लाभ, वायुका नाश करनेवाले और आनंद-दायक पदार्थ इन करके काम शोक और भयसे उत्पन्न ज्वर शांत होते हैं ॥

कामज्वर वा क्रोधज्वर इसपर सामान्य उपचार ।

कामात्क्रोधज्वरो नश्येत्क्रोधात्कामज्वरस्तथा ॥
यांति ताभ्यामुभाभ्यां च कामक्रोधज्वराः क्षयम् ॥

अर्थ–क्रोधज्वर कामोत्पत्तिसे दूर होय और कामज्वर क्रोध उत्पन्न होनेसे नाश होय, इस प्रकार ये दोनों परस्पर एक दूसरेकी उत्पत्तिसे नाश होते हैं ॥

क्रोधज्वरचिकित्सा ।

क्रोधजे पित्तजित्कार्या नार्याः सद्वाक्यमेव च ॥
आश्वासेनेष्टलाभेन वायोः प्रशमनेन च ॥

अर्थ–क्रोध करके उत्पन्न ज्वरमें पित्तनाशक उपाय, सुंदर स्त्रियोंका भाषण, उत्तम गोष्ठी, आश्वासन (दिलासा देना) तथा इष्ट पदार्थका लाभ और वायुके नाश करनेवाले उपचार इत्यादि करने चाहिये ॥

विसर्पादिज्वरमें घृतपान ।

विसर्पेण ज्वरो यश्च यश्च विस्फोटकज्वरः ॥
तत्रादौ सर्पिषः पानं कफपित्तोत्तरे भवेत् ॥

अर्थ–विसर्पसे किंवा विस्फोटक (फोडा) होनेसे जो ज्वर होय ऐसे कफपित्ताधिक ज्वर इन पर प्रथम घृतपान करावे ॥

विषमज्वरकी संप्राप्ति ।

आतंकमुक्ते कृशताश्रयाणां विमुक्तपथ्याद्युचिताक्रियाणाम् ॥
अल्पोऽपि दोषो विषमं विदध्याज्ज्वरं विवृद्धं प्रतिपक्षरुद्धम् ॥

अर्थ–रोगसे मुक्ति होनेके पश्चात् कृशता करके अथवा कुपथ्य करनेसे अल्पभी रहे हुए दोष विरुद्ध होकर विषमज्वरको उत्पन्न करते हैं ॥

दूसरा प्रकार ।

दोषोऽल्पोऽहितसंभूतो ज्वरोत्सृष्टस्य वा पुनः ॥
धातुमन्यतमं प्राप्य करोति विषमज्वरम् ॥

अर्थ–जिस मनुष्यको ज्वर औषधादि सेवन करनेसे शांत हो गया हो और आरंभसे २१ दिन व्यतीत होनेपर तथा जीर्णावस्था होनेपर अपथ्य करनेसे बातपित्तादिक दोष फिर थोडे २ कुपित हो रसरक्तादि धातुओंमेंसे किसी एक धातुमें प्राप्त हो उसको दूषित कर विषमज्वर (तिजारी चतुर्थकादि ज्वर) को उत्पन्न करे, वा शब्दकरके प्रथमहीसे विषमज्वर होता है यह सूचना

करी जैसे (आरंभाद्विषमो यस्तु) अल्प शब्से यह दिखाया कि उक्त दोष बलहीन होनेके कारण कालांतरमें बलिष्ठ हो ज्वरको करे हैं और जो दोष बली हैं वे सदैव ज्वर करते हैं। विषमज्वरके लक्षण (भालुकीने) इस प्रकार कहे हैं (यः स्यादनियतात्कालाच्छीतोष्णाभ्यां प्रवर्त्तते) अर्थात् जो शीत किंवा उष्ण इन करके अनियतकालमें ज्वर आवे उसको विषम ज्वर कहते हैं. दूसरे लक्षण ये हैं कि (मुक्तानुबंधित्वं विषमत्वम्) अर्थात् ज्वर चला जाय और फिर आय जावे उसको विषम ज्वर कहते हैं ॥

विषमज्वरके नाम।

संततः सततोऽन्येद्युस्तृतीयकचतुर्थकौ ॥

अर्थ-संतत, सतत, अन्येद्युष्क, तृतीयक और चतुर्थक ऐसे विषमज्वरके पांच भेद हैं ॥

संततादिकोंमें नियतदूष्य।

संततो रसधातुस्थः सततो रक्तधातुगः ॥ भिषजा स च विज्ञेयः सोऽन्येद्युः पिशिताश्रितः ॥ मेदोगतस्तृतीयेऽह्नि अस्थिमज्जागतः पुनः ॥ कुर्याच्चातुर्थिकं घोरमंतकं रोगसंकरम् ॥

अर्थ-रसधातुगत दोष सतत ज्वरको उत्पन्न करे है, तथा रक्तधातुगतदोष संतत ज्वरको उत्पन्न करे, वही दोष मांसाश्रित होनेसे अन्येद्युष्क (द्व्याहिक) ज्वरको उत्पन्न करे, और मेदोगत दोष होनेसे त्र्याहिक (तिजारी) ज्वरको और अस्थि तथा मज्जागत दोष होकर मृत्युके समान तथा रोगोंमें संकर ऐसा घोर चातुर्थिक (चौथेया) ज्वरको उत्पन्न करे है ॥

विषमज्वरचिकित्सा।

विषमाश्च ज्वराः सर्वे सन्निपातसमुद्भवाः ॥
अथोल्बणस्य दोषस्य तेषु कार्यं चिकित्सितम् ॥

अर्थ-संपूर्ण विषमज्वर संनिपातसे होते हैं परंतु उनमें अधिक दोषपर चिकित्सा करनी चाहिये ॥

शोधन।

विषमेष्वथ कर्तव्यमूर्ध्वं चाधश्च शोधनम् ॥
स्निग्धोष्णैरन्नपानैश्च शमयेद्विषमज्वरम् ॥

अर्थ-विषमज्वरमें ऊर्ध्वशोधन वांति आदि और अधःशोधन रेचनादि देवे और स्निग्ध तथा उष्ण ऐसे अन्न तथा पान करके विषमज्वर शमन करना चाहिये ॥

विषममें अन्न कहते हैं ।

तक्रं मांसं पयोमांसं दधिमांसमथापि वा ॥
माषमांसं तु भुंजानो मुच्यते विषमज्वरात् ॥

अर्थ–छाँछ तथा मांसरस, किंवा दूध मांस, अथवा दही मांस, तथा माष मांस इनका भोजन करनेसे विषमज्वर दूर होय ॥

दूसरे प्रकारके अन्न ।

सुरा समंडा पानाय भोजने चरणायुधाः ॥
तित्तिरा विष्करा पथ्याः कुक्कुटा विषमज्वरे ॥

अर्थ–मद्य और मंड इनका पीना तथा मुरगा, तीतर, विष्कर जीव इनका मांस भोजनको देवे ये विषम ज्वरपर पथ्यकारक है ॥

विषमज्वरपर सामान्य चिकित्सा ।

सततं विषमं वापि क्षीणस्य सुचिरोत्थितम् ॥
ज्वरं संभोजनैः पथ्यैर्ज्वरघ्नैः समुपाचरेत् ॥

अर्थ–क्षीणरोगीका बहुत दिनमें आनेवाला संतत अथवा विषमज्वर पथ्यकारक भोजन तथा ज्वरघ्न औषध इन करके शमन करे ॥

घृतपान ।

ज्वरः कषायैर्विविधैर्लेपनैर्लघुभोजनैः ॥
रूक्षस्यैते न शाम्यंति सर्पिस्तेषां भिषङ्मतम् ॥

अर्थ–रूक्षरोगीका ज्वर अनेक प्रकारके काढे अनेक प्रकारके लेप तथा लघु भोजन करके शांत नहीं होता इस वास्ते उस रोगीको वैद्यके संमतिसे घृतपान करावे ॥

वाताधिकविषमज्वर ।

विषमज्वरनाशाय चिकित्सा वक्ष्यतेऽधुना ॥
वातप्रधानं सर्पिर्भिर्बस्तिभिः सानुवासनैः ॥

अर्थ–विषमज्वरके नाशार्थ चिकित्सा कहते हैं । वातप्रधान विषमज्वरको घृत पान अथवा अनुवासन बस्ति करके जीते ॥

पित्ताधिकविषमकी चिकित्सा ।

विरेचनं च पयसा सर्पिषा संस्कृतेन च ॥
विषमं तिक्तशीतैश्च ज्वरं पित्तोत्तरं जयेत् ॥

अर्थ-पित्ताधिक विषमज्वरको औटे हुए दूधमें घृत मिलायके रेचनार्थ देवे तथा कटु शीतल ऐसे उपाचारों करके जीते ॥

कफाधिकविषमचिकित्सा ।

वमनं पाचनं रूक्षमन्नपानं च लंघनम् ॥
कषायोष्णं च विषमे ज्वरे शस्तं कफोत्तरे ॥

अर्थ-कफाधिक विषमज्वरमें वमन, पाचन, तथा रूक्ष ऐसे अन्न तथा पान लंघन, तथा कषेले और गरम ऐसे औषध इत्यादि उपचार करावे ॥

मार्कंड्यादि पाचन ।

मार्कंडी बालपथ्या च मृद्वीका स्थूलजीरकम् ॥
पाचनं स्मृतमेतेषां देयं च विषमज्वरे ॥

अर्थ-आहुली, छोटी हरड, काली दाख और कलौंजी इनका काढा विषम ज्वरमें पाचनार्थ देवे ॥

महौषधादि पाचन ।

महौषधाग्रंथिकतालपर्णी मार्कंडिकारग्वधबालपथ्या ॥
सक्षारमेषां विषमज्वरे च हितं शृतं पाचनरेचनं च ॥

अर्थ-सोंठ, पीपरामूल, बडी सौंफ, आहुली, किरवारेकी गिरी और छोटी हरड इनका काढा सैंधानिमक डालके पिवावे यह विषमज्वरमें पाचन और रेचन है ॥

पाचन व रेचन ।

नलिकाबालपथ्यानां चूर्णं च सितया सह ॥
पाचनं रेचनं चोष्णसलिलैश्च गुडैः समम् ॥

अर्थ-नलिका (यवारी) और छोटी हरड इनका चूर्ण मिश्री अथवा गुड मिलाय गरम कर पानीके साथ देय यह पाचक और रेचक है ॥

द्राक्षादिपाचन ।

गोस्तनीत्रिफलाविश्वधान्यकैः पाचनं मतम् ॥
द्रावकं भेषजतमं योजयेत्सर्वकर्मणि ॥

अर्थ-काली दाख, त्रिफला, सोंठ और धनिया इनका काढा पाचन और द्रावक ऐसा है यह औषध सर्व कर्मोंमें देना चाहिये ॥

कुमारीमूलादिवमन।

कुमारिमूलं कर्षैकं पीत्वा कोष्णजलैर्वमेत् ॥
विषमं तु ज्वरं हंति वमनेन चिरंतनम् ॥

अर्थ-घीगुवारका कंद १० मासे लेकर गरम जलसे देय और वमन करे तो पुराना विषमज्वर दूर हो ॥

पटोलादिकाढा।

पटोलयष्टीमधुतिक्तरोहिणीघनाभयाभिर्विषमज्वरघ्नम् ॥
कृतः कषायस्त्रिफलामृतावृषैः पृथक्पृथग्वा विषमज्वरापहः ॥

अर्थ-पटोलपत्र, मुलहटी, चिरायता, कुटकी, नागरमोथा और हरड इनका अथवा त्रिफला, गिलोय, अडूसा इनका काढा विषमज्वर नाश करे ये दोनों काढोंको एकत्र कर देवे अथवा पृथक् २ देवे ॥

यष्ट्यादिकाढा।

यष्टी दुरालभा वासा त्रिफला बालकामृता ॥
मुस्ताक्काथः सितायुक्तो विषमज्वरनाशनः ॥

अर्थ-मुलहटी, धमासा, अडूसा, त्रिफला, नेत्रवाला, गिलोय और नागरमोथा इनका काढा मिश्री मिलायके देवे तो विषमज्वर दूर हो ॥

मुस्तादिकाढा।

मुस्ताक्षुद्रामृताशुंठीधात्रीक्काथः समाक्षिकः ॥
पिप्पलीचूर्णसंयुक्तो विषमज्वरनाशनः ॥

अर्थ-नागरमोथा, कटेरीका पंचांग, गिलोय, सोंठ, आमले इनके काढेमें शहत और पीपलका चूर्ण मिलायके पीवे तो विषमज्वर दूर हो ॥

महाबलादिकाढा।

महाबलामूलमहौषधाभ्यां क्काथो निहन्याद्विषमज्वरं हि ॥
शीतं सकंपं परिदाहयुक्तं विनाशयेद्द्वित्रिदिनप्रयोगात् ॥

अर्थ-सहदेईकी जड और सोंठ इनका काढा शीत, कंप और दाह इन करके युक्त ऐसे विषमज्वरपर दो अथवा तीन दिन लेनेसे ज्वरनाश होय ॥

नागरादि दूसरा काढा।

सनागरायाः सपयोधरायाः ससिंहिकायाः सगुडूचिकायाः ॥

धात्र्याः कषायो मधुना विमिश्रः कणाविमिश्रो विषमज्वरघ्नः ॥

अर्थ-सोंठ, नागरमोथा, कटेरीका पंचांग, गिलोय और आमले इन औषधोंका काढा शहत और पीपलका चूर्ण मिलायके देवे तो विषमज्वरका नाश करे ॥

पटोलादिकाढा।

स्वकांतिजितरोचने चपललोचने मालतिप्रसूननिकरस्फुरत्कबरि पंचवक्रोदरि ॥ पटोलकटुरोहिणीमधुकचेतकीमुस्तकप्रकल्पितकषायको विषममाशु जेजीयते ॥

अर्थ-हे स्वकांतिजितरोचने ! हे चपललोचने ! पटोलपत्र, कुटकी, मुलहटी, हड और नागरमोथा इनका काढा करके देनेसे विषमज्वरको शीघ्र दूर करे ॥

कुलकादिकाढा।

किमु भ्रमयसि प्रिये कुवलयं कराभ्यामिदं मदीयवचनं सुधारससमं समाकर्णय ॥ पुराणविषमज्वरे कुलकनिंबसिंहींद्रजामृताकृतकषायको मधुयुतो वरीवर्तति ॥

अर्थ-पटोलपत्र, नीमकी छाल, कटेरीका पंचाग, इन्द्रजौ और गिलोय इनका काढा करके शहत डालके लेय तो पुराना विषमज्वर नाश होय ॥

भार्ग्यादिकाढा।

भार्गीपर्पटविश्ववासककणाभूनिंबनिंबामृतामुस्ताधन्वकभेषजैश्च दशभिर्निघ्नंति सर्वज्वरान् ॥ जीर्णान्धातुगतांस्तथा च विषमान् सोपद्रवान्दारुणान् क्वाथोऽयं यदि युग्मवासरमिदं दद्याद्यमाद्रक्षिता ॥

अर्थ-भारंगी, पित्तपापडा, सोंठ, अडूसा, पीपल, चिरायता, नीमकी छाल, गिलोय, नागरमोथा और धमासा इनका काढा जीर्णज्वर, धातुगतज्वर, उपद्रवसहित विषमज्वर तथा सर्वज्वर इनको नाश करे, यह दो दिन सेवन करनेसे यमराजसेभी बच जावे ॥

भार्ग्यादिकाढा।

भार्ग्यब्दपर्पटकधन्वयवासविश्वभूनिंबकुष्ठककणासिंह्यमृताकषायः ॥

जीर्णज्वरं सततसंततकौ निहन्यादन्येद्युकं सहतृतीयचतुर्थकं च ॥

अर्थ-भारंगी, नागरमोथा, पित्तपापडा, धमासा, सोंठ, चिरायता, कूठ, पीपल, कटेरी और गिलोय इनका काढा जीर्णज्वर, संततज्वर, अन्येद्युष्क ज्वर, तृतीय ज्वर और चातुर्थिक इनका नाश करे ॥

निशाद्यंजन ।

ज्वरेंऽजनं निशातैलकृष्णामरिचसैंधवैः ॥

अर्थ-हलदी, तिलका तेल, पीपल, काली मिरच और सैंधानिमक इनका अंजन विषमज्वरको दूर करे ॥

नरकेशनस्य ।

नरकेशोत्थिते तैले काकचंचुं विघर्षयेत् ॥

नस्यं सर्वज्वरहरं नात्र कार्या विचारणा ॥

अर्थ-मनुष्यके बालोंके तेलमें कौएकी चोंच घिसके नस्य देवे तो ज्वर नाश होय इसमें संदेह नहीं है ॥

कणादिनस्य ।

कृष्णामलकसरामठदार्वीवचाराजसर्षपरसोनैः ॥

छागमूत्रमृष्टैर्नस्यं चैकाहिकादिहरम् ॥

अर्थ-पीपल, आमले, हींग, दारुहलदी, वच, सफेद सरसों और लहसन इन औषधोंको बकरेके मूत्रमें पीसकर नस्य देय तो एकाहिकादि विषमज्वर नाश होय ॥

सैंधवादि अंजन ।

सैंधवं पिप्पलीनां च तंडुलाः समनःशिलाः ॥

नेत्रांजनं तैलपिष्टं शस्यते विषमज्वरे ॥

अर्थ-सैंधानिमक, पीपलके बीज और मनसिल इनको तेलमें पीस नेत्रोंमें लगावे तो विषमज्वर दूर होय ॥

लशुनादि अंजन ।

लशुनं पिप्पली राजी वचा कुष्ठं समांशतः ॥

एतच्चूर्णं जले पिष्टं चक्षुष्यं ज्वरनाशनम् ॥

अर्थ-लहसन, पीपल, राई, वच और कूठ इनका समान भाग चूर्ण पानीमें पीस अंजन करनेसे विषमज्वर नष्ट होय ॥

चतुःषष्टिककाढा।

शृंगीरामठरामसेनरजनीरुक्रेणुकारोहिणीरास्नैरंडरसोनदारुरजनीराजद्रुराजीफलैः ॥ त्रायंतीत्रिवृताहुताशनलतानंतामृतामुद्रितादंतीतुंबरुचित्रतंडुलत्रुटित्वक्तिक्तनक्तंचरैः ॥ वासावत्सकबीजवासवसुराबलयावरीवेल्लजब्राह्मीब्राह्मणयष्टिवारणकणाविश्वावयस्थावृषैः ॥ मूर्वामालविकासमूलमगधामुस्ताजमोदाद्वयीमिश्रेयागरुचंदनेंद्रचविकास्फोटावचाकट्फलैः ॥ इत्येतैर्दशमूलयुङ्निगदितः क्वाथश्चतुःषाष्टिकः शृंग्यादिर्मदनागसिंहभिषजा सर्वामयोन्मूलने ॥ पुंसामष्टविधज्वरार्तिशमने वाताग्निसंधुक्षणे सर्वांगे च समीरणद्विपघटे शार्दूलविक्रीडितम् ॥

अर्थ-काकडासिंगी, हींग, कायफल, हलदी, कूठ, रेणुका, कुटकी, रास्ना, अंडकी जड, लहसन, दारुहलदी, अमलतासका गूदा, पटोलपत्र, त्रायमाण, निसोथ, चित्रक, मूर्वा, धमासा, गिलोय, खरेटी, दंती, तुंबरू, वायविडंग, छोटी इलायचीके बीज, दालचीनी, चिरायता, गूगल, अडूसा, इन्द्रजौ, कालीमूंग, क्षीरकाकोली, बला, शतावर, मिरच, ब्राह्मी, भारंगी, गजपीपल, सोंठ, हरड, फालसे, मूर्वा, काली निसोथ, पीपरामूल, नागरमोथा, अजमोद, अजमायन, सौंफ, काली अगर, लाल चंदन, कूडेकी छाल, चव्य, सारिवा सपेद, वच, कायफल और दशमूल इनको एकत्रित करे, यह चतुःषष्टिक काढा है इसको शृंग्यादि अथवा मदनादि कहते हैं, यह रोगरूपी हाथीको मारनेमें सिंहके समान है। यह आठ प्रकारकी ज्वरपीडाका शामक है और अग्निको बढानेवाला तथा सर्व वातके रोगोंको नाश करता है॥

निंबादिचूर्ण।

भूनिंबपथ्याघनकंटकारीत्रायंतिकानागरयासतिक्ताः ॥ वात्यालकचूरकणापटोलीक्षुद्राजलग्रंथिकपर्पटाश्च ॥ एषां ततो षोडशकांगचूर्णं ज्वरान्समस्तान्विषमान्निहन्ति ॥

अर्थ-चिरायता, हरड, नागरमोथा, कटेरी, त्रायमाण, सोंठ, कुटकी, कटेरी, कचूर, पीपल, पटोलपत्र, छोटी कटेरी, नेत्रवाला, पीपरामूल और पित्तपापडा इन सोलह औषधोंका चूर्ण सर्व विषमज्वरोंको नाश करे ॥

जीरकादिचूर्ण ।

कालाजाजी तु सगुडा विषमज्वरनाशिनी ॥
मधुना चाभया लीढा हंत्याशु विषमज्वरम् ॥

अर्थ-काले जीरेका चूर्ण गुडके साथ, अथवा छोटी हरडका चूर्ण शहतके साथ खानेसे विषमज्वर नाश होय ॥

तुलसी व द्रोणपुष्पीस्वरस ।

पीतो मरिचचूर्णेन तुलसीपत्रजो रसः ॥
द्रोणपुष्पीभवो वापि निहंति विषमज्वरान् ॥

अर्थ-तुलसीके पत्तोंके रसमें काली मिरचका चूर्ण मिलायके अथवा गोमाके रसमें काली मिरचका चूर्ण मिलायके पीवे तो विषमज्वर दूर होय ॥

कुमारीमूलकादियोग ।

कुमारिमूलं कर्षैकं पीत्वा कोष्णजलैर्वमेत् ॥
विषमं तु ज्वरं हंति वातश्लेष्मगदानपि ॥

अर्थ-घीगुवारकी जड तोलेभर लेकर गरम जलसे देय तो वमन होकर विषमज्वर वातरोग इनका नाश होय ॥

वर्धमानपीपल ।

क्षीरेण पंचवृद्ध्या वा दुग्धान्नाशी कणां पिबेत् ॥ यावत्पूर्णं शतं तत्स्यात्तां तथैवापकर्षयेत् ॥ वातास्रनापपांड्वर्शोगुल्मशोफोदुरापहम् ॥ विषमेषु च तद्वृष्यं पिप्पलीवर्धमानकम् ॥

अर्थ-दूधसे पांच पांचकी वृद्धि करके पीपल पीसके पिवावे, इस प्रकार सौ पीपल पर्यंत करे फिर उसी पांच पांचके क्रमसे घटाता हुआ चला आवे और दूधभात भोजनको देवे तो वातरक्त, दाह, पांडु, बवासीर, गोला, सूजन, उदर और विषमज्वर इनका नाश होय, यह वृष्य है । इसको वर्द्धमान पीपल कहते हैं ॥

गुडजीरकयोग।

जीरकं गुडसंयुक्तं विषमज्वरनाशनम् ॥
अग्निमांद्यं जयेच्छीतं वातरोगहरं परम् ॥

अर्थ–जीरा गुडके साथ खानेसे विषमज्वर, मंदाग्नि, शीत और वातके रोगको दूर करे ॥

हरडादिकोंका चूर्ण।

भवति विषमहंत्री चेतकी क्षौद्रयुक्ता भवति विषमहंत्री पिप्पली वर्धमाना ॥ विषमरुजमजाजी हंति युक्ता गुडेन प्रशमयति तथाग्र्या सेव्यमाना गुडेन ॥

अर्थ–छोटी हरडका चूर्ण शहतसे चाटे, अथवा जीरा और गुड मिलायके खाय, एवं त्रिफलेका चूर्ण गुडमें मिलायके खाय ये चार योग पृथक् २ विषमज्वर-नाशक जानने ॥

वंदाकयोग।

वंदाकं विषजातं च तक्रेण विषमज्वरे ॥
सर्पिषा दधिमंडेन हिंगुना च प्रयोजितम् ॥

अर्थ–विषवृक्षके ऊपरका वांदा छाछ, घृत, दहीका मांढ, अथवा हींगसे सेवन करे तो विषमज्वर दूर हो ॥

निंबादिचूर्ण।

निंबच्छदो दशपलं त्र्यूषणं च पलत्रयम् । त्रिपलं त्रिफला चैव त्रिपलं लवणत्रयम् ॥ द्वौ क्षारौ द्विपलं चैव यवानी पलपंचकम् ॥ सर्वमेकीकृतं चूर्णं प्रत्यूषं भक्षयेन्नरः ॥ ऐकाहिकं द्व्याहिकं च तथा त्रिदिवसं ज्वरम् ॥ चातुर्थिकं महाघोरं शमयेत्सततज्वरम् ॥

अर्थ–नीमकी पत्ती ४० तोले, सोठ, मिरच, पीपल १२ तोले, त्रिफला १२ तोले, तीनों नोन १२ तोले, दोनों क्षार ८ तोले और अजमायन २० तोले इन सबका चूर्ण कर प्रातःकालमें देवे तो इकतरा, संतत, तिजारी, चौथिया और सतत ज्वरको शांत करे ॥

भृंगराजचूर्ण ।

समूलं भृंगराजं च छायाशुष्कं विचूर्णयेत् ॥ तत्समं त्रिफला-चूर्णं सर्वतुल्या सिता भवेत् ॥ एकीकृत्य पलैकैकं भक्षयेच्चानु-पानतः ॥ अग्निमांद्यं च विड्बंधं पाण्डुतां हरते ध्रुवम् ॥

अर्थ-जडके सुद्धा भांगरेको छायामें सुखाय उसका चूर्ण और इतनाही त्रिफलेका चूर्ण तथा सबकी बराबर मिश्री मिलायके इसमेंसे ४ तोले योग्य अनुपानके साथ देवे तो मंदाग्नि, विड्बंध और पांडुरोग इनको हरण करे ॥

दीप्यादिचूर्ण ।

दीप्याजयारामठवह्निविश्वाक्षारद्वयं जीरकयुग्मकृष्णा ॥
फलत्रयं संचलसैंधवं च कृतं हि चूर्णं विषमज्वरघ्नम् ॥

अर्थ-अजमोद, हरड, हींग, चित्रक, सोंठ, जवाखार, सज्जीखार, काला जीरा, पीपल, त्रिफला, संचरनोन और सेंधानोन इनका चूर्ण विषमज्वरनाशक है ॥

पंचसार ।

सर्पिः क्षौद्रं सिताक्षीरं पिप्पल्यः सितशर्करा ॥ पिबेत्खजेन माथि-तं पंचसारमिदं स्मृतम् ॥ विषमज्वरहृद्रोगकासश्वासक्षयापहम् ॥

अर्थ-घृत, सहत, पीपल, दूध, सपेद खांड इन पांचोंको एकत्र मिलायके पीवे तो यह पंचसार विषमज्वर, हृद्रोग, खांसी, श्वास और क्षय इनको दूर करे ॥

पद्मकादिसार ।

पद्मकं बिल्वजं पेयं सर्पिषा मथितेन वा ॥
विषमज्वरनाशाय क्षीरं वा गोमयान्वितम् ॥

अर्थ-पद्माख, बेलगिरी इनके चूर्णको घृत अथवा मठा इनमें मिलायके पीवे तो विषमज्वर दूर होय ॥

लशुनादिकल्क ।

तिलतैललवणयुक्तः कल्को लशुनस्य सेवितः प्रातः ॥
विषमज्वरमपहरते वातव्याधीनशेषांश्च ॥

अर्थ-लहसनके कल्कमें तिलका तेल और निमक मिलायके प्रातःकाल सेवन करे तो विषमज्वर और संपूर्ण वातव्याधियोंको हरण करे ॥

गुडूचीकल्क ।

अमृतायाः शृतं चूर्णं वाससा परिशोधितम् ॥ पृथक्षोडश भागाः स्युर्गुडमाक्षिकसर्पिषाम् ॥ यथाग्नि भक्षयेदेतन्नरो हितमिताशनः ॥ नास्य कश्चिद्भवेद्व्याधिर्न जरा पलितं न च ॥ न ज्वरा विषमा नैव मेहाश्चानिलरक्तकम् ॥ न च नेत्रगता रोगाः परमेतद्रसायनम् ॥ मेधाकरं त्रिदोषघ्नं प्रयोगादस्य बुद्धिमान् ॥ जीवेद्वर्षशतं साग्रं यथैवादितिजस्तथा ॥

अर्थ–गिलोयका चूर्ण कपडछान १०० तोले तथा गुड, शहत, घी ये प्रत्येक सोलह २ तोले लेकर मिलावे, इसको अग्निका बल देखकर भक्षण करे तथा हितकारी और परिमाणका ऐसा अन्न भक्षण करे तो किसी प्रकारकी व्याधि तथा वृद्धावस्था, बालोंकी सपेदी, ज्वर, विषमज्वर, प्रमेह, वातरक्त और नेत्ररोग कदाचित् नहीं हो, यह उत्कृष्ट रसायन बुद्धि देनेवाली त्रिदोषनाशक है, इसके सेवनसे मनुष्य १०० वर्ष जीवे तथा देवताओंके समान बली होय ॥

विषमपर महाज्वरांकुशरस ।

शुद्धसूतं विषं गंधं धूर्तबीजं त्रिभिः समम् ॥ चतुर्णां द्विगुणं व्योषं चूर्णं गुंजाद्वयं हितम् ॥ जंबीरकस्य मज्जाभिरार्द्रकस्य द्रवैर्युतम् ॥ महाज्वरांकुशो नाम ज्वराणामंतको भवेत् ॥ ऐकाहिकं द्व्याहिकं वा त्र्याहिकं वा चतुर्थकम् ॥ विषमं वा त्रिदोषोत्थं नाशयेद्यामामात्रतः ॥

अर्थ–शुद्ध पारा, विष, गंधक सब समान भाग लेय और इन तीनोंके बराबर धतूरेके बीज ले और सबसे दूनी सोंठ, मिरच और पीपलका चूर्ण ले इन सबको नींबू और अदरखके रसमें खरल कर दो रत्तीकी गोली बनावे। यह महाज्वरांकुश सर्व ज्वरोंको कालरूप है और ऐकाहिक, द्व्याहिक, त्र्याहिक, चातुर्थिक, विषम अथवा संनिपातज्वर इनको एक प्रहरमें नाश करे ॥

दूसरा रस ।

रसस्य द्विगुणो गंधो गंधतुल्यश्च टंकणः ॥ रसतुल्यं विषं योज्यं मरीचं पंचधा भिषक् ॥ कटूफलं दंतिबीजं च क्षिणोति ज्वरमु-

त्कटम् ॥ क्वचिद्रात्रौ दिवा क्वापि द्वितीयं त्र्याहिकं क्वचित् ॥ चलचातुर्थिकं चापि विषमज्वरलक्षणम् ॥

अर्थ—पारा १ भाग, गंधक २ भाग, सुहागा २ भाग, विष १ भाग, काली मिरच ९ भाग और कायफल तथा जमालगोटा एक एक भाग सबका चूर्ण कर अदरखके रसमें गोली बनाय ले इसके सेवन करनेसे दिन रात्रिमें आनेवाला ज्वर, द्व्याहिक, त्र्याहिक, चलज्वर और चातुर्थिक ज्वर ऐसे विषमज्वरोंको शांत करे ॥

मेघनादरस ।

आरं कांस्यं मृतं ताम्रं त्रिभिस्तुल्यं तु गंधकम् ॥ क्वाथेन मेघनादस्य पिष्ट्वा रुद्ध्वा पुटे पचेत् ॥ षड्भिस्तु जायते सिद्धो मेघनादो महारसः ॥ पर्णखंडेन माषैको विषमज्वरनाशनः ॥

अर्थ—लोहा, काँसा और तामा इनकी भस्म बराबर लेवे सबकी बराबर गंधक लेय, सबको खरलमें डाल चौलाईके रसमें खरल कर संपुटमें फूंक देवे इस प्रकार छः पुट चौलाईके देवे तो यह मेघनाद महारस सिद्ध होवे, एक मासा पानके टुकडेमें खाय तो विषमज्वर दूर होवे ॥

गोपीड्यादिघृत ।

गोपीडयामलकीस्थिरामगधजातिक्तापयःपालिनीद्राक्षाश्रीफलधावनीहिमविषामुस्तेंद्रजैः साधितम् ॥ स्यादाज्यं विषमज्वरक्षयशिरःपार्श्वव्यथारोचकच्छर्दीशोषहलीमकप्रशमनं लीलालतामंजरि ॥

अर्थ—सारिवा, भूयआमला, आमला, सालपर्णी, पीपल, कुटकी, नेत्रवाला, मुनक्का दाख, बेलगिरी, चंदन, लालचंदन, अतीस, नागरमोथा और इन्द्रजौ इनका काढा कर उसमें घृत मिलाय घृतको सिद्ध करे । इसके पीनेसे विषमज्वर, क्षय, मस्तकशूल, पँसवाडेकी पीडा, अरुचि, वमन, शोष, हलीमक इनको तत्काल शांत करे ॥

पंचतिक्तकघृत ।

वृषनिंबमृताव्याघ्रीपटोलानां शृतेन च ॥ कल्केन पक्वं सर्पिस्तु निहन्याद्विषमज्वरान् ॥ पांडुं कुष्ठं विसर्पं च कृमीनर्शांसि नाशयेत् ॥

अर्थ-अडूसा, नीमकी छाल, गिलोय, कटेरी, पटोलपत्र इनको कल्ककी विधिसे पक्क कर पीवे तो विषमज्वर, पांडुरोग, कोढ, विसर्प, कृमि और बवासीर इनको दूर करे ॥

षट्पलघृत ।

शुंठी कणा चित्रकं च चव्यं ग्रंथिकमेव च ॥ कुर्यात्पंचपलान्भागानेकैकस्य च कुट्टितान् ॥ जलद्रोणे विपक्वव्यं यावत्पादावशेषितम् ॥ एतैस्तु पलिकैः कल्कैः सैंधवेन समन्वितैः ॥ षट्पलं नाम विख्यातं विषमज्वरनाशनम् ॥ कासश्वासातिदौर्बल्यं प्रतिश्यायित्वमेव च ॥ प्लीहोर्ध्ववातश्वयथुपांडुरोगांश्च नाशयेत् ॥

अर्थ-सोंठ, पीपल, चित्रक, चव्य और पीपरामूल इनको २० वीस तोले लेय, सबको कूटपीस १०२४ तोले जल डाल चतुर्थांश शेष काढा करे, फिर इस काढेका जल और सेंधानिमक डालके घृत तैयार करावे यह षट्पल घृत विषमज्वर, कास, श्वास, दुर्वलता, पीनस, प्लीहा, ऊर्ध्ववात, सूजन और पांडुरोग इनको नाश करे ॥

क्षीरषट्पलघृत ।

पंचकोलैःससिंधूत्थैः पालिकैः पयसा समम् ॥
सर्पिः प्रस्थं घृतं प्लीहविषमज्वरनाशनम् ॥

अर्थ-पीपल, पीपरामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ तथा सेंधानिमक ये सब औषध चार तोले ले कूटके काढा करे तथा काढेके बराबर दूध और घी सेरभर डालके पचावे जब सिद्ध हो जाय तब उतारके धर रखे, इसके सेवन करनेसे प्लीहा और विषमज्वर दूर होय ॥

दूसरा प्रकार ।

दशमूलरसे सर्पिः सक्षीरे पंचकोलकैः ॥ पक्कं निहंति सत्पीतं ज्वरकासाग्निमार्दवम् ॥ वातपित्तज्वरव्याधिं प्लीहानं चापि पांडुताम् ॥

अर्थ-दशमूल और पंचकोल इनका काढा कर उसमें काढेके समान दूध तथा घी डालके सिद्ध करे, इसके सेवन करनेसे ज्वर, खांसी, मंदाग्नि, वातपित्तज्वर, प्लीहा और पांडुरोग इनको नाश करे ॥

अमृताद्यघृत ।

अमृतात्रिफलापटोलयासैः संपक्कं विधिवद् घृते विपक्कम् ॥
विषमज्वरनाशनं प्रधानं क्षयगुल्मारुचिकामलापहारि ॥

अर्थ-गिलोय, त्रिफला, पटोलपत्र और धमासा इनका काढा और घृत डालके पचावे, जब घृत सिद्ध हो जावे तब उतारले, इसके सेवन करनेसे विषमज्वर, क्षय, गोला, अरुचि और कामला इनको दूर करे ॥

शुंठ्यादिघृत ।

शुंठीकणाग्रंथिकचव्यवह्निक्षाराः पृथक्त्वेकपलप्रमाणाः ॥
प्रस्थं घृतं नागरवारिमस्तु प्रस्थद्वयं तद्विपचेत्कषाये ॥
संसिद्धमाज्यं विषमज्वरेषु जीर्णज्वरे वर्षभवेऽपि शस्तम् ॥

अर्थ-सोंठ, पीपर, पीपरामूल, चव्य, चित्रक, जवाखार प्रत्येक चार २ तोले लेवे इनका काढा करके इस काढेमें सेरभर घी और अदरखका रस तथा दहीका जल दो सेर मिलाके फिर अग्निपर चढायके घृत सिद्ध करे । यह विषमज्वर, जीर्णज्वर, एक वर्षका ज्वर इनको नष्ट करे ॥

चंदनाद्यघृत ।

चंदनं चित्रकं सिंही वत्सक मुस्तनागरैः ॥ कटुका त्रायमाणा च
धात्र्यूशीरे द्विसारिवे ॥ द्रव्यार्धपलमात्राणि सौम्यवारेषु संहरेत् ॥
क्षीराढकसमायुक्तां सर्पिषोऽर्धतुलां पचेत् ॥ चातुर्थिकं हरेत्पीत-
मुन्मादं विषमज्वरम् ॥ त्र्याहिकं श्वासकासौ च सर्वापस्मारमेव च ॥

अर्थ-चंदन, चित्रक, कटेरीकी जड, इन्द्रजौ, नागरमोथा, सोंठ, कुटकी, त्रायमाण, आमले, नेत्रवाला, तथा दोनों प्रकारकी सारिवा इन औषधोंका काढा करके उसमें दूध चार सेर घृत सेरभर डालके सिद्ध करे जव घृतमात्र बाकी रहे तव उतार लेवे । यह चातुर्थिक, उन्माद, विषमज्वर, श्वास, खाँसी और मृगीरोगको नाश करे । इसको चंदनादि घृत कहते हैं ॥

महाकल्याणघृत ।

एतदेव हविः पक्कं जीवनीयोपसंस्मृतम् ॥ द्विपंचमूलक्काथेन शता-
वर्या रसेन च ॥ चतुर्गुणेन पयसा महाकल्याणमिष्यते ॥ अप-

स्मारज्वरं शोषं क्लैव्यं काश्मर्यबीजतः ॥ घृतमेतन्निहंत्याशु ये चापि विषमज्वराः ॥ जीवनीयगणत्वेन काकोल्यादिगणग्रहः ॥ महाकल्याणके कार्यो घृते तु दशकार्षिकः ॥

अर्थ—अब महाकल्याण घृतको कहते हैं—कल्याण घृतकी औषध और जीवनीय गण दश तोले, काकोल्यादिगण १० तोले तथा दशमूल इन औषधोंका काढा लेकर उसमें शतावरका रस डालके सबसे चौगुणा दूध डाले और सेर मात्र घृत डालके सिद्ध करे। इस घृतके सेवन करनेसे मृगी, ज्वर, तृषा इनको नष्ट करे तथा कंभारीके फलका चूर्ण डालके लेय तो नपुंसकता और विषमज्वर इनका नाश करे ॥

कल्याणघृत।

विडंगमुस्तत्रिफलामंजिष्ठादाडिमोत्पलैः ॥ श्यामैलवालुकैला- निचंदनागरुदारुभिः ॥ बर्हिष्टकुष्टरजनीपर्णिनीसारिवाह्वयैः ॥ हरेणुत्रिवृतादंतीवचातालीसपत्रकैः ॥ बलाविशालाबृहतीमालती- पृष्टिपर्णीभिः ॥ एतैश्च कार्षिकैः कल्कैर्घृतप्रस्थं विपाचयेत् ॥ चतुर्गुणेन पयसा द्विगुणेन जलेन च ॥ एतत्कल्याणकं नाम सर्पिः पक्कं त्रिदोषनुत् ॥ विषमज्वरश्वासकासगुल्मोन्माद- ज्वरापहम् ॥

अर्थ—अब कल्याण घृत कहते हैं—वायविडंग, नागरमोथा, त्रिफला, मँजीठ, अनारदाना, नीलकमल, पीपल, नेत्रवाला, चंदन, काली अगर, देवदारु, सुगंध- धवाला, कूठ, हलदी, दोनो सारिवा, पित्तपापडा, निसोथ, दंती, वच, तालीस- पत्र, खरेटी, इन्द्रायणका गूदा, वडी कटेरी, मालती, पृष्टपर्णी ये प्रत्येक औषध तोले २ भर ले इनका कल्क कर इसमें सेरभर घृत और चार सेर दूध डाले तथा दुगुना जल डालके सिद्ध करे जब घृत मात्र शेष रहे तब उतार लेवै। इस कल्याणघृतके सेवन करनेसे त्रिदोष, विषमज्वर, श्वास, खाँसी, गोला, उन्माद और ज्वर इन रोगोंको नाश करे ॥

कोलादिघृत।

कोलाग्निमंथत्रिफलाक्काथो दध्ना घृतैः पिबेत् ॥
तिल्वकाचूर्णमेतद्धि विषमज्वरनाशनम् ॥

अर्थ-बेर अरनी और त्रिफला इनके काढेमें दही और घृत तथा हिंगोटका चूर्ण डालके घृत सिद्ध करे यह विषमज्वरको दूर करता है॥

अमृतषट्पलघृत।

नागरं चविकाक्षारः पिप्पली मूलचित्रकम् ॥ कृष्णा च पलिकान्भागान्घृतप्रस्थे विपाचयेत् ॥ शृंगवेररसं प्रस्थं मधुप्रस्थं तथैव च ॥ ऐकाहिकं द्व्याहिकं च त्र्याहिकं च चतुर्थकम् ॥ एतान्सर्वज्वरान् हंति स्थूलं च कुरुते भृशम् ॥ दुर्नामश्वासकासघ्नं बलवर्णाग्निवर्धनम् ॥

अर्थ-सोंठ, चव्य, जवाखार, पीपरामूल, चित्रक, पीपर ये प्रत्येक औषध तोले २ लेकर काढा अथवा कल्क करे, उसमें सेरभर घृत और सेरभर अदरखका रस तथा सेरभर शहत डालके सिद्ध करे जब घृतमात्र बाकी रहे तब उतार ले। इसके सेवन करनेसे ऐकाहिक, द्व्याहिक, त्र्याहिक, चातुर्थिक इत्यादि सर्व ज्वरोंका नाश. करे और देहको स्थूल करे एवं बवासीर, श्वास, खांसीको नष्ट करे और बल वर्ण तथा अग्निको बढावे॥

घृतपान।

सर्पिर्दद्यात्कफे मंदे वातपित्तोत्तरे ज्वरे॥
पक्वेषु दोषेष्वमृतं तद्विषोपममन्यथा॥

अर्थ-मंदकफ और वातपित्तोल्बण ऐसे ज्वरवालेको घृत पान करावे, यह पक्व दोषोंमें अमृतके समान तथा अपक्व दोषोंमें विषके समान दुष्टगुण करता है॥

षट्तक्रतैल।

सुवर्चिकानागरकुष्ठमूर्वालाक्षानिशालोहितयष्टिकाभिः॥
तैलं ज्वरे षड्गुणकाथसिद्धमभ्यंजनाच्छीतविदाहनुत्स्यात्॥
दध्ना संसारकं तत्स्यात् षट्तक्रं तैलमुत्तमम्॥

अर्थ-षट्तक्र तेल कहते हैं-तैल १ भाग, तथा सज्जीखार, सोंठ, कूठ, मूर्वा, लाख, हलदी और मंजीठ इनका काढा छः भाग तथा दही एक भाग लेकर तेल सिद्ध करे। इस षट्तक्र तैलकी देहमें मालिश करनेसे दाहको शांत करे। यह विषमज्वरपर अति उत्तम है॥

लाक्षादितैल।

पद्मकोत्पलकह्लारमृणालविषपौष्करैः॥ कुमुदोशीरमंजिष्ठा-

मेयगैरिककट्फलैः । सारिवाद्वयलोध्राब्दक्षीरीखर्जूरमुस्तकैः ॥ धात्रीशतावरीयुक्तैः क्वाथकल्पैः प्रयोजितैः ॥ लाक्षारसपयस्तक्र-मस्तुभिः सह कांजिकैः ॥ पक्वं तैलमिदं त्वच्यं दाहज्वरहरं परम् ॥

अर्थ-पद्माख, कूट, लाल कमलका कंद, अतीस, पुहकरमूल, कमोदनी, खस, मँजीठ, चित्रक, गेरू, कायफल, दोनों सारिवा, लोध, मोथा, क्षीरकाकोली, खजूर, नागरमोथा, आमले और सतावर इनका काढा और कल्क, तथा लाखका सीरा, दहीका तोर और कांजी इन सबको मिलाकर तेल सिद्ध करे। यह त्वचाको हितकारक तथा दाहपूर्वक ज्वरका नाशक है ॥

दूसरा प्रकार ।

लाक्षारसाढके प्रस्थं तैलस्य विपचेद्भिषक् ॥ मस्त्वाढकसमायुक्तं पिष्ट्वा चात्र विनिःक्षिपेत् ॥ शतपुष्पां हरिद्रां च मूर्वां कुष्ठं हरेणुकम् ॥ कटुकं मधुकं रास्ना अश्वगंधा च दारु च ॥ मुस्तकं चंदनं चैव पृथगक्षं समांशकैः ॥ द्रव्यैरेतैस्तु संसिद्धमभ्यंगान्मारुतापहम् ॥ विषमाख्यान् ज्वरान् सर्वानाश्वेव प्रशमं नयेत् ॥ कासं श्वासं प्रतिश्यायं कंडूं दौर्गंध्यमेव वा ॥ त्रिकपृष्ठग्रहं शूलं गात्राणां कुट्टनं तथा ॥ पापालक्ष्मीप्रशमनं सर्वग्रहनिवारणम् ॥ अश्विभ्यां निर्मितं सम्यक्तैलं लाक्षादिकं त्विदम् ॥

अर्थ-२५६ तोले लाखका काढा, ६४ तोले तेल, दहीका तोर २५६ तोले ये सब एकत्र कर उसमें सौंफ, हलदी, मूर्वा, कूठ, पित्तपापडा, कुटकी, महुएके फूल, रास्ना, असगंध, देवदारु, मोथा और चंदन ये प्रत्येक तोले तोले भर लेय सबका कल्क कर पूर्वोक्त लाखके काढे आदिमें मिलाय तेल सिद्ध करे। यह तेल वादी, विषमज्वर, खाँसी, श्वास, पीनस, खुजली, अंगकी दुर्गंधी तथा त्रिकस्थान, पीठ इनका शूल, देहका फडकना, पाप, दुष्टचेष्टा, सर्व ग्रहदोष इनको नाश करे। यह लाक्षादितैल अश्विनीकुमारने निर्माण करा ऐसा जानना ॥

षट्चरणतैल ।

लाक्षामधुकमंजिष्ठामूर्वाचंदनसारिवाः ॥
तैलं षट्चरणं नाम अभ्यंगाज्ज्वरनाशनम् ॥

अर्थ—लाख, महुआ, मँजीठ, मूर्वा, चंदन और सारिवा इनके काढेमें तेलको सिद्ध करे तो यह षट्चरण तैल मालिश करनेसे सर्वज्वरोंको नाश करे ॥

अजादिधूप।

अजायाश्चर्मरोमाणि वचा कुष्ठं पलंकषा ॥
निंबपत्राणि मधु च धूपनं ज्वरनाशनम् ॥

अर्थ—बकरीकी चाँम और बाल, वच, कूठ, गूगल, नीमके पत्ते और शहत इनकी धूनी देनेसे सर्वज्वर नाश होय ॥

वचादिधूप।

वचा हरीतकी सर्पिर्धूपः स्याद्विषमज्वरे ॥

अर्थ—वच, हरड और घी इनकी धूनी विषमज्वरनाशक है ॥

मसुराधूप।

मसुरातूषकैर्धूपः सर्वज्वरगदापहः ॥

अर्थ—मसूरकी भूसीकी धूनी देनेसे सर्व ज्वर दूर हो ॥

सहदेव्यादिधूप।

सहदेवीवचाभद्रानाकुलीभिः प्रधूपनम् ॥
प्रदेहोद्वर्तनं कुर्यादेभिर्वा ज्वरशांतये ॥

अर्थ—सहदेई, वच, हलदी और रास्ना इनकी धूनी देना, अथवा देहमें उबटन करनेसे सर्व ज्वर दूर हो ॥

गुग्गुलादिधूप।

पुरध्यामवचासर्जनिंबार्कागरुदारुभिः ॥
सर्वज्वरहरो धूपः श्रेष्ठोऽयमपराजितः ॥

अर्थ—गूगल, रोहिसतृण, वच, राल, नीमके पत्ते, आकके पत्ते, अगर और दारुहलदी इनकी धूनी सर्वज्वरोंको नष्ट करे है। इसे अपराजित धूप कहते हैं ॥

माहेश्वरधूप।

रुद्रजटा मेषशृंगं बिडालविष्ठोरगस्य निर्मोकः॥ मदनफलभूतकेशौवंशत्वग्रुद्रनिर्माल्यम् ॥ घृतयवमधुरं चंद्रकलाछागलरोमाणि सर्षपाः सवचाः ॥ हिंगुगवाक्षीमरिचाः समभागाश्छागमू-

त्रसंपिष्टाः ॥ धूपनविधिना शमयंत्येते सर्वज्वरान्नियतम् ॥ ग्रह-
शाकिनीपिशाचप्रेतविकारानयं धूपः ॥

अर्थ-शिवलिंगी, गौका सींग, विलावकी विष्ठा, सांपकी कॉचली, मैनफल, जटामांसी, बाँसकी छाल, शिवनिर्माल्य, घृत, जौ, गुड, बावची, बकरीके बाल, सपेद सरसों, वच, हींग, इन्द्रायण और कालीमिरच ये समान भाग ले करके मूत्रमें पीस धूनी देवे तो सर्वज्वर, शाकिनी, पिशाच और प्रेतविकार इनको दूर करे । इसे (माहेश्वर धूप) कहते हैं ॥

सर्पत्वचादिधूप ।

सर्पत्वचासर्षपहिंगुनिंबपत्राण्यमीषां समचूर्णधूपः ॥
विनिग्रहं राक्षसडाकिनीनां करोति रक्षां विषमज्वरस्य ॥

अर्थ-साँपकी काँचली, सरसों, हींग, नीमके पत्ते इनका समान भाग चूर्ण कर धूनी देय तो राक्षस, डाकिनी और विषमज्वरको दूर करे ॥

पलंकषादिधूप ।

पलंकषा निंबपत्रं वचा कुष्ठं हरीतकी ॥
सर्षपाः सयवाः सर्पिर्धूपनं ज्वरनाशनम् ॥

अर्थ-लाख, नीमके पत्ते, वच, कूठ, हरड, सरसों, जौ और घृत इनकी धूनी ज्वरको नाश करे ॥

माहेश्वरधूप ।

कार्पासास्थिमयूरपिच्छबृहतीनिर्माल्यपिंडीतकत्वङ्मांसीविषदं-
शविड्नखवचाकेशाहिनिर्मोचनैः ॥ नागेंद्रद्विजशृंगहिंगुमरिचै-
स्तुल्यं कृतं धूपनं स्कंदोन्मादपिशाचराक्षससुरावेशज्वरघ्नं परम् ॥

अर्थ-बिनोले, मोरपंख, कटेरी, लजालु, मैनलफ, दालचीनी, जटामांसी, बिलावकी विष्ठा, नखसुगंध द्रव्य, वच, मनुष्यके बाल, सॉपकी कॉचली, हाथीदाँत, सींग, हींग और कालीमिरच ये समान भाग लेकर कूट पीस धूनी देवे तो स्कंदग्रहोन्माद, पिशाच, यक्ष, राक्षस और देवताओंका देहमें आना इनको नाश करे ॥

निंबपत्रादिधूप ।

निंबपत्रं वचा कुष्ठं पथ्या सिद्धार्थकं घृतम् ॥
विषमज्वरनाशाय गुग्गुलुश्चेति धूपनम् ॥

अर्थ-नीमके पत्ते, वच, कूठ, हरड, सपेद सरसों, घृत और गूगल इनकी धूनी विषमज्वरको दूर करती है ॥

मार्जारविष्ठाधूप ।

वैडालं वा शकृद्योज्यं वेपमानस्य धूपने ॥

अर्थ-जिसको ज्वरके कारण सरदी लगनेसे काँपता हो उसको बिलावके विष्ठाकी धूनी देवे ॥

सहदेवीमूलिकाबंध ।

श्मशानसहदेव्या वा दूर्वाया वाथ मूलिका ॥
सूत्रेण वेष्टिता बद्धा हस्ते सर्वज्वरापहा ॥

अर्थ-श्मशानमें उत्पन्न हुई सहदेई अथवा दूबकी जडको सूतमें लपेटकर हाथमें बाँधे तो सर्व प्रकारके ज्वर दूर हो ॥

बाँदेबंधन ।

आम्रबंदं विशेषोऽयं करे बद्धा ज्वरं जयेत् ॥ आहरेदनुराधायां
करवीरस्य बन्दकम् ॥ ब्रह्मवृक्षस्य बंदं वा ऋक्षे उत्तरभाद्रके ॥
करे बद्धं ज्वरं हंति सर्वमेतत्पृथक्पृथक् ॥

अर्थ-अनुराधा नक्षत्र, अथवा उत्तराभाद्रपदा नक्षत्रमें आमका अथवा कन्हेर तथा ढाकका बाँदा लाकर हाथमें बाँधे तो सर्व प्रकारके ज्वरोंको दूर करे ॥

उलूकपक्षबंध ।

उलूकदक्षिणं पक्षं सितसूत्रेण वेष्टयेत् ॥
बद्धं वा वामकर्णे तु हरत्यैकाहिकं ज्वरम् ॥

अर्थ-उल्लू (घुघ्घू) का दहना पंख सपेद सूतमें लपेटकर बाँए कानमें बाँधे तो ऐकाहिकज्वर दूर होय ॥

गोपालिकामूलबंध ।

गोपालपत्रिकामूलं सहदेवी बलाथवा ॥
गोजिह्वाविजयामूलं गले बद्धं ज्वरापहम् ॥

अर्थ–गोपालककडी, सहदेई, खरेटी, गोभी और भांग इनमेंसे किसी एककी जडको गलेमें बांधनेसे ज्वर दूर होय ॥

भूतकेशीमूलबंध ।

भूतकेश्याश्च मूलं वा सप्तखंडानि कारयेत् ॥
बंधयेद्रक्तसूत्रेण हस्ते च ज्वरनाशनम् ॥

अर्थ–भूतकेशीकी जडके सात टुकडे कर उनको लाल सूतमें बांधके हाथमें बांधे तो ज्वर दूर होय ॥

निर्गुंडिबंध ।

निर्गुंड्याः सहदेव्यश्च कटौ बद्धं जटाद्वयम् ॥
प्रातरादित्यवारे च सर्वज्वरविनाशकृत् ॥

अर्थ–रविवारको निर्गुंडी और सहदेईकी जडको प्रातःकाल कमरमें बांधे तो सब ज्वरोंको दूर करे ॥

कण्हेरमूलिकाबंध ।

कर्णे बद्धा रवौ श्वेततुरंगरिपुमूलिका ॥
सर्वज्वरहरा श्वेतमंदारस्य च मूलिका ॥

अर्थ–रविवारमें सपेद कनेरकी अथवा सपेद मंदारकी जडको कानमें बांधे तो सर्वज्वरका नाश करे ॥

संततज्वरनिदान ।

सप्ताहं वा दशाहं वा द्वादशाहमथापि वा ॥
संतत्या यो विसर्गी स्यात्संततः स निगद्यते ॥

अर्थ–७, १० अथवा १२ दिन पर्यंत एकसा ज्वर रहे उसको संतत ज्वर कहते हैं । सात, दश और बारह यह जो विकल्प कहा वह अनुक्रम करके वात पित्त और कफ इनके उल्बण करके कहा है । यह संततज्वर त्रिदोषज है, वातादिदोषसे ३, सप्तधातु ७, मूत्र ११, पुरीष (मल) १२ ये बारह वस्तु दुष्ट होनेसे इनसे कोप करके मलका आकर्षण होकर संतत ज्वर होता है यह चरकका मत है ॥

पटोलादिकाढा ।

पटोलेंद्रयवादारुगुडूचीनिंबपल्लवाः ॥

हंति क्वाथो निपीतोऽयं संततं विषमज्वरम् ॥

अर्थ-पटोलपत्र, इन्द्रजौ, देवदारु, गिलोय, नीमके पत्ते इन सबका क्वाथ पीनेसे संतत नाम विषमज्वर दूर होय ॥

दूसरा प्रकार।

पटोलेंद्रयवादारुत्रिफलामुस्तगोस्तनैः ॥ मधुकामृतवासानां क्वाथं क्षौद्रयुतं पिबेत् ॥ संतते सतते चैव द्वितीयकतृतीयके ॥ ऐकाहिके वा विषमे दाहपूर्वे नवज्वरे ॥

अर्थ-पटोलपत्र, इन्द्रजौ, देवदारु, त्रिफला, नागरमोथा, दाख, मुलहटी, गिलोय और अडूसा इनका काढा शहतके साथ पीवे तो संतत, सतत, द्वितीयक, तृतीयक, ऐकाहिक तथा दाहपूर्वक नवीन ज्वरको दूर करे ॥

तीसरा प्रकार।

पटोलाब्दवृषातिक्तासारिवाभिः शृतं जलम् ॥
संतताख्ये ज्वरे देयं वातादीनां निवृत्तये ॥

अर्थ-पटोलपत्र, नागरमोथा, अडूसा, कुटकी, सारिवा इनको जलमें रातको भिगो देवे प्रातःकाल छानके पीवे तो संततादि ज्वर वातादि दूर होवे ॥

चौथा प्रकार।

पटोलेंद्रयवानंतापथ्यारिष्टामृताजलम् ।
क्वथितं तज्जलं पीतं ज्वरं संततकं जयेत् ॥

अर्थ-पटोलपत्र, इन्द्रजौ, धमासा, हरड, नीमकी छाल, गिलोय, नेत्रवाला इनके काढेको पीवे तो संतत ज्वर दूर होवे ॥

आमलक्यादिकाढा।

आमलकीघननागरसिंहीछिन्नलताविहितश्च कषायः ॥
माक्षिकमागधिकापरिमिश्रो हंत्यनिशं संततज्वरमाशु ॥

अर्थ-आमला, नागरमोथा, कटेरी, गिलोय इनके काढेमें शहत और पीपलका चूर्ण डालके पीवे तो अत्यंत निद्रा और संततज्वर दूर होवे ॥

ज्वरभेद।

एकाद्वित्रिचतुर्थः स्याद्विषमोऽन्यस्तु जीर्णकः ॥
एते पंच ज्वराः पीडयंत्येव बहुवासरम् ॥

अर्थ-ऐकाहिक, इकतरा, तिजारी और चौथैया ये चार विषमज्वर और दूसरा जीर्णज्वर ऐसे ये पांच ज्वर बहुत दिनतक पीडा देते हैं ॥

सतत वा अन्येद्युष्कादिकोंके लक्षण निदान।

अहोरात्रे सततकौ द्वौ कालावनुवर्तते ॥ अन्येद्युष्कस्त्वहोरात्र एककालं प्रवर्तते ॥ तृतीयकस्तृतीयेऽह्नि चतुर्थेऽह्नि चतुर्थकः ॥ केचिद्भूताभिषंगोत्थं वदंति विषमज्वरम् ॥

अर्थ-सततज्वर दिनरात्रिमें दो वार आता है, अन्येद्युष्कज्वर दिनरात्रिमें एकवार आता है, तृतीयक (तिजारी) ज्वर आये दिनसे फिर तीसरे दिन आता है और चातुर्थिक ज्वर जिस दिन आता है उसके चौथे दिन आता है और कोई आचार्य इस विषमज्वरको भूताभिषंगोत्थ अर्थात् भूतबाधाजनित कहते हैं ॥

त्रायंत्यादिकाढा।

त्रायंतीकटुकानंतासारिवाभिः शृतं जलम् ॥
सतताख्ये ज्वरे देयं वातादीनां निवृत्तये ॥

अर्थ-त्रायमाण, कुटकी, जवासा, सारिवा इनके काढेको शीतल करके पीनेसे सतत ज्वर दूर होय तथा वातादिरोग दूर हो ॥

पटोलादिकाढा।

पटोलपथ्यापिचुमंदशक्रबीजामृतायासकृतः कषायः ॥
निपीतमात्रः शमयत्युदीर्णं कासादियुक्तं सततं ज्वरं हि ॥

अर्थ-पटोलपत्र, हरड, नीमकी छाल, इन्द्रजौ, गिलोय, जवासा इनका काढा पीतेही खाँसीयुक्त सतत ज्वर दूर होय ॥

द्राक्षादिकाढा।

द्राक्षापटोलनिंबाब्दाशक्राह्वात्रिफलाशृतम् ॥
जलं जंतुः पिबेच्छीघ्रमन्येद्युर्ज्वरशांतये ॥

अर्थ-मुनक्कादाख, पटोलपत्र, नीमकी छाल, नागरमोथा, इन्द्रजौ, त्रिफला इनका काढा अन्येदुष्क (इकतरा) ज्वरको शांति करे ॥

पटोलादिकाढा।

पटोलत्रिफलानिंबद्राक्षाशम्याकवासकैः ॥

क्वाथः सितामधुयुतो जयेदैकाहिकं ज्वरम् ॥

अर्थ-पटोलपत्र, त्रिफला, नीमकी छाल, दाख, अमलतासका गूदा और अडूसा इन आठ औषधोंका काढा शहत मिश्री मिलायके पीवे तो नित्य आनेवाले ज्वरको दूर करे ॥

ब्रह्मदंडीनस्य।

ऐकाहिकं ज्वरं हंति नस्याद्वा गिरिकर्णिका ॥
ब्रह्मदंडीति विख्याता अधःपुष्पी तु नामतः ॥

अर्थ-गिरिकर्णिकाके अथवा ब्रह्मदंडी जिसको अधःपुष्पी कहते हैं उसके रसकी नस्य देनेसे ऐकाहिक ज्वर नाश होय ॥

सर्पाक्षीमूलिकाबंध।

सोमग्रहणवेलायां सर्पाक्षीमभिमंत्रयेत् ॥ शिफां हि कृष्णसूत्रेण वामकर्णे निबंधयेत् ॥ ऐकाहिकं ज्वरं हंति द्व्याहिकं दक्षकर्णके ॥

अर्थ-चंद्रग्रहणके समय सरफोकाको अभिमंत्रण कर विधिसे उखाड उसकी जडको काले सूतसे बाँए कानमें बाँधे तो ऐकाहिक ज्वर जाय, यदि द्व्याहिक ज्वर होय तो दहने कानमें बाँधे तो द्व्याहिकभी दूर हो ॥

ऐकाहिकपर अपामार्गमूलिकाबंधन ।

कन्याकर्तितसूत्रेण बद्धापामार्गमूलिका ॥
ऐकाहिकं ज्वरं हंति शिखायामतिवेगतः ॥

अर्थ-कन्याके हाथसे कते सूतमें ओंगेकी जड लपेट चुटियामें बाँधनेसे ऐकाहिक ज्वर दुर हो ॥

काकमाचीमूलिकाबंधन ।

काकमाच्याश्च मूलं तु कर्णे बद्धं निशि ज्वरम् ॥

अर्थ-जिसको रात्रिमें ज्वर आता होय उसके मकोयकी जडको कन्याके काते हुए सूतसे बाँधे तो आराम होय ॥

सर्पाक्षीतिलक।

श्मशानजातसर्पाक्ष्या रवौ मूलं समुद्धरेत् ॥
घृतैर्घृत्वा ललाटे तु तिलकः स्याद्धि तत्प्रणुत ॥

अर्थ-श्मशानमें उत्पन्न हुई सरफोकेकी जडको रविवारके दिन उखाडकर उसे घीमें सानके ललाटमें तिलक करनेसे ऐकाहिक ज्वर दूर होय ॥

दान।

अंगवंगकलिंगेषु सौराष्ट्रमगधेषु च ॥
वाराणस्यां च यद्दत्तं तत्तदैकाहिके स्मरेत् ॥

अर्थ-अंग, वंग, कलिंग, सौराष्ट्र, मगध और काशीक्षेत्रमें ऐकाहिक ज्वरका स्मरण कर दान देवे तो ऐकाहिक ज्वर दूर हो ॥

तर्पण।

योऽसौ सरस्वतीतीरे अपुत्रस्तापसो मृतः ॥
तस्मै तिलोदकं दद्यान्मुंचेदैकाहिको ज्वरः ॥

अर्थ-जो सरस्वतीके किनारे अपुत्र तपस्वी मरा, उसके अर्थ तिलांजली देनेसे ऐकाहिक ज्वर दूर हो ॥

उलूकपक्षबंध अन्यद्युष्कपर।

उलूकस्योत्तरं पक्षं रक्तसूत्रेण वेष्टयेत् ॥
बद्धं तु दक्षिणे कर्णे द्व्याहिकं वा ज्वरं जयेत् ॥

अर्थ-उलूकके वामपंखको लाल सूतमें लपेट दहने कानमें बांधे तो अन्येद्युष्क तथा द्व्याहिक ज्वरको दूर करे ॥

वासादिकाढा।

वासापटोलत्रिफलाद्राक्षाशम्याकनिंबजः ॥
समधुः सासितः क्काथो हन्याद्वै द्व्याहिकज्वरम् ॥

अर्थ-अडूसा, पटोलपत्र, त्रिफला, मुनक्कादाख, अमलतासका गूदा और नीमकी छाल इनके काढेमें शहत और मिश्री मिलायके पीनेसे द्व्याहिक ज्वर दूर होय ॥

पटोलादिकाढा।

पटोलारिष्टमृद्वीकाशम्याकात्रिफलावृषम् ॥
क्काथ ऐकाहिकं हंति शर्करामधुसंयुतः ॥

अर्थ-पटोलपत्र, नीमकी छाल, दाख, अमलतासका गूदा, त्रिफला और अडूसा इनके काढेमें मिश्री शहत मिलायके पीवे तो ऐकाहिक ज्वर दूर हो ॥

अंजन ।

ऊर्णनाभिस्थजालेन वर्तिं कृत्वा प्रयत्नतः ॥ ज्वालयेत्तिलतैलेन कज्जलं ग्राहयेच्छनैः ॥ अंजयेन्नेत्रयुगलं द्व्याहिकं तु ज्वरं जयेत् ॥

अर्थ-मकडीके जालकी बत्ती बनाय तिलके तेलमें गेर काजल पाडे, उस काजलको दोनों नेत्रोंमें लगावे तो द्व्याहिक ज्वर (इकतरा) दूर हो ॥

ऐकाहिकादिकोंमें हिंगुलयोग ।

म्लेच्छं समं विषं पिष्ट्वा प्रदद्याद्रक्तिकासमम् ॥ ऐकाहिकं द्व्याहिकं वा तृतीयं च चतुर्थकम् ॥ निहन्यान्नात्र संदेहो यथा सूर्योदये तमः ॥

अर्थ-हींगलू और सिंगिया विष ये समान ले एकत्र खरल कर १ रत्ती देय तो ऐकाहिक, द्व्याहिक, त्र्याहिक और चातुर्थिक ज्वरोंको नाश करे ॥

तृतीयकज्वरनिदान ।

कफपित्तात्त्रिकग्राही पृष्ठाद्वातकफात्मकः ।
वातपित्ताच्छिरोग्राही त्रिविधः स्यात्तृतीयकः ॥

अर्थ-कफपित्तात्मक जो तृतीयक ज्वर वह कमर तथा पीठके बांसकी संधिमें उत्पन्न होकर फिर शरीरमें प्रवेश करे है और जो वातकफात्मक तृतीय ज्वर है वह पीठमें उत्पन्न होता है, उसी प्रकार वातपित्तजन्य जो तृतीयज्वर है वह मस्तकमें उत्पन्न हो फिर सब देहमें फैले है इस प्रकार तीन प्रकारका तृतीयकज्वर है ॥

महौषधादिकाढा ।

महौषधामृतामुस्ताचंदनोशीरधान्यकैः ॥
क्वाथस्तृतीयकं हंति शर्करामधुयोजितः ॥

अर्थ-सोंठ, गिलोय, नागरमोथा, लालचंदन, खस और धनिया इनके काढेमें मिश्री और शहत मिलायके देवे तो तृतीयक (तिजारी) ज्वर दूर होय ॥

शिशिरादिकाढा ।

सशिशिरः सघनः समहौषधः सनलदः सकणः सपयोधरः ॥
समधुशर्करः कषायको जयति बालमृगाक्षि तृतीयकम् ॥

अर्थ-हे बालमृगाक्षि! लालचंदन, धनिया, सोंठ, नेत्रवाला, पीपर और नागरमोथा इन औषधोंका काढा करके उसमें शहत और मिश्री मिलायके देवे तो तृतीयक ज्वर दूर हो ॥

उशीरादिकाढा।

उशीरं चंदनं मुस्तं गुडूची धान्यनागरम् ॥ अंभसा क्वथितं पेयं शर्करामधुयोजितम् ॥ ज्वरे तृतीयके पुंसां तृष्णादाहसमन्विते ॥

अर्थ-खस, लालचंदन, नागरमोथा, गिलोय, धनिया और सोंठ इनका काढा करके उसमें शहत और मिश्री मिलायके रोगीको देय तो तृतीयक ज्वर तृषा तथा दाहयुक्त ज्वर इनका नाश होय ॥

शीतभंजीरस।

शीतभंजीरसोऽप्यत्र सानुपानो द्विगुंजकः ॥
मुसलीमारनालेन पीत्वा हंति तृतीयकम् ॥

अर्थ-इस तिजारीके ऊपर (शीतभंजीरस) दो रत्ती अनुपानके साथ देवे अथवा मूसलीको पीस काँजीके साथ देय तो तृतीयकज्वर नाश होय ॥

अपामार्गमूलिकाबंध।

अपामार्गजटा कट्यां लोहितैः सप्ततंतुभिः ॥
बद्धा वारे रवेस्तूर्णं ज्वरं हंति तृतीयकम् ॥

अर्थ-ओंगेकी जड सात लाल डोरेमें लपेट रविवारके दिन कमरमें बाँधे तो तृतीयक ज्वर शीघ्र शांत होय ॥

वाराहीमूलिकाबंध।

वाराहीशिखिकामूलं कर्णबद्धं तृतीयकम् ॥ ज्वरं हंत्यथ बाहुस्थः पक्षस्तूलूकसंभवः ॥ वेष्टयेत्पंचरंगेण सूत्रेणाबंधयेद्गले ॥

अर्थ-विदारीकंदकी गाँठ अथवा जडको अथवा उलूककी पांखको पंचरंगी डोरेमें कसके गलेमें अथवा भुजामें बाँधे तो तिजारी जाती रहे ॥

चातुर्थिकज्वरनिदान।

चातुर्थिको दर्शयाति प्रभावं द्विविधं ज्वरः ॥ जंघाभ्यां श्लैष्मिकः

पूर्वं शिरसोऽनिलसंभवः ॥ विषमज्वर एवान्यश्चातुर्थिकविपर्ययः ॥
स मध्ये ज्वरयत्यह्नि आदावंते च मुंचति ॥

अर्थ-चातुर्थिक (चौथैया) ज्वर अपनी सामर्थ्य दो प्रकारकी दिखाता है जो कफजन्य चातुर्थिक है वह प्रथम पैरोंकी पींडरीसे देहमें फैले है और जो वातजन्य है वह मस्तकमें प्रथम उत्पन्न हो फिर सब देहमें संचार करे है और एक चातुर्थिकका भेद यह है कि आदि अंतके दो दिन छोडके बीचके दो दिनोंमें रोगीको चढे ॥

विषमके सामान्य उपद्रव ।

विषमज्वरस्य ते स्युः पंच साध्या उपद्रवाः ॥ अधिशेते यथा भूमिं
बीजं काले प्ररोहति ॥ अधिशेते तथा धातौ दोषः काले प्रकुप्यति ॥

अर्थ-विषमज्वरके पूर्व कहे हुए पांच उपद्रव औषधादिकसे साध्य जानने जैसे पृथ्वीमें पडे हुए बीज अपने २ समय पर उत्पन्न होते हैं । उसी प्रकार धातुमें वातादिक दोष सूक्ष्मरूपसे रहते हैं, जब काल आता है तब कुपित होते हैं ॥

वेगे तु समतिक्रांते गतोऽयमिति लक्ष्यते ॥
धात्वंतरेषु लीनत्वात्सौक्ष्म्यान्नैवोपलक्ष्यते ॥

अर्थ-ज्वरका वेग शांत होनेपर ज्वर गयासा प्रतीत होता है, परंतु वह ज्वर अन्य धातुके प्रति पहुँचकर सूक्ष्म रूपसे रहता है अत एव दीखता नहीं है ॥

सामान्य चिकित्सा ।

कर्मसाधारणं त्यक्त्वा तृतीयकचतुर्थकौ ॥
भिषजा प्रतिकर्तव्यौ विशेषोक्तचिकित्सितैः ॥

अर्थ-तृतीय और चतुर्थक ज्वरोंकी साधारण क्रिया त्याग कर जो विशेष क्रिया कही है उस क्रियाको करनी चाहिये ॥

दूसरा प्रकार ।

ज्वरस्य वेगकालं च चिंतयन् ज्वर्यते तु यः ॥
तस्येष्टैरद्भुतैर्वापि विषयैर्नाशयेत्स्मृतिम् ॥

अर्थ-जिस रोगीको ज्वरके भयसे (अर्थात् आज मेरी ज्वर आनेकी पाली है सो मुझको ज्वर आवेगा इस कारण) ज्वर आता है उसको इष्टसाधन

अर्थात् जिस वस्तुकी रोगी इच्छा करे वह देना, अथवा कोई अद्भुत साधन करके उसकी उस चिंतवनको दूर करे तो ज्वर अवश्य नाश होय ॥

तीसरा प्रकार।

संततं विषमं वापि क्षीणस्य सुचिरोत्थितम् ॥
ज्वरं संभोजनैः पथ्यैर्ज्वरघ्नैः समुपाचरेत् ॥

अर्थ-संतत, अथवा विषमज्वर क्षीण पुरुषको बहुत दिन आता है उसको उत्तम भोजन, पथ्य ऐसे ज्वरनाशक यत्नोंकरके उपाय करे ॥

वासादिकाढा।

वासाधात्रीस्थिरादारुधान्यानागरसाधितम् ॥
सितामधुयुतं कुर्याच्चातुर्थिकनिवारणम् ॥

अर्थ-अडूसा, आमले, सालपर्णी, देवदारु, धानिया और सोंठ इनका काढा शहत और मिश्री मिलायके पीवे तो चातुर्थिक ज्वर दूर होय ॥

पथ्यादिकाढा।

पथ्यास्थिरानागरदेवदारुधात्रीवृषैरुत्क्वथितः कषायः ॥
सितोपलामाक्षिकसंप्रयुक्तश्चातुर्थिकं हंत्यचिरेण पीतः ॥

अर्थ-हरड, सालपर्णी, सोंठ, देवदारु, आमले और अडूसा इनके काढेको मिश्री और शहत मिलायके पीवे तो शीघ्र चातुर्थिक ज्वरको दूर करे ॥

देवदार्व्यादिकाढा।

देवदारुशिवावासाशालिपर्णीमहौषधैः ॥ धात्रीयुतं शृतं शीतं दद्यान्मधुसितायुतम् ॥ चातुर्थिकज्वरे श्वासे कासे मंदानले तथा ॥

अर्थ-देवदारु, छोटी हरड, अडूसा, सालपर्णी, सोंठ और आमले इन छः औषधोंका काढा शीतल होनेपर उसमें शहत और खांड मिलायके पीवे तो चातुर्थिक ज्वर, श्वास, खाँसी और मंदाग्निको नाश करे ॥

स्थिरादिकाढा ॥

स्थिरासामलकादारुश्रीवेष्टकमहौषधैः ॥ शृतं शीतं जलं दद्या-
त्सितामधुविमिश्रितम् ॥ चातुर्थिके ज्वरे तीव्रे मंदे चैवाथ पावके ॥

अर्थ—सालपर्णी, आमले, देवदारु, सरलवृक्ष और सोंठ इनका काढा करके शीतल होनेपर शहत मिश्री मिलायके पीवे तो तीव्र चातुर्थिकज्वर और मंदाग्निको दूर करे ॥

दुःस्पर्शादिकाढा ।

दुःस्पर्शोशीरसिंहीघनमधुकशिवावाजिविश्वाटरूषाश्छिन्नारेणूकषायः समधुमगधको वापितश्चाष्टमांशम् ॥ दाहं स्वेदं च शोषं कृमिमथ रुधिरं शैत्यमुद्भ्रांतचित्तं श्वासं शूलं च तृष्णां दिननिशि विषमं हंति चातुर्थिकाद्यम् ॥

अर्थ—कटेरीका पंचांग, खस, छोटी कटेरी, महुआ, हरड, असगंध, सोंठ, अडूसा, गिलोय और पित्तपापडा इन औषधोंके काढेमें शहत और पीपलका चूर्ण डालके देवे तो दाह, पसीने, प्यास, कृमिरोग, रुधिरविकार, शीत लगना, भ्रांति, श्वास, शूल, शोष, दिनका ज्वर, रात्रिज्वर और चातुर्थिक आदि ज्वर दूर हो ॥

दार्व्यादिकाढा ।

दार्वीदारुकलिंगलोहितलताशम्याकपाठाशठीशौंडीविश्वकिरातवारणकणात्रायंतिकापद्मकैः ॥ उग्राधान्यकनागराब्दसरलैः शिग्रुत्वगंबूशिवाव्याघ्रीपर्पटदर्भमूलकटुकानंतामृतापौष्करैः ॥ धातुस्थं विषमं त्रिदोषजनितं चैकाहिकं द्व्याहिकं क्वाथो हंति तृतीयकं ज्वरभयं चातुर्थिकं भूतजम् ॥

अर्थ—दारुहलदी, देवदारु, इन्द्रजौ, मजीठ, अमलतासका गूदा, पाढ, कचूर, पीपल, सोंठ, चिरायता, गजपीपल, त्रायमाण, पद्माख, वच, धनिया, अदरख, नागरमोथा, सहँजना, दालचीनी, नेत्रवाला, हरड, कटेरी, पित्तपापडा, कुशाकी जड, कुटकी, धमासा, गिलोय और पुहकरमूल इन औषधोंका काढा करके देवे तो धातुगत ज्वर, विषमज्वर, त्रिदोषज्वर, ऐकाहिक, द्व्याहिक, त्र्याहिक और चातुर्थिक ज्वरको नाश करे ॥

मुस्तादिकाढा ।

मुस्तापाठाशिवाक्काथश्चातुर्थिकज्वरापहः ॥
दुग्धेन त्रिफला पीता हंति चातुर्थिकं ज्वरम् ॥

अर्थ-नागरमोथा, पाढ और आमले इनका काढा अथवा त्रिफलेका चूर्ण दूधसे पीवे तो चातुर्थिक ज्वर दूर होय ॥

बेलफलचूर्ण।

शैलूषमंडनरजो वयसानुरूपशुभ्रांगवत्ससुरभीपयसा निपीतम् ॥
आदित्यवारभवपालिदिने नरेण चातुर्थिकं सुचिरजं जयति क्षणेन ॥

अर्थ-बेलगिरी और मधुमाधवी इनके चूर्णको तरुण और सपेद बछरेवाली गौके दूधसे रविवारके दिन पीवे या जिस दिनकी पाली हो उस दिन पीवे तो बहुत दिनकाभी चातुर्थिक ज्वर क्षणमात्रमें दूर होय ॥

पुनर्नवादुग्धयोग।

सितवर्षाभवो मूलं पयसा पीतं च पैत्तिकं हरति ॥
चातुर्थिकं सुचिरजं तांबूलेनैव भक्षणादथवा ॥

अर्थ-सपेद पुनर्नवाकी जडको दूधके साथ पीवे अथवा बीडेमें धरके खाय तो पुरानाभी चातुर्थिक ज्वर दूर होय ॥

वृषदंशपुरीषादियोग।

वृषदंशपुरीषं च पयसालोड्य पाययेत् ॥
चातुर्थिकस्यागमने नियतं न भविष्यति ॥

अर्थ-बिल्लीकी विष्ठाको दूधमें मिलायके चातुर्थिक आनेके समय पीवे तो निश्चय चातुर्थिक ज्वर दूर हो ॥

शिरीषकल्क।

कल्कः शिरीषपुष्पस्य रजनीद्वयसंयुतः ॥
तस्य सर्पिःसमायोगाज्ज्वरं चातुर्थिकं जयेत् ॥

अर्थ-सिरसके फूल, हलदी और दारुहलदी इनको एकत्र पीसकर कल्क करके उसमें घृत मिलायके देवे तो चातुर्थिक (चौथैया) ज्वरको नष्ट करे ॥

हिंगुनस्य।

चातुर्थिको गच्छति रामठस्य घृतेन जीर्णेन युतस्य नस्यात् ॥
लीलावतीनां नवयौवनानां मुखावलोकादिव साधुभावः ॥

अर्थ-पुराने घृतमें हींग औटायके उस घीकी नस्य देवे उससे चातुर्थिक ज्वर

नाश होयँ। इसमें दृष्टांत है, जैसे तरुण नवयौवना स्त्रीके मुख देखते ही साधुता नष्ट होती है ॥

अगस्तिपत्रनस्य।

अखंडितशरत्कालकलानिधिसमानने ॥
चातुर्थिकहरं नस्यं मुनिद्रुमदलांबुना ॥

अर्थ-हे पूर्णशरत्कालीनचंद्रानने ! अगस्तियाके पत्तोंका रस निकालके उसकी नस्य लेनेसे चातुर्थिक ज्वर दूर होय ॥

उलूकपक्षधूप।

कृष्णांबरे दृढं बद्धो गुग्गुलूलूकपक्षकः ॥
धूपश्चातुर्थिकं हन्यात्तमः सूर्य इवोदितः ॥

अर्थ-काले कपडेमें गूगल और उल्लूकी पंख लपेटके धूनी देवे तो जैसे सूर्यो-दय होतेही अंधकार नष्ट होता है उस प्रकार चातुर्थिक ज्वर नष्ट होय ॥

अपामार्गमूलिकाबंध।

कन्याकर्तितसूत्रेण अपामार्गस्य मूलिका ॥
रवौ बद्धा ज्वरं हंति तृतीयकचतुर्थकम् ॥

अर्थ-कारी कन्याके काते हुए सूतसे ओंगेकी जड बांधके रविवारके दिन ज्वरवालेके हाथमें बाँधनेसे तिजारी और चौथैया ज्वर दूर हो ॥

सहदेवीमूलबंध।

विवस्त्रेण धृता देवीमूलिकाकर्णबंधनात् ॥
चातुर्थिकं ज्वरं हंति द्रोणपुष्पीरसांजनात् ॥

अर्थ-नंगा होकर सहदेईकी जडको उखाड कानमें बांधे तो चातुर्थिक ज्वर दूर हो। तथा गोमाके रसका अंजन करनेसे चातुर्थिक ज्वर दूर हो ॥

काकजंघादिबंध।

काकजंघाबलाश्यामाभृंगराजापमार्गका ॥
एकैकं पुष्ययोगेन बद्धा चातुर्थिकं हरेत् ॥

अर्थ-काकजंघा, खरेटी, पीपल, भांगरा और ओंगा इनमेंसे किसी एककी जड पुष्यनक्षत्रमें उखाडके हाथमें बांधे तो चातुर्थिक ज्वर नष्ट होय ॥

पंचपंचकषाय ।

कालिंगकः पटोलस्य पत्रं च कटुरोहिणी ॥ पटोलं सारिवा मुस्तं पाठा कटुकरोहिणी ॥ निंबः पटोलं त्रिफला मृद्वीका मुस्तवासकौ ॥ किराततिक्तो ह्यमृता चंदनं विश्वभेषजम् ॥ गुडूच्यामलकं मुस्तमर्धश्लोकसमापनाः ॥ कषायाः शमयंत्याशु पंचपंचविधं ज्वरम् ॥

अर्थ-(१) कूडाकी छाल, पटोलपत्र, और कुटकी इनका (२) पटोलपत्र, सारिवा, नागरमोथा पाढ और कुटकी इनका (३) नीमकी छाल, पटोलपत्र, त्रिफला, दाख, नागरमोथा और अडूसा इनका अथवा (४) चिरायता, गिलोय, लालचंदन और सोंठ इनका अथवा (५) गिलोय, आमले, नागरमोथा इनमेंसे किसी एक काढेको पीवे तो पांच प्रकारके ज्वर दूर करे ॥

धातुको शोषण करनेवाला अत्यंत कष्टसाध्य ऐसा विषमज्वर कहते हैं ।

विदग्धेऽन्नरसे देहे श्लेष्मपित्ते व्यवस्थिते ॥
तेनार्धं शीतलं देहमर्धमुष्णं च जायते ॥

अर्थ-शरीरमें अन्न रस दुष्ट होनेसे तथा कफ और पित्त कुपित होनेसे शरीरका अर्ध भाग (कमरके नीचेका भाग अथवा ऊपरका भाग अथवा दहना बांया) कफसे शीतल रहता है और आधा भाग पित्तसे गरम रहता है ॥

काये दुष्टं यदा पित्तं श्लेष्मा चांते व्यवस्थितः ॥
तेनोष्णत्वं शरीरस्य शीतत्वं हस्तपादयोः ॥

अर्थ-जिस समय कोठेके भीतर पित्त दुष्ट होता है और कफ हाथ पैर आदि शाखागत होता है उस समय देह ज्वरसे गरम रहती है और हाथ पैर शीतल होते हैं ॥

काये श्लेष्मा यदा दुष्टः पित्तं चांते व्यवस्थितम् ॥
शीतत्वं तेन गात्राणामुष्णत्वं हस्तपादयोः ॥

अर्थ-जिस समय कोठेके भीतर कफ दुष्ट होय और पित्त हाथ पैरमें प्राप्त हुआ हो उस समय ज्वर आनेसे देह शीतल रहती है और हाथ पैर गरम होते हैं ॥

ऋतेऽनिलान्न विषमो ज्वरः समुपजायते ॥
कफपित्ते हि नष्टे चेच्चेष्टयत्यनिलः सदा ॥

अर्थ-बादीके विना विषमज्वर नहीं होता और कफ तथा पित्त ये नष्ट होनेपर वायु विशेष करके शरीरमें संचार करता है ॥

शीतपूर्वक वा दाहपूर्वक संततादि विषमोंके स्वरूप कहते हैं ।

त्वक्स्थौ श्लेष्मानिलौ शीतमादौ जनयतो ज्वरम् ॥
तयोः प्रशांतयोः पित्तमंते दाहं करोति च ॥

अर्थ-त्वचामें अर्थात् रस धातुमें कफ और वात ये रहकर शीत ज्वरको उत्पन्न करे हैं जब कफ वात शांत हो जाते हैं तत्पश्चात् पित्त दाहको करता है ॥

विषमभेदवातबलासकज्वर ।

नित्यं मंदज्वरो रूक्षः शूनः कृच्छ्रेण सिध्यति ॥
स्तब्धांगः श्लेष्मभूयिष्ठो नरो वातबलासकी ॥

अर्थ-जिस रोगीके अल्पज्वर, रूक्षता, सूजन, देहका भारीपना और अति कफाधिक्य ये लक्षण सर्वकाल हो उसको वातबलासक ज्वर कहते हैं । यह कृच्छ्र-साध्य है ॥

प्रलेपकलक्षण ।

प्रलिंपन्निव गात्राणि श्लेष्मणा गौरवेण च ॥
मंदज्वरो विलेपी च सशीतः स्यात्प्रलेपकः ॥

अर्थ-जिस ज्वरमें देह पसीनोंसे सर्वकाल पुता हुआसा रहे, तथा भारी हो इसी योगसे ज्वर मंद होय, शीत लगे यह ज्वर कफपित्तजन्य है यह राजयक्ष्मा रोगमें होता है इसे प्रलेपक ज्वर कहते हैं ॥

चिकित्सा ।

प्रालेपके प्रयुंजीत श्लेष्मज्वरहरीं क्रियाम् ॥

अर्थ-प्रलेपक ज्वरपर कफज्वरनाशक यत्न करना चाहिये तो इसकी शांति होय ॥

शीतदाहपूर्वकाविषम ।

करोत्यादौ तथा पित्तं त्वक्स्थं दाहमतीव च ॥
तस्मिन्प्रशांते त्वितरौ कुरुतः शीतमंततः ॥

अर्थ-त्वचामें कहिये रक्तधातुमें पित्त स्थित होकर अत्यंत दाहपूर्वक ज्वर उत्पन्न करे जब पित्त शांत हो जावे तब कफ और बादी शीत उत्पन्न करते हैं ॥

दूसरा प्रकार ।

द्वावेतौ दाहशीतादिज्वरौ संसर्गजौ स्मृतौ ॥
दाहपूर्वस्तयोः कष्टः कृच्छ्रसाध्यस्तथेतरः ॥

अर्थ-ये दोनों शीतपूर्वक आर दाहपूर्वक ज्वर त्रिदोष संसर्गज मुनियोंने कहे हैं तिनमें दाहपूर्वक ज्वर अत्यंत दुःसाध्य है और शीतपूर्वक ज्वर कृच्छ्रसाध्य जानना ॥

सामान्यचिकित्सा ।

शीताभिभूते पुरुषे कुर्याच्छीतहरां क्रियाम् ॥
दाहाभिभूते तु विधिं विदध्याद्दाहनाशनम् ॥

अर्थ-शीतज्वर करके रोगीके व्याकुल होनेपर शीतनाशक यत्न करे तथा दाह होनेपर दाहनाशक यत्न वैद्यको करना चाहिये ॥

शीतनाशकक्रिया ।

आच्छादनैर्बहुतरैर्गुरुभिः कंबलादिभिः ॥
तूलवत्या महाशीतं शीतादिज्वरिणो हरेत् ॥

अर्थ-सरदी लगनेवाले ज्वररोगीको बहुत उढाना, बिछाना तथा भारी कंबल, रजाई, तोषक इत्यादि करके शीतका निवारण करे ॥

क्षुद्रादिकाढा शीतपूर्वज्वरपर ।

क्षुद्रानागरमुस्तपर्पटघनाभूनिंबनिंबामृताभार्गीचंदनपुष्कराह्वकुल-
कैस्तिक्ताटरूषान्वितैः ॥ पञ्जास्थेंद्रयवान्वितैश्च रचितः क्वाथो
निपीतः प्रगे शीताद्यं ज्वरमुत्थितं तु विषमं त्रिद्व्येकघस्रोद्भवम् ॥

अर्थ-कटेरी, सोंठ, नागरमोथा, पित्तपापडा, धनिया, चिरायता, नीमकी छाल, गिलोय, भारंगी, लालचंदन, पुहकरमूल, पटोलपत्र, कुटकी, अडूसा, मजीठ और इन्द्रजौ इनका काढा प्रातःकाल देवे तो शीतज्वर, विषमज्वर, ऐकाहिक, द्व्याहिक और त्र्याहिक इत्यादि ज्वरोंको नाश करे ॥

शक्राह्वादिकाढा ।

शक्राह्वदद्रुमवृषामृतानां निर्गुंडिकाभृंगमहौषधानाम् ॥
क्षुद्रायवानीसहितः कषायः शीतज्वरारण्यहिरण्यरेताः ॥

अर्थ-कूडाकी छाल, पमारकी जड, अडूसा, गिलोय, निर्गुंडी, भाँगरा, सोंठ, कटेरी और अजमायन इनका काढा शीतज्वररूप वनके नाश करनेको दावानल रूप है ॥

घनादिकाढा ।

घननिंबमहौषधामृताकटुवार्ताकिपटोलवत्सजैः ॥
विहितं मधुना युतं पिबेत्किल शीतज्वरशांतये शृतम् ॥

अर्थ-नागरमोथा, नीमकी छाल, सोंठ, गिलोय, कटेरी, पटोलपत्र और इन्द्रजौ इनका काढा शहत डालके देवे तो शीतज्वर नाश होय ॥

भद्रादिकाढा ।

भद्राधान्याकशुंठीभिर्गुडूचिमुस्तपद्मकैः ॥ रक्तचंदनभूनिंबपटोलवृषपौष्करैः ॥ कटुकेंद्रयवारिष्टभार्गीपर्पटकैः समम् ॥ क्वाथः प्रातर्निषेवेत सर्वशीतज्वरापहम् ॥

अर्थ-थूहर, धनिया, सोंठ, गिलोय, नागरमोथा, पद्माख, लालचंदन, चिरायता, पटोलपत्र, अडूसा, पुहकरमूल, कुटकी, इन्द्रजौ, नीमकी छाल, भारंगी और पित्तपापडा ये समानभाग लेकर काढा कर प्रातःकाल देनेसे सर्व शीतज्वर दूर हो ॥

दाहपूर्वविषमपर विभीतादि काढा ।

विभीतो व्याधिघातश्च कटुकी त्रिवृताभया ॥
क्वाथो ह्ययं तृषादाहविषमज्वरनाशकृत् ॥

अर्थ-बहेडा, अमलतासका गूदा, कुटकी, निसोथ और हरड इनका काढा तृषा, दाह और विषमज्वरको नाश करे ॥

महाबलादिकाढा ।

महाबलामूलमहौषधाभ्यां क्वाथो निहन्याद्विषमज्वरं हि ॥
शीतं सकंपं परिदाहयुक्तं विनाशयेद्वित्रिदिनप्रयोगात् ॥

अर्थ-खरेटीकी जड और सोंठ इनका काढा शीत, कंप और दाहयुक्त ज्वरको दो तीन दिनमें नाश करे ॥

व्याघ्र्यादिकाढा ।

व्याघ्रीविश्ववितुन्नपुष्कररजोभूनिंबवासामृताभार्गीनिंबपटोल-

पद्मकघनैस्तिक्ताकलिंगैः कृतः ॥ क्वाथो हंति सचंदनः कफमरुत्पित्तं सदाहं तृषां कासं पंचविधं ज्वरं कृमिरुजं पांडुं वमिं कामलाम् ॥

अर्थ-कटेरी, सोंठ, गुडतजी, पुहकरमूल, पित्तपापडा, चिरायता, अडूसा, गिलोय, भारंगी, नीमकी छाल, पटोलपत्र, नागरमोथा, कुटकी, इन्द्रजौ और लालचंदन इनका काढा कफ, वात, पित्त, दाह, प्यास, पांच प्रकारकी खांसी, ज्वर, कृमि, पांडुरोग, वमन और कामला इनको नाश करे ॥

देवतापूजन।

सोमं सानुचरं देवं समातृगणमीश्वरम्।
पूजयन्प्रयतः शीघ्रं मुच्यते विषमज्वरात् ॥

अर्थ-पार्वती तथा पार्वतीके गण मातृगण और प्रमथादि गण इनके साथ शिवकी भक्ति करके पूजा करनेसे रोगी विषमज्वरसे शीघ्र मुक्त हो ॥

दूसरा प्रकार।

विष्णुं सहस्रमूर्धानं चराचरपतिं विभुम् ॥
स्तुवन्नामसहस्रेण ज्वरान्सर्वान्व्यपोहति ॥

अर्थ-अनंतशिरा, तथा चराचरका स्वामी ऐसे विष्णुभगवान्के सहस्र नामका पाठ करनेसे सर्व ज्वर दूर होय ॥

ज्वरपूजा।

तीर्थाध्ययनदेवाग्निगुरुवृद्धोपसर्पणैः ॥
श्रद्धया पूजनैश्चापि सहसा शाम्यति ज्वरः ॥

अर्थ-तीर्थसेवन, वेदपाठ, देव, अग्नि, गुरु, वृद्ध इनकी सेवा भक्ति और पूजन करनेसे विषमज्वर दूर होय ॥

पद्मकादितैल।

पद्मकोत्पलकह्लारमृणालबिसपौष्करैः ॥ कुमुदोशीरमंजिष्ठापद्मगैरिककट्फलैः ॥ सारिवाद्वयलोध्राब्दक्षीरीखर्जूरमुस्तकैः ॥ धात्रीशतावरीयुक्तैः क्वाथे कल्के प्रयोजितैः ॥ द्राक्षारसपयःशुक्तामस्तुभिः सह कांजिकैः ॥ पक्वं तैलमिदं पाच्यं दाहज्वरहरं परम् ॥

अर्थ-कूठ, कमलका कंद, लाल कमलका कंद, खस, पुहकरमूल, कमोदनी,

नेत्रवाला, मँजीठ, पद्माख, गेरू, कायफल, दोनों सारिवा, लोध, मोथा, मोखावृक्षकी छाल, खजूर, नागरमोथा, आमले और शतावर इनका काढा कर इसमें इन्हीं औषधोंका कल्क मिलाय और लाखका सीरा, दूध, विदारीकंदका रस दहीका तोड और काँजी ये प्रत्येक तेलके समान डालके तैल सिद्ध करे इसको देहमें मालिश करनेसे दाहज्वरका नाश करे ॥

माहेश्वरधूप।

जटाधरी गोशृंगं बिडालविष्ठोरगस्य निर्मोकः ॥ मदनफलभूतकेशी वंशत्वग्रुद्रनिर्माल्यम् ॥ घृतयवमयूरचंद्रच्छगलकलोमानि सर्षपाः सवचाः ॥ हिंगुगवास्थिमरीचाः समभागाच्छागमूत्रसंपिष्टाः ॥ धूपनविधिना शमयंत्येते सर्वान् ज्वरान्नियतम् ॥ ग्रहडाकिनीपिशाचप्रेतविकारानयं धूपः ॥

अर्थ–ईश्वरी, गौका सींग, बिलावकी विष्ठा, साँपकी काँचली, मैनफल, भूतकेशी, बांसकी छाल, शिवनिर्माल्य, घी, जौ, मोरकी चंद्रिका, बकरीके बाल, सपेद सरसों, वच, हींग, गौका हाड और काली मिरच, सब समान भाग लेकर बकरीके मूत्रसे पीसे इसकी धूनी देनेसे यह सर्व ज्वरोंको, ग्रहपीडाको, डाकिनी, पिशाच और प्रेतबाधा इन सबको दूर करे ॥

गोजिह्वादिचूर्ण।

गोजिह्वा च जयामूलं पिष्ट्वा तंडुलवारिणा ॥
पीतं शीतज्वरं हंति पाठाद्भिर्मरिचानि च ॥

अर्थ–गोभी और जयाकी जड इनको चावलके पानीसे पीसकर पीवे अथवा पाढके काढेमें काली मिरच डालके पीवे तो शीतज्वर नष्ट होय ॥

जीरकादिचूर्ण।

जीरकं लशुनं व्योषं पाठा पिष्ट्वोष्णवारिणा ॥
शीतज्वरस्यागमने पिबेद्गुडयुतेन च ॥

अर्थ–जीरा, लहसन, त्रिकुटा, पाढ और गुड इनको गरम जलके साथ पीवे तो शीतज्वर दूर हो। प्रथम इन औषधोंको पीसके कल्क कर लेवे फिर गुड मिलावे ॥

त्रपुसभक्षण।

त्रपुसं भक्षयित्वाग्रे तक्रमम्लं पिबेदनु ॥ ततो हुताशं सेवेत प्रावृतो

वातपे स्फुटम् ॥ ततः प्रस्विद्य सर्वांगं याति शीतज्वरः क्षयम् ॥

अर्थ-खीरा खायकर ऊपरसे खट्टी छॉछ पीवे फिर अग्निसे तापे अथवा धूपमें ओढकर बैठे तो सर्व देहमें पसीने आकर शीतज्वर दूर होय ॥

कायस्थादिधूपलेपन व तैल।

कायस्थानाकुलीतिक्तावयस्थापुरचोरकैः ॥ सहदेवीवचाकुष्ठैः शीतघ्नैर्धूपलेपनैः ॥ एतैरेवौषधैः पिष्टैर्लवणक्षारसंयुतैः ॥ साम्लैर्विपाचितं तैलमभ्यंगाच्छीतनाशनम् ॥

अर्थ-तुलसी, रास्ना, कुटकी, दारुहलदी, गूगल, गठोना, सहदेवी, वच और कूठ इनकी धूनी अथवा लेप करे अथवा इस औषधोंका कल्क और सैंधा निमक जवाखार और नींवका रस डालके तेल सिद्ध करे। इसकी मालिश करनेसे शीतज्वर दूर हो ॥

मृतकर्पटकधूप।

मृतकर्पटधूपेन सद्यः शीतज्वरं जयेत् ॥

अर्थ-मुरदेके कपडेकी धूनी देनेसे शीतज्वर तत्काल दूर होय ॥

जयामूलीबंध।

जयामूलं शिरोबद्धं हंति शीतज्वरं ध्रुवम् ॥ किंवा गुंडफलामूलं कर्णे बद्धं निशि ज्वरम् ॥ शीतज्वरं हरेत्तूर्णमथवाम्रस्य मूलकम् ॥ शिखायां च करे बद्धं हंति चोष्णज्वरं द्रुतम् ॥

अर्थ-अरनीकी जडको मस्तकमें बाँधनेसे निश्चय शीतज्वर दूर हो अथवा वंदालकी जडको कानमें बाँधे तो रात्रिमें आनेवाले ज्वर नाश होय तथा आमकी जडको चोटीमें अथवा हाथमें बाँधे तो उष्णज्वरका तत्काल नाश होय ॥

बांदाबंधनम्।

ऋक्षे पुनर्वसौ ग्राह्यं मंदारस्य तु वृंदकम् ॥
तद्दक्षिणकरे बद्धं शीतज्वरविनाशनम् ॥

अर्थ-पुनर्वसु नक्षत्रमें मंदारका बंदा लायके दाहने हाथमें बांधे तो शीतज्वर अवश्य नष्ट होय ॥

कांतालिंगन।

चेतोमुषां पीनपयोधराणां कस्तूरिकाचंदनचर्चितानाम् ॥ शीत-

ज्वरे शस्तमथांगनानामालिंगनं चारु हिमावधि स्यात् ॥

अर्थ-चित्तको हर्ष देनेवाली, पुष्टस्तनी, तरुण और कस्तूरी देहमें लगी हुई ऐसी स्त्रियोंका आलिंगन जबतक शीत दूर न होय तबतक करे ॥

दूरीकरण।

कांतांगसंगसंजातात्तस्य शीते निवारिते ॥
प्रह्लादं चास्य विज्ञाय पृथक्कां कारयेत्स्त्रियम् ॥

अर्थ-स्त्रीके आलिंगन करनेसे जब शीत चला जाय और जब जाने कि रोगीको आनंद हुआ अब मैथुन करेगा तभी स्त्रीको दूर कर देवे अन्यथा मैथुन करनेसे विषमज्वर हो जाता है ॥

रसोनकल्क।

रसोनकल्कं तैलेन सर्पिषा वा तिलैरपि ॥
सेवितं विषमं हंति वातश्लेष्मागदानपि ॥

अर्थ-लहसनका तथा तिलोंका कल्क घृतसे अथवा तेलसे सेवन करे तो विषमज्वर और वातश्लेष्मसंबंधी ज्वर नाश होय ॥

रास्नादिकाढा।

रास्नानागरकृष्णां च कल्कमुष्णांबुना पिबेत् ॥
श्वासकासाग्निमांद्यं च ज्वरं शीतं विनाशयेत् ॥

अर्थ-रास्ना, सोंठ और पीपल इनका कल्क करके गरम जलसे देय तो खांसी, श्वास, मंदाग्नि और शीतज्वर इनका नाश करे ॥

भूतभैरवचूर्ण।

तालकं शुक्तिकाचूर्णं तुल्यं तत्रोभयोरपि ॥ नवमांशं तु तुत्थं स्यान्मर्दयेत्कन्यकाद्रवैः ॥ तत्तु संशुष्कमुपलैर्वन्यैर्गजपुटे पचेत् ॥ शीतं तत्पेषयेच्चूर्णं गुंजामात्रं सितायुतम् ॥ प्रभाते भक्षयेत्तेन याति शीतज्वरः क्षयम् ॥ वांतिर्भवति कस्यापि कस्यापि न भवत्यपि ॥ एकेन दिवसेनैव शीतज्वरहरं परम् ॥ मध्याह्नसमये पथ्यं भक्तं शिखरिणी तथा ॥

अर्थ-हरताल, सीपका चूर्ण दोनों बराबर ले इन दोनोंका नववां भाग

लीलाथोथा लेवे सबको घीगुवारके रसमें खरल करे जब सूख जावे तब गज-पुटमें धरके फूंक देवे जब शीतल होजाय तब निकालके खरल कर डारे और १ रत्ती रस मिश्रीके साथ प्रातःकाल देवे तो शीतज्वर एक दिनमें दूर होय। जब दो प्रहर हो जावे तब भात और सिखरनका भोजन करावे। इस औषधसे किसीको वमन होती है और किसीको नहीं होती॥

पथ्यादिचूर्ण।

पथ्याशक्रशताचूर्णकर्षमात्रं गुडेन तु॥
भक्षितं नाशयत्याशु शीतकं विषमज्वरम्॥

अर्थ-हरड और इन्द्रजौ इनका तोले भर चूर्ण गुडके साथ खाय तो शीतज्वर तत्काल दूर होवे॥

हरिद्रादिचूर्ण।

हरिद्रा निंबमात्रापि पिप्पल्या मरिचानि च॥ भद्रमुस्तविडंगानि सप्तमं विश्वभेषजम्॥ सैंधवं चित्रकं कुष्ठं विषपाठा हरीतकी॥ एतानि समभागानि अजामूत्रेण पेषयेत्॥ नावनांजनपानेषु गोमूत्रासृग्रसांजनैः॥ जयेत्प्रयुक्तं विषमं ज्वरमाशु निकृंतति॥ सर्वजं समधुव्योषं गवां मूत्रेण शीतलम्॥ मधुना शीतकं देयं रक्तपित्तं वृषस्यता॥ क्षयं क्षीराश्वगंधाभ्यां कासश्वासादितान् गदान्॥ तक्रादि ग्रहणीरोगान्कृच्छ्रं तण्डुलवारिणा॥ प्रमेहं मधुना गुल्मशूलं च गुडवारिणा॥ पीतमुष्णांभसा वातं शूलस्याल्लेपनाद्रुजात्॥

अर्थ-हलदी, नीमके पत्ते, पीपल, काली मिरच, नागरमोथा, वायविडंग, सोंठ, सैंधानिमक, चीता, कूठ, पाढ और हरड ये समान भाग लेकर बकरीके मूत्रसे पीसे इस चूर्णको गोमूत्रसे नस्य देवे, रक्तमें अंजन करावे और रसोतके साथ पान करे तो विषमज्वर जाय और सन्निपातमें शहत तथा त्रिकुटाके साथ, शीतज्वरमें गोमूत्र अथवा शहतसे देवे, रक्तपित्तमें अडूसेके साथ, क्षय, खाँसी श्वास इनमें दूध तथा असगंधके चूर्णके साथ, संग्रहणीमें छाँछके साथ, मूत्रकृच्छ्रमें चावलोंके धोवनके पानीके साथ, प्रमेहमें शहतके साथ, गोला और शूल इनमें गुडके पानीके साथ, बादीके रोगमें गरम जलके साथ तथा शूलमें अदरखके रसके साथ देवे तो उक्त रोगोंको दूर करे॥

आरोग्यरागीरस ।

रसो गंधकणामूलं वंशजं जयपालकम् ॥ व्योषं च बाणलवणं बिडं चंद्रलवं क्षिपेत् ॥ तांबूलरसतो मर्द्य दिनं तांबूलपत्रयुक् ॥ दत्तो नवज्वरं हंति तापे शीतक्रियोचिता ॥ सर्वज्वरे सन्निपाते दद्देत्तं तु द्विगुंजकम् ॥ आरोग्यरागिनामायं रसः परमदुर्लभः ॥

अर्थ—पारा, गंधक, पीपरामूल, वंशलोचन, जमालगोटा, सोंठ, मिरच, पीपर, पाँचों निमक और बिड ये सब एक २ भाग एकत्र कर पानके रसमें एक दिन खरल कर २ रत्तीकी गोली करे एक गोली दो पानमें धरके देय तो यह (आरोग्यरागी रस) पूर्णज्वर तथा संनिपात इनका नाश करे । यह रस अत्यंत दुर्लभ है ॥

शीतांकुश ।

तुत्थं टंकणसूतखर्परविषं स्याद्गंधकं तालकं सर्वं खल्वतले विमर्द्य घटिकांतं कारवेल्लीरसैः ॥ गुंजैका गुटिका सशर्करयुता संजीरके- णाथवा एकाद्वित्रिचतुर्थशीतहरणाच्छीतांकुशो नामतः ॥

अर्थ—लीलाथोथा, सुहागा, पारा, खपरिया, विष, गंधक और हरताल इन सबको करेलेके रससे घडीभर खरल कर रत्तीभरकी गोली बनावे, एक गोली मिश्रीके साथ अथवा जीरेके साथ देवे तो यह (शीतांकुश) रस ऐकाहिक, द्व्याहिक, त्र्याहिक और चातुर्थिक ज्वरोंका नाश करे ॥

तालकादिशीतारिरस ।

तालकखर्परमूषकयुग्मं कांचनपल्लवरसेन घृष्टम् ।
मर्दय मर्दय पुनरपि मर्दय शीतभयादिनिवारणगुटिका ॥

अर्थ—हरताल, खपरिया तथा छोटी बडी दोनों मूषाकर्णी इनको धतूरेके पत्तोंके रसमें खरल कर गुटिका बनावे इसके सेवन करनेसे शीतज्वर दूर हो ॥

दूसरा प्रकार ।

पिष्ट्वा तालकमेकभागममलं शंबूकचूर्णं क्षिपेद्दत्वा चाथ नवांश- तोऽपि च शिखिग्रीवं पुनः पेषयेत्॥ कौमारीरसमर्दितं गजपुटे पाकं

च शीतं ततो गृह्णीयादथ गुंजया ज्वरहरं खंडेन संयोजयेत् ॥ एकद्वित्रिभवं चतुर्थकमयं वेलाज्वरं नाशयेच्छीतारिश्च पलायते ज्वरमिमं भानुं यथा शर्वरी ॥

अर्थ-हरताल १ भाग, शंखकी भस्म और लीलाथोथा नवमांश इन तीनोंका चूर्ण घीगुवारके रसमें खरल कर गजपुटमें फूंक देवे, जब शीतल हो जाय तब निकालके १ रत्ती यह रस खांडके साथ देवे तो ऐकाहिक, द्व्याहिक, त्र्याहिक, चातुर्थिक और वेलाज्वर इनका नाश होय । इसको शीतारिरस कहते हैं । इसके देतेही ज्वर दूर हो जैसे सूर्यके उदयसे रात्रि ॥

तीसरा प्रकार ।

मनःशिलातालकतुत्थताम्ररसेन गंधं समकर्षभागम् ॥ संमर्दये-त्त्रिफलारसेन गोलं न्यसेत्संपुटके प्रदद्यात् ॥ पुटांततोद्धृत्य च भानुवज्रीदुग्धेन भाव्यः किल सप्तवारम् ॥ क्काथेन दंतीत्रिवृतो-द्भवेन विभावनाः सप्त पुनः प्रदेयाः ॥ ततोऽस्य माषं मरिचैः शतार्धैर्गद्याणमात्रेण गुडेन युक्तम् ॥ संभक्षयेद्वा तुलसीदलाभ्यां दिनत्रयं पथ्यमितोदनं च ॥ शीतारिनामा रस एष हंति शीत-ज्वरं घोरतरं सवातम् ॥

अर्थ-मनसिल, हरताल, लीलाथोथा, ताम्रभस्म, पारा, गंधक ये सब समान भाग ले त्रिफलेके रसमें खरल कर गोला बनाय उसपर कपड मिट्टी कर गजपुटमें फूंक देवे, फिर निकालके आक, थूहर इनके रसकी सात २ भावना दे फिर दंती, निसोथ इनके काढेकी सात २ भावना देकर मासेभरकी गोली बनाय ले, एक गोली तुलसीके रसमें पचास कालीमिरचका चूर्ण छः मासे और गुड इनके साथ देवे और तीन दिन पथ्य तथा अल्पभोजन करे तो यह (शीतारिनामा) रस घोर शीतज्वरको नाश करे ॥

चौथा प्रकार ।

रसं गंधं च दरदं जेपालं क्रमवर्धितम् ॥ दंतीरसेन संपिष्य वटी गुंजामिता कृता ॥ प्रभाते सितया सार्धं भक्षिता शीतवारिणा ॥ एकेन दिवसेनैव शीतज्वरमपोहति ॥

अर्थ-पारा १ भाग, गंधक २ भाग, हिंगुल ३ भाग और जमालगोटा चार भाग ले दंतीके रसमें खरल कर रत्तीभरकी गोली करे। इस गोलीको प्रातःकाल मिश्री और शीतल जलके साथ लेवे तो यह (शीतारि रस) जीर्ण ज्वरका नाश करे ॥

भूतभैरवरस ।

एककर्षं भवेत्तालं द्विकर्षं तुत्थकं भवेत् ॥ षट्कर्षं भृष्टशुक्तीनां चूर्णमेकत्र कारयेत् ॥ धत्तूरपत्रस्वरसैर्मर्दयेद्याममात्रकम् ॥ निधाय भाजने लौहे संमर्द्य क्रमशो बुधः ॥ उपर्यग्रेः स्थापयित्वा तच्च संशोषयेद्भिषक् ॥ पुनः पर्युषितं प्रातर्गृहीत्वा किंचिदग्नितः ॥ कोष्णं कृत्वा कल्कमेतत्ततो वैद्यः प्रसाधितः॥ चणकप्रमितां दद्यादेकां शर्करया सह ॥ शीतज्वरं निहंत्येव सर्वं नास्त्यत्र संशयः ॥

अर्थ-हरताल १ तोला, लीलाथोथा २ तोले, सींपकी भस्म ६ तोले, सबको एकत्र कर धतूरेके पत्तोंके रसमें लोहेके पात्रमें प्रहरभर खरल करे फिर उसको चूल्हेपर चढायके घोटे जब रस सूख जाय तब उसमें नींबूका रस दे प्रातःकाल अग्निपर कुछ गरम कर धतूरेका रस डालके सिद्ध करे और इसकी चनेके प्रमाण गोली बनावे। एक गोली मिश्रीके साथ देय तो यह (भूतभैरव रस) सर्व शीतज्वरोंको निःसंदेह नाश करे ॥

दाहपूर्वपर शीतोपचार ।

एरंडस्य तु पत्राणि लिप्त्वा भूमौ निधापयेत् ॥ दाहादिज्वरिणो देहे तानि पत्राणि धारयेत् ॥ तेन नश्यति दाहोऽस्य ज्वरश्चैवोपशाम्यति ॥ दाहे शांते यदा शैत्यं तच्च युक्त्या निवारयेत् ॥

अर्थ-अंडके पत्ते लिपी हुई पृथ्वीमें बिछायदे जब शीतल होजावे तब, दाहज्वरवाले रोगीके देहपर लगावे तो उसका दाह शांत हो और ज्वरभी नष्ट हो। जब दाह शांत होजावे और शीत लगे तो उसको वैद्य युक्तिपूर्वक अपनी बुद्धिसे दूर करे ॥

दाहपर स्त्रीका आलिंगन ।

जघनचक्रचलन्मणिमेखला सरसचंदनचंद्रविलेपना ॥
वनलतेव तरुं परिवेष्टयेत्प्रबलदाहनिपीडितमंगना ॥

अर्थ-प्रबलदाहसे पीडित रोगीको जिसके कमरमें कोंधनी बजतीहो, तथा जिसने सुगंध, चंदन और कपूर अंगमें लगाय रक्खा हो ऐसी स्त्री जैसे वेल वृक्षसे लपटती है इस प्रकार आलिंगन करे तो दाह शांत हो ॥

स्त्रीदूरीकरण।

तदंगसंगसंजातैः शैत्यैर्दाहे निवारिते ॥
प्रह्लादं चास्य विज्ञाय तां स्त्रीमपनयेत्पुनः ॥

अर्थ-जब स्त्रीके आलिंगन करनेसे दाह जाता रहे और रोगीको हर्ष हो तब उस स्त्रीको शीघ्र उसके पाससे हटाय लेवे ॥

शीतोपचार।

उत्तानसुप्तस्य गभीरताम्रकांस्यादिपात्रं प्रणिधाय नाभौ ॥
तत्रांबुधारा बहुला पतंती निहंति दाहं त्वरितं सुशीतम् ॥

अर्थ-दाहवाले पुरुषको चित्त (सीधा) लिटायकर उसकी नाभीपर तामेका अथवा कांसेका पात्र धरके उसमें शीतल पानीकी धार दिवावे इस प्रकार शीतल धारासे तत्काल दाह दूर होय ॥

दाहपर षट्तक्रतैल।

सुवर्चिकानागरकुष्ठमूर्वालाक्षानिशालोहितयष्टिकाभिः ॥
सिद्धं हरेत्षड्गुणतक्रपक्कं तैलं ज्वरं दाहसमन्वितं च ॥

अर्थ-सज्जीखार, सोंठ, कूठ, मूर्वा, लाख, हलदी, पतंग और मुलहटी इनके काढेमें तेल तथा तेलसे छः गुना दहीका जल डालके सिद्ध करे जब तेल मात्र रहे तब उतारके इस तेलकी मालिश करे तो दाहयुक्त ज्वरको शांत करे ॥

महाषट्कतैल।

रास्नानागरकुष्टचंदननिशायष्ट्याह्वकृष्णाबलालाक्षासैंधवसारिवा-
मधुरसादेवद्रुरोहीतकैः ॥ सोशीरांबुधिफेनरोहिषजलैस्तैलं पचे-
त्षड्गुणे तक्रे तच्छमयेज्ज्वरं दृढतरं दाहादिशीतादिकम् ॥

अर्थ-रास्ना, सोंठ, कूठ, लालचंदन, हलदी, मुलहटी, पीपल, खरेटी, लाख, सैंधानिमक, सारिवा, मूर्वा, देवदारु, लालरोहिडा, नेत्रवाला, समुद्रफेन और रोहिसतृण इनके काढेमें तेल और तेलसे छः गुनी छॉछ मिलाय तेल सिद्ध करे। यह तेल दाहपूर्वक तथा शीतपूर्वक ज्वरका शमन करे ॥

अंगारतैल ।

मूर्वा लाक्षा हरिद्रे द्वे मांजिष्ठा सेंद्रवारुणी ॥ बृहती सैंधवं कुष्ठं रास्ना मांसी शतावरी ॥ आरनालाढके चैव तैलप्रस्थं विपाचयेत् ॥ तैलमंगारकं नाम सर्वज्वरविमोक्षणम् ॥

अर्थ-मूर्वा, लाख, हलदी, दारुहलदी, मॅजीठ, इन्द्रायनका गूदा, कटेरी, सैंधानिमक, कूठ, रास्ना, जटामांसी और सतावर इनका काढा और कांजी २५६ तोले लेय, तथा तेल १ सेर सबको एकत्र कर तेल सिद्ध करे । इसकी मालिश करनेसे सर्व ज्वरोंका नाश करे । इसे अंगारक तेल कहते हैं ॥

रसादिधातुगतज्वरलक्षण ।

गुरुता हृदयोत्क्लेदसदनं छर्द्यरोचकौ ॥
रसस्थे तु ज्वरे लिंगं दैन्यं चास्योपजायते ॥

अर्थ-रसधातुगतज्वर होनेसे देहमें भारीपना, हृदयस्थ दोष उलटी द्वारा निकल पडनेसे प्रतीत हो, देहके सब अवयवोंमें ग्लानि, वमन, अरुचि और उदासपना ये लक्षण होते हैं ॥

रसरक्तगतज्वरकी चिकित्सा ।

रसस्थे च ज्वरे तस्मिन्कुर्याद्वमनलंघनम् ॥

अर्थ-रसधातुगतज्वर होनेसे वमन और लंघन कराने चाहिये ॥

धातुगतज्वरचिकित्साप्रक्रिया ।

रसस्थे रससंशुद्धी रक्तस्थे रक्तमोक्षणम् ॥ मांसस्थे रेचनं शस्तं मेदस्थे च सहिष्णुता ॥ रेचनं वमनं स्वेदं चास्थिस्थे स्वेदमर्दनम् ॥ मज्जाशुक्राशयं दृष्ट्वा तमसाध्यं ज्वरं जयेत् ॥

अर्थ-रसधातुगतज्वर होनेसे पसीने निकालना और रक्तधातुगतज्वर होनेसे फस्त खोलना, मांसधातुगतज्वर होनेसे उसमें दस्त कराना आर मेदधातुगतज्वर होनेसे कोई वस्तु सहन नहीं होती परंतु रेचन, वमन और पसीने निकालना यह क्रिया करावे । अस्थिगतज्वर होनेसे पसीने निकाले और मर्दन करावे, मज्जा और शुक्रधातुगतज्वर होनेसे असाध्य जानना इनका यत्न नहीं है ॥

रक्तधातुगतज्वरलक्षण ।

रक्तनिष्ठीवनं दाहो मोहश्छर्दनविभ्रमः ॥

प्रलापः पिटिका तृष्णा रक्तप्राप्ते ज्वरे नृणाम् ॥

अर्थ-रुधिर मिला थूके, देहमें दाह, मोह, भ्रम, असंबद्ध भाषण, वमन, देहमें फुंसी और प्यास ये रक्तधातुगतज्वरके लक्षण जानने ॥

गायत्र्यादिकाढा।

गायत्रीत्रिफलानिंबपटोलीवासकामृता ॥
क्वाथो मधुघृताभ्यां च रक्तदोषेऽतिशस्यते ॥

अर्थ-खैर, त्रिफला, नीमकी छाल, पटोलपत्र, अडूसा और गिलोय इनका काढा शहत और घी डालके देय तो यह रक्तदोष पर अति उत्तम है ॥

वराप्यजादिकाढा।

वराप्यजाजीबृहतीहरिद्रावेण्वाटरूषप्रभवः कषायः ॥
जहाति दूरं मधुना विमिश्रितो रक्तोद्भवं दारुणमूर्तिवेगम् ॥

अर्थ-त्रिफला, अजमायन, कटेरी, हलदी, रेणुकाबीज और अडूसा इसमें शहत डालके पीवे तो रुधिरसे उत्पन्न हुआ दारुणज्वरका नाश करे ॥

वृषादिकाढा।

वृषो दुरालभा श्यामा पर्पटः कटुरोहिणी ॥ किरातमथ चैतेषां क्वाथः पीतः सितायुतः ॥ रक्तोद्भवं महादाहं तृष्णां मूर्छां मतिभ्रमम् ॥ पित्तज्वरं हरत्याशु पापमीशो यथा स्मृतः ॥

अर्थ-अडूसा, धमासा, पीपल, पित्तपापडा, कुटकी और चिरायता इनका काढा शहत मिलायके देवे तो रक्ताश्रित ज्वर, दाह, तृषा, मूर्च्छा, मतिभ्रंश और पित्तज्वर ये दूर हो, जैसे परमात्माके स्मरणसे पाप दूर होते हैं ॥

रक्तगतचिकित्साक्रम।

सेकसंशमनालेपरक्तमोक्षस्त्वसृग्गते ॥

अर्थ-रक्तगतज्वर होनेसे देह पर पानीका तरडा देना, ज्वरशमनकर्त्ता औषध लेना, लेप करना और रुधिर निकलवाना ये उपचार कराने चाहिये ॥

मांसगतज्वरलक्षण।

पिंडिकोद्वेष्टनं तृष्णा सृष्टमूत्रपुरीषता ॥
ऊष्मांतर्दाहविक्षेपो ग्लानिः स्यान्मांसगे ज्वरे ॥

अर्थ-जानुके नीचे मांसकी गांठ हो, प्यास लगे, मलमूत्र ये बहुत हों, गरमी तथा अंतर्दाह हो, हाथ पैर अस्तव्यस्त हलें, शरीरमें ग्लानि आवे इत्यादिक मांसगतज्वरके लक्षण होते हैं ॥

मांसगतज्वरचिकित्सा।

तीक्ष्णान् विरेकांश्च तथा कुर्यान्मांसगते ज्वरे ॥

अर्थ-मांसमें ज्वर चलागया होवे तो तीक्ष्ण (तेज) जुलाब देय ॥

मेदगतज्वरलक्षण।

भृशं स्वेदस्तृषा मूर्छा प्रलापश्छर्दिरेव च ॥
दौर्गंध्यारोचकौ ग्लानिर्मेदस्थे चासहिष्णुता ॥

अर्थ-अंगमें अत्यंत पसीने, प्यास, मूर्च्छा और बकवाद, वमन, अंगमें दुर्गंधि, अरुचि और ग्लानि तथा अल्प कारणसे बहुत दुःख हो ये मेदगत ज्वरके लक्षण जानने ॥

अस्थिगतज्वरलक्षण।

मेदोस्थ्नां कूजनं श्वासो विरेकश्छर्दिरेव च ॥
विक्षेपणं च गात्राणां विद्यादस्थिगते ज्वरे ॥

अर्थ-हाडोंमें पीडा, तथा हाडोंका बोलना, श्वास, दस्त होना, वमन और हाथ पैरोंका इधर उधर गिरना इत्यादि लक्षण अस्थिगतज्वरके जानने ॥

चिकित्सा।

अस्थित्वे वांतिनाशनम् ॥ बस्तिकर्म प्रयोक्तव्यमभ्यंगोद्वर्तनं तथा ॥

अर्थ-अस्थिगतज्वर होनेसे वांतिनाशक औषध, बस्तिकर्म, अभ्यंग और उबटना ये उपचार करने चाहिये ॥

मज्जागतज्वरलक्षण।

तमःप्रवेशनं हिक्का कासः शैत्यं वमिस्तथा ॥
अंतर्दाहो महाश्वासो मर्मछेदश्च मज्जगे ॥

अर्थ-अंधकार दर्शन, हिचकी, खाँसी, शीत लगना, वमन, देहके भीतर दाह, महाश्वास और अंडकोश, ललाट, हृदय, नेत्र इन मर्मस्थानोंमें अत्यंत व्यथा होय ये मज्जागतज्वरके लक्षण जानने ॥

मज्जाशुक्रगतज्वर।

मज्जाशुक्रे क्रिया नोक्ता मरणं तत्र भाषितम् ॥

अर्थ–मज्जागत तथा शुक्रगतज्वरका कोई यत्न नहीं कहा यदि मज्जा और शुक्रमें ज्वर पहुँच जाय तो रोगी अवश्य मरे ॥

शुक्रगतज्वरलक्षण।

शेफसः स्तब्धता मोक्षः शुक्रस्य तु विशेषतः ॥
मरणं प्राप्नुयात्तत्र शुक्रस्थानगते ज्वरे ॥

अर्थ–शुक्रस्थानमें ज्वर पहुँचनेसे लिंगेन्द्री जकडीसी होजावे और वीर्य क्षण क्षणमें बहुत गिरे ऐसा रोगी मरजावे ॥

रसादिधातुसंबंधसे साध्यासाध्य।

रसरक्ताश्रितः साध्यो मांसमेदगतश्च यः ॥
अस्थिमज्जागतस्थोऽपि शुक्रस्थोऽपि न जीवति ॥

अर्थ–रस, रुधिर, मांस, मेद इन धातुओंमें ज्वर पहुँचनेसे औषधोंकर साध्य होय, हड्डी और मज्जागतज्वर दुःसाध्य है तथा शुक्रगतज्वर होनेसे रोगी मरणको प्राप्त हो ॥

प्राकृत व वैकृतज्वर।

वर्षाशरद्वसंतेषु वाताद्यैः प्राकृतः क्रमात् ॥
वैकृतोऽन्यः सुदुःसाध्यः प्राकृतश्चानिलोद्भवः ॥

अर्थ–वर्षा, शरद् और वसंत इनमें क्रम करके वातादि करके ज्वर उत्पन्न होय वह (प्राकृतज्वर) जानना और अन्यऋतुमें उत्पन्न होनेवाले ज्वरको (वैकृत) जानना जैसे वर्षाकालमें वातज्वर, शरत्कालमें पित्तज्वर और वसंतकालमें कफज्वर ये प्राकृत हैं, एवं वर्षा कालमें पित्तज्वर, शरत्कालमें कफज्वर, वसंतकालमें वातज्वर ये वैकृत दुःसाध्य जानना और प्राकृत वातज्वर दुःसाध्य है तथा प्राकृत पित्तज्वर सुसाध्य है ॥

प्राकृतज्वरकी उत्पत्तिक्रम कहते हैं।

वर्षासु मारुतो दुष्टः पित्तश्लेष्मान्वितो ज्वरम् ॥ कुर्याच्च पित्तं शरदि तस्य चानुबलः कफः ॥ तत्प्रकृत्या विसर्गाच्च तत्र नान-शनाद्भयम् ॥ कफो वसंते तमपि वातपित्तं भवेदनु ॥

अर्थ–ग्रीष्मऋतुमें संचित वायु वर्षाकालमें कुपित हो पित्तकफयुक्त होकर ज्वर उत्पन्न करता है, उसी प्रकारका वर्षाकालमें संचित पित्त शरत्कालमें दुष्ट हो ज्वरको करे है उसका सहायकर्ता कफ है, उस ज्वरमें कफपित्तके स्वभाव करके और विसर्ग काल होनेके कारण लंघन करानेसे भय नहीं रहता है, उसी प्रकार हेमंतकालमें संचित कफ वसंतकालमें ज्वर उत्पन्न करता है उसके वात पित्त ये सहायकर्ता जानने ॥

काले यथास्वं सर्वेषां प्रवृत्तिर्वृद्धिरेव वा ॥
निदानोक्तोनुपशयो विपरीतोपशायिता ॥

अर्थ–काल जैसे दोषोंको उत्पन्न कर बढानेवाला है उसी प्रकार उपशयानुपशयभी हैं तहां दोषोंके बढानेवाले जो आहार विहारादि आचार अनुपशय अर्थात् उससे पीडा होती है और दोषोंका नाश करनेवाले जो आहारादि आचार उपशय कहिये इसके द्वारा सुख होता है ॥

अंतर्वेगज्वरके लक्षण ।

अंतर्दाहोऽधिका तृष्णा प्रलापः श्वसनं भ्रमः ॥ संध्यस्थिशूलम-स्वेदो दोषवर्चोविनिग्रहः ॥ अंतर्वेगस्य लिंगानि ज्वरस्यैतानि लक्षयेत् ॥

अर्थ–अंतर्दाह, अत्यंत तृषा, बकवाद करना, श्वास, भ्रम, संधि और हड्डी इनमें पीडा, पसीने आवे तथा अधोवायु और मलका अच्छी तरह न उतरना ये अंतर्वेग ज्वरके लक्षण हैं, यह असाध्य है ॥

बहिर्वेगज्वरलक्षण ।

संतापो ह्यधिको बाह्यस्तृष्णादीनां च मार्दवम् ॥
बहिर्वेगस्य लिंगानि सुखसाध्यत्वमेव च ॥

अर्थ–देहमें अत्यंत संताप और तृष्णादिक लक्षण अल्प हो ये बहिर्वेग ज्वरके लक्षण जानने, यह सुसाध्य है, इसके कहनेसे यह सिद्ध हुआ कि उक्त अंतर्वेग ज्वर असाध्य है ॥

आमाशयगतज्वरलक्षण ।

लालाप्रसेकहृल्लासहृदयाशुध्यरोचकाः ॥ तंद्रालस्याविपाका-स्यवैरस्यं गुरुगात्रता ॥ क्षुन्नाशो बहुमूत्रत्वं स्तब्धता बलवान्

ज्वरः ॥ आमज्वरस्य चिह्नानि न दद्यात्तत्र भेषजम् ॥ भेषजं ह्यामदोषस्य भूयो जनयति ज्वरम् ॥ शोधनं शमनीयं च करोति विषमज्वरम् ॥

अर्थ-लारका गिरना, ओकारी आनेकीसी भ्रांति, छाती भरीसी प्रतीति हो, अन्नद्वेष, अरुचि, तंद्रा, आलस्य, अन्न पचे नहीं, मुख बेरस हो, देहमें भारीपना, क्षुधा न लगे, वारंवार मूत्रका उतरना, अंगोंका जिकडना, तथा अंगोंमें अधिक ज्वर होना ये अपक्व ज्वरके लक्षण जानने । इस ज्वरपर औषध नहीं देनी, अपक्व दोषोंमें औषध देनेसे ज्वरकी वृद्धि होती है, शोधन अथवा शमन औषध देनेसे विषमज्वर करे है ॥

कटुक्यादिकाढा ।

कटुका रोहिणी मुस्ता पिप्पलीमूलमेव च ॥
हरीतकी ततो तोयमामाशयगते ज्वरे ॥

अर्थ-कुटकी, नागरमोथा, पीपलामूल और छोटी हरड इनका काढा देनेसे आमाशयगतज्वर नाश होवे ॥

सर्वेश्वररस ।

रसाद्द्विगुणितं गंधं चतुर्भागं तु टंकणम् ॥ तथाष्टभागं जैपालं त्र्यहं संमर्दयेद्दृढम् ॥ वल्लो नवज्वरं हंति रसः सर्वेश्वराभिधः ॥ वल्लद्वयं हरीतक्या युक्तं वातज्वरे तथा ॥ द्विवल्लो मधुखंडेन पीतः क्षौद्रयुतः कफम् ॥ गुंजा जीर्णज्वरं घोरमतिलंघितजं तथा ॥ वल्लस्तु सूतिकारोगे पिप्पलीमधुसंयुतः ॥ पंचवर्षस्थबालस्य यवमात्रो ज्वरं जयेत् ॥ गुंजाभिवृद्ध्या विषयान्यावच्चातुर्थिकानपि ॥ मलखंडेन संयुक्तो हन्याज्ज्वरत्रयं तथा ॥ यवानीक्रिमिशत्रुभ्यां वल्लो हन्यात्कृमीनपि ॥ एवं सर्वगदान्हंति रसो भैरवभाषितम् ॥

अर्थ-पारा १ भाग, गंधक २ भाग, सुहागा ४ भाग और जमालगोटा ८ भाग ये सब एकत्र कर तीन दिन खरल करे यह सर्वेश्वर रस नवज्वरको नाश करे, हरडके साथ वातज्वरमें देय, दो वल्लके अनुमान शहत और मिश्रीके साथ कफमें देय, १ रत्ती जीर्णज्वरमें देय और पीपल तथा शहतके साथ ३ रत्ती

प्रसूतके रोगमें देय और पांच वर्षके बालकके ज्वरमें यवमात्र देवे, यह २ रत्तीकी वृद्धिसे विषमज्वरमें देवे तो चातुर्थिक आदिका नाश करे तथा सपेद मिश्रीके साथ ज्वरत्रयका नाश करे तथा ३ रत्ती अजवायन, तथा वायविडंगके साथ देनेसे कृमिरोग दूर हो, इस प्रकार यह सर्वरोगोंको नाश करे है ऐसा भैरवका वाक्य है ॥

त्रिपूरभैरवरस ।

विषटंकं बलिम्लेच्छदंतिबीजं क्रमाद्बहु ॥ दंत्यबुमर्दितो यामं रसस्त्रिपुरभैरवः ॥ वल्लव्योषेण चार्द्रस्य रसेन सितयाथवा ॥ दत्तो नवज्वरं हंति मांद्यमानिलशोथहा ॥ हंति शूलं सविष्टंभमर्शांसि कृमिजान्गदान् ॥ पथ्यं तक्रेण भुंजीत रसेऽस्मिन्रोगहारिणि ॥

अर्थ–बच्छनागविष १ तोला, गंधक, ताम्रभस्म और जमालगोटा ये समान भाग लेवे इनको दंतीके रसमें प्रहरमात्र खरल करे इसको (त्रिपुरभैरव) रस कहते हैं । यह तीन रत्ती सोंठ, मिरच और पीपल, अदरखका रस, अथवा मिश्री इनमेंसे किसी एकके साथ भक्षण करे तो नवज्वर, मंदाग्नि, वातशोथ, शूल, मलका रुकना, बवासीर और कृमिसे होनेवाले रोग इनको नाश करे । इसपर छाँछ भातका पथ्य देना चाहिये ॥

रत्नगिरि ।

सूताभ्रताम्रवर्णानि गंधश्चार्धांशलोहकम् ॥ लोहार्धं मृतवैक्रांतं मर्दयेद्भृंगजैर्द्रवैः॥ पर्पटीरसवत्पाच्यं चूर्णितं भावयेच्छनैः ॥ शिग्रुवासकानिर्गुंडीगुडूच्याग्न्याग्निभृंगजैः ॥ क्षुद्रामुंडीजयंत्याथ मुनिब्राह्म्यथ तिक्तकैः ॥ कन्यायाश्च द्रवैर्भाव्यं त्रिवारं तु पृथक्पृथक् ॥ तत्तो लघुपुटे पक्कं स्वांगशीतं समुद्धरेत् ॥ माषो दत्तः कणाधान्ययुक्तश्चाभिनवज्वरम् ॥ कुर्याज्ज्वरविनिर्मुक्तं रोगिणं घटिकाद्वयात् ॥ अयं रत्नगिरिर्नाम रसोऽयं योगवाहकः ॥ मुद्गान्नं मुद्गयूषं वा समीरं तक्रभुक्तकम् ॥ रसे चोक्तं पथ्यमस्मिञ्छाकं सर्वज्वरोदितम् ॥

अर्थ–पारा, अभ्रक, ताम्र, सुवर्ण और गंधक समान ले गंधकसे आधा लोहभस्म और लोहसे आधा वैक्रांतभस्म ले सबको एकत्र कर भाँगरेके रसमें खरल कर पर्पटीरसके समान पचाय पर्पटी करे फिर इसका चूर्ण कर सहिंजना,

अडूसा, सह्माँलू, गिलोय, त्रिफला, चीता, भाँगरा, कटेरी, गोरखमुंडी, अरनी, अगस्तिया, ब्राह्मी, चिरायता और घीगुवार प्रत्येक रसकी तीन २ भावना पृथक् २ देके फिर इसको लघुपुटमें धरके फूंक देवे, जब स्वांगशीतल हो जाय तब निकालके धर रखे इसमेंसे ६ रत्ती पीपल और धनियेके साथ देवे तो नवीन ज्वर दो घडीमें दूर हो। इस रसको (रत्नगिरि) कहते हैं। इसको जिस औषधके योगसे देवे उसी उसी रोगको दूर करे। इसके ऊपर मूंग अथवा मूंगका यूष, पवन, छाँछ और जो जो ज्वररोगमें शाक देने पथ्य कहे हैं वे देने चाहिये ॥

नवज्वरेभसिंह।

शुद्धसूतं तथा गंधं लोहं ताम्रं च सीसकम् ॥ मरीचं पिप्पली विश्वं समभागानि चूर्णयेत् ॥ अर्धभागं विषं दत्त्वा मर्दयेद्रासरद्वयम् ॥ शृंगवेरानुपानेन दद्याद्गुंजाद्वयं भिषक् ॥ नवज्वरे महाघोरे वातसंग्रहणीगदे ॥ नवज्वरेभसिंहोऽयं सर्वरोगे प्रशस्यते ॥

अर्थ-शुद्ध पारा, गंधक, लोहभस्म, सीसा, काली मिरच, पीपल और सोंठ सब समान भाग लेवे, पारेसे आधा विष शुद्ध डाले, सबको एकत्र कर अदरखके रससे दो दिन खरल करे फिर दो रत्तीकी गोली करे, इसको अदरखके रसके साथ घोर नवीन ज्वरमें और वातसंग्रहणीमें देवे। यह (नवज्वरेभसिंहरस) सर्व रोगमें देना चाहिये ॥

ज्वरघ्नीवटिका।

एकभागो रसः शुद्धः शैलेयः पिप्पली शिवा ॥ आकारकरभो गंधः कटुतैलेन शोधितः ॥ फलानि चेंद्रवारुण्याश्चतुर्भागमिता अमी ॥ एकत्र मर्दयेच्चूर्णमिंद्रवारुणिकारसैः ॥ माषोन्मिता वटी कृत्वा दद्यात्सद्योज्वरे बुधः ॥ छिन्नारसानुपानेन ज्वरघ्नीवटिका मता ॥

अर्थ-शुद्ध पारा १ भाग और शिलाजीत, पीपर, हरड, अकरकरा, सरसोंके तेलमें शुद्ध करी हुई गंधक और इन्द्रायनके फलका गूदा, प्रत्येक चार २ भाग लेकर इन्द्रायनकेही रसमें खरल करे पश्चात् १ मासेकी गोली बनावे एक गोली गिलोयके रससे देवे तो नवीन ज्वर दूर हो। इसे ज्वरघ्नी गुटिका कहते हैं ॥

विश्वतापहरण ।

सूतं शुल्बं त्रिवृताबलितिक्ता दंतीबीजं चपला विषातिंदु ॥ पथ्यया सह विचूर्ण्य समांशं मेहवारिसहितं दिनमेकम् ॥ वल्लयुग्मगुटिकार्द्रकतोयैर्नाशयेदभिनवज्वरमाशु ॥ विश्वतापहरणोऽत्र च पथ्यं मुद्गयूषसहितं लघुमुक्तम् ॥

अर्थ—पारा, ताम्रभस्म, निशोथ, गंधक, कुटकी, जमालगोटा, पीपर, विष, कुचला और हरड ये समान भाग लेकर उनको धतूरेके रसमें १ दिन खरल कर ६ रत्तीकी गोली करे । १ गोली अदरखके रससे देवे तो नवीन ज्वरका नाश करे। इस विश्वतापहरण रसपर मूंगकी दाल और हलका अन्न देवे ॥

श्वासकुठाररस ।

सूतं गंधं विषं चैव टंकणं च मनःशिला ॥ एतानि टंकमात्राणि मरिचं त्वष्टटंककम् । कटुत्रयं च षट्टंकं खल्वे क्षिप्त्वा विचूर्णयेत् ॥ रसः श्वासकुठारोऽयं श्वाससर्वज्वरापहः ॥

अर्थ—पारा, गंधक, विष, सुहागा और मनसिल ये प्रत्येक समान भाग लेवे और काली मिरच एक औषधसे आठ गुनी लेय, तथा सोंठ, काली मिरच, पीपल ये छः छः भाग ले, सबको खरल कर बारीक चूर्ण करे । यह श्वासकुठार श्वास और सर्वज्वर इनका नाश करे ॥

उदकमंजरीरस ।

सूतो गंधश्चोषणं टंकणं च सर्वैस्तुल्या शर्करा मत्स्यपित्तैः ॥ भूयो भूयो मर्दयेत्तं त्रिरात्रं वल्लो देयः शृंगवेरद्रवेण ॥ तापे शीतं वीजनैस्तक्रभक्तं वृंताकाढ्यं पथ्यमेतत्प्रविष्टम् ॥ अह्नैवैकेनोग्रं हंति सद्योज्वरं तु पित्ताधिक्ये मूर्ध्नि तोयं च दद्यात् ॥

अर्थ—पारा, गंधक, काली मिरच और सुहागा ये समान भाग ले तथा सबकी बराबर मिश्री मिलाय सबको मछलीके पित्तेसे ३ दिन खरल करे जब बराबर तीन दिन हो चुके तब ३ रत्तीकी गोली बनावे, एक गोली अदरखके रससे देय यदि इसके खानेसे दाह होय तो पंखेकी पवन करे, छाँछ, भात, बैंगनका शाक ये पथ्यमें देवे इस प्रकार करनेसे एक दिनमें नवीन ज्वर दूर

होय । यदि पित्त अधिक उपद्रव करे तो उस रोगीके मस्तक पर शीतल जलका तरडा देवे ॥

ज्वरधूमकेतुरस ।

जह्यात्समं सूतसमुद्रफेनं हिंगूलगंधं परिमर्द्य यामम् ॥
नवज्वरे वल्लयुगं त्रिपक्षमार्द्राम्भसायं ज्वरधूमकेतुः ॥

अर्थ–पारा, गंधक, समुद्रफेन और हिंगुल इनको अदरखके रससे प्रहरभर खरल कर ६ रत्तीकी गोली बनावे । १ गोली अदरखके रससे ३ दिन देवे तो नव ज्वरको नाश करे, इसको ज्वरधूमकेतु रस कहते हैं ॥

वटिका ।

रसं गंधं च दरदं जैपालं क्रमवर्द्धितम् ॥ दंतीरसेन संपिष्य वटी गुंजामिता कृता ॥ प्रभाते सितया सार्धमशिता शीतवारिणा ॥ एकेन दिवसेनैषा नवज्वरहरा भवेत् ॥

अर्थ–पारा १ भाग, गंधक २ भाग, हिंगुल ३ भाग, जमालगोटा ४ भाग इस प्रकार लेकर दंतीके रससे खरल कर रत्तीभरकी गोली बनावे इसको प्रातःकाल शीतलजल और मिश्रीके साथ सेवन करे तो एक दिनमें नवज्वरका नाश करे ॥

दूसरी वटी ।

रसो गंधो विषं शुंठी पिप्पली मरिचानि च ॥ पथ्यं विभीतकं धात्री दंतीबीजं च शोधितम् ॥ चूर्णमेषां समांशानां द्रोणपुष्पी-रसैर्भवेत् ॥ वटीं माषनिभां कुर्याद्भक्षयेन्नूतनज्वरे ॥

अर्थ–पारा, गंधक, विष, सोंठ, पीपर, काली मिरच, हरड, आमला और शुद्ध जमालगोटा ये समान भाग ले चूर्ण करे फिर गोमाके रसमें खरल कर उडदके बराबर गोली बनावे, इसके खानेसे नवीन ज्वर दूर हो ॥

ज्वरांकुश ।

खंडितं हारिणं शृंगं ज्वालमुख्या रसैः समम् ॥ रुद्ध्वा भांडे पचे-च्चुल्ल्यां यामयुग्मं ततो नयेत् ॥ अष्टांशं त्रिकटुं दद्यान्निष्कमात्रं च भक्षयेत् ॥ नागवल्ल्या रसैः सार्धं वातपित्तज्वरापहम् ॥ अयं ज्वरांकुशो नाम रसः सर्वज्वरापहः ॥

अर्थ–हिरणके सींगके बारिक टुकडे कर किसी पात्रमें रखके ज्वालामुखीके रसको उसमें डाल उसके मुखपर दूसरा छोटा पात्र उलटा रखके ऊपर मिट्टी कर देवे, चूल्हेपर रखके दो प्रहरतक अग्नि देवे, जब शीतल होजावे तब उन टुकडोंकी भस्म बाहर निकाल लेवे फिर इस भस्मका आंठवाँ भाग सोंठ, मिरच, पीपल इनका चूर्ण करके उस भस्ममें मिलाय देवे फिर इस भस्मको १ टंकके अनुमान नागरवेल पानके रससे खाय तो यह ज्वरांकुश संपूर्ण ज्वरोंको दूर करे परंतु बहुधा वातपित्त ज्वरको दूर करे ॥

नवज्वरेभांकुश ।

सगंधटंकं रसमूषणं च विमर्दितं भावय मीनपित्तैः ॥ दिनत्रयं वल्लयुगं प्रदद्याद्वृंताकतक्रौदनपथ्यमत्र ॥ नवज्वरेभांकुशनामधेयः क्षणेन घर्मोद्गममातनोति ॥

अर्थ–गंधक, सुहागा, पारा और काली मिरच इनको मछलीके पित्तेमें तीन दिन खरल करे ४ रत्ती रोगीको देय पथ्यमें बैंगन, छाछ भात देवे । यह क्षणभरमें पसीने उत्पन्न करता है ॥

अमृतकलानिधि ।

अमृतवराटिकमरिचैर्द्विपंचनवमांशकैः कुर्यात् ॥
मुद्गप्रमाणवटिका ज्वरपित्तकफाग्निमांद्यहारी स्यात् ॥

अर्थ–बच्छनाग विष दो भाग, कौडीकी भस्म ५ भाग, काली मिरच ९ भाग लेकर खरल करे, इस रसकी मूंगके प्रमाण गोली बनावे तो ज्वर, पित्त, कफ और मंदाग्नि इनको दूर करे ॥

पंचामृतरस ।

स्वर्णरौप्यरविनागलोहकं चंद्रद्दक्शिखिचतुःशरभागम् ॥ मर्दितं दृढतरं दिनमेकं भावितं मकरपित्तरसेन ॥ वल्लयुग्ममखिलज्वरशांत्यै शर्करार्द्रकरसेन ददीत ॥

अर्थ–सोनेकी भस्म १ भाग, रूपेकी भस्म २ भाग, ताम्रभस्म ३ भाग, शीशेकी भस्म ४ भाग और लोहेकी भस्म ५ भाग ले ये सब एकत्र कर मगरके पित्तेकी भावना देकर ४ रत्तीकी गोली बनावे इनको मिश्री और अदरखके रससे १ गोली देवे तो संपूर्णज्वर दूर हो ॥

जीर्णज्वरांकुश।

मृतं सूताभ्रनागार्ककांतं वैक्रांतमेव च ॥ हिंगुलं टंकणं गंधविषं कुष्ठं समांशकम् ॥ त्रिकटुत्रिफलामुस्ताभृंगनिर्गुंडिकाद्रवैः ॥ भावयेत्त्रिदिनं चैव माषमात्रानुपानतः ॥ जीर्णज्वरं क्षयं कासं दोषान्मंदानलं तथा ॥ पांडुं हलीमकं गुल्ममुदरं चार्दितं जयेत् ॥ ग्रहणीं शूलरोगांश्च अरोचकमनेकधा ॥ कांतिं तेजो बलं पुष्टिं वीर्यवृद्धिं विवर्द्धयेत् ॥ साध्यासाध्यं निहंत्याशु रसो जीर्णज्वरांकुशः ॥

अर्थ-पारेकी भस्म, अभ्रकभस्म, शीशेकी भस्म, ताम्रभस्म, कांतलोहभस्म, वैक्रांतकी भस्म, हिंगुल, सुहागा, गंधक, विष और कूठ ये औषध समान भाग लेकर सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आमला और नागरमोथा इनके काढेमें तथा भाँगरा, निर्गुंडी इनके रसमें तीन दिन भावना देवे और यथायोग्य अनुपानके साथ देवे तो यह जीर्णज्वर, क्षय, खाँसी, त्रिदोष, मंदाग्नि, पांडुरोग, हलीमक, गोला, उदररोग, आर्दितवायु, संग्रहणी, शूल और सर्व प्रकारकी अरुचि इनका नाश करे तथा कांति, तेज, बल पुष्टि और वीर्यवृद्धि इनको बढावे, एवं यह जीर्णज्वरांकुश रस साध्य अथवा असाध्य रोगोंको नाश करे है॥

पच्यमानज्वरलक्षण।

ज्वरवेगोऽधिका तृष्णा प्रलापः श्वसनं भ्रमः ॥
मलप्रवृत्तिरुत्क्लेदः पच्यमानस्य लक्षणम् ॥

अर्थ-ज्वरका अधिक वेग, प्यास, प्रलाप, श्वास, भ्रम, मलका उतरना और उत्क्लेश ये पच्यमान ज्वरके लक्षण हैं ॥

निरामज्वरलक्षण।

क्षुत्क्षामता लघुत्वं च गात्राणां ज्वरमार्दवम् ॥
दोषप्रवृत्तिरुत्साहो निरामज्वरलक्षणम् ॥

अर्थ-क्षुधाका लगना, देहमें हलकापना, ज्वरका नम्र होना, दोषोंकी प्रवृत्ति और उत्साहका होना ये निरामज्वरके लक्षण हैं ॥

ग्रंथांतरोक्तजीर्णज्वरनिदान।

त्रिःसप्ताहे व्यतीते तु ज्वरो यस्तनुतां गतः ॥
प्लीहाग्निमांद्यं कुरुते स जीर्णज्वर उच्यते ॥

अर्थ-इक्कीस दिन व्यतीत होनेपर जो ज्वर देहमें बारीक होकर रहे और तापतिल्ली मंदाग्निको करे उसे जीर्ण (पुराना) ज्वर कहते हैं ॥

सामान्यचिकित्साशास्त्रार्थ ।

जीर्णज्वरी नरः कुर्यान्नोपवासं कदाचन ॥
लंघनात्स भवेत्क्षीणो ज्वरस्तु स्याद्बली यतः ॥

अर्थ-जीर्णज्वरवाला मनुष्य लंघन कदाचित् न करे कारण कि लंघन करनेसे रोगी क्षीण होजाता है और ज्वर बलवान् हो जाता है ॥

लंघन ।

पुराणेऽपि ज्वरे दोषा यद्यपथ्यैः पुनस्तथा ॥
लंघयेत्तत्र तं पश्चात्पूर्ववत्कारयेत्क्रियाम् ॥

अर्थ-यदि जीर्णज्वरमें अपथ्यके करनेसे दोष कुपित हुए होय तो उस जीर्णज्वरवालेको लंघन करावे जब लंघन करके क्षीण दोष होजावे फिर पूर्व प्रमाण क्रिया करावे ॥

ज्वरक्षीणको वांतिनिषेध ।

ज्वरक्षीणस्य न हितं वमनं न विरेचनम् ॥
कामं तु पायसं तस्य निरूहैर्वा हरेन्मलान् ॥

अर्थ-जो मनुष्य ज्वरसे क्षीण है उसको वमन और विरेचन सर्वथा अहित है उसको यथेच्छ दूध पिलावे अथवा निरूहण बस्ती करके उसके मलको निकाले ॥

ज्वर फेर आनेका कारण ।

आवर्तते गात्रसादे वैवर्ण्ये मंगलादिषु ॥
शांतज्वरोऽप्यसाध्यः स्यादनुबंधभयान्नरः ॥

अर्थ-अंगोंका रहजाना, विवर्णता इत्यादि विकार करके अथवा अमंगलादिकोंके देखनेसे शांत ज्वरभी फिर लौटकरके आता है ॥

वातजीर्णज्वर ।

ज्वरोष्मणा ज्वरे जीर्णे वायुः कुप्यति रूक्षिते ॥
घृतं संशमनं तस्य दीप्तस्येवांबु वेश्मनः ॥

अर्थ-जीर्णज्वरकी गरमीसे देह रूक्ष होनेसे वायुका कोप होता है उसकी शांति होनेके वास्ते घृतपान योग्य है जैसे फूंकते हुए घरमें पानीका डालना ॥

जीर्णज्वरमें पक्काशयाश्रित दोषकी चिकित्सा ।

जीर्णज्वरेषु सर्वेषु दोषे पक्काशयाश्रिते ॥
स्नेहबस्तिः प्रकर्तव्यः सनिरूढो यथाविधि ॥

अर्थ-संपूर्ण जीर्णज्वरमें दोष पक्काशयाश्रित होनेसे स्नेहबस्ती, अथवा यथाविधि निरूहण बस्ती करनी चाहिये ॥

छिन्नादिकाढा ।

पिप्पलीचूर्णसंयुक्तः क्वाथश्छिन्नोद्भवोद्भवः ॥
जीर्णज्वरकफध्वंसी पंचमूलकृतोऽथवा ॥

अर्थ-कुटकीके काढेमें पीपलका चूर्ण डालके पीवे तो जीर्णज्वर और कफको नष्ट करे अथवा पंचमूलका काढा करके पीवे तो जीर्णज्वर और कफ दूर हो ॥

त्रिकंटकादिकाढा ।

निदिग्धिकानागरकामृतानां क्वाथं पिबेन्मिश्रितपिप्पलीकम् ॥
जीर्णज्वरारोचककासशूलश्वासाग्निमांद्यार्दितपीनसेषु ॥
हंत्यूर्ध्वजानयं प्रायः सायं तेनोपयुज्यते ॥

अर्थ-कटेरीका पंचांग, सोंठ, गिलोय इनके काढेमें पीपलका चूर्ण मिलायके पीवे तो जीर्णज्वर, अरुचि, खांसी, शूल, श्वास, मंदाग्नि, आर्दितवायु, पीनस तथा ऊर्ध्वविकार इनका नाश करे, यह काढा सायंकालको देवे ॥

गुडूचीकाढा ।

अमृतायाः कषायं तु शीतलीकृतमीरितम् ॥
मधुपादयुतं पीतं जीर्णज्वरहरं परम् ॥

अर्थ-गिलोयका काढा करके शीतल होनेपर उसमें चतुर्थांश शहत मिलायके पीवे तो जीर्णज्वर दूर हो ॥

द्राक्षादि अष्टादशांगकाढा ।

द्राक्षामृता शठी शृंगी मुस्तकं रक्तचंदनम् ॥ नागरं कटुका पाठा भूनिंबः सदुरालभः ॥ उशीरं धान्यकं पद्मं वालकं कंटकारिका ॥ पुष्करं पिचुमंदश्च स्यादष्टांगमिदं स्मृतम् ॥ जीर्णज्वरारुचिश्वासकासश्वयथुनाशनम् ॥

अर्थ-मुनक्कादाख, गिलोय, कचूर, काकडासिंगी, नागरमोथा, लालचंदन, सोंठ, कुटकी, पाढ, चिरायता, धमासा, नेत्रवाला, धनिया, पद्माख, खस, कटेरी, पुहरकरमूल और नीमकी छाल इनका काढा जीर्णज्वर, अरुचि, श्वास, खांसी और सूजन इनका नाश करे ॥

शुंठीकाढा ।

अरुचिमनलमांद्यं पीनसश्वासकासानुदरमुदकदोषानाशु हन्याद्शेषान् ॥ जनयति तनुकांतिं चित्तनेत्रप्रसादं पलपरिमितशुंठीक्षौद्रसिद्धः कषायः ॥

अर्थ-चार तोले सोंठके काढेमें शहत डालके पीवे तो अरुचि, मंदाग्नि, पीनस, श्वास, खांसी, उदर, जलदोष इनको दूर करे तथा कांति, चित्त और नेत्र इनको प्रसन्नता देता है ॥

कणादि काढा ।

कणामधुकमृद्वीकाबलाचंदनसारिवाः ॥
निःक्वाथ्य पयसा पीताः क्षीणज्वरविनाशनाः ॥

अर्थ-पीपल, महुएके फूल, मुनक्का दाख, खरेटी, लालचंदन और सारिवा इन औषधोंका काढा करके देवे तो जीर्णज्वरका नाश करे ॥

तिक्तादि काढा ।

तिक्तापर्पटभूनिंबमुस्ताछिन्नरुहा पिबेत् ॥
अभ्यासेन जयत्येष ज्वरमामृत्युमातुरः ॥

अर्थ-कुटकी, पित्तपापडा, चिरायता, नागरमोथा और गिलोय इनका काढा करके कुछ काल सेवन करे तो असाध्यभी ज्वर जाय ॥

कलिंगादि काढा ।

कलिंगकटुकी मुस्ता भूनिंबो ग्रंथिनागरम् ॥ राजकन्या देवदारुः पिबेत्क्वाथं सकृष्णकम् ॥ जीर्णज्वरगदे नित्यं सामे चैव निरामये ॥ ज्वरांश्च विषमांश्चैव शीतं चातुर्थिकं जयेत् ॥

अर्थ-इन्द्रजौ, कुटकी, नागरमोथा, चिरायता, पीपलामूल, सोंठ, देवदारु और पीपल इनका काढा कर पीवे तो जीर्णज्वर, साम और निराम ज्वर तथा विषमज्वर, शीतज्वर, चातुर्थिक आदिको दूर करे ॥

द्राक्षादिचूर्ण।

द्राक्षादिमृतनागरतोयमुष्णं कृष्णाविपाकं बहुरोगनिघ्नम्।
श्वासं च शूलं कसनं च मांद्यं जीर्णज्वरं चैव जलेन तृष्णा॥

अर्थ-दाख, गिलोय, सोंठ और पीपल इनका चूर्ण कर गरम जलके साथ लेवे तो अनेक रोग दूर हों और श्वास, खांसी, शूल, मंदाग्नि, जीर्णज्वर और तृषा इनको शीतल जलके साथ लेनेसे दूर करे॥

लवंगादिकाढा।

देवपुष्पचपलाग्रथितं च सिंहिकानलकिरातपयोदाः॥ त्रायमा-
णभृगुजासुरवासाब्राह्मिकाकरिकणादशमूलम्॥ शक्रपुष्पशरटी-
नवरास्नाशृंगिनागरवचाः समभागाः॥ साधितं च क्वथनं किल
पेयं योजितं च सुरसास्वरसेन॥ ज्वरे च सूतिकारोगे शीते
रोचकसंभ्रमे॥ अग्निमांद्ये वातगुल्मे लवंगादिः प्रशस्यते॥

अर्थ-लौंग, पीपल, पीपरामूल, कटेलीकी जड, चित्रक, चिरायता, नागरमोथा, त्रायमाण, भारंगी, देवदारु, अडूसा, ब्राह्मी, गजपीपर, दशमूल, इन्द्रजौ, खदिरपर्णी, रास्ना, काकडासींगी, सोंठ और वच इनके काढेमें तुलसीका रस मिलायके देवे। यह ज्वर, प्रसूतरोग शीत, अरुचि, भ्रम, मंदाग्नि, वायगोला इनमें यह परमोत्तम उपाय है॥

तालीसादि चूर्ण।

तालीसं मरिचं शुंठी पिप्पली वंशलोचनम्॥ एकद्वित्रिचतुःपंच-
कर्षैर्भागान्प्रकल्पयेत्॥ एलात्वचोस्तु कर्षार्धं प्रत्येकं भागमाव-
हेत्॥ द्वात्रिंशत्कर्षतुलिता प्रदेया शर्करा बुधैः॥ तालीसाद्य-
मिदं चूर्णं रोचनं पाचनं स्मृतम्॥ कासश्वासज्वरहरं छर्द्यतीसा-
रनाशनम्॥ शोफाध्मानहरं प्लीहग्रहणीपांडुरोगजित्॥ पक्त्वा
वा शर्कराचूर्णं क्षिपेत्सा गुटिका मता॥

अर्थ-तालीसपत्र, काली मिरच, सोंठ, पीपल और वंशलोचन ये क्रमसे १-२-३-४-५ भाग लेवे तथा इलायची दालचीनी ये आधे २ भाग लेय और मिश्री ३२ तोले लेवे इस प्रकार सब वस्तु ले चूर्ण करे यह तालीसादि चूर्ण

रोचक और पाचक है तथा खांसी, श्वास, ज्वर, वमन, अतिसार, सूजन, पेटका फूलना, प्लीह, संग्रहणी और पांडुरोग इनका नाश करे। यदि इसकी गोली बनानी होय तो खांडकी चासनीमें बनावे ॥

त्रिफलादिचूर्ण।

कासश्वासज्वरहरा पिप्पली त्रिफलायुता ॥
चूर्णिता मधुना लीढा भेदिनी चाग्निबोधिनी ॥

अर्थ-पीपर और त्रिफला इनका चूर्ण शहतसे चाटे तो भेदक है और अग्नि दीप्त करता है ॥

कट्फलादिचूर्ण।

कट्फलं मुस्तकं तिक्ता सठी शृंगी च पौष्करम् ॥ चूर्णमेषां मधुना शृंगवेररसेन वा ॥ लिहेज्जीर्णज्वरहरं कासश्वासारुचिं जयेत् ॥ वायुं शूलं तथा छर्दिं क्षयं चैव व्यपोहति ॥

अर्थ-कायफल, नागरमोथा, कुटकी, कचूर, काकडासींगी और पुहकरमूल इनका चूर्ण शहतसे अथवा अदरखके रसमें चाटे तो जीर्णज्वर, खांसी, श्वास, अरुचि, वायुशूल, वमन और क्षयरोग इनको नाश करे ॥

त्रिवृच्चूर्ण।

चूर्णं त्रिवृत्कणाश्यामात्रिफलानां सितासमम् ॥
भेदि कोष्ठरुजादाहगौरवज्वरनाशनम् ॥

अर्थ-निसोथ, पीपल, सारिवा, हरड, बहेडा और आमला इनका समान भाग चूर्ण करे सब चूर्णके बराबर मिश्री मिलावे यह भेदी, पेटका शूल, दाह, भारीपना और ज्वर इनका नाश करे ॥

दूसरा लवंगादिचूर्ण।

लवंगजातीफलपिप्पलीनां भागं प्रकल्प्याक्षसमानमेषाम् ॥ पलार्धमेकं मरिचस्य देयं पलानि चत्वारि महौषधस्य ॥ सितासमं चूर्णमिदं प्रगृह्य रोगांश्च चाशु प्रबलान्निहंति ॥ कासज्वरारोचकमेहगुल्मश्वासाग्निमांद्यं ग्रहणीप्रदोषम् ॥

अर्थ-लौंग, जायफल और पीपल ये प्रत्येक छः छः मासे, काली मिरच

२ तोले सोंठ १६ तोले इन सबका चूर्ण करके इसमें बराबरकी मिश्री मिलायके देनेसे प्रबलरोग, खांसी, ज्वर, अरुचि, प्रमेह, गोला, श्वास, मंदाग्नि और संग्रहणीके विकारोंको दूर करे ॥

पंचाजादि।

पंचाज्यं पंचगव्यं वा पंचाविकमथापि वा ॥ जीर्णज्वरविनाशार्थं पिबेद्वा पंचमाहिषम् ॥ दधि दुग्धं तथाज्यं च विण्मूत्रे पंच शस्यते ॥ पूर्वोक्तं पंचकं ज्ञेयं चिकित्सायां भिषग्वरः ॥

अर्थ-बकरी और गौका दूध, दही, घी, गोबर, मूत्र ये एकत्र कर जीर्णज्वरमें देय तो जीर्णज्वर दूर हो, अथवा भैंसका दूध दही आदि पांचों पदार्थ रोगीको देवे तो उसका जीर्णज्वर दूर हो ॥

लोध्रादिचूर्ण।

लोध्रचंदनषड्ग्रंथिशर्कराघृतमाक्षिकैः ॥
सक्षीरेण विषं युक्तं जीर्णज्वरहरं परम् ॥

अर्थ-लोध, चंदन, पीपरामूल और अतीस इनके चूर्णमें मिश्री, शहत, घृत और दूध मिलायके लेवे तो ये जीर्णज्वरको दूर करे ॥

वर्धमानपिप्पलीयोग।

क्रमवृद्ध्या दशाहानि दशपैप्पलिकं त्विदम् ॥ वर्धयेत्पयसा सार्धं तथैवानमयेत्पुनः ॥ पिप्पलीनां सहस्रस्य प्रयोगोऽयं रसायने ॥ पिष्टास्ता बलिभिः पेयाः शृता मध्यबलैर्नरैः ॥ चूर्णिता हीनबलिनां हिता मधुसमायुताः ॥ कासाजीर्णारुचिश्वासहृत्पांडुकृमिरोगिणाम् ॥ मंदाग्निविषमाग्नीनां शस्यते गुडपिप्पली ॥ पंच द्वौ सप्त दश वा पिप्पल्यः क्षौद्रसर्पिषा ॥ लीढा ज्वरं श्वासकासं हृद्रोगं पांडुकामलाम् ॥ प्रदरं च प्रमेहं च हन्यात्तत्र किमद्भुतम् ॥

अर्थ-क्रमवृद्धिसे दश पीपल दश दिन दूधमें औटायके पीवे इस प्रकार रसायनमे यह हजार पीपलोंका प्रयोग कहा है, तहां बलवान् पुरुषको पीसके देवे तथा मध्यबलवाले पुरुषको दूधमें औटायके देवे और हीनबली रोगीको चूर्ण कर शहतके साथ चाटे तो खांसी, अजीर्ण, अरुचि, श्वास, हृद्रोग, पांडुरोग, कृमि,

मंदाग्नि, तथा विषमाग्नि इनको उत्तम है, यदि गुड, शहत, घृत इनसे दश अथवा इससे अधिक देवे तो श्वास, खांसी, हृद्रोग, पांडु, कामला, प्रदर और प्रमेह इनको नाश करे इसमें आश्चर्य नहीं है ॥

पिप्पलीमोदक ।

क्षौद्राद्द्विगुणितं सर्पिर्घृताद्द्विगुणपिप्पली ॥ सिता च द्विगुणा तस्याः क्षीरं देयं चतुर्गुणम् ॥ चातुर्जातं क्षौद्रतुल्यं पक्त्वा कुर्याच्च मोदकान् ॥ धातुस्थांश्च ज्वरान्सर्वान् श्वासं कासं च पांडुताम् ॥ धातुक्षयं वह्निमांद्यं पिप्पलीमोदको जयेत् ॥

अर्थ–शहत १ भाग, घृत २ भाग, पीपर ४ भाग, मिश्री ८ भाग, दूध बत्तीस भाग और चातुर्जात १ भाग इस प्रमाण सब वस्तु लेकर पाककी विधिसे लड्डू बनावे । इसमेंसे १ लड्डू नित्य खावे तो यह पिप्पलीमोदक धातुगत संपूर्ण ज्वर, श्वास, खांसी, पांडुरोग, धातुक्षय और मंदाग्नि इनको नाश करे ॥

मधुपिप्पलीयोग ।

पिप्पली मधुसंयुक्ता मेदःकफविनाशिनी ॥
श्वासकासज्वरहरा पांडुप्लीहोदरापहा ॥

अर्थ–पीपल शहतके साथ सेवन करनेसे मेद, कफ, श्वास, खाँसी, ज्वर, पांडुरोग, प्लीहा और उदररोगको दूर करे ॥

दुग्धयोग ।

क्षीणे कफे ज्वरे जीर्णे ह्यल्पदोषे पिपासिते ॥
दाहार्ते तु पयो योज्यं तन्नवे तु विषं भवेत् ॥

अर्थ–क्षीण कफवालेके तथा जीर्णज्वर होनेपर अल्पदोष होनेके कारण प्यास और दाह होते हैं, इसीसे उसको दूध पिवावे परंतु नवीन ज्वरमें दूध देना विषतुल्य है ॥

पंचमूलीक्षीर ।

सर्वज्वराणां जीर्णानां क्षीरं भैषज्यमुत्तमम् ॥ श्वासात्कासाच्छिरः-शूलात्पार्श्वशूलात्सपीनसात् ॥ मुच्यते ज्वरितः पीत्वा पंचमूली-शृतं पयः ॥

अर्थ–सालपर्णी, पृष्ठपर्णी, छोटी कटेरी, बडी कटेरी और गोखरू इन पाचोंकी

जडको कूट उसमें अठगुना दूध और दूधका चौगुना पानी डालके औटावे जब दूध मात्र रह जावे तब रोगीको पिलावे तो श्वास, खांसी, मस्तकशूल, पीठका दर्द, पीनस और जीर्णज्वर ये दूर होंय। इन संपूर्ण जीर्णज्वरोंमें यह दुग्ध पीना उत्तम है॥

सितादिपेया।

सिताज्यविश्वखर्जूरीमृद्वीकाभिः शृतं पयः॥ पृथ्वी च बिल्वव-
र्षाभूपयश्चोदकमेव च॥ क्षीरावशिष्टं तत्पीतं तद्धि सर्वज्वरापहम्॥

अर्थ-मिश्री, घृत, सोंठ, छुहारे और दाख इनको डालके औटाये हुए दूधको अथवा बेलगिरी, साँठ, दूध और पानी ये एकत्र करके दूध मात्र शेष रहने पर्यंत औटावे फिर इसको पीवे तो सर्व ज्वरको दूर करे॥

बिल्वादिकाढा।

साधितं बिल्वपेशीभिर्मूलेनामंडकस्य च॥
सद्यो हंति पयः पीतं ज्वरं संपरिवर्तकम्॥

अर्थ-दूधमें बेलगिरीका अथवा सपेद बडी जाईके जडका काढा करके लेनेसे यह घोर ज्वरका नाश करे॥

मधुकादिकाढा।

मधुकारग्वधाद्राक्षातिक्तायासफलत्रिकैः॥
सपटोलैर्जलं भेदि ज्वरं हंति त्रिदोषजम्॥

अर्थ-मुलहटी, अमलतासका गूदा, मुनक्कादाख, कुटकी, धमासा, हरड, बहेडा, आमला और पटोलपत्र इनका काढा भेदी और सब तरहके ज्वरोंका नाश करे है॥

अमृतादिहिम।

अमृताया हिमः पेयो जीर्णज्वरहरः परः॥

अर्थ-पूर्वोक्त प्रकारसे गिलोयका हिम करके पीवे तो जीर्णज्वरका नाश होय॥

गुडयोग।

गुडं पिप्पलिमूलस्य जलेनालोडितं पिबेत्॥
चिरादपि च सन्नष्टां निद्रामाप्नोति मानवः॥

अर्थ-गुडको पीपरामूलके जलमें पीस छानके पीवे तो बहुत कालकी गई हुई निद्रा आवे॥

वार्ताकभक्षणयोग ।

सायं स्विन्नमशेषं कृत्वा वार्ताकमेव पूर्वाह्णे ॥
मधुयुतमश्नन्नचिरान्नष्टामथवा जयेन्निद्राम् ॥

अर्थ-सायंकालमें बैंगनको भून शहतमें मिलायके खाय तो तत्काल निद्रा आवे ॥

गुडूचीस्वरस ।

पिप्पलीमधुसंमिश्रं गुडूचिस्वरसं पिबेत् ॥
जीर्णज्वरकफप्लीहाकासारोचकनाशनम् ॥

अर्थ-गिलोयके रसमें पीपल और शहत मिलायके पीवे तो जीर्णज्वर, कफ, प्लीहा, खांसी और अरुचि इनको नाश करे ॥

गुडपिप्पलीयोग ।

जीर्णज्वरेऽग्निमांद्ये च शस्यते गुडपिप्पली ॥ कासाजीर्णारुचिश्वासहृत्पांडुकृमिरोगनुत् ॥ द्विगुणः पिप्पलीचूर्णाद्गुडोऽत्र भिषजां मतः ॥

अर्थ-जीर्णज्वरपर और मंदाग्निपर गुड और पीपर सेवन उत्तम है, तथा खांसी, अजीर्ण, अरुचि, श्वास, पांडु और कृमिरोग इनको नाश करे, इस जगह गुड पीपलसे दूना मिलाना चाहिये ॥

वातकफात्मकज्वरोंपर ।

वातश्लेष्मज्वरोक्ता स्यात्क्रिया वातबलासके ॥ जीर्णज्वरे कफे क्षीणे दाहतृष्णासमन्विते ॥ पयःपीयूषसदृशं तन्नवे तु विषोपमम् ॥ चंदनाद्यं हितं तैलं शोषाधिकारकीर्तितम् ॥ तथा नारायणं तैलं जीर्णज्वरहरं परम् ॥

अर्थ-वातकफसंबंधी जीर्णज्वरपर वातश्लेश्मज्वरोक्त क्रिया करनी चाहियें, और जिनके कफ न होय केवल दाह और तृषा मात्र विकार हो उसको दूध पीना अमृतके तुल्य है और वही दूध नवीन ज्वरवालेको विषके समान अवगुण करता है और शोषाधिकारमें चंदनादि तैल कहा है तथा नारायण तैल ये जीर्णज्वर नाशक हैं इसवास्ते इनका मालिश करे ॥

द्वितीयवर्धमानपिप्पली ।

त्रिवृद्ध्या पंचवृद्ध्या वा सप्तवृद्ध्याथ वा कणाः ॥ गव्यक्षीरेण

संपिष्टाः पिबेद्दश दिनानि ह ॥ तथैव ह्रासयेदेता एवं विंशाति-वासरान् ॥ पिबतां ज्वरशांतिः स्यात्पांडुरोगश्च शाम्यति ॥ कासश्वासोऽग्निमांद्यं च कफाधिक्यं च नश्यति ॥

अर्थ-तीन २ वृद्धि करके अथवा पांच पांच वृद्धि करके पीपल गौके दूधमें औटाय और पीसके दश दिनतक सेवन करे, फिर उसी प्रकार क्रमसे घटाता चला आवे इस प्रकार वीस दिनतक लेय तो ज्वरकी शांति होय, तथा पांडुरोग, खांसी, श्वास, मंदाग्नि और कफ इनका नाश करे ॥

नस्य।

शिरोगौरवशूलघ्नमिंद्रियप्रतिबोधनम् ॥ जीर्णज्वरे रुचिकरं दद्याच्छिर्षविरेचनम् ॥ मधुना वाथ तैलेन ज्वरघ्नेन प्रयोजयेत् ॥

अर्थ-जीर्णज्वरमें मस्तकका भारीपन, शूल इनके नाशके वास्ते और इन्द्रियोंके चैतन्यता करनेके वास्ते, तथा रुचि देनेवाला ऐसा मस्तकरेचन देवे वह शहतसे अथवा तैल करके किंवा ज्वरघ्न योगों करके देवे ॥

रक्तकरवीरादिलेप।

रक्तकरवीरपुष्पं कुष्ठं धात्रीफलं सधान्यांबु ॥
कल्कैः कोष्णो लेपो ज्वरेषु शिरसो रुजो हंति ॥

अर्थ-लाल कनेरके फूल, कूठ, आमला, धनिया और नेत्रवाला इनको गरम जलमें पीस गरम करके जब थोडा गरम रहे तब लेप करे तो मस्तकपीडा दूर होय ॥

हिंग्वादिनस्य।

हिंगुसैंधवसंयुक्तं नस्यं स्याद्नवं घृतम् ॥

अर्थ-पुराने घीमें हींग और सैंधानिमक मिलायके नस्य देवे तो ज्वरशांति होय ॥

जयंतीमूलिकाबंध।

श्वेतजयंतीमूलं विधिना बद्धं शिखांतरे हंति ॥
क्षीणज्वरं नराणां खल इव दुरितेन चात्मानम् ॥

अर्थ-सपेद जयंतीकी जडको विधियुक्त चुटियामें बांधे इससे जीर्णज्वर दूर होय जैसे दुष्टपुरुष पापोंसे अपनी आत्माको नाश करता है ॥

वायसजंघाबंध ।

वायसजंघामूलं शिरसि निबद्धं तु काकमाच्याश्च ॥
विधृतं निद्राकरणं स्नुङ्मूलं वाशितं सगुडम् ॥

अर्थ—कौआडोडीकी जडको अथवा मकोयकी जडको मस्तकमें बांधनेसे निद्राको उत्पन्न करे, अथवा थूहरकी जडको गुडके साथ खानेसे निद्राको उत्पन्न करे ॥

मुक्तापंचामृत ।

मुक्ताप्रवालखुरवंगककंबुशुक्तिभूनिंबभूदाधिद्दागेंदुसुधांशुभागम् ॥ इक्षूरसेन सुरभेः पयसा विदारीकन्यावरीषुरसहंसपदीरसैश्च ॥ संमर्द्य यामयुगलं च वनोत्पलाभिर्दद्यात्पुटानि मृदुलानि च पंच पंच ॥ पञ्चामृतं रसविभुं भिषजा प्रयोज्यं गुंजाचतुष्टयमितं चपलारजश्च ॥ पात्रे निधाय चिरसूतवनस्पतीनां दुग्धेन यः प्रपिबतः खलु चात्मभुक्तम् ॥ जीर्णज्वरः क्षयमियादथ सर्वरोगाः स्वीयानुपानकलिताश्च शमं प्रयांति ॥

अर्थ—मोती १ तोला, मूंगा ४ तोले, उत्तम वंग २ तोले, शंख १ तोला, सीपी १ तोला इनकी भस्म तथा चिरायता १ तोला इन सबको एकत्र कर ईखके रस, गौका दूध, विदारीकंद, घीगुवार, सतावर, डाभ और हंसपदी इनके रसमें दो दो प्रहर खरल कर आरने उपलोंकी पांच पांच पुट देवे यह (पंचामृत रस) नित्य ४ रत्ती और पीपलका चूर्ण पात्रमें डालके बहुत दिनकी ब्याही और वनस्पति खानेसे उत्पन्न हुआ दूध उसके साथ सेवन करे, थोडा भोजन करे तो जीर्णज्वर, तथा रोगोक्त अनुपानके साथ देनेसे सर्व रोगोंका नाश करे है ॥

जीर्णज्वरांकुश ।

मृतसूताभ्रनागार्कं कांतवैक्रांतमेव च ॥ हिंगुलं टंकणं गंधं विषं कुष्ठसमांशकम् ॥ त्रिकटुत्रिफलामुस्ताभृंगानिर्गुंडिकाद्रवैः ॥ भावयेत्रिदिनं चैव माषमात्रानुपानतः ॥ जीर्णज्वरे क्षये कासे दोषे मंदानलेषु च ॥ पांडुं हलीमकं गुल्ममुदरं चार्दितं जयेत् ॥ ग्रहणीं शूलरोगांश्च अरोचकमनेकधा ॥ कांतिं तेजो बलं पुष्टिं वीर्यवृद्धिं विव-[illegible] ॥ [illegible] निहंत्याशु रसो जीर्णज्वरांकुशः ॥

अर्थ-पारेकी भस्म, अभ्रक, शीशेकी भस्म, तामेकी भस्म, कांतलोह और वैक्रांत इनकी भस्म, तथा हिंगुल, सुहागा, गंधक, विष, कूठ ये औषध समान भाग ले फिर त्रिफला, त्रिकुटा, नागरमोथा, भांगरा और निर्गुंडी इनके काढेकी अथवा स्वरसकी तीन दिन भावना देवे और अनुपानके साथ एक उडद्मात्र देवे तो जीर्णज्वर, क्षय, खांसी, मंदाग्नि, पांडुरोग, हलीमक, गोला, उदर, अर्दितरोग, संग्रहणी, शूल, सर्व प्रकारकी अरुचि ये रोग साध्य अथवा असाध्य होंय तो भी नाश होवें, तथा यह जीर्णज्वरांकुश, कांति, तेज, बल, पुष्टि और वीर्य इनको बढावे ॥

धातुज्वरांकुश ।

लोहाभ्रकं ताम्रभस्म पारदं गंधकं विषम् ॥ व्योषाफलात्रिकं कुष्ठं
समभागेन मर्दयेत् ॥ भृंगनीरेण चार्द्रस्यावरानिर्गुंडिकारसैः ॥
त्रिदिनं मर्दयित्वा तु मुद्गमाना वटी कृता ॥ यथारोगानुपानेन
सर्वव्याधिविनाशिनी ॥ अजीर्णवातकासघ्नी दीपनी रुचिवर्धनी ॥
सर्वान्धातुज्वरान्हंति सोऽयं धातुज्वरांकुशः ॥

अर्थ-लोह, अभ्रक तथा तामा इनकी भस्म और पारा, गंधक, विष, सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आमला, कूठ ये समान भाग ले खरल कर भांगरा, अदरख और निर्गुंडी इनके रसकी तीन दिन भावना देवे, फिर मूंगके बराबर गोली बनावे एक गोली रोगोक्त अनुपानके साथ देवे तो सर्व व्याधियोंको नाश करे तथा अजीर्ण और वात कफ इनको नाश करे तथा दीपन, रुचि बढानेवाला और सर्व धातुगतज्वरनाशक है । इसको धातुज्वरांकुश कहते हैं ॥

कल्याणघृत ।

तालीसत्रिफलैलवालफलिनीसौम्यापृथक्पर्णिनीदंतीदाडिमचारु-
चंदननिशादार्वीविशालोत्पलैः ॥ जातीपद्महरेणुपद्मकयुतैर्जंतुघ्न-
मंजिष्ठकारुक्सिंहीत्रुटिसारिवाद्वयनतैर्नागेंद्रपुष्पान्वितैः ॥ अष्टा-
विंशतिभिश्चतुर्गुणजलं कल्याणमेभिः शृतं हंत्येतात्रिचतुर्थक-
ज्वरमुरःकंपं सर्वध्यामयम् ॥ सापस्मारगदोदरामपवनोन्मादाः
सजीर्णज्वरा जायंते न पुनः कृतेन हविषा कल्याणकेनामुना ॥

अर्थ-तालीसपत्र, त्रिफला, इलायची, नेत्रवाला, सालपर्णी, दंती, अनारदाना, उत्तम चंदन, हलदी, दारुहलदी, इन्द्रायनकी जड, कमलकंद. जाई, कमल, पित्तपापडा, पद्माख, वायविडंग, मँजीठ, कूठ, कटेरी, छोटी इलायची, दोनों प्रकारकी सारिवा, तगर, वांझककोडी और लौंग इन अट्टाईस औषधोंका चौगुना पानी डालके काढा करके उस काढेमें घी डालके पचावे जब जल करके घृतमात्र शेष रहे तब उतार लेवे । यह कल्याणघृत त्र्याहिक, चातुर्थिकज्वर, हृदयका कंप, वंध्यापना, मृगी, उदर, आमवात, उन्माद, जीर्णज्वर इन व्याधियोंको फिर नहीं होने देवे ॥

चंदनादितैल ।

चंदनाद्यं हितं तैलं शोषाधिकारकीर्तितम् ॥
तथा नारायणं तैलं जीर्णज्वरहरं परम् ॥

अर्थ-शोषाधिकारमें कहा चंदनादि तैल तथा नारायण तैल ये जीर्णज्वरको नाश करे ॥

लाक्षादितैल ।

लाक्षारसस्याढकमस्तुतैलप्रस्थं पचेन्मस्तुचतुर्गुणं च ॥ पिष्टाशताह्वा रजनी मधूकं रास्नाश्वगंधा कटुका समूर्वा ॥ हरेणुकं चंदनमुस्तदारुकुष्ठं पृथक्कर्षमितं क्षिपेत्तत् ॥ पृष्ठत्रिकांगस्फुटनं सशूलं दौर्गंध्यकंडूभ्रमवातरोगान् ॥

अर्थ-२५६ तोले लाखका रस, तेल सेरभर, दहीकी तोड चार सेर, शतावर, हलदी, मुलहटी, रास्ना, असगंध, कुटकी, मूर्वा, पित्तपापडा, लालचंदन, नागरमोथा, देवदारु और कूठ ये प्रत्येक तोले २ भर लेय, सबको एकत्र कर तेल सिद्ध करावे । इसको लाक्षादि तैल कहते हैं । यह सर्व विषमज्वर और पीठका दर्द, त्रिकस्थानकी पीडा, शरीरका फूटना, शूल, दुर्गंध, खुजली, भ्रम और वातरोगको नाश करे ॥

दूसरा चंदनादितैल ।

चंदनांबु नृपं वाट्यं यष्टिशैलेयपद्मकम् ॥ मंजिष्ठासरलादारुशट्येलानागकेसरम् ॥ पत्रं तैलं सुरा मांसी कंकोलं च नतांबुदम् ॥ हरिद्रे सारिवे तिक्तं लवंगागरुकुंकुमम् ॥ त्वग्रेणुनलिका चेति तैलं

मस्तु चतुर्गुणम् ॥ लाक्षारससमं सिद्धं ग्रहघ्नं बलवर्णकृत् ॥ अपस्मारक्षयोन्मादक्षतालक्ष्मीविनाशनम् ॥ गात्रस्य स्फुटनं दाहं कंडूजीर्णज्वरापहम् ॥

अर्थ-चंदन, नेत्रवाला, खिरनीका वृक्ष, खरेटी, मुलहटी, शिलाजीत, पद्माख, मँजीठ, सरल (देवदारुका भेद), देवदारु, कचूर, इलायची, नागकेशर, तमालपत्र, तेल, काकोली, जटामांसी, कंकोल, छड, नागरमोथा, हलदी, दारुहलदी, सारिवा, चिरायता, लौंग, अगर, केशर, दालचीनी, पित्तपापडा, गुडतजी, तेल तथा चौगुना दहीका पानी और इतनाही लाखका रस सबको एकत्र कर तेलकी विधिसे इसको सिद्ध करे तो यह ग्रहपीडानाशक, बल, कांति इनको करे तथा अपस्मार, क्षय, उन्माद, घाव, अलक्ष्मी, देहका फटना, दाह, खुजली, जीर्णज्वर इनको नाश करे ॥

हरीतकीपाक ।

प्रस्थमेकं शिवानां च जलद्रोणे निधापयेत् ॥ द्विप्रस्थं दशमूलस्य सार्धप्रस्था यवाः स्मृताः ॥ ग्रंथिकं चित्रकं भार्गी शंखपुष्पी बला सठी ॥ विश्वापामार्गमेघाश्च पुष्करं गजपिप्पली ॥ इमानि तत्र योज्यानि प्रत्येकं च पलं पलम् ॥ अष्टांशे निसृते चैषा पथ्या पिष्ट्वा पचेत्ततः ॥ गुडप्रस्थत्रयं योज्यं गोघृतं पलपंचकम् ॥ जातीफलं केसरं च चतुर्जातं च धात्रिका ॥ दीप्याक्षौ जातिपत्रीं च ताम्रं लोहं कटुत्रिकम् ॥ चूर्णमेषां क्षिपेत्तत्र प्रत्येकं च पलार्धकम् ॥ पथ्यापाक इति ख्यातः कथितो भृगुणा पुरा ॥ जीर्णज्वरहरः सद्यस्तुष्टिपुष्टिबलप्रदः॥ रसकोपे ग्रहण्यां च क्षीणधातौ च निःसृतौ ॥ गुदामये श्वासकासे वातरक्ते हितो मतः ॥

अर्थ-हरड ६४ तोले, जल १०२४ तोले, दशमूल १२८ तोले, इन्द्रजौ ९६ तोले तथा पीपरामूल, चीतेकी छाल, भारंगी शंखाहुली, खरेटी, कचूर, सोंठ, ओंगा, नागरमोथा, पुहकरमूल, गजपीपल ये प्रत्येक चार २ तोले ले इन सबका अष्टावशेष काढा कर उसमें हरडोंको पीसके डाल देवे और इसमें गुड १९२ तोले, गौका घी २० तोले, तथा जायफल, केशर, चातुर्जात, आंवले, अजमायन, बहेडा,

जावित्री, ताम्रभस्म, लोहभस्म, सोंठ, कालीमिरच, पीपल इन प्रत्येकका चूर्ण दो दो तोले डालकर पाक बनावे इसको हरीतकीपाक कहते हैं । यह जीर्णज्वर, संग्रहणी, क्षीणता, अतिसार, बवासीर, श्वास, खांसी, वातरक्त और रसकोप इनको दूर करे तथा तत्काल तुष्टि पुष्टि और बल इनको देय है ॥

कौक्कुट घृत ।

कुक्कुटं तरुणं सद्यः शिरःपादान्त्रवर्जितम् ॥ तस्य मांसस्य कुर्वीत श्रृतं पलशतं भिषक् ॥ बृहती कंटकारी च श्रृंगीकर्कटकस्य च ॥ बदराणि कुलित्थाश्च भार्गी आमलकी तथा ॥ शठी पुष्करमूलं च पंचमूलं महत्तथा ॥ एततुलां च संगृह्य द्विद्रोणे त्वंभसः पचेत् ॥ पादशेषं परिस्राव्य कषायं ग्राहयेद्भिषक् ॥ षड्गुणं क्षीरमाहृत्य विपचेत्तु घृताढकम् ॥ तत्र कल्कीकृतं दद्याद्स्वल्पं पंचमूलकम् ॥ तत्साधु सिद्धं विस्राव्य शुभे भांडे निधापयेत् ॥ तस्य काले पिबेन्मात्रां बलदोषमवेक्ष्य च ॥ जीर्णे तस्मिंस्तु भुंजीत रक्तशाल्योदनं तथा ॥ जीर्णज्वरोपसृष्टानां शुष्यतां श्वासकासिनाम् ॥ प्रयोज्यं कौक्कुटं सर्पिर्यक्ष्मिणां विषमज्वरे ॥ लेखनं बृंहणीयं च बलवर्णाग्निवर्धनम् ॥

अर्थ—उत्तम तरुण मुरगेका मस्तक, पैर और आंतें निकालके उसके मांसका काढा ४०० तोले लेकर उसमें दोनों कटेरी, काकडासींगी, बेर, कुलथी, भारंगी, आमले, कचूर, पुहकरमूल और बृहत्पंचमूल मिलाय सब ४०० तोले लेवे उसको २०४८ तोले जलमें डालके चतुर्थांशावशेष काढा करे और काढेका छः गुना दूध और १०२४ तोले घृत डालके उसमें बृहत्पंचमूलका कल्क मिलाय सबको एकत्र कर मंदाग्निसे घी शेष रहने पर्यंत पचावे जब सिद्ध होजाय तब उतारके उत्तम पात्रमें भरके धर रक्खे, फिर दोषोंका बलाबल देखके देवे, इसके जीर्ण होनेके उपरांत लाल चावलोंका भात भोजन करावे तो यह (कौक्कुट घृत) जीर्णज्वर, श्वास, खांसी, क्षयी, विषमज्वर इनको दूर करे, तथा लेखन, बृंहण और बल, वर्ण तथा अग्नि इनको बढावे ॥

वासाद्यघृत ।

वासां गुडूचीं त्रिफलां त्रायमाणां दुरालभाम् ॥ पक्त्वा तेन कषायेण

पयसो द्विगुणेन च ॥ पिप्पले मुस्तमृद्वीका चंदनोत्पलनागरैः ॥
कल्कीकृतैश्च विपचेद्घृतं जीर्णज्वरापहम् ॥

अर्थ-अडूसा, गिलोय, त्रिफला, त्रायमाण और धमासा इनके काढेमें दुगुना दूध और पीपल, नागरमोथा, दाख, लालचंदन, कमलगट्टा और सोंठ इनको डालके सबको एकत्र कर उसमें घृत सिद्ध करे तो यह जीर्णज्वरको नाश करे ॥

पिप्पल्यादिघृत ।

पिप्पल्यश्चंदनं मुस्तमुशीरं कटुरोहिणी ॥ कलिंगका स्त्वामलकी सारिवातिविषं स्थिरा ॥ द्राक्षामलकबीजानि त्रायमाणा निदिग्धिका ॥ सिद्धमेतद्घृतं सद्यो जीर्णज्वरमपोहति ॥ क्षयं कासं शिरःशूलं पार्श्वशूलमरोचकम् ॥ अंगाभिपातमग्निं च विषमं सन्नियच्छति ॥ पिप्पल्यादि त्विदं क्वापि तंत्रे क्षीरेण पच्यते ॥

अर्थ-पीपल, लाल चंदन, नागरमोथा, नेत्रवाला, कुटकी, इन्द्रजव, आमले, सारिवा, अतीस, सालपर्णी, दाख, इमलीके चीया, त्रायमाण, कटेरी इनके काढेमें अथवा कल्कमें घृत सिद्ध करे तो यह जीर्णज्वरको तत्काल नाश करे, तथा क्षय, खांसी, मस्तकपीडा, पॅसवाडेका दर्द, अरुचि, अंगकी गरमी और अग्नि इनका नाश करे यह पिप्पल्यादि घृत किसी ग्रंथमें दूधके साथ पचावे ऐसा कहाहै ॥

क्षीरवृक्षादितैल ।

क्षीरवृक्षासनारिष्टाजंबूसप्तच्छदार्जुनैः ॥ शिरीषखादिरास्फोतामृतवल्याटरूषकैः ॥ कटुकापर्पटोशीरवचातेजोवतीघनैः ॥
साधितं तैलमभ्यंगादाशु जीर्णज्वरः क्षयम् ॥

अर्थ-पीपर, विजैसार, नीमकी छाल, सतोना, कोह, सिरस, खैर, सारिवा, गिलोय, अडूसा, कुटकी, पित्तपापडा, खस, वच, मालकांगनी और नागरमोथा इनके काढेमें अथवा कल्कमें तेल सिद्ध करे फिर इसकी देहमें मालिश करे तो तत्काल जीर्णज्वरका नाश करे ॥

सेवंतीपाक ।

श्वेतपुष्पसहस्राणि घृतप्रस्थे विपाचयेत् ॥ घृते पक्के कृते तस्मिन्निक्षिपेद्वै तदौषधम् ॥ सितोपला चतुर्भागा चातुर्जातं पलं पलम् ॥

मृद्वीका षट्पलं चैव क्षिपेन्मधुपलाष्टकम् ॥ धारासत्वं चार्धपलं सर्वमेकत्र कारयेत् ॥ कर्षप्रमाणं तत्सेव्यं सततं च गदातुरैः ॥ जीर्णज्वरे क्षये कासे अग्निमांद्ये प्रमेहके ॥ प्रदरं रक्तजान्रोगान्कुष्ठाशांसि विनाशयेत् ॥ नेत्ररोगान्सुदुःसाध्यांस्तथा सर्वान्मुखोत्थितान् ॥

अर्थ-सेवतीके सफेद फूल १००० लेकर घीमें सिजवावे, फिर इसमें मिश्री चार भाग, दालचीनी, तमालपत्र, इलायची, नागकेशर ये प्रत्येक चार २ तोले लेवे, दाख २४ तोले और शहत ३२ तोले तथा गिलोयका सत्व २ तोले इन सबको एकत्र कर पाककी विधिसे बनावे। इस पाकको तोले भर नित्य प्रातःकाल लेय तो यह (सेवतीपाक) जीर्णज्वर, क्षयी, खांसी, मंदाग्नि, प्रमेह, प्रदर, रक्तविकार, कोढ, अर्शरोग और दुःसाध्य नेत्ररोग तथा मुखरोगोंको नाश करे ॥

पिप्पलीपाक ।

प्रस्थं पिप्पलिमादाय क्षीरेणैवानुपेषयेत् ॥ अर्धाढकं घृतं गव्यं शुद्धं खंडाढकं तथा ॥ पचेन्मृद्वग्निना तावद्यावत्पाकमुपागतम् ॥ शीतीभूते क्षिपेत्तस्मिश्चातुर्जातं पलत्रयम् ॥ योजयेन्मात्रया युक्तं दोषधात्वग्निसाम्यतः ॥ बल्यं वृष्यं तथा हृद्यं तेजोवृद्धिकरं परम् ॥ जीर्णज्वरक्षतक्षीणमाश्रांतं चैव बृंहयेत् ॥ छर्दितृष्णारुचिश्वासशोषजिह्वासकामलाम् ॥ हृद्रोगं पांडुरोगं च प्रदरं च त्रिदोषजम् ॥ वातरक्तप्रतिश्यायमामवातं विनाशयेत् ॥ संवत्सरप्रयोगेण वलीपलितवर्जितः ॥

अर्थ-६४ तोले पीपल लेके दूधसे पीसे फिर १२८ तोले घीमें मंदाग्निसे कुछ भूने तथा १०२४ तोले मिश्रीकी चासनीमें पाक बनावे और दालचीनी, तमालपत्र, इलायची, नागकेशर इनका चूर्ण १२ तोले डालके कतरी जमाय लेवे पश्चात् रोगीका दोष धातु अग्निका बलाबल देखके देवे तो धातुको बढावे, बल करे, हृदयको हितकारी, तथा तेजकी वृद्धि करे और जीर्णज्वरवालेको, तथा क्षतक्षयसे क्षीणपुरुषको पुष्टि करे, वमन, प्यास, अरुचि, श्वास, शोष, जिह्वाके रोग, कामला, हृदयरोग, पांडु, प्रदर, त्रिदोष, वातरक्त, पीनस और आमवात इनका नाश करे। इस पाकको एक वर्ष सेवन करनेसे अंगकी गुजलट और सपेद बालोंका नाश कर तरुणता करे है ॥

ज्वरमुक्तलक्षण।

प्रकाशो लाघवं ग्लानिः स्वस्थता सुप्रसन्नता ॥
उपद्रवा निमित्तं च सम्यक्काङ्क्तिलक्षणम् ॥

अर्थ-इन्द्री अपने अपने विषयग्रहण करनेमें समर्थ हो, शरीरमें हलकापना, ग्लानि, चित्तकी स्वस्थता तथा प्रसन्नता और सर्व उपद्रवकी शांति ये ज्वरमुक्तके लक्षण हैं ॥

साध्यज्वरलक्षण।

बलवत्स्वल्पदोषे तु ज्वरः साध्योऽनुपद्रवः ॥

अर्थ-जिस ज्वरमें मनुष्यकी शक्ति क्षीण न होय और वातादिक दोषोंका कोप थोडा होय तथा ज्वरके उपद्रव विशेष न होंय उस ज्वरको साध्य कहा है ॥

असाध्यज्वरलक्षण।

हेतुभिर्बहुभिर्जातो बलिभिर्बहुलक्षणः ॥ ज्वरः प्राणांतकृद्यश्च शीघ्रमिंद्रियनाशनः ॥ ज्वरक्षीणस्य शूनस्य गंभीरो दैर्घ्यरात्रिकः असाध्यो बलवान्यश्च केशसीमंतकृज्ज्वरः ॥

अर्थ-अत्यंत आर प्रबल हेतुओंकरके उत्पन्न हुआ, ज्वर तथा जो उत्पन्न होतेही किसी एक इन्द्रियको नष्ट कर देवे वह ज्वर प्राणांतकारी जानना। तथा जिस ज्वरमें मनुष्यके क्षीण होकर अंगोंमें सूजन आय जावे वह तथा गंभीर धातुगत जानेवाला और बहुत दिनतक देहमें रहनेवाला तथा अंतर्वेगी और जो ज्वर बहुत आनकर बालोंमें स्त्रियोंके मांगके समान रचना करनेवाला ऐसे सब ज्वर असाध्य हैं ॥

गंभीरज्वरलक्षण।

गंभीरश्च ज्वरो ज्ञेयो ह्यंतर्दाहेन तृष्णया ॥
आनद्धत्वेन दोषाणां श्वासकासोद्गमेन च ॥

अर्थ-अंतर्दाह, तृषा, दोषोंकी प्रबलता, श्वास, खांसी ये लक्षण जिस ज्वरमें हों उसको गंभीर कहते हैं ॥

असाध्यलक्षण।

आरंभाद्विषमो यस्तु यस्तु स्याद्दैर्घ्यरात्रिकः ॥
क्षीणस्य चातिरूक्षस्य गंभीरो यस्य हंति तम् ॥

अर्थ-जो ज्वर उत्पन्न होतेही संतत सततआदि रूप करके विषम हो जावे और बहुत रात्रिपर्यंत आवे तथा गंभीर हो ये तीन ज्वर तथा क्षीण किंवा रूक्ष मनुष्यका ज्वर प्राणनाशक जानना ॥

दूसरा प्रकार ।

शंखस्वेदोऽतिबहुलं पिच्छिलो याति सर्वशः ॥
देहिनः शीतगात्रस्य तदा मरणमादिशेत् ॥

अर्थ-शंख कहिये कनपटीमें बहुत पसीने आनकर सर्व देहमात्र पसीनोंसे चिकट जाय तथा रोगीका देह शीतल पडजावे वह ज्वर प्राणनाशक जानना ॥

तीसरा प्रकार ।

विसंज्ञस्ताम्यते यस्तु शेते निपतितोऽपि वा ॥
शीतार्दितोऽतरूष्णश्च ज्वरेण म्रियते नरः ॥

अर्थ-जो मनुष्य ज्वरसे विह्वल हो मोहित होजावे और सोकर तथा बैठकर उठे नहीं, एवं बाहर शीत और भीतरसे दाहयुक्त हो वह पुरुष ज्वर करके मरणको प्राप्त होवे ॥

चौथा प्रकार ।

शीतस्वेदो ललाटेऽस्य श्लथसंधानबंधनः ॥
मुह्यत्युत्थाप्यमानस्तु स स्थूलोऽपि न जीवति ॥

अर्थ-जिस मनुष्यके मस्तकपर शीतल पसीने आवे और सर्वांगके बंधन ढीले होजावें, तथा उठनेमें मोहको प्राप्त हो ऐसा मनुष्य पुष्टभी हो तथापि नहीं बचे ॥

पाँचवा प्रकार ।

यो हृष्टरोमा रक्ताक्षो हृदि संघातशूलवान् ॥
वक्त्रेण चैवोच्छ्वसिति तं ज्वरो हंति मानवम् ॥

अर्थ-ज्वरमें रोगीके रोमांच खडे रहें, नेत्र लाल हों, हृदयमें शस्त्रप्रहार होने-कीसी पीडा और ऊंचे मुख करके जो श्वास लेवे ऐसा ज्वर रोगीका प्राणहरण-कर्त्ता जानना ॥

दूसरे प्रकारके असाध्य लक्षण ।

प्रेतैः सह पिबेन्मद्यं स्वप्ने यः कृष्यते शुना ॥ स घोरं ज्वरमासाद्य न

जीवेन्न च मुच्यते ॥ ज्वरः पूर्वाह्णिको यस्य शुष्ककासश्च दारुणः ॥ बलमांसविहीनश्च यथा प्रेतस्तथैव सः ॥ ज्वरो यस्यापराह्णे तु श्लेष्मा कासश्च दारुणः ॥ बलमांसविहीनश्च यथा प्रेतस्तथैव सः ॥ सहसा ज्वरसंतापस्तृष्णा मूर्च्छा बलक्षयः ॥ विश्लेषणं च संधीनां मुमूर्षोरुपजायते ॥ गोसर्गे वेदनाद्यस्य स्वेदः प्रच्यवते ध्रुवम् ॥ लेपज्वरोपसृष्टस्य दुर्लभं तस्य जीवितम् ॥ स्वेदो ललाटे हिमवान्नरस्य शीतार्दितस्यातिसपिच्छिलस्य ॥ कंठस्थितो यस्य न याति वक्षो नूनं यमस्यैति गृहं स मर्त्यः ॥ यस्य स्वेदोऽतिबहुलः पिच्छिलो याति सर्वतः ॥ रोगिणः शीतगात्रस्य तदा मरणमादिशेत् ॥

अर्थ–जो स्वप्नमें प्रेतोंके साथ मद्यपान करे, तथा जिसको कुत्ते घसीटे, वह भयंकर ज्वरसे मरे, जिसको पूर्वाह्णमें घोरज्वर आवे और सूखी दारुण खांसी हो, तथा बल, मांस जिसका नष्ट हो जावे उसको प्रेतके समान जानना, जिसको अपराह्णमें ज्वर आनकर कफ, खांसी, अत्यंत पीडा देवे, बल, मांस नष्ट होजावे उसको मुरदेके तुल्य जानना, अकस्मात् ज्वरका दाह, तृषा, मूर्च्छा और बलक्षय तथा संधि २ ढीले होजावें, ये लक्षण आसन्नमरणवालेके होते हैं। प्रातःकाल जिसके मुखपर पसीने आवें और लेपज्वर करके व्याप्त हो उसका बचना कठिन है। जिसके मस्तकपर शीतल पसीने और शीत अधिक लगे, अंग पसीनेसे चिकनेसे होजावे और गलेका पसीना छातीपर आवे नहीं वह मनुष्य यमराजके घर जल्दी जाता है। तथा जिसके अत्यंत और चिकने पसीने चारों तरफसे आवे और अंग शीतल हो तो यह रोगी तत्क्षण मरे॥

दूसरा प्रकार।

हिक्काश्वासतृषायुक्तं मूढं विभ्रांतलोचनम् ॥
सततोच्छ्वासिनं क्षीणं नरं क्षपयति ज्वरः ॥

अर्थ–हिचकी, श्वास, तृषा इन करके युक्त और जिसके नेत्र चलायमान हों तथा बेहोश हो और निरंतर ऊर्ध्व श्वास लेवे तथा जो क्षीण हो गया हो उसको ज्वर मारता है॥

असाध्यलक्षणज्वर ।

हतप्रभेंद्रियं क्षाममरोचकनिपीडितम् ॥
गंभीरतीक्ष्णवेगार्तं ज्वरितं परिवर्जितम् ॥

अर्थ–जिस मनुष्यके निस्तेजता आय जावे, इंद्रियोंकी शक्ति चली जावे, कृश हुआ तथा जिसको अरुचि हो, तथा अंतर्गत और बाह्य वेगसे पीडित उसको वैद्य त्याग देवे अर्थात् चिकित्सा न करे ॥

ज्वरमोक्षके पूर्वरूप ।

दाहः स्वेदो भ्रमस्तृष्णा कंपो विड्भेदसंज्ञिता ॥
कूजनं चाति वैगंध्यमाकृतिज्वरमोक्षणे ॥

अर्थ–दाह, पसीने, भ्रम, तृषा, कंप, मलका न उतरना, मूर्च्छा, गूंजना, अंगोंमें पसीनोंकी दुर्गंधि ये जानेवाले ज्वरके पूर्वलक्षण होते हैं, परंतु ये त्रिदोष ज्वरमें होते हैं अन्यज्वरमें नहीं ॥

ज्वरमुक्तलक्षण ।

देहो लघुर्व्यपगतक्लममोहतापं पाको मुखे करणसौष्ठवमव्यथत्वम् ॥
स्वेदः क्षवः प्रकृतियोगमनोऽन्नलिप्साकंडूश्च मूर्ध्नि विगतज्वरलक्षणानि॥

अर्थ–शरीर हलका हो, क्लम, मोह और ताप, मुखका पाक, कर्णेन्द्रिय बहुत उत्तम, शरीरकी सर्व व्यथा दूर हो जावे, पसीने आवे, प्रकृतिके तारतम्य करके छींक आवे, अन्नपर इच्छा हो और मस्तकमें खुजली चले ये सब लक्षण ज्वरमुक्त मनुष्यके जानने ॥

मधुरज्वरलक्षण ।

ज्वरो दाहो भ्रमो मोहो ह्यतीसारवमिस्तृषा ॥ अनिद्रा च मुखं रक्तं तालुजिह्वा च शुष्यति ॥ ग्रीवायां परिदृश्यंते स्फोटकाः सर्षपोपमाः ॥ क्षताशनात्स्वेदरोधान्मंथरो जायते नृणाम् ॥

अर्थ–ज्वर, दाह, भ्रम, मोह, अतीसार, वांती, प्यास, निद्रानाश, मुखपर लाली, तथा तालु और जिह्वा इनका सूखना, नाडमें सरसोंके समान फुंसी उठें, ये मधुरज्वर अत्यंत घृतपान करनेसे अथवा पसीनोंके रुकनेसे होता है ॥

सुरसादियोग।

सुरसा गोमयरसो ऽजाजी मृतमाक्षिका ॥ अथवा शांबरं शृंगं चंदनं जीरकं जलम् ॥ कैरातं कुटजोऽजाजी छिन्नैला पद्मकं फलम् ॥ घृष्ट्वा पीत्वा निहंत्याशु ज्वरं मधुरकाभिधम् ॥

अर्थ-तुलसी, गोबरका रस, जीरा, मरी हुई मक्खी, साँबरसींगा, लाल चंदन, काला जीरा, नेत्रवाला, चिरायता, इन्द्रजौ, गिलोय, इलायची और कमलगट्टा इन सबको जलमें घिसके ४ तोले पीवे तो शीघ्र मधुरज्वर दूर हो ॥

मुस्तादिकाढा।

मुस्ता पर्पटको यष्टी गोस्तनी समभागतः ॥ अष्टावशेषितः क्वाथो निपीतो मधुना सह ॥ पित्तभ्रमं ज्वरं दाहं हंति छर्दिं समंथराम् ॥

अर्थ-नागरमोथा, पित्तपापडा, मुलहटी और दाख ये समान भाग ले अष्टावशेष काढा कर शहत डालके देवे तो पित्तसंबंधी भ्रम, ज्वर, दाह, वान्ती और मधुरज्वर ये नष्ट हों ॥

विण्माक्षिकाकाढा।

विण्मक्षिकोद्भवसमूलसुश्वेतमिक्षुकर्पूरिकापणदरं सुरसार्द्रशाखा ॥ न्यग्रोधपर्णक्वथनं समभागकर्षमष्टावशेषज्वरमंथरघाति शीघ्रम् ॥

अर्थ-मक्खियोंकी बीट, जडसमेत सपेद ईखकी जड, कपूर, कौडी, शंख, तुलसीकी मंजरी, वडके पत्ते प्रत्येक एक एक तोला लेवे इनका अष्टावशेष काढा करके देवे तो मधुरज्वर नाश होय ॥

चंदनादिकाढा।

चंदनोशीरधान्यं च वालकं पर्पटं तथा ॥
मुस्ताशुंठीसमायुक्तं मंथरज्वरनाशनम् ॥

अर्थ-चंदन, खस, धनिया, नेत्रवाला, पित्तपापडा, नागरमोथा और सोंठ इनका काढा मंथर ज्वरको नष्ट करे ॥

माक्षिकादियोग।

माक्षिकागुडसंयुक्ता ज्वरे मंथरके हिता ॥
भ्रममोहातिसारांश्च नाशयत्यविलंबतः ॥

अर्थ-मधुरज्वरमें मक्खीको गुडमें मिलायके खाय तो भ्रम, मोह और अतीसार इनको शीघ्र शमन करे ॥

कृष्णमधुरालक्षण।

ज्वरं चक्षुर्मोहं च दंतोष्ठौ चैव श्यामकौ ॥ जिह्वाकंठमुखघ्राणरक्तता चाक्षिकर्बुरम् ॥ कंठे मुक्तावलीहारः सप्ताहाद्धार्यते न वा ॥ त्रिसप्तकादिनादर्वाक्स्फोटाः स्युः सर्षपोपमाः ॥

अर्थ-ज्वर, नेत्रोंका मिचना और दाँत, होठ, जिह्वा, कंठ, मुख और नासिका ये काले तथा नेत्र चित्रविचित्र वर्ण ये लक्षण होते हैं और जिसके गलेमें सात दिनके भीतर मोतियोंका हार न पहनावे तो इक्कीस दिनमें सरसोंके समान फोडे उत्पन्न हों ये लक्षण कृष्णमधुरज्वरके जानने ॥

सहस्रवेधपाषाणादियोग।

सहस्रवेधिपाषाणं कपालं कच्छपस्य च ॥ वृद्धैला तुलसीपत्रं नारिकेलास्थिचूतजम् ॥ दाणाखसखसाख्याश्च गोमयस्य रसेन च ॥ घृष्ट्वा पानाय दातव्यं मधुरज्वरशांतये ॥

अर्थ-हींगका छोटासा टुकडा, कछुएके कपालकी हड्डी, बडी इलायची, तुलसीके पत्ते, नारियलकी नरेली, आमकी गुठली, खसखसके दाने इन सबको गोबरके रसमें पीसके पिवावे तो मधुरज्वरकी शांति होय ॥

भूनिंबादिकाढा।

भूनिंबातिविषा लोध्रं मुस्तकेंद्रयवामृता ॥ बालकं धान्यबिल्वं च कषायो माक्षिकान्वितः॥ विड्भेदश्वासकासांश्च रक्तपित्तज्वरं हरेत्॥

अर्थ-चिरायता, अतीस, लोध, नागरमोथा, इन्द्रजव, गिलोय, नेत्रवाला, धनिया और बेलगिरि इनके काढेमें शहत मिलायके पिवावे तो अतीसार, श्वास, खाँसी और रक्तपित्तको दूर करे ॥

वासाद्यकाढा।

वासाद्राक्षाभयाक्वाथः पीतः सक्षौद्रशर्करः ॥
निहंति रक्तपित्तार्तिं श्वासं कासं ज्वरं तथा ॥

अर्थ-अडूसा, दाख और छोटी हरड इनके काढेमें शहत और मिश्री मिलायके पीवे तो रक्तपित्तकी पीडा, श्वास, खाँसी और ज्वर इनको नष्ट करे ॥

मधुकादिकाढा।

मधुकं वल्कलं कुष्ठमुत्पलं चंदनं वचा ॥ त्रिफला दुर्लभा वासा द्राक्षा शिरीषपद्मकम् ॥ मूर्वा यष्टिरयं क्काथो दाहं मूर्च्छां तृषां भ्रमम् ॥ रक्तपित्तज्वरं हंति निपीतो मधुना सह ॥

अर्थ–मुलहटी, दालचीनी, कूठ, नीला कमल, चंदन, वच, त्रिफला, अडूसा, दाख, सिरसकी छाल, पद्माख, मूर्वा और आरंगी इनके काढेमें सहत डालके पीवे तो दाह, मूर्च्छा, प्यास, भ्रम, रक्तपित्त और ज्वरको दुर करे ॥

दुर्जलजनितज्वरपर पटोलादिकाढा।

पटोलमुस्तामृतवाल्लिवासकं सनागरं धान्यकिराततिक्तकम् ॥
कषायमेषां मधुना युतं नरो निवारयेद्दुर्जलदोषमुल्बणम् ॥

अर्थ–पटोलपत्र, नागरमोथा, गिलोय, अडूसा, सोंठ, धनिया, चिरायता और कुटकी इनका काढा सहत मिलायकर पीवे तो दुष्टजलका घोर दोष निवारण होय ॥

किराततिक्तादिचूर्ण।

किराततिक्तात्रिवृदंबुपिप्पलीविडंगविश्वाकटुरोहिणीरजः ॥
निहंति लीढं मधुनातिसत्वरं सुदुस्तरं दुर्जलदोषजं ज्वरम् ॥

अर्थ–कडुवा चिरायता, निसोथ, नागरमोथा, पीपल, वायविडंग, सोंठ और कुटकी इन सबका चूर्ण सहतमें मिलायके चाटे तो दुष्टजलजनित ज्वर शीघ्र दूर होय ॥

हरीतक्यादिचूर्ण।

हरीतकी निंबपत्रं नागरं सैंधवोऽनलः ॥
एषां चूर्णं सदा खादेद्दुर्जरज्वरशांतये ॥

अर्थ–हरडकी छाल, नीमके पत्ते, सोंठ, सैंधानिमक, चीतेकी छाल इन सबका चूर्ण दुर्जलजनित विकारकी शांतिके अर्थ नित्य खाना चाहिये ॥

शुंठ्यादिकल्क।

भोजनादौ नरैर्भुक्तं शुंठीराज्यभयोत्थितम् ॥
कल्कं तु सहते नित्यं नानादेशोद्भवं जलम् ॥

अर्थ–जो मनुष्य नित्य प्रति भोजनके आदिमें सोंठ, राई और हरड इनका कल्क नित्य पीता है उनको अनेक देशका जल विकार नहीं करता है ॥

आर्द्रकादिचूर्ण ।

महार्द्रकयवक्षारौ पीत्वा चोष्णेन वारिणा ।
नानादेशसमुद्भूतं वारिदोषमपोहति ॥

अर्थ-जो मनुष्य सोंठ और जवाखारको गरम जलके साथ पीता है उसके अनेक देशोंका उत्पन्न जलविकार दूर होता है ॥

दुर्जलजेतारस ।

विषं भागद्वयं दग्धकपर्दः पंचभागकः ॥ मरीचं नवभागं च चूर्णं वस्त्रेण शोधयेत् ॥ आर्द्रकस्य रसेनास्य कुर्यान्मुद्गसमां वटीम् ॥ वारिणा वटिकायुग्मं प्रातः सायं च भक्षयेत् ॥ अयं रसो ज्वरे योज्यस्तस्मिन्दुर्जलजेऽपि च ॥ अजीर्णाध्मानविष्टंभशूलेषु श्वासकासयोः ॥

अर्थ-विष २ तोले, कौडीकी भस्म ५ तोले, काली मिरच ९ तोले ले सबको कूट पीस कपडछानकर अदरखके रसमें मूंगके समान गोली बनावे, २ गोली जलके साथ प्रातःकाल और सायंकालमें खाय, इस रसको ज्वरमें तथा जलजनित ज्वरमें देय एवं अजीर्ण, अफरा, विष्टंभ, शूल, श्वास और खाँसीमें देवे तो ये रोग दूर हों ॥

ज्ञानोदयरस ।

कलावेदांकचंद्रांशैः सर्वांशसितया युतैः ॥ शक्रासनरजो जातीफलं शुक्लैः सुमेलितैः ॥ ज्ञानोदयो भवेदेष साधकानंदसिद्धिदः ॥ सेवितः सात्म्यतो ग्राह्मी जलदोषापनोदकः ॥

अर्थ-इन्द्रजौ १५ तोले, पित्तपापडा ४ तोले, जायफल ९ तोले, सपद अंडकी जड १ तोला लेवे, सबका चूर्ण कर बराबरकी मिश्री मिलावे तो यह ज्ञानोदय तैयार हो, इसके सेवन करनेवालोंको सिद्धि देवे और सात्म्य होकर जलसंबंधी दोषोंको दूर कर ॥

हरिद्रकवृक्षयोग ।

सहरिद्रयवक्षारौ पीत्वा चोष्णेन वारिणा ॥
नानादेशसमुद्भूतं वारिदोषमपोहति ॥

अर्थ-जो मनुष्य हलदी और जवाखार मिलाके गरम जलके साथ पीवे तो अनेक देशोंके दुष्ट जलविकारको दूर करे ॥

मद्योद्भवज्वर ।

मद्याजीर्णे समालोक्य वामयेच्छर्करोदकैः ॥ पित्तज्वरोपचारेण मद्यज्वरमुपाचरेत् ॥ मद्यपानज्वरस्यादौ लंघनं नैव कारयेत् ॥

अर्थ-मद्यजीर्णवालेको शरवत पिलाकर वमन करावे, तथा मद्यजनित ज्वरका यत्न पित्तज्वरके सदृश करे, परंतु मद्यजन्य ज्वरके आदिमें लंघन नहीं कराना चाहिये ॥

फिर उलटकर ज्वर आया हो उसपर लंघन ।

अपथ्यदोषाद्यदि संप्रवृत्तो भवेज्ज्वरश्चेद्बलिनश्च पुंसः ॥
हितं पुनर्लंघनमादिशंति सतोऽल्पदोषस्य च भेषजानि ॥

अर्थ-यदि बलवान् पुरुषके अपथ्य करनेसे फिर ज्वर हो आवे तो दोषकी अधिकताके अनुसार लंघन करना हित है और अल्पदोषमें पाचनादि औषध देवे ॥

रेचन ।

यदि निर्व्याहृतमलः पुनरेव भवेज्ज्वरः ॥
मलं च निर्हरेच्छीघ्रं ततः संपद्यते सुखम् ॥

अर्थ-यदि दस्त करानेके अनंतर फिर ज्वर हो आवे तो वैद्य उसको फिर दस्त कराके मलको निकाले तो तत्काल सुखी होवे ॥

किराततिक्तादिकाढा ।

किराततिक्तकं तिक्ता मुस्ता पर्पटकामृता ॥
निःक्वाथ्य पीता निघ्नंति पुनरावर्तिकज्वरम् ॥

अर्थ-कडुआ चिरायता, कुटकी, नागरमोथा, पित्तपापडा, गिलोय इनका काढा प्राशन करनेसे फिर लौटकर आनेवाले ज्वरको नाश करे ॥

तिक्तादिकाढा ।

तिक्तोशीरबलाधान्यपर्पटांभोधरैः कृतः ॥
क्वाथः पुनः समायातं ज्वरं शीघ्रं निवारयेत् ॥

अर्थ-कुटकी, खस, बला, धनिया, पित्तपापडा और नागरमोथा इनका काढा फिर लौटकर आनेवाले ज्वरको शीघ्र नष्ट करे ॥

अपथ्यज्वरलक्षण ।

अपथ्यजे मद्यभवे च हेतुर्हेतुज्वरे पित्तमुदाहरंति ॥ दाहश्च शैत्यं

च शिरोऽव्यथा च कोष्ठाभिवृद्धिः कटितोदकंडूः ॥ मलातिपात-
स्त्वतिनद्धता च अपथ्यदोषेण भवे ज्वरे च ॥

अर्थ-अपथ्य और मद्यजन्य ज्वरमें पित्त प्रधान होता है, तिनमें कुपथ्य कर-
नस हुए ज्वरमें दाह, शीतल, मस्तकपीडा, उदरवृद्धि और कमरकी पीडा, खुजली,
दस्त, अथवा मलबद्धता इन विकारोंको करे है ॥

कट्वक्यादिकाढा ।

कटुकी पिप्पलीमूलं मुस्ता चैव हरितकी ॥
गिरिमालसमः क्वाथः सर्वज्वरविनाशनः ॥

अर्थ-कुटकी, पीपलामूल, नागरमोथा, हरडकी छाल और किरवारेकी गिरी,
सब समान लेकर क्वाथ करे । यह क्वाथ सर्वज्वरोंको नाश करे ॥

आमलक्यादिचूर्ण ।

आमलं चित्रकं पथ्या सैंधवं पिप्पलीकृतम् ॥ चूर्णं सोऽयं गणो
ह्येष सर्वज्वरविनाशनः ॥ भेदी रुचिकरः श्लेष्मजेता दीपनपाचनः ॥

अर्थ--आमला, चित्रक, बडी हरडकी छाल, सैंधानिमक और पीपल इनका
चूर्ण सर्वज्वर और कफको दूर करे, दस्तकर, रुचिकारी और दीपन पाचन है ॥

गुडूच्यादिकाढा ।

गुडूची धनकारिष्टपद्मको रक्तचंदनम् ॥ गुडूच्यादिगणः क्वाथः
सर्वज्वरहरः परः ॥ दीपनो दाहहृल्लासतृष्णाछर्घरुचीर्जयेत् ॥

अर्थ-गिलोय, धानिया, नीमकी छाल, पद्माख और लालचंदन यह गुडू-
च्यादिगणक्वाथ सर्वज्वर, दाह, हृल्लास, प्यास, वमन और अरुचिको दूर करे
तथा दीपन है ॥

क्षुद्रादिकाढा ।

क्षुद्रा किराततिक्तं च शुंठी छिन्ना च पौष्करम् ॥
कषाय एषां शमयेत्पीतश्चाष्टविधं ज्वरम् ॥

अर्थ-कटेरी, चिरायता, सोंठ, गिलोय, अंडकी जड और पुहकरमूल इन छः
औषधोंका काढा पीनेसे आठ प्रकारके ज्वर दूर करे ॥

नागरादिपाचन ।

नागरं देवकाष्ठं च धान्याकं बृहतीद्वयम् ॥

दद्यात्पाचनकं पूर्वं ज्वरितानां ज्वरापहम् ॥

अर्थ—सोंठ, देवदारु, धनिया, दोनों कटेरी इनका काढा कर ज्वरवालोंके ज्वर दूर करनेको यह पाचन देवे ॥

चलदलतरुसेवा होममंत्रो त्रिनेत्रद्विजजनगुरुपूजा विष्णुनाम्नां सहस्रम् ॥ मणिधृतिरपि दानान्याशिषस्तापसानां सकलमिदमरिष्टं स्पष्टमष्टज्वराणाम् ॥

अर्थ—पीपरकी सेवा, होम, गायत्र्यादि मंत्रोंका जप, श्रीशिव, ब्राह्मण, गुरु इनका पूजन, विष्णुसहस्रनामका पाठ, मणिधारण, दान, तपस्वियोंके आशीर्वाद इन यत्नों करके अष्टविध ज्वर शांत हो ॥

समुद्रस्योत्तरे तीरे द्विरदो नामवानरः ॥
तस्य स्मरणमात्रेण ज्वरो याति दिगंतरम् ॥

अर्थ—समुद्रके उत्तरतीरमें द्विरदनाम वानर रहता है उसके स्मरण करतेही ज्वर भाग जाता है, यह श्लोक मंत्ररूप है ज्वरवाला इसका स्मरण कराकरे ॥

वेलाज्वर ।

शोकात्क्रोधात्तथा जीर्णात्संतापाद्बलहानितः ॥
अंतकाले च मर्त्यानां जायंते दारुणा ज्वराः ॥

अर्थ—शोक, क्रोध, अजीर्ण, संताप और बलहानि इनसे मनुष्यको अंतकालमें भयंकर ज्वर उत्पन्न होता है ॥

मूलिकाबंधनम् ।

सर्वज्वरापहं नीलिमूलं रात्रिज्वरापहम् ॥
दुग्धिकामूलिका कर्णे हंति वेलाज्वरं तथा ॥

अर्थ—नीलीवृक्षकी जड और हलदी ये सर्व ज्वरनाशक हैं उसी प्रकार दूधीकी जडको कानमें रखनेसे वेलाज्वर दूर हो ॥

पिप्पलीचूर्ण ज्वरपर ।

मधुना पिप्पलीचूर्णं लिहेत्कासज्वरापहम् ॥
हिक्काश्वासहरं कंठ्यं प्लीहघ्नं बालकोचितम् ॥

अर्थ—एक मासे पीपलके चूर्णको शहतसे चाटे तो इससे कासज्वर, हिचकी

और श्वास ये दूर हों, तथा यह चूर्ण कंठको हितकारी है, प्लीहाको दूर करे तथा बालकोंके उपयोगी है ॥

धान्यादिचूर्ण।

धान्यं लवंगं त्रितयं च शुंठी कौष्णांबुपीतं तरुणज्वरापहम् ॥
तेभ्यः शतं वारि तथाग्निमांद्यं श्वासाद्यजीर्णं विषमं च वातम् ॥

अर्थ-धनिया, लौंग, निशोथ और सोंठ इनके चूर्णको गरम जलके साथ सेवन करनेसे तरुण ज्वरका नाश हो, अथवा इन औषधोंका काढा देवे तो मंदाग्नि, श्वास, अजीर्ण, विषमज्वर और वादीको नाश करे ॥

गोरोचनादिचूर्ण।

गोरोचनं च मरिचं रास्ना कुष्ठं च पिप्पली ॥
उष्णोदकेन पीतं च सर्वज्वरविनाशनम् ॥

अर्थ-गोरोचन, काली मिरच, रास्ना, कूठ और पीपल इनका चूर्ण गरम जलके साथ पीनेसे सर्व ज्वर दूर हों ॥

सितोपलादिचूर्ण।

सितोपला षोडशी स्यादष्टौ स्याद्वंशरोचना ॥ पिप्पली स्याच्चतुष्कर्षा एला स्याच्च द्विकार्षिका ॥ एककर्षस्त्वचः कार्यश्चूर्णयेत्सर्वमेकतः ॥ सितोपलादिकं चूर्णं मधुसर्पिर्युतं लिहेत् ॥ कासश्वासक्षयहरं हस्तपादांगदाहजित् ॥ मंदाग्निं सुप्तजिह्वत्वं पार्श्वशूलमरोचकम् ॥ ज्वरमूर्ध्वगतं रक्तं पित्तमाशु व्यपोहति ॥

अर्थ-मिश्री १६ तोले, वंशलोचन ८ तोले, पीपर ४ तोले, छोटी इलायचीके बीज २ तोले और दालचीनी अथवा तज १ तोला, इनका चूर्ण कर शहत और घृतसे देवे तो यह सितोपलादि चूर्ण खाँसी, श्वास, क्षय, हाथ पैरोंका दाह, मंदाग्नि, जीभकी शून्यता, पँसवाडेका शूल, अरुचि, ज्वर, ऊर्ध्वगत रक्तविकार और पित्त इनका नाश होय ॥

भार्ङ्ग्यादिचूर्ण।

भार्गी कर्कटशृंगी च चव्यं तालीसपत्रकम् ॥ मरिचं मागधीमूलं प्रत्येकं द्विपलं भवेत् ॥ षट्पलं शृंगवेरं च द्विपलं पिप्पलीद्वयम् ॥ चातुर्जात-

मुशीरं च पलमेकं पृथक्पृथक् ॥ चातुर्जातसमा शुभ्रा शर्करा समयोजिता ॥ ज्वरमष्टविधं हंति कासं श्वासं च दारुणम् ॥ शोफशूलोदराध्मानदोषत्रयहरं परम् ॥

अर्थ-भारंगी, काकडासिंगी, चव्य, तालीसपत्र, कालीमिरच और पीपरामूल ये प्रत्येक आठ २ तोले, सोंठ २४ तोले, पीपर ८ तोले, तथा गजपीपर, चातुर्जात और खस ये ४ तोले पृथक् २ लेवे, मिश्री ४ तोले, सबका चूर्ण करे। इस भांर्ग्यादि चूर्णके सेवनसे आठ प्रकारके ज्वर, खाँसी, श्वास, सूजन, उदर, पेटका फूलना और त्रिदोष इनको दूर करे ॥

अंनतादिचूर्ण ।

अनंतं बालकं मुस्ता नागरं कटुरोहिणी ॥ सुखांबुना प्रागुदयात्पिबेदक्षसमं रवेः ॥ एतत्सर्वज्वरान्हंति दीपयत्याशु चानलम् ॥

अर्थ-जवासा, नेत्रवाला, नागरमोथा, सोंठ, कुटकी इनका एक तोला चूर्ण कुछ गरम जलके साथ सूर्योदयसे पूर्व पीवे तो सर्व ज्वर दूर हो और जठराग्नि प्रबल हो ॥

भेडोक्तसुदर्शनचूर्ण ।

तालीसं त्रिफला त्रुटी त्रिकटुकं त्वक्त्रायमाणं त्रिवृन्मूर्वा ग्रंथिनिशायुगं शठिर्बलारुक्कंटकारीयुगम् ॥ मुस्ता पर्पटनिंबपुष्करजटा भार्गी यवानी हिमं चव्यं चित्रकपुंडरीकतगरं सेव्यं विडंगं वचा ॥ यासो वत्सककुंडलींद्रयवकं देवद्रुमं बालकं बीजं शिग्रुभवं पटोलकटुका पद्माह्वपत्रं विषा ॥ काकोली मधु कुंकमं च सतवक्षीरी लवंगं पृथक्पर्णी शैलजशालिपर्णसहितं शामंतकी पुष्पकम् ॥ सर्वं समं चूर्णतदर्धभागं कैरातकं श्रेष्ठतमं हि चूर्णम् ॥ सुदर्शनं नाम मरुद्बलासामयोद्भवान्हंति पृथक्कृताञ्ज्वरान् ॥ संसर्गजान्सकलजान्विषमान्निहन्याद्धातूद्भवान्विषकृतानभिघातजांश्च ॥ सामान्समानसकृतानतिदाहयुक्ताञ्छीतान् तृतीयकचतुर्थविपर्ययांश्च ॥ ऐकाहिकद्व्याहिकसान्निपातान्नानाविधान्पाक्षिकतान्सजातान् तृड्दाहमोहभ्रमदैन्यतंद्रासश्वासकासारुचिपांडुरोगान् ॥

हलीमकं कामलपार्श्वशूलं पृष्ठोद्भवं जानुभवं तथैव ॥ त्रिकग्रहं वातविकारजातं विनाशयत्येव शिरोग्रहं च ॥ स्त्रीणां रजोदोषसमुद्भवांश्च विनाशयेदुष्णजलेन पित्तम् ॥ शीतांबुना पित्तभवान्विकारान्नानामुनींद्रैर्गदितं जगद्धितम् ॥ सुदर्शनं दानवनाशनं यथा सुदर्शनं योगविनाशनं तथा ॥

अर्थ–तालीसपत्र, त्रिफला, इलायची, त्रिकटु, तज, त्रायमाण, निसोथ, मूर्वा, पीपरामूल, हलदी, दारुहलदी, कचूर, बला, कटेरीकी जड, बडी कटेरीकी जड, नागरमोथा, पित्तपापडा, नीमकी छाल, पुहकरमूल, भारंगी, अजमायन, नेत्रवाला, चव्य, चीतेकी छाल, कमलगट्टा, तगर, खस, वायविडंग, वच, जवासा, कूडेकी छाल, गिलोय, इन्द्रजौ, देवदारु, पीली खस, सहिंजनेके पीज, पटोलपत्र, कुटकी, पद्माख, पत्रज, कलियारी, काकोली, मुलहटी, केशर, तवाखीर, लौंग, पृष्ठपर्णी, पत्थरका फूल, सालपर्णी और सूखी अंबाडा ये सब औषध समान ले और सब औषधोंका अर्धभाग चिरायता डाले तो यह (सुदर्शन चूर्ण) वातकफसे प्रगट ज्वरोंको तथा पृथक् २ ज्वरोंको, संसर्गज ज्वर, संनिपातजन्य, विषमज्वर, धातुगतज्वर, विषजन्यज्वर, अभिघातज्वर, सामज्वर, मानसज्वर, दाहज्वर, शीतज्वर, तृतीयक, चातुर्थिक, विपर्यय, ऐकाहिक, द्व्याहिक, त्रिदोषात्मक, पक्षज्वर, मासज्वर, तृषा, दाह, मोह, भ्रम, दैन्य, तंद्रा, श्वास, खाँसी, अरुचि, पांडुरोग, हलीमक, कामला, पार्श्वशूल, पृष्ठशूल, त्रिकशूल, जानुशूल, संपूर्ण वातविकार, मस्तकशूल, अनेक देशोंके जलविकार, दूषीविष, स्त्रीके रजविकार इन सब रोगोंको गरम जलके साथ लेनेसे दूर करे और शीतलजलसे पित्तके विकारोंको नाश करे, यह पहले अनेक मुनियोंने जगत्के हितार्थ कहा है, जैसे सुदर्शन चक्र दैत्योंका नाश करे उसी प्रकार यह सुदर्शन चूर्ण रोगोंको नाश करता है ॥

सुदर्शनचूर्ण ।

त्रिफला रजनीयुग्मं कंटकारीयुगं सठी ॥ त्रिकटु ग्रंथिकं मूर्वा गुडूची धन्वयासकः ॥ कटुका पर्पटो मुस्ता त्रायमाणा च वालकम् ॥ निंबु पुष्करमूलं च मधुयष्टी च वत्सकः ॥ यवानींद्रयवा भार्गी शिग्रुबीजं सुराष्ट्रजा ॥ वचा त्वक्पद्मकोशीरचंदनातिविषा बला ॥ शालिपर्णी पृष्ठिपर्णी विडंगं तगरं तथा ॥ चित्रकं देवकाष्ठं च

चव्यं द्राक्षा पटोलजम्॥ जीवकर्षभकौ चैव लवंगं वंशलोचना॥ पुंडरीकं च काकोली पत्रजं जातिपत्रकम्॥ तालीसपत्रं च तथा समभागानि चूर्णयेत्॥ सर्वचूर्णस्य चार्धांशं कैरातं प्रक्षिपेत्सुधीः॥ एतत्सुदर्शनं नाम चूर्ण दोषत्रयापहम्॥ ज्वरांश्च निखिलान्हंति नात्र कार्यं विचारणा॥ पृथग्द्वंद्वागंतुकांश्च धातुस्थान्विषमज्वरान्॥ सन्निपातभवांश्चापि पीनसानपि नाशयेत्॥ शीतज्वरैकाहिकादीन् मोहं तंद्रां भ्रमं तृषाम्॥ श्वासकासौ च पांडुं च हृद्रोगं हंति कामलाम्॥ त्रिकपृष्ठकटीजानुपार्श्वशूलनिवारणम्॥ शीतांबुना पिबेद्धीमान् सर्वज्वरनिवृत्तये॥ सुदर्शनं यथा चक्रं दानवानां विनाशनम्॥ तद्वज्ज्वराणां सर्वेषामिदं चूर्णं प्रणाशनम्॥

अर्थ-हरड, बहेडा, आमला, हलदी, दारुहलदी, छोटी बडी कटेरी, कचूर, सोंठ, मिरच, पीपल, पीपरामूल, मूर्वा, गिलोय, धमासा, कुटकी, पित्तपापडा, नागरमोथा, त्रायमाण, नेत्रवाला, नीमकी छाल, पुहकरमूल, मुलहटी, कूडेकी छाल, अजमायन, इन्द्रजौ, भारंगी सहिंजनेके बीज, फिटकरी, वच, दालचीनी, पद्माख, खस, लालचंदन, अतीस, खरेटी, सालपर्णी, पृष्ठपर्णी, वायविडग, तगर, चीतेकी छाल, देवदार, चव्य, दाख, पटोलपत्र, जीवक, ऋषभक, लौंग, वंशलोचन, कमलगट्टा, काकोली, पत्रज, जावित्री और तालीसपत्र ये समान भाग ले चूर्ण करे और सब चूर्णसे आधा चिरायता डाले तो यह (सुदर्शन) चूर्ण संपूर्ण ज्वरोंको नाश करे, तथा वात, पित्त, कफ इनका नाशक है; इसमें विचार नहीं करना। तथा वातज्वर, पित्तज्वर, कफज्वर, वातपित्तज्वर, वातकफज्वर, पित्तकफज्वर, आगंतुकज्वर, धातुगतज्वर, विषमज्वर, संन्निपातज्वर, पीनस, शीतज्वर, ऐकाहिकादिज्वर, मोह, तंद्रा, भ्रम, तृषा, श्वास, खॉसी, पांडुरोग, हृद्रोग, कामला, त्रिक, पीठ, कमर, घोटू और पार्श्व इनका शूल इन सबको नाश करे। यह चूर्ण शीतल जलके साथ पीवे तो जैसे सुदर्शन चक्र सर्व दैत्योंको नाश करे उसी प्रकार यह सुदर्शन चूर्ण रोगोंको नाश करे है॥

लघुसुदर्शनचूर्ण।

गुडूची पिप्पलीमूलं कणा तिक्ता हरीतकी॥ नागरं देवकुसुमं निंबत्वक्चंदनं तथा॥ सर्वचूर्णस्य चार्धांशं कैरातं प्रक्षिपेत्सुधीः॥

एतत्सुदर्शनं लघुनाम्ना दोषत्रयापहम् ॥ ज्वरांश्चाप्यखिलान्ह-
न्यान्नात्र कार्या विचारणा ॥

अर्थ-गिलोय, पीपरामूल, पीपर, कुटकी, हरडकी छाल, सोंठ, लौंग, नीमकी छाल, लालचंदन ये सब बराबर लेवे । सब चूर्णसे आधा चिरायता ले यह लघु सुदर्शन चूर्ण तीनों दोषोंको और संपूर्ण ज्वरोंको नाश करे है ॥

आमलक्यादिचूर्ण ।

धात्रीशिवासैंधवचित्रकाणां कणायुतानां समभागचूर्णम् ॥
जीर्णज्वरारोचकवह्निमांद्ये विड्विग्रहे शस्तमिति प्रतिज्ञा ॥

अर्थ-आमले, हरड, सैंधानिमक, चीतेकी छाल और पीपल समान भाग ले चूर्ण करे तो जीर्णज्वर, अरुचि, मंदाग्नि, बद्धकोष्ठको दूर करे ॥

केसरादि ।

केसरं मातुलिंगस्य मधुसैंधवसंयुतम् ॥
जिह्वातालुगलक्लोमशोषे मूर्धनि दापयेत् ॥

अर्थ-बिजोरेकी केशरमें सहत और सैंधानिमक मिलाकर मस्तकपर लगावे तो जीभ, तालुआ, गला और पिपासा स्थानका सूखना दूर होय ॥

विदार्यादिलेप ।

विदारी दाडिमं लोध्रं दधित्थं बीजपूरकम् ।
एभिः प्रलिप्यान्मूर्धानं तृड्दाहार्तस्य देहिनः ॥

अर्थ-जो मनुष्य प्यास और दाहसे पीडित हो उसके मस्तकपर विदारीकंद, अनारदाना, लोध, कमरख और बिजौरेकी केशर पीसकर लेप करे ॥

ज्वरघ्नीगुटिका ।

भागैकः स्याद्रसाच्छुद्धादेलायः पिप्पली शिवा ॥ आकारकरभो गंधः कटुतैलेन शोधितः ॥ फलानि चेंद्रवारुण्याश्चतुर्भागमिता अमी ॥ एकत्र मर्दयेच्चूर्णमिंद्रवारुणिकारसैः ॥ माषोन्मितां गुटीं कृत्वा दद्यात्सर्वज्वरे बुधः ॥ छिन्नारसानुपानेन ज्वरघ्नी गुटिका मता ॥

अर्थ-शुद्ध पारा १ तोला, एलुआ, पीपल, छोटी हरड, अकरकरहा और सरसों

के तेलमें) शुद्ध करी गंधक, तथा इन्द्रायणका गूदा ये छः औषध चार चार तोले ले चूर्ण कर इन्द्रायणके गूदेके रसमें खरल कर मासे मासेकी गोली करें गिलोयके रससे देवे तो ज्वर दूर हो ॥

बलाद्यघृत।

बलां श्वदंष्ट्रां बृहतीं कलशीं धावनीं पुनः ॥ निंबपर्पटकं मुस्तां त्रायमाणां दुरालभाम् ॥ कृत्वा कषायं कल्कार्थं दद्यादामलकीं शठीम् ॥ द्राक्षां पुष्करमूलं च मेदामामलकानि च ॥ घृतं पयश्च तात्सिद्धं सर्पिर्ज्वरहरं परम् ॥ क्षयकासप्रशमनं शिरःपार्श्वरुजापहम् ॥

अर्थ-खरेटी, गोखरू, कटेरी, पृश्नपर्णी, धायके फूल, नीमकी छाल, पित्तपापडा, नागरमोथा, त्रायमाण और धमासा इनका काढा करके उसमें भूयआमला, कचूर, दाख, पुहकरमूल, मेदा और आमले इनका कल्क तथा ६४ तोले घृत और चौंसठ तोले दूध डालके अग्निपर घृत सिद्ध करे। यह ज्वर, क्षय, खांसी और शिर पँसवाडेकी पीडा इनको नाश करे॥

मंजिष्ठाद्यघृत।

मञ्जिष्ठातिविषा पथ्या वचा नागररोहिणी ॥ देवदारु हरिद्रा च द्रोणिन्यां पालिकां पचेत् ॥ क्राथेऽस्मिन्साधयेत्पिष्टैर्घृतप्रस्थं पिचून्मितैः ॥ शृंगबेरकणाहिंगुद्विक्षारकटुपंचकैः ॥ तत्कफावृतसर्वैकज्वरिणाममृतोपमम् ॥ वर्ध्माहिक्कारुचिश्वासपांडुरोगविकारिणी ॥ मलग्रहप्रमेहार्शप्लीहापस्मारशोषिणाम् ॥ उदावर्तपरीतानां मंदाग्निकृमिकुष्ठिनि ॥

अर्थ-मँजीठ, अतीस, हरड, वच, सोंठ, कुटकी, देवदारु, हलदी और गुडतजी ये सर्व पदार्थ चार २ तोले लेके काढा करे उसमें सोंठ, पीपल, हींग, जवाखार और कटुपंचक इनका कल्क एक तोला और ६४ तोले घी मिलायके अग्निपर सिद्ध करे। यह घृत कफज्वरवालेको अमृतके समान है तथा अंडवृद्धि, हिचकी, अरुचि, श्वास, पांडुरोग, मलबद्धता, प्रमेह, ववासीर, प्लीहा, अपस्मार, क्षय, उदावर्त्त, मंदाग्नि और कृमिरोग इनको नाश करे॥

कुलित्थाद्यघृत।

कुलित्थकोलत्रिफलादशमूलयवान्पचेत् ॥ त्रिफलासलिलद्रोणे

घृते पक्त्वाक्षकान् क्षिपेत् ॥ पंचकोलकसप्ताह्वा वयस्था हिंगु तुंबरुः ॥ शठी पुष्करमूलार्कमूलप्रतिविषा वचा ॥ किराततिक्तकं मुस्तं कर्कटाख्यां दुरालभाम् ॥ नक्तमालमुभे पाठे कटुका शिग्रुतेजिनी ॥ सोमवल्कश्च रजनी कटुकी कंटकारिका ॥ पटोलनिंबगोजिह्वाकसकामदनो जटा ॥ लवणानि पलांशानि क्षारानर्धं पलोन्मितान् ॥ प्रस्थं वाज्यस्य तत्सिद्धं दीपनं कफवातनुत् ॥ गृध्रसीग्रहणीगुल्मश्वासकासार्शसां हितम् ॥ दीर्घज्वराभिभूतानां ज्वरिणाममृतोपमम् ॥

अर्थ–कुलथी, बेर, हरड, बहेडा, आमला, दशमूल और इन्द्रजव ये एवं त्रिफलाके १६३८४ तोले काढेमें पंचकोल, सतोना, आमले, हींग, तुंबरू, कचूर, पुहकरमूल, आककी जड, अतीस, वच, चिरायता, नागरमोथा, कांकडासींगी, धमासा, कंजा, पाढल, काष्ठपाटला, कुटकी, कटेरी, पटोलपत्र, नीमकी छाल, गोभी, करोंदी, मैनफल, जटामांसी ये सब एक एक तोला ले निमक ४ तोले, क्षार २ तोले और घी ६४ तोले डालके सिद्ध करे। यह कफवात, गृध्रसी, संग्रहणी, गोला, श्वास, खांसी और बवासीरवाले रोगियोंको हितकारी है और बहुत दिनके ज्वरवालोंको अमृत तुल्य है ॥

अमृताद्यघृत ।

अमृतात्रिफलापटोलयासैः सपयस्कंविधिवद्घृतं विपक्वम् ॥
विषमज्वरनाशनं प्रधानं क्षयगुल्मारुचिकामलापहारि ॥

अर्थ–गिलोय, त्रिफला, पटोलपत्र और धमासा इनका अथवा कल्क, दूध और घृत ये सब एकत्र कर घृत सिद्ध करावे तो यह विषमज्वर, क्षय, गुल्म, अरुचि और कामला इनका नाश करे ॥

गुडूच्यादिघृत ।

गुडूच्यारसकल्काभ्यां त्रिफलाया रसेन तु ॥
मृद्वीका वा बलायाश्च सिद्धाः स्नेहा ज्वरच्छिदः ॥

अर्थ–गिलोयके कल्क और रससे तथा त्रिफलाके रससे अथवा दाख और खरेटीके रससे सिद्ध करा हुआ घृत ज्वरको दूर करता है ॥

पंचतिक्तघृत।

वृषनिंबामृताव्याघ्रीपटोलानां कृतेन च ॥ कल्केन पक्वं सर्पिस्तु निहन्याद्विषमज्वरान् ॥ पांडुं कुष्ठं विसर्पं च कृमीनर्शांसि नाशयेत् ॥

अर्थ-अडूसा, नीमकी छाल, गिलोय, कटेरी और पटोलपत्र इनके कल्क करके सिद्ध करा हुआ घृत विषमज्वर, पांडु, कोढ, विसर्प, कृमि और ववासीर इनको दूर करे ॥

द्वितीय अमृताद्यघृत।

अमृतात्रिफलापटोलयासैः सपयस्कं विधिवद्घृतं विपक्वम् ॥ स-सैंधवैश्च पलिकैर्घृतप्रस्थं विपाचयेत् ॥ क्षीरं चतुर्गुणं दद्यात्तद्घृतं प्लीहनाशनम् ॥ विषमज्वरमंदाग्निहरं रुचिकरं परम् ॥

अर्थ-गिलोय, त्रिफला, पटोलपत्र और जवासा तथा दूध तथा सैंधानिमक इनसे विधिपूर्वक घृत सिद्ध करे। इसमें सेरभर घी और चार सेर दूध डालके सिद्ध करे। यह घृत प्लीहा, विषमज्वर, मंदाग्नि और अरुचि इनको दूर करे ॥

महाषट्पलघृत।

पूतिकाग्निकपंचकोलरुचकैः साजाजियुग्मोद्भिदैः सक्षारैः सबिडैः सहिंगुहवुषासिंधूद्भवैः कल्कितैः ॥ सूक्तेनार्द्रकसंभवेन च रसेने-तन्महाषट्पलं सर्पिः पक्वमरोचकाग्निसदनप्लीहज्वरश्वासजित् ॥

अर्थ-कंजा, चित्रक, सोंठ, मिरच, पीपल, पीपरामूल, चव्य, जीरा, काला जीरा, सज्जीखार, जवाखार, बिडनोन, हींग, हाऊबेर और सैंधानिमक इनका चूर्ण काँजीमें अथवा अदरखके रसमें मिलाय और उसमें घृत मिलायके अग्निद्वारा सिद्ध करे। इसको षट्पलघृत कहते हैं। यह प्लीहा, विषमज्वर और अरुचि इनको दूर करे ॥

दूसरा प्रकार।

पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्याचित्रकनागरैः । ससैंधवैश्च पलिकैर्घृत-प्रस्थं विपाचयेत् ॥ क्षीरं चतुर्गुणं दत्त्वा तद्घृतं प्लीहनाशनम् ॥ विषमज्वरमंदाग्निहरं रुचिकरं परम् ॥

अर्थ-पीपर, पीपरामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ और सैंधानिमक ये सब औषध ४ तोलेके प्रमाण लेकर कूट पीस चौगुने पानीमें डालके काढा करे इस काढेमें घी ६४ तोले डालके औटावे इसको महाषट्पलघृत कहते हैं । यह प्लीहा, विषमज्वर, मंदाग्नि और अरुचि इनको दूर करे ॥

लघुलाक्षादि तैल ।

लाक्षाहरिद्रामंजिष्ठाकल्कैस्तैलं विपाचयेत् ॥
षड्गुणेनारनालेन दाहशीतज्वरापहम् ॥

अर्थ-लाख, हलदी और मँजीठ इनका कल्क और तेलसे छःगुनी कांजी मिलायके तेलको सिद्ध करे तो यह तेल दाह और शीतज्वर इनका नाश करे।

लाक्षादि तैल ।

लाक्षा दशाक्षा अरुणा तदर्धा सचंदनं लोहितचंदनं च ॥ त्वक्पत्रकं वारिमुरा समुस्ता प्रत्येकमेतानि पलोन्मितानि ॥ किराततिक्तास्त्रिवृता सविश्वामृताकणापर्पटकंटकार्यः ॥ विडंगविश्वामलकानि वासारसानि शावारुणासिंधुवाराः ॥ एतानि देयानि पृथक्पलार्धमानानि सर्वाणि च औषधानि ॥ कल्कं ह्यमीषां विदधीत गव्यदुग्धेन वै सार्धतुलोन्मितेन ॥ तैलं तिलानां तु तुलानुमानं तेनैव कल्केन शनैः पचेत्तत् ॥ हन्याज्ज्वरांस्तैलमिदं समस्तान्कुर्याद्बलं वीर्यमतीव पुष्टम् ॥ विमर्दनादाशु परिश्रमं भ्रमं शमं नयेत्संजनयेद्द्युतिं तनोः ॥ तथा व्यथामस्थिसमुद्भवामपि प्रहृत्य निद्रां समुपार्जयेत्सुखम् ॥

अर्थ-लाख १० तोले, मँजीठ ५ तोले, चंदन, लालचंदन, दालचीनी, तमालपत्र, नेत्रवाला, एकांगीमुरा और नागरमोथा ये प्रत्येक चार २ तोले प्रमाण लेवे, तथा चिरायता, निसोथ, सोंठ, गिलोय, पीपर, पित्तपापडा, कटेरी, वायविडंग, सोंठ, आमले, अडूसा, हलदी, वरना और निर्गुंडी ये प्रत्येक दो दो तोले लेवे, सब औषधोंका कल्क कर ६०० तोले गौके दूधमें मिलाय उसमें ४०० तोले तिलका तेल मिलायके तैल पाकविधिसे सिद्ध करे। यह तेल सर्वज्वरका नाश करे और बल वीर्य तथा पुष्टि इनको करे । इसके मर्दनसे श्रम, भ्रम, शांति हो, शरीरमें कांति और हड्डियोंकी पीडा नष्ट कर निद्रा और सुखको उत्पन्न करे ॥

मध्यमलाक्षादितैल।

तैलं प्रस्थमितं चतुर्गुणजतुक्काथं चतुर्मुस्तरुग्यष्टीदारुनिशाब्द-मूर्वकटुकामिश्यश्च कौंतीहिमैः ॥ रास्नाद्यैः पिचुसंमितैः कृतमिदं शस्तं तु जीर्णज्वरे सर्वस्मिन्विषमेऽपि यक्ष्मिणि शिशौ वृद्धे सगर्भासु च ॥

अर्थ-तेल ६४ तोले, चौगुना लाखका काढा, उसमें नागरमोथा, कूठ, मुलहटी, दारुहलदी, मोथा, मूर्वा, कुटकी, सौंफ, रेणुका, चंदन, रास्ना ये सब एक २ तोला लेकर इनका कल्क लाखके काढेमें डालके औटायकर तेल सिद्ध करावे। इस तेलके मालिशसे जीर्ण ज्वर, सर्व विषमज्वर, राजयक्ष्मा, गर्भिणीके रोग और प्रसूत ये दूर हों ॥

षट्तक्रतैल।

लाक्षा निशा कुष्ठशुंठी मंजिष्ठा च सुवर्चिका ॥ मूर्वाचंदनसंसिद्धे तैलं तक्रेऽथ षड्गुणे ॥ अभ्यंगेन प्रशमयेद्दाहं शीतज्वरं नृणाम् ॥

अर्थ-लाख, हलदी, कूठ, सोंठ, मँजीठ, सज्जीखार, मूर्वा और चंदन इनके काढेमें तेल, तेलसे छः गुनी छॉछ मिलायके तेल सिद्ध करे। इसके मालिश करनेसे दाहज्वर और शीतज्वर नष्ट हो ॥

स्वर्जिकाद्यतैल।

स्वर्जिकाकुष्ठमंजिष्ठालाक्षामूर्वाविषौषधैः ॥
सक्षीरैः साधितं तैलमभ्यंगाद्दाहशीतनुत् ॥

अर्थ-सज्जीखार, कूठ, मँजीठ, लाख, मूर्वा, सोंठ और अतीस इनके काढेमें दूध डाल और तेल डालके औटावे। इस तेलके मालिश करनेसे दाह तथा शीतज्वर इनको दूर करे ॥

बलाद्यतैल।

बलामधुकमंजिष्ठापद्मपद्मकचंदनैः ॥ समुद्रफेनह्रीबेररजनीगैरिकोत्पलैः ॥ पिष्टैरेतैः पचेत्तैलं मस्तुक्षीरचतुर्गुणम् ॥ वातपित्तज्वराज्जीर्णात्तेनाभ्यक्तो विमुच्यते ॥

अर्थ–खरेटीकी जड, मुलहटी, मँजीठ, पद्माख, अंडकी जड, चंदन, समुद्र फेन, सोंठ, हलदी, गेरू और कमलगट्टा इनका कल्क करके उसमें तेल और दूध तथा दहीका तोड दूधसे चौगुना डालके तेल सिद्ध करे तो यह बलादितैल मालिश करनेसे वातापित्तज्वर और जीर्णज्वर नाश करे ॥

पटोलाद्यस्नेह।

पटोलपिचुमंदाभ्यां गुडूच्यामलकेन च ॥
मदनैश्च कृतः स्नेहो ज्वरघ्नमनुवासनम् ॥

अर्थ–पटोलपत्र, नीमकी छाल, गिलोय, आमले और मैनफल इनके काढेसे सिद्ध करा हुआ तैल ज्वरमें पिचकारी द्वारा गुदामें देय तो ज्वरको नाश करे ॥

चंदनाद्यनुवासन।

चंदनोत्पलकाश्मर्यमधुकागरुमूलकैः॥
सिद्धं तैलं विधातव्यं बस्तौ सर्वज्वरापहम् ॥

अर्थ–चंदन, कमलगट्टा, कंभारी, महुएके फूल, अगर तथा मूली इनके काढेसे सिद्ध करे हुए तेलकी अनुवासन बस्ति करनेसे संपूर्ण ज्वरोंको दूर करे ॥

पटोलाद्यनुवासन।

पटोलमदनारिष्टगुडूचीमधुकैः स्मृतम् ॥ श्वदंष्ट्रामदनशृंगामधु-
कारिष्टवासकैः ॥ अश्वगंधेति तैलस्य कार्षिकैराढकं पचेत् ॥
अनुवासनकं तैलं सर्वज्वरविनाशनम् ॥ कृच्छ्रान्वातविकारांश्च
नाशयेदपि चोत्थितान् ॥

अर्थ–पटोलपत्र, मैनफल, नीमकी छाल, गिलोय, महुएके फूल, गोखरू, खैर, कांकडासिंगी, मुलहटी, रीठा, अडूसा और असगंध ये प्रत्येक तोले २ लेकर काढा करे इसमें २५६ तोले तेल डालके पचावे, इस तेलसे अनुवासन बस्ति करनेसे संपूर्ण ज्वर और कष्टसाध्य वातविकारोंका नाश करे ॥

आरग्वधादिनिरूहबस्ति।

आरग्वधमुशीरं च मदनस्य फलानि च ॥ पर्ण्यश्चतस्रो मधुकं
निरूहमनुकल्पयेत् ॥ प्रियंगु मदनं मुस्तं मधुकं च शताह्वयम् ॥
कल्कः सर्पिर्गुडक्षौद्रैर्ज्वरघ्नो बस्तिरुत्तमः ॥

अर्थ-अमलतासका गूदा, खस, मैनफल, चार प्रकारकी पर्णी और मुलहटी इनका काढा करके निरूह बस्ती करावे अथवा फूल प्रियंगु, मैनफल, मोथा, मुलहटी और सतावर इनका कल्क, घी, गुड और शहत लायके इनकी बस्ती देवे, यह उत्तम ज्वरघ्न है ॥

तैलपाकविधि।

घृततैलगुडादींस्तु एकाहान्नैव साधयेत् ॥ उषितास्तु प्रकुर्वंति विशेषेण गुणान्बहून् ॥ स्नेहकल्को यदांगुल्या वर्तितो वर्तिवद्भवेत् ॥ वह्नौ क्षिप्ते च नो शब्दस्तदा सिद्धं विनिर्दिशेत् ॥

अर्थ-घृत, तेल और गुड आदि औषधोंको एक दिनमें सिद्ध न करे, बासी होनेसे विशेष गुण करते हैं। जिस समय तैलमें कल्क औटावे और औटते २ उँगलियोंमें मसलनेसे वत्तीके समान हो जावे और तेल अग्निमें डालनेसे चरचर शब्द न करे उस समय तेल सिद्ध हुआ ऐसा जानना ॥

मंद मध्यम व तीक्ष्ण स्नेहपाक।

नस्ये मृदुः खरोऽभ्यंगे स्नेहे किट्टं तु मध्यमम् ॥
नातिस्थिरं पचेद्बस्तौ खरमभ्यंजने पचेत् ॥

अर्थ-स्नेह नस्यविषयमें मृदु रखे, उबटनेके लिये खर (तेज) पाक करे, मध्यम स्नेह कल्कका किट्ट होने पर्यंत पचन करावे उसीको बास्तिविषयमें तीव्र पचावे ॥

खरपाकलक्षण।

स्नेहपाकोऽथ कल्के स्यान्मृदुरंगुलिकेऽपि न ॥
अगृह्णात्यंगुलिमथ शीर्यमाणो खरः स्मृतः ॥

अर्थ-पाकके समय स्नेहपाकमें कल्क मृदुभी न हो, औटानेमें काढाभी न हो जावे, उगँलियोंपर मलनेसे उंगलियोंको पकडे नहीं, फैल जावे उसे खरपाक जानना ॥

खर व मृदुपाकका फल।

खरोऽभ्यंगे मृदुर्नस्ये मध्यः स्याद्बस्तिपानयोः॥ परं पाको मृदुः कार्यो द्रव्यस्य न खरो मतः ॥ किंचित्तु शीर्षमादत्ते न जहाति खरः पुनः॥

अर्थ-खर पाक स्नेह उबटनेके विषय और मध्यपाक बस्ति और पीनेके विषय देवे, परंतु द्रव्यपाक मृदु करावे, खर न करे, खरपाक होनेसे मस्तकशूलादि विकारोंको करे है और यह छुटता नहीं है ॥

चंदनबलातैल।

चंदनं च बलामूलं लाक्षा लामज्जकं तथा ॥ पृथक्पृथक्प्रस्थमात्रं द्रोणे च सलिले पचेत् ॥ चतुर्भागावशेषेऽस्मिन् तैलं प्रस्थद्वयं क्षिपेत् ॥ चंदनोशीरमधुकशताह्वा कटुरोहिणी ॥ देवदारु निशा कुष्ठं मंजिष्ठा गुरुवालकम् ॥ अश्वगंधा बला दार्वी मूर्वा मुस्ता समूलिका ॥ एलात्वङ्नागकुसुमं रास्ना लाक्षा सुगंधिका ॥ चंपकं पीतसारं च सारिवा रोचकद्वयम् ॥ कल्कैरेतैः समायुक्तं क्षीराढकसमन्वितम् ॥ तैलमभ्यंजने श्रेष्ठं सप्तधातुविवर्धनम् ॥ कासश्वासक्षयहरं सर्वच्छर्दिनिवारणम् ॥ असृग्दरं रक्तपित्तं हंति पित्तं कफामयम् ॥ कांतिकृद्दाहशमनं कंडूविस्फोटनाशनम् ॥ शिरोरोगं नेत्रदाहमंगदाहं च नाशयेत् ॥ वातामयहतानां च क्षीणानां क्षीणरेतसाम् ॥ बालमध्यमवृद्धानां शस्यते शोफका-मलाम् ॥ पांडुरोगं विशेषेण ज्वरान्सर्वान्विनाशयेत् ॥

अर्थ-चंदन, खरेटीकी जड, लाख और नेत्रवाला ये चार औषध पृथक् २ चौंसठ तोले ले १०२४ तोले जलमें औटावे जब पानी चतुर्थांश बाकी रहे तब तेल १२८ तोले डालके फिर चंदन, नेत्रवाला, महुएके फूल, सौंफ, कुटकी, देवदारु, हलदी, कूठ, मजीठ, अगर, खस, असगंध, खरेटी, दारुहलदी, मूर्वा, नागरमोथा, इलायची, दालचीनी, नागकेशर, रास्ना, लाख, निगुंडी, चंपा, सिलारस, सारिवा, सैंधानिमक और संचरनोन ये सब समान भाग लेके कल्क करे पीछे यह कल्क और दूध २५६ तोले मिलायके औटावे जब तेल सिद्ध हो जावे तब उतारके धर रक्खे । इसकी मालिश करे तो सातों धातु बढावे तथा कांति करे, खांसी, श्वास, क्षय, वमन, प्रदर, रक्तपित्त, कफ, दाह, खुजली, फोडा, मस्तकशूल, नेत्रदाह, अंगदाह और बादीके रोग इनको नाश करे तथा क्षीण, धातुक्षीण, बालक, तरुण और वृद्ध इनको हितकारी है, तथा सूजन, कामला, पांडु और ज्वर इत्यादिकोंको नाश करे ॥

अश्वगंधादितैल।

अश्वगंधा बला लाक्षा प्रस्थं प्रस्थं पृथक्पृथक् ॥ जले द्रोणे विप-

क्वाथ्यं चतुर्भागावशेषितम् ॥ तैलं त्रिमानकं दद्याद्दधिमस्तु चतुर्गुणम् ॥ अश्वगंधाशिलादारुकौंतीकुष्ठाब्दचंदनैः ॥ निशा तिक्ता शताह्वा च लाक्षामूर्वासमूलकैः ॥ सुरादारु च मंजिष्ठामधुकोशीरसारिवा ॥ समभागानि सर्वाणि कल्कीकृत्य विपाचयेत् ॥ सर्वज्वरान्हरत्याशु सर्वधातुविवर्धनम् ॥ एतदभ्यंजनेनाशु क्षयरोगं विमुंचति ॥

अर्थ-असगंध, खरेटी, लाख प्रत्येक ६४ तोले ले १०२४ तोले जलमें काढा करे, जब चतुर्थांश रहे तब १९२ तोले तेल डालके काढ़ेसे चौगुना दहीका तोड डाले, फिर असगंध, मनसिल, दारुहलदी, रेणुका, कूठ, नागरमोथा, चंदन, हलदी, कुटकी, सौंफ, लाख, मूर्वा, देवदारु, मंजीठ, महुएके फूल, खस, सारिवा ये सब औषध कूटके डाले और तेलको औटावे जब सिद्ध हो जाय तब उतारके धर रक्खे इसकी मालिश करनेसे सर्व प्रकारके ज्वरनाश होंय, तथा यह धातु बढावे और क्षयरोगको नष्ट करे ॥

बृहल्लाक्षादितैल ।

तैलं लाक्षारसं क्षीरं पृथक्प्रस्थं समं पचेत् ॥ चतुर्गुणेरिते क्वाथे द्रव्यैरेतैः पलोन्मितैः ॥ लोध्रकट्फलमंजिष्ठामुस्तकेसरपद्मकैः ॥ चंदनोशीरयष्ट्याह्वैस्तैलं गंडूषधारणात् ॥ दंतरोगाः प्रणश्यन्ति लेपात्सर्वाञ्ज्वराञ्जयेत् ॥ एतल्लाक्षादिकं तैलं बलपुष्टिप्रदायकम् ॥

अर्थ-लाखका काढा, दूध ये प्रत्येक ६४ तोले लेके चतुर्थांश काढा करे उसमें लोध, कायफल, मँजीठ, नागरमोथा, केशर, पद्माख, चंदन, नेत्रवाला और मुलहटी ये सब औषध चार २ तोले ले कूटके कल्क करे इसको पूर्वोक्त कषायमें मिलायके औटावे तो यह लाक्षादि तैल बनकर तयार हो इसको देहमें मालिश करे तो "सर्वज्वर" दूर हों तथा दांतोंके रोग दूर हों ॥

पंचममहालाक्षादितैल ।

लाक्षा हरिद्रा मंजिष्ठा फेनिलं मधुकं बला ॥ लामज्जकं चंदनं च चंपकं नीलमुत्पलम् ॥ प्रत्येकमेषां षण्मुष्टीः पक्त्वा तोये च चतु-

गुणे ॥ चतुर्भागावशेषे तु गर्भे चैतत्समावपेत् ॥ रेणुका पद्मकं चैव वाजिगंधा तथैव च ॥ वेतसं चोरकं कुष्ठं देवदारु नखं त्वचम् ॥ शतपुष्पां पुंडरीकं मांसीं मधुकमेव च ॥ एभिरक्षमितैः कल्कैः कषायेणैव पेषितैः ॥ मस्तुसूक्तारनालानामाढकाढकमावपेत् ॥ क्षीराढकसमायुक्तं तैलप्रस्थं विपाचयेत् ॥ अभ्यंगात्तैलमेतद्धि शीघ्रं दाहमपोहति ॥ व्यपोहति तथा वातपित्तश्लेष्मभवं ज्वरम् ॥ सप्रलापं सतृष्णं च तालुशोषभ्रमान्वितम् ॥ ग्रहोपसृष्टा ये बाला रक्षःसंदूषिताश्च ये ॥ तेषां कष्टं शमयते तैलं लाक्षादिकं महत् ॥

अर्थ—लाख, हलदी, मंजीठ, बेर, मुलहटी, खरेटी, चंदन, चंपाके पुष्प, नीलकमल ये प्रत्येक २४ तोले लेय और इन सब औषधोंके चौगुना जल डालके औटावे जब चतुर्थांश रहे तब इसमें रेणुका, पद्माख, असगंध, वेत, गठोना, कूठ, देवदारु, नख, दालचीनी, सौंफ, कमल, जटामांसी, मुलहटी ये प्रत्येक औषध तोले २ भर ले कूट पीस पूर्वोक्त काढेमें डाल देवे फिर दहीका पानी, कांजी, सिरका, दूध ये प्रत्येक २५६ तोले ले सबको मिलाय इसमें ६४ तोले तेल तथा २५६ तोले दूध डालके पकावे जब तेल मात्र रह जाय तब जाने कि सिद्ध हो होगया इसकी मालिश करनेसे दाह, बादी, कफ, सर्व ज्वर इनको नाश करे तथा ग्रह, राक्षस इनकी पीडासे पीडित बालककी पीडा शांत करेहै ॥

निरूहबस्तिद्रव्यमान ।

एकादशाष्टौ षट्कं च कशायस्य पलं मतम् ॥ कफपित्तानिलोत्थेषु विकारेषु यथाक्रमम् ॥ स्नेहस्य त्रिचतुःषष्टचश्चत्वारो मधुनस्तथा ॥ तथा द्वयं तु कल्कस्य कर्षः स्यात्सैंधवस्य च ॥ रसक्षीराम्लमत्स्यानामेकैकं प्रक्षिपेत्पलम् ॥ निरूहकल्पनामात्रा कथितैषा महर्षिणा ॥

अर्थ—निरूहबस्तीमें काढा लेना होय तो कफमें ११ तोले, पित्तमें ८ तोले, वातमें ६ तोले इस प्रकार लेवे और सहत तथा स्नेह लेना होय तो कफ, वात और पित्त इनमें क्रमसे ४, ६ और ४ पल लेवे तथा कल्क दो पल, सैंधानिमक १ तोला और मांसरस, दूध, खटाई, मछली डालना होय तो चार चार तोले डालना, ये निरूहबस्तीमें द्रव्य डालनेका मान महर्षियोंने कहाहै ॥

चतुर्थलाक्षादितैल ।

लाक्षारससमं तैलं तैलान्मस्तु चतुर्गुणम् ॥ अश्वगंधानिशादारु-
कौंतीकुष्ठाब्दचंदनैः ॥ समूर्वारोहिणीरास्नाशताह्वामधुकैः समैः ॥
सिद्धं लाक्षादिकं नाम तैलमभ्यंजनादिना ॥ सर्वज्वरक्षयोन्माद-
श्वासापस्मारवातनुत् ॥ यक्षराक्षसभूतघ्नं गर्भिणीनां च शस्यते ॥

अर्थ—लाखका काढा, तथा काढेके तुल्य तिलका तेल और तेलसे चौगुना दहीका जल और असगंध, हलदी, देवदारु, रेणुका, कूठ, नागरमोथा, चंदन, मूर्वा, कुटकी, रास्ना, शतावर और मुलहटी ये औषध समान भाग डालके तेल सिद्ध करे। यह लाक्षादितैल मालिश अथवा पीनेसे सर्वज्वर, क्षय, उन्माद, श्वास, मृगी, वादीके रोग, यक्ष और राक्षसकी बाधा, तथा भूतबाधा इनको दूर करे और गर्भिणीको हितकारी है ॥

घृत वा तैलपक्व हुएकी परीक्षा ।

शब्दव्युपरमे प्राप्ते फेनव्युपरमे तथा ॥ गंधवर्णरसादीनां सम्यक्त्वे
सिद्धमादिशेत् ॥ फेनातिमात्रं तैलस्य शब्दं घृतवदादिशेत् ॥

अर्थ—घृततेल आदिकी सिद्धिके समय कटकट शब्द बंद हो जावे, झागोंका आना बंद हो जाय, गंध, वर्ण और रस इनकी शुद्धता होनेपर जाने कि अब घृत अथवा तेल सिद्ध हो गया ॥

औषधि कितने दिन उपयोग पडती है ।

पक्के तैलोद्भवे वीर्यं हीनमब्दाथतः परम् ॥ घृताच्चाब्दात्पुरा वृद्ध्या
गुडादेस्त्वब्दतः परम् ॥ गुणहीनं भवेद्वर्षादूर्ध्वंतो न्यूनमौषधम् ॥
मासद्वयात्तथा चूर्णं हीनवीर्यं प्रजायते ॥ हीनत्वं गुटिका लेहा द्व्यब्दात्ते
वत्सरात्परम् ॥ हीनाः स्युर्घृततैलाद्याश्चातुर्मासाधिकास्तथा ॥

अर्थ—सिद्ध हुआ तेल १ वर्षके पश्चात् हीनवीर्य होता है, उसी प्रकार घृत एक वर्ष पर्यंत उत्तम गुण करता है और गुड आदि वर्षदिनके उपरांत गुणकारी होते हैं, सामान्यकाष्ठौषधी एक वर्ष व्यतीत होनेपर हीनवीर्य होजाती है, चूर्ण दो महीनेमें हीनवीर्य होता है, तथा गुटिका और अवलेह दो वर्षमें हीनवीर्य होते हैं और घृत तेल आदि द्रव्य चार महीनेके अनंतर हीनवीर्य हो जाते हैं ॥

दूसरा महाज्वरांकुश।

शुद्धसूतो विषं गंधः प्रत्येकं शाणसंमिताः ॥ धूर्तबीजं त्रिशाणं स्यात्सर्वेभ्यो द्विगुणा भवेत् ॥ हेमाह्वा कारयेदेषां सूक्ष्मचूर्णं प्रयत्नतः । देयं जंबीरमज्जाभिश्चूर्णं गुंजाद्वयोन्मितम् ॥ आर्द्रकस्वरसेऽपि ज्वरं हंति त्रिदोषजम् ॥ ऐकाहिकं वा द्व्याहिकं वा त्र्याहिकं च चतुर्थकम् ॥ विषमं च ज्वरं हन्याद्विख्यातोऽयं ज्वरांकुशः ॥

अर्थ-शुद्ध पारा ३ मासे, शुद्ध विष ३ मासे, गंधक ३ मासे, धतूरेके बीज ९ मासे, चूक सबसे दुगुना इन सबका चूर्ण कर जंभीरीके रससे खरल कर दो रत्तीकी गोली बनावे १ गोली अदरखके रससे खाय तो त्रिदोषज ज्वर, ऐकाहिक, द्व्याहिक, त्र्याहिक, चातुर्थिक, विषम तथा दिनरात्रिमें आनेवाला ज्वर दूर हो, इसको महाज्वरांकुश कहते हैं, यदि जंभीरीका रस न मिले तो अदरखके रसमें ही घोटकर गोली बनावे ॥

ज्वरघ्नीवटिका।

एको भागो रसाच्छुद्धाच्छैलेयः पिप्पली शिवा ॥ आकारकरभो गंधः कटुतैलेन शोधितः ॥ फलानि चेंद्रवारुण्याश्चतुर्भागमिता अपि ॥ एकत्र मर्दयेच्चूर्णमिंद्रवारुणिकारसैः ॥ माषोन्मितां वटीं कृत्वा दद्यात्सद्योज्वरे बुधः ॥ छिन्नारसानुपानेन ज्वरघ्नी वटिका मता ॥

अर्थ-शुद्ध पारा १ भाग, एलुआ शुद्ध, पीपल, हरड, अकरकरहा, कडुए तेलमें शुद्ध करी गंधक और इन्द्रायणके फल ये प्रत्येक चार २ भाग लेवे सबको इन्द्रायणके फलके रसमें खरल कर १ मासेकी गोली बनावे १ गोली गिलोयके रसके साथ ज्वरमें देवे तो यह (ज्वरघ्नीगुटिका) तत्काल ज्वरोंको दूर करे ॥

दूसरा ज्वरमुरारि।

त्रिःसप्तजंभजलभावितखपरस्य चूर्णं निशोत्थनवनीतविमर्दितं स्यात् ॥ वल्लद्वयं हरति शर्करयानुपानं सद्योज्वरं ज्वरमुरारिरसश्च पुंसाम् ॥

अर्थ-खपरियाके चूर्णमें नींबूके रसकी २१ भावना देय फिर ताजे मक्खनमें

खरल करे इसकी मात्रा ४ रत्ती मिश्रीके साथ देवे तो यह सद्यज्वरको नाश करे। इस ज्वरमुरारि रस कहते हैं ॥

स्वर्णमालिनीवसंत।

स्वर्णं मुक्ता दरदमरिचं भागवृद्ध्या प्रदेयं खर्परं चाष्टौ। प्रथमनवनीतेन निम्बांबुना च ॥ यावत्स्नेहो व्रजति विलयं मर्दयेद्दीयतेऽसौ गुञ्जाद्वंद्वं मधुचपलया सर्वरोगे वसंतः ॥

अर्थ—सुवर्ण १ तोला, मोती २ तोले, कालीमिरच ३ तोले और खपरिया ८ तोले इनका चूर्ण कर मक्खनमें घोटे, फिर नींबूके रसमें जवतक घोटे कि, चिकनाई न रहे इसको २ रत्ती शहत, पीपलके साथ देवे यह सर्वरोगोंपर चलती है। इसे स्वर्णमालिनी कहते हैं ॥

लघुमालिनीवसंत।

रसकयुगलभागं वह्निजं भागमेकं द्वितयमथ सुखल्वे मर्दयेन्मसृणेन ॥ भवति घृतविमुक्तो निंबुनीरेण यावज्ज्वरहरमधुकुल्यो मालिनी प्राग्वसंतः ॥ जीर्णज्वरे धातुगतेऽतिसारे रक्तान्विते रक्तभवे विकारे ॥ घोरव्यथे पित्तभवे च दोषे वल्लद्वयं दुग्धयुतं च पथ्यम् ॥ प्रदरं नाशयत्याशु तथा दुर्नामशोणितम् ॥ विषमं नेत्ररोगं च गजेंद्रमिव केसरी ॥ वसंतो मालिनीपूर्वः सर्वरोगहरः शिशोः ॥ गर्भिण्यै तच्च देयं च जयंत्या पुष्पकैर्युतम् ॥ सर्वज्वरहरं श्रेष्ठं गर्भपालनमुत्तमम् ॥

अर्थ—खपरिया २ तोले, काली मिरच १ तोला, दोनोंको एकत्र कर मक्खनमें घोटे फिर नींबूके रसमें चिकनाई दूर होने पर्यंत घोटे, इसमेंसे ४ रत्ती शहत और पीपलके चूर्णके साथ देवे। इसे मालिनीवसंत रस कहते हैं। यह जीर्णज्वर, धातुगतज्वर, अतिसार, रक्तातिसार, रुधिरसे उठे विकार, घोर पित्तविकार, प्रदर, अर्शसंबंधी रुधिर, विषमज्वर और नेत्ररोग इनमें देवे। यह हाथीको सिंहके समान सर्वरोगनाशक है। तथा जयंतीके पुष्पके साथ गर्भिणीको देय तो सर्वज्वरोंको नाश करके गर्भको उत्तमरीतिसे पालन करे। इसपर दूध भातकी पथ्य देवे ॥

दार्व्यादिवटिका ।

दारू निशा शिखिग्रीवा रसकं च पृथक्पृथक् ॥ टंकं वयानुमानेन गृहीत्वा कनकद्रवैः ॥ मर्दयेत्त्रिदिनं कार्या वटी चणकमात्रया ॥ मरीचैरेकविंशत्या सप्तभिस्तुलसीदलैः ॥ खादेद्वटीद्वयं पथ्यं दुग्धभक्तं सशर्करम् ॥ तरुणं विषमं जीर्णं हन्यात्सर्वज्वरं ध्रुवम् ॥

अर्थ–दारुहलदी ३ तोले, लीलाथोथा ३ तोले, खपरिया ३ तोले इस प्रकार लेकर धतूरेके रसमें ३ दिन खरल करे, चनेके प्रमाण गोली बनावे उसको पच्चीस कालीमिरच और ७ पत्ते तुलसीके साथ दो गोली देवे और दूध भात मिश्री ये पथ्यमें देय तो तरुणज्वर, विषमज्वर और जीर्णज्वर इत्यादि सर्वज्वरोंका नाश करे। इसे दार्व्यादिवटी कहते हैं ॥

हुताशनरस ।

नागरं कर्षमात्रं स्यात्कर्षमात्रं च टंकणम् ॥ मरिचं सार्धकर्षं स्यात्तावद्दग्धवराटकम् ॥ विषं कर्षचतुर्थांशं सर्वमेकत्र चूर्णयेत् ॥ रसो हुताशनो नाम्ना खाद्यो गुंजामितो ज्वरे ॥

अर्थ–सोंठ १ तोला, सुहागा १ तोला, कालीमिरच १ तोला, कौडीकी भस्म १ तोला, विष पाव तोला इन सबका चूर्ण कर लेवे। इसे हुताशनरस कहते हैं। १ रत्ती पानके साथ देनेसे ज्वरोंको दूर करे ॥

दूसरा लघुमालिनीवसंत ।

खर्परं मानुषे मूत्रे स्थितं घस्रे त्रिसप्तकम् ॥ निस्त्वक्तदर्धमरिचं नवनीतेन मर्दयेत् ॥ शतधा भावयेन्निंबुरसैः स्याद्रसकेश्वरः ॥ पिप्पलीमधुयुग्दत्तः सासितो वास्य भेषजम् ॥ ज्वरं धातुगतं पित्तं भ्रमपित्तास्रजान्गदान् ॥ रक्तातिसारग्रहणीदुर्नामास्रं निवारयेत् ॥ अनम्लं दधि वा दुग्धं पथ्यं चास्मिन्प्रयोजयेत् ॥

अर्थ–खपरियाको २१ दिन मनुष्यके मूत्रमें भिगोवे फिर बाईसवें दिन निकाल चूर्ण कर इससे आधी धुली हुई काली मिरच डालके चूर्ण करे, फिर मक्खनमें घोटके नीबूके रसकी १०० भावना देवे तो यह रस तैयार हो। यह (रसकेश्वर) पीपल और शहत तथा मिश्री इनके साथ देवे तो धातुगत ज्वर, पित्त-

भ्रम, रक्तपित्त, रक्तातिसार, संग्रहणी, अर्शविकार इनको नाश करे । इसपर माठ दही अथवा दूध पथ्यमें देवे ॥

अपूर्वमालिनीवसंत ।

वैक्रांतमभ्रं रवितार्प्यरौप्यं वंगं प्रवालं रसभस्म लोहम् ॥ सुटंकणं कंबुकभस्म सर्वसमांशकं पाच्य वरीहरिद्रः ॥ द्रव्यैर्विभाव्यं मुनिसंख्यया च मृगांकजाशीतकरेण पश्चात् ॥ वल्लप्रमाणो मधुपिप्पलीभिर्जीर्णज्वरे धातुगते नियोज्यः ॥ गुडूचिकासत्त्वसितायुतश्च सर्वप्रमेहेषु नियोजनीयः ॥ कृच्छ्राश्मरीं निहंत्याशु मातुलुंग्यंघ्रिजद्रवैः ॥ रसो वसंतनामायमपूर्वो मालिनीपदः ॥

अर्थ-वैक्रांत मणि, अभ्रक, ताम्र, सुवर्ण, माक्षिक, रूपा, वंग, मूंगा, पारा, लोह इनकी भस्म और सुहागा तथा शंखभस्म ये समान भाग लेके शतावरी और हलदी, इनकी सात २ भावना देवे और चांदनीमें धर देवे फिर टिकडी बनायले इसमेंसे २ रत्ती रस शहत पीपलके साथ देय तो जीर्णज्वर, धातुगत ज्वर दूर हो और गिलोयसत्त्वके और मिश्रीके साथ देय तो सर्व प्रमेह दूर हों, बिजौरेके पत्तेके रससे देय तो पथरी नष्ट हो । इस रसको अपूर्वमालिनी वसंतरस कहते हैं ॥

दूसरा लघुमालिनीवसंत ।

नरांबुमध्ये रसकस्य चूर्णं दिनानि सप्तत्रिगुणानि पूर्वम् ॥ धृत्वातपे शोषितमेतदेव नृवारिजीर्णं भवतीति यावत् ॥ पलप्रमाणं मरिचं च निस्तुषं पलद्वयं स्याद्रसकस्य तस्य ॥ एकत्र संचूर्णकृतं तदेव पलार्धकं गोनवनीतकं च ॥ निंबूत्थतोयेन विमर्दनीयं शतैकमानं भिषजावशिष्टम् ॥ वल्लद्वयं चास्य कणामधुभ्यां प्रदापयेद्व्याधिगजस्य केसरी ॥ नाम्ना प्रसिद्धो रसराज एषः सद्यो ग्रहण्यामतिसारके च ॥ ज्वरे क्षयेऽर्शस्सु तथैव तापे शूलेऽग्निमांद्येऽनिलजे विकारे ॥ प्रदरं नाशयत्याशु तथा दुर्नामशोणितम् ॥ विषमं नेत्ररोगं च गजेंद्रमिव केसरी ॥

अर्थ-घोडेके मूत्रमें खपरियाको भिगोय ११ दिनतक धरा रहने दे फिर

धूपमें सुखाय उसका चूर्ण ८ तोले लेवे और ४ तोले मिरचका चूर्ण तथा हिंगुल ८ तोले सबको एकत्र कर दो तोले गौके मक्खनमें खरल करे फिर १०० नींबूके रसमें खरल करे तो रस बनके तैयार हो इसकी ४ रत्ती मात्रा शहत पीपलके साथ देवे तो यह (व्याधिगजकेशरी रस) संग्रहणी, अतिसार, ज्वर, क्षय, बवासीर, ताप, शूल, मंदाग्नि, बादीका विकार और प्रदर इनको नाश करे तथा अर्शसंबंधी रुधिर, विषमज्वर, नेत्ररोग इनमें देवे यह रोगरूप हाथियोंके मारनेमें सिंहके समान है ॥

लघुसूचिकाभरणरस सन्निपातपर ।

विषं पलमितं सूतः शाणिकं चूर्णयेद्द्वयम् ॥ तच्चूर्णं संपुटे क्षिप्त्वा काचलिप्तशरावयोः ॥ मुद्रां दत्त्वा च संशोष्य ततश्चुल्ल्यां निवेशयेत् ॥ वह्निं शनैः शनैः कुर्यात्प्रहरद्वयसंख्यया ॥ ततरुद्धाटयेन्मुद्रामुपरिस्थां शरावकात् ॥ संलग्नो यो भवेत्सूतस्तं गृह्णीयाच्छनैः शनैः ॥ वायुस्पर्शो यथा न स्यात्तथा कुप्यां निवेशयेत् ॥ यावत्सूच्या मुखे लग्नः कुप्या निर्याति भेषजम् ॥ तावन्मात्रो रसो देयो मूर्च्छिते सान्निपातिनि ॥ क्षौरेण प्रस्थिते मूर्ध्नि तत्रांगुल्या च घर्षयेत् ॥ रक्तभेषजसंपर्कान्मूर्च्छितोऽपि हि जीवति ॥ तथैव सर्पदष्टस्तु मृतावस्थोऽपि जीवति ॥ यदा तापो भवेत्तस्य मधुरं तत्र दीयते ॥

अर्थ—विष ४ तोले, शुद्ध पारा ३ मासे, दोनोंको खरल कर चूर्ण करे फिर मिट्टीके प्यालेमें कांचको पीस लेप कर सिद्ध कर लेवे इस प्रकार सिद्ध करे कांचके बडे २ दो प्याले लेवे एकमें पूर्वोक्त घुटे पारेको डालके दूसरेसे संपुट बंद कर कपर मिट्टी करके सुखायले फिर चूल्हेपर धरके मंद मंद अग्नि दो प्रहरतक देवे फिर नीचे उतार मुद्राको दूर कर ऊपरके पारेमें लगी हुई भस्मको धीरे २ हवासे बचायके युक्तिसे निकाल शीशीमें भरके धर देवे, फिर उस शीशीमें सुई डाले सुईके अग्रभागमें जितनी भस्म लगे उइनी निकाल सन्निपातवाले मनुष्यके मस्तकके बाल दूर कर और किंचिन्मात्र चीर देके उसमें भर देवे और जबतक रुधिरमें यह औषधी न मिले तबतक धीरे २ उँगलीसे घिसता रहे इसके रुधिरसे मिलाप होतेही तत्काल संनिपातकी मूर्च्छा दूर होय उसी प्रकार सर्पका काटा हुआ जो विषसे मूर्च्छित हो वहभी इस उपायके करनेसे बचजावे, यदि इस उपायके कर-

जैसे मनुष्यके देहमें दाह होवे तो गुलकंद, विलायती अनार, दाख, अंगूर, ईखकी गँडेरी इत्यादि मधुर पदार्थ खवावे तो उस रोगीका दाह शांत होय॥

जलचूडामणिरस।

भस्मसूतसमं गंधं गंधात्पादं मनःशिला ॥ माक्षिकं पिप्पली व्योषं प्रत्येकं शिलया समम् ॥ चूर्णयेद्भावयेत्पित्तैर्मत्स्यमायूरसंभवैः ॥ सप्तधा भावयेच्छुष्कं देयं गुंजाद्वये हितम् ॥ तालपर्णीरसश्चानुपंचकोलश्रृतेन वा ॥ जलचूडो रसो नाम सन्निपातं नियच्छति ॥ जलयोगश्च कर्तव्यस्तेन वीर्यं भवेद्रसे ॥

अर्थ-पारेकी भस्म १ तोला, गंधक १ तोला, मैनसिल ३ मासे, सोनामक्खीकी भस्म, पीपल, सोंठ, काली मिरच सब तीन तीन मासे लेवे सबका चूर्ण कर इसको मछलीके पित्तेकी सात भावना देवे, उसी प्रकार सात पुट मोरके पित्तेकी देवे फिर दो रत्तीकी गोली बनावे। १ गोली मूसलीके रससे अथवा पंचकोलके काढेसे देवे तो यह (जलचूडामणिरस) संनिपातको दूर करे। इस गोलीको देकर फिर उस रोगी मनुष्यके मस्तकपर शीतल जलका तरडा देवे कि जिससे रसमें वीर्य आनकर संनिपातको दूर करे॥

कनकसुंदररस सन्निपातादिकोंपर।

कनकस्याष्ट शाणाः स्युः सूतो द्वादशभिर्मतः ॥ गंधोऽपि द्वादश प्रोक्तस्ताम्रशाणद्वयोन्मितम् ॥ अभ्रकस्य चतुःशाणं माक्षिकं च द्विशाणकम् ॥ वंगो द्विषाणः सौवीरं त्रिशाणं लोहमष्टकम् ॥ विषं त्रिशाणिकं कुर्याल्लांगली पलसंमिता ॥ मर्दयेद्दिनमेकं च रसैरम्लफलोद्भवैः ॥ दद्यान्मृदुपुटे वह्नौ ततः सूक्ष्मं विचूर्णयेत् ॥ माषमात्रो रसो देयः सन्निपाते सुदारुणे ॥ आर्द्रकस्वरसेनैव रसोनस्य रसेन वा ॥ किलासं सर्वकुष्ठानि विसर्पं च भगंदरम् ॥ ज्वरं गरमजीर्णं च जयेद्रोगहरो रसः ॥

अर्थ-धतूरेके बीज ८ टंक, पारा १२ टंक, गंधक १२ टंक, ताम्रभस्म २ टंक, अभ्रकभस्म ४ टंक, सोनामक्खीकी भस्म २ टंक, वंगभस्म २ टंक, शुद्ध करा

सुरमा ३ टंक, लोहभस्म ८ टंक, शुद्ध विष ३ टंक और कटेरीकी जड ४ तोले सबको एकत्र कर नींबूके रससे एक दिन खरल करे फिर मिट्टीके सरावमें संपुट करके आरने उपलोंमें धरके मंद पुट देवे जब शीतल हो जावे तब सरावमेंसे निकालके चूर्ण कर डाले । १ मासे रस संनिपातवाले रोगीको अदरखके रसके साथ देवे और लहसनके रससे देय तो किलास तथा सर्व प्रकारके कुष्ठ, विसर्प, भगंदर, ज्वर, विषरोग और अजीर्ण इन सब रोगोंको यह कनकसुंदररस दूर करे है ॥

सन्निपातभैरवरस ।

रसो गंधस्त्रिस्त्रिकर्षौ कुर्यात्कज्जलिका द्वयोः ॥ ताराभ्रताम्रवंगा हि साराश्चैकैककार्षिकाः ॥ शिग्रुज्वालामुखीशुंठीबिल्वेभ्यस्तंदुलीयकान् ॥ प्रत्येकं स्वरसैः कुर्याद्यामैकैकं विमर्दयेत् ॥ कृत्वा गोलं वृतं वस्त्रे लवणापूरिते न्यसेत् ॥ काचभांडे ततः स्थाल्यां काचकूपीं निवेशयन् ॥ वालुकाभिः प्रपूर्याथ वह्नियामद्वयं भवेत् ॥ तत उद्धृत्य तं गोलं चूर्णयित्वा विमिश्रयेत् ॥ प्रवालचूर्णं कर्षेण शाणमात्रविषेण च ॥ कृष्णसर्पस्य गरले दिवसं भावयेत्तथा ॥ तगरं मुसली मांसी हेमाह्वा वेतसः कणा ॥ नलिनीपत्रकं चैला चित्रकश्च कुठेरकः ॥ शतपुष्पा देवदाली धत्तूरागस्त्यमुंडिका ॥ मधूकजातिमदनरसैरेषां विमर्दयेत् ॥ प्रत्येकमेकवल्लं च ततः संशोष्य धारयेत् ॥ बीजपूराद्रकद्रावैर्मरिचैः षोडशोन्मितैः ॥ रसो द्विगुंजाप्रमितः सन्निपातस्य दीयते ॥ प्रसिद्धोऽयं रसो नाम्ना सन्निपातस्य भैरवः ॥

अर्थ-शुद्ध पारा ३ तोले और गंधक ३ तोले, दोनोंको खरल कर कजली करे फिर चांदीकी भस्म, अभ्रकभस्म, ताम्रभस्म, वंगभस्म, नागभस्म और लोहभस्म ये प्रत्येक तोले २ भर लेवे सबको पारे गंधककी कजलीमें मिलाय देवे, फिर सहिंजनके रससे १ प्रहर खरल करे, ज्वालामुखीके रससे, सोंठके काढेसे, बेलफलके रससे और चौलाईके रससे इन प्रत्येकमें पृथक् २ एक एक प्रहर खरल करे, फिर इसको गोला कर कांचके पात्रमें रखके दूसरेसे मुख बंध कर उसपर कपरमिट्टी करके मिट्टीके मटकेको आधा निमकसे भरके बीचमें उस पूर्वोक्त कांचके पात्रको

रक्खे बाकी सबको निमकसे भर देवे. फिर उस मिट्टीके संपुटको चूल्हेपर चढाय दो प्रहरकी अग्नि देवे जब स्वांग शीतल हो जावे तब उस गोलेमेंसे रसको निकाल चूर्ण कर डाले और उसमें १ तोले मूंगेका चूर्ण, १ टंक शुद्धविष डालके उसमें काले सर्पका जहर मिलायके एक दिन खरल करे, फिर इस रसको कांचकी शीशीमें भरके वालुकायंत्रमें दो प्रहरकी अग्नि देवे जब शीतल हो जाय तब शीशीमेंसे औषध निकाल खरलमें डालके आगे लिखी औषधोंकी भावना देवे। तगर, मूसली, जटामांसी, चोक, वेत, पीपल, नीलपुष्पी, पत्रज, इलायची, चीता, वनतुलसी, सौंफ, देवदाली (घघरवेल), धतूरा, अगस्तिया, मुंडी, महुआ, जाई और मैनफल इन १९ औषधोंके स्वरस न्यारे २ निकालके एक एकके रसमें पृथक् २ भावना देवे, इस प्रकार सब औषधोंकी भावना देवे जिस औषधका रस न निकले उसके काढेमें घोटे, जब घुटकर तैयार हो जावे तब इसको दो रत्तीकी गोली बनायके धररक्खे इसमेंसे १ गोली विजोरेके रस और अदरखके रसमें १६ कालीमिरचका चूरा मिलायके जो संनिपातसे वेहोश होय उसको देवे तो उसका संनिपात दूर हो। यह संनिपातभैरव रस नामसे प्रसिद्ध है ॥

रसपर्पटी।

जयापत्ररसेनापि वर्धमानरसेन च ॥ भृंगराजरसेनापि काकमाच्या रसेन च ॥ रसं संशोध्य यत्नेन तत्समं शोधयेद्बलिम् ॥ भृंगराजरसैः पिष्ट्वा शोषयेदर्करश्मिभिः ॥ सप्तधा वा त्रिधा वापि पश्चाच्चूर्णं च कारयेत् ॥ चूर्णयित्वा समं तेन रसेन सह मर्दयेत् ॥ नष्टसूतं यदा चूर्णं भवेत्कज्जलसन्निभम् ॥ निर्धूमे बदरांगारे द्रवीकुर्यात्प्रयत्नतः ॥ तत्र तन्माहिषीविष्ठास्थापिते कदलीदले ॥ निक्षिप्य तदुपर्यन्यत्पत्रं दत्त्वा प्रपीडयेत् ॥ शीतलत्वं गते पत्रात्समुद्धृत्य विचूर्णयेत् ॥ एवं सिद्धा भवेद्व्याधिघातिनी रसपर्पटी ॥ ज्वरादिव्याधिभिर्व्याप्तं विश्वं दृष्ट्वा पुरा हरः ॥ चकार कृपया युक्तः सुधावद्रसपर्पटीम् ॥ रक्तिकासंमितां तावद्भ्रष्टजीरकसंयुताम् ॥ गुंजार्धभ्रष्टहिंग्वाढ्यां भक्षयेद्रसपर्पटीम् ॥ रोगानुरूपभेषज्यैरपि तां भक्षयेद्बुधः ॥ पिबेत्तदनुपानीयं शीतलं चुलकत्रयम् ॥ प्रत्यहं वर्धयेत्तस्य एकैकां

रक्तिकां भिषक् ॥ नाधिकां दशगुंजातो भक्षयेत्तां कदाचन ॥ एकादशदिनारंभात्तां तथैवापकर्षयेत् ॥ एवमेतां समश्नीयान्नरो विंशतिवासरान् ॥ शिवं गुरुं तथा विप्रान्पूजयित्वा प्रणम्य च ॥ श्रद्धया भक्षयेदेतां क्षीरमांसरसाशनः ॥ ज्वरं च ग्रहणीं चापि तथातीसारमेव च ॥ कामलां पांडुरोगं च शूलप्लीहजलोदरम् ॥ एवमादीन् गदान् हत्वा हृष्टः पुष्टश्च वीर्यवान् ॥ जीवेद्वर्षशतं साग्रं वलीपलितवर्जितः ॥

अर्थ-अरनीके पत्ते, अंडके पत्ते, भांगरा और मकोय इनके रसमें पारेको शोधे उसी प्रकार गंधकको भांगरेके रसमें घुटायके धूपमें सुखाय देवे इस प्रकार सात वार शुद्ध करे अथवा तीन वार करे फिर इस पारा और गंधक दोनोंको मिलाय कजली करे उस कजलीको लोहके कडछलेमें धरके बेरकी लकडीके कोयलोंपर गरम करे जब कजली पतली होजावे तब गोबरसे लिपी हुई पृथ्वीपर केलेका पत्ता बिछायके उसपर उस कजलीकी चासनीको ढाल दे और तत्काल दूसरे पत्तेसे ढकके गोबरसे दाबदेवे, जब शीतल होजावे तब निकाल लेय। यह (रस पर्पटी) प्रथम शिवने ज्वरव्याप्त जगत्को देख कृपा करके निर्माण करी। यह पर्पटी १ रत्ती भुने जीरे और अधभुनी हींगके साथ देवे अथवा रोगोक्त अनुपानके साथ देय और इसके ऊपर तीन चुल्लू शीतल पानीके पिये, इस प्रकार नित्य एक २ रत्ती बढावे जब दस रत्ती होजावे तब एक एक रत्ती घटाय देवे इस प्रकार बीस दिन भक्षण करे इसको अपने इष्टदेवको नमस्कार करके श्रद्धापूर्वक भक्षण करके दूध और मांस ये पथ्यमें देवे तो ज्वर, संग्रहणी, अतीसार, कामला, पांडुरोग, शूल, प्लीहा, जलोदर इत्यादि रोगका नाश करे और पुरुषको हृष्ट, पुष्ट, वीर्यवान् करे। इसके सेवन करनेसे वृद्धावस्थारहित सौ वर्ष जीवे ॥

रविसुंदररस ।

द्विभागतालेन हतं च ताम्रं रसं च गंधं च समानमाहुः ॥ विषं समं च द्विगुणं च ताम्रं त्रिसप्तरात्रेण दिवाकरांशो ॥ विमर्द्य रिष्टस्वरसेन चूर्णं गुंजैकदत्तं सितया समेतम् ॥ ज्वरांकुशोऽयं रविसुंदराख्यो ज्वरान्निहंत्यष्टविधान्समग्रान् ॥

अर्थ-दो भाग हरताल लेकर उससे एक भाग ताम्रकी भस्म करे, इस प्रकार करी तामेकी भस्म २ तोले पारा १ तोला, गंधक १ तोला और शुद्धविष १ भाग

इस प्रकार लेके इक्कीस दिन नींवके रसमें खरल करे। फिर १ रत्तीके प्रमाण मिश्रीसे खाय तो यह रविसुंदरज्वरांकुश रस आठ प्रकारके ज्वरोंको दूर करे ॥

कज्जलीगुण।

शुद्धसूतं तथा गंधं खल्वे तावद्विमर्दयेत् ॥ सूतो न दृश्यते यावत्किंतु कज्जलवद्भवेत् ॥ एषा कज्जलिका ख्याता बृंहणी वीर्यवर्धिनी ॥ नानानुपानयोगेन सर्वव्याधिविनाशिनी ॥

अर्थ-शुद्ध गंधक, पारा दोनोंको जबतक खरल करे कि जहांतक पारा न दीखे इसे कज्जली कहते हैं। यह बृंहण है, वीर्यवर्धक और नाना प्रकारके अनुपानसे सर्व रोगनाश करनेवाली है ॥

गदमुरारिरस।

रसबलिफणिलोहव्योमताम्रेण तुल्यान्यथ रसदलभागो वत्सनागः प्रदिष्टः ॥ भवति गदमुरारिश्चास्य गुंजार्द्धवारा क्षपयति दिवसेन प्रौढमामज्वराख्यम् ॥

अर्थ-पारा, गंधक, शीशेकी भस्म, लोहभस्म, अभ्रक और ताम्र ये समान भाग ले और पारेसे आधा शुद्ध विष डाले सबको खरल कर १ रत्तीकी गोली बनावे। १ गोली अदरखके रससे देय तो तरुणज्वरको एक दिनमें नष्ट करे। इसे गदमुरारिरस कहते हैं ॥

बालार्करस।

रंगहिंगुलजेपालवृद्ध्या दंत्यंबु मर्दयेत्।
दिनार्धेन ज्वरं हंति तमः सूर्योदयो यथा ॥

अर्थ-पारा, गंधक, हींगलू और जमालगोटा इन सबको दंतीके रससे खरल कर रत्तीकी गोली बनाय ले। १ गोली भक्षण करे तो जैसे सूर्य अंधकारका नाश करे है इस प्रकार यह एक दिनमें ज्वरको नाश करे। इसे बालार्करस कहते हैं ॥

ज्वरांकुश।

शुद्धसूतं विषं गंधं धूर्तबीजं त्रिभिः समम् ॥ चतुर्णां द्विगुणं व्योषं चूर्णं गुंजाद्वयं हितम् ॥ पक्वजंबीरकद्रावैर्युक्तार्द्रस्य द्रवैर्युतम् ॥ महाज्वरांकुशो नाम ज्वराणामंतको भवेत् ॥ ऐकाहिकं द्व्या-

हिकं वा त्र्याहिकं वा चतुर्थकम् ॥ विषमं वा त्रिदोषोत्थं नाशयेद्यामसात्रतः ॥

अर्थ-पारा, गंधक और विष प्रत्येक समान लेवे और इन तीनोंकी बराबर धतूरेके बीज ले, तथा सबसे दूनी सोंठ, मिरच और पीपल लेवे सबका चूर्ण कर पकी जँभीरी तथा अदरख इनके रससे खरल करे फिर दो रत्तीकी गोली बनावे। एक गोली खाय तो एक प्रहरमें ऐकाहिक, द्व्याहिक, त्र्याहिक, चातुर्थिक, विषम और संनिपात ज्वर इनको नष्ट करे। इसको महाज्वरांकुश कहते हैं। यह सर्वज्वरोंका नाश करनेवाला कालके समान है ॥

विश्वतापहरण।

सूतशुल्बत्रिवृताबलितिक्ता दंतिबीजचपला विषतिंदुः॥ पथ्यया सह विचूर्ण्य समांशं हेमवारिसहितं दिनमेकम् ॥ वल्लयुग्मगुटिकार्द्रकवारा नाशयेदभिनवज्वरमाशु ॥ विश्वतापहरणोऽत्र च पथ्यं मुद्गयूषसहितं दिनमेकम् ॥

अर्थ-पारा, ताम्रभस्म, निशोथ, गंधक, कुटकी, जमालगोटा, पीपर, विष, कुचला और हरड सब समान ले चूर्ण कर धतूरेके रससे १ दिन खरल करे फिर ४ रत्तीकी गोलियां बनावे। १ गोली अदरखके रससे खाय तो नवीन ज्वरका नाश करे। इसको विश्वतापहरण रस कहते हैं। इसपर मूंगकी दाल और भात पथ्य देवे ॥

सन्निपातभैरवरस।

सूतं गंधं लोहकिट्टं विमर्द्य सर्वैस्तुल्यं वत्सनागं नियुंज्यात् ॥ आर्द्रं भृंगं बीजपूरं जयंती निर्गुंडीका भृंगराजद्रवैश्च ॥ युक्त्या वैद्यो भावयित्वा विधेया शाणार्धार्धे सन्निपातस्य नूनम् ॥ शीतं वातं निर्मलं स्नानपानं पथ्यं दुग्धं शर्कराभियुतं च ॥

अर्थ-पारा, गंधक और मंडूरकी भस्म ये समान भाग ले और तीनोंकी बराबर शुद्ध विष, अदरख, भांगरा, बिजोरा, भांग और निर्गुंडी ये लेकर भाँगरेके रससे खरल करे, तथा १ मासेकी गोली बनावे। १ गोली भक्षण करे तो सन्निपातका नाश करे, शीतल जलसे स्नान करे, पवनमें बैठे, शीतल जल तथा दुध भात और चीनी पथ्यमें देवे ॥

त्रिभुवनकीर्तिरस।

हिंगुलं च विषं व्योषं टंकणंमागधी शिफा ॥ संचूर्ण्य भावयेत्रेधा सुरसार्द्रकहेमभिः ॥ रसो भुवनकीर्तिः स गुंजैकार्द्रद्रवेण वै ॥ सर्वज्वरविनाशं च सन्निपातांस्त्रयोदश ॥

अर्थ-हींगलू, विष, सोंठ, मिरच, पीपल, सुहागा और पीपरामूल इन सब औषधोंको वारीक पीस तुलसी, अदरख, धतूरा इन प्रत्येकके रसमें पृथक् २ खरल करे। इसको त्रिभुवनकीर्तिरस कहते हैं। यह १ रत्ती अदरखके रससे खाय तो सर्वज्वर और तेरह प्रकारके सन्निपातोंको नाश करे ॥

मृतप्राणदायीरस।

रसं गंधकं टंकणं वत्सनाभं सुसंमर्दयेद्धूर्तबीजेन यामम् ॥ ततो वत्सनागेन हैमैश्च बीजै रसैर्भावयेच्च त्रिवारं त्रिवारम् ॥ कटुत्र्यादिना पंचवारं ततः स्यादयं सूतराजो मृतप्राणदायी ॥ ज्वरे सन्निपाते ज्वरे नूतने वा महाश्लेष्मरोगे च गुंजाप्रमाणम् ॥ पयः पायसं दाधिकं तक्रभक्तं सिता वा नवीनज्वरे चार्द्रनीरैः ॥ ज्वरे चातिसारे घनद्रावयुक्ते ग्रहण्यर्शसां क्षौद्रसंसीतया वा ॥ ज्वरे वायुना त्रिकटुग्निपीतं प्रकंपे च बाहुकफकांगवाते ॥ अपस्मारमुन्मादवातं निहंति प्रयुक्तो सितापंचभिर्धूर्तबीजैः ॥

अर्थ-पारा, गंधक, सुहागा, विष और धतूरेके बीज ये सब समान भाग लेके धतूरेके बीजोंके और वच्छनाग विष इनके काढेमें तीन २ भावना देवे फिर सोंठ, मिरच और पीपल इनके काढेकी पांच भावना देवे तो यह सूतराज मृतप्राणदायी रस तैयार हो। यह सन्निपातज्वर, नवीन ज्वर, घोर कफका रोग इनमें एक रत्ती अदरखके रससे देवे, इसपर पथ्य दूध भात, खीर, दहीभात, छाँछभात देवे तो यह रस ज्वरातिसार, संग्रहणी, मूलव्याधि इनमें शहत और मिश्रीके साथ देवे तथा वातज्वर, प्रकंपवायु, बाहुकंप, एकांगवायु इनमें सोंठ, मिरच, पीपल और चित्रक इनके साथ देय, एवं मृगी, उन्माद इनमें मिश्री और पांच धतूरेके बीज इनके साथ देवे ॥

ज्वरोपद्रव।

श्वासो मूर्च्छारुचिश्छर्दिस्तृष्णातीसारविड्ग्रहः ॥

हिक्का कासांगभेदश्च ज्वरस्योपद्रवा दश ॥

अर्थ-श्वास, मूर्च्छा, अरुचि, वमन, तृषा, अतिसार, मलबद्धता, हिचकी, खांसी, अंगोंका टूटना ये ज्वरके दश उपद्रव हैं ॥

ज्वरोपद्रवकी चिकित्सा ।

संजातोपद्रवो व्याधिस्त्याज्यो न स्याच्चिकित्सकैः ॥ व्याधौ शांते प्रणश्यंति सद्यः सर्वेऽप्युपद्रवाः ॥ अतो व्याधिं जयेद्यत्नात् पूर्वं पश्चादुपद्रवम् ॥ भिषग्यः कुशलः सोऽत्र जयेत्पूर्वमुपद्रवम् ॥ तेष्वपि प्रचुरेषु प्राङ्नाशयेदाशुकारिणम् ॥ मूलव्याधिं जयेत्पूर्व जेयो यो वा भवेद्बली॥ अविरोधेन वा कुर्यादुभयोरपि च क्रियाम् ॥

अर्थ-वैद्यको उपद्रवयुक्त व्याधिकी अपेक्षा नहीं करनी चाहिये, व्याधिके शांत होतेही संपूर्ण उपद्रव तत्काल शांत हो जाते हैं, अतएव यत्नपूर्वक प्रथम व्याधिको जीते फिर उपद्रवोंकी चिकित्सा करे । अथवा कुशल वैद्य प्रथम उपद्रवोंको जीते । उनमें भी जो शीघ्र बढनेवाला है उसकी प्रथम चिकित्सा करे पश्चात् अन्यान्यको जीते । अथवा कुशल वैद्य प्रथम मूलव्याधिको जीते अथवा उसमें जो बलवान् उपद्रव होय उसको जीते किंवा व्याधि और उपद्रव दोनोंकी अविरोधी चिकित्सा करे ॥

सिंह्यादिकषाय ।

सिंही व्याघ्री ताम्रमूली पटोली शृंगी भार्गी पुष्करं रोहिणी च ॥ साकं शठ्या शैलमल्ल्याश्च बीजं श्वासं हन्यात्सन्निपाते दशांगः॥

अर्थ-कटेरी बडी, कटेरी, धमासा, पटोलपत्र, काकडासींगी, भारंगी, पुहकरमूल, कुटकी, कचूर, कुरैया इन दश औषधोंका काढा सन्निपातोत्पन्न श्वासका नाश करे ॥

द्वात्रिंशांगकाढा ।

भार्गीनिंबघनाभयामृतलताभूनिंबवासाविषात्रायंतीकटुकावचा-त्रिकटुकस्योनाकशक्रद्रुमैः ॥ रास्नायासपटोलपाटलिशठीदार्वी-विशालात्रिवृद्ब्राह्मीपुष्करसिंहिकाद्वयनिशाधात्र्याक्षदेवद्रुमैः ॥ क्वाथोऽयं खलु सन्निपातनिवहान् द्वात्रिंशतात्पानतो दुर्धर्षान्नि-

मृदुतालवंतवातः कोमलकदलीदलस्पर्शः ॥

अर्थ-मूर्च्छामें शीतल जल नेत्रोंपर छिडके, सुगंधित धूनी दे, अथवा सुगंधित फूल सुँघावे, ताडके पंखेसे धीरे २ पवन करे तथा केलेके कोमल पत्ते देहपर रखने चाहिये ॥

अरुचिचिकित्सा ।

अरुचौ तु शृंगवेरजरसकैः सह सिंधुजैः कवलः ॥
सिंधूत्थमातुलुंगीफलकेसरधारणं वक्त्रे ॥

अर्थ-यदि ज्वरमें अरुचि होय तो अदरखके रसमें सैंधानिमक मिलाय उसको मुखमें रक्खे अथवा बिजोरेकी केशरमें सैंधानिमक मिलायके मुखमें रक्खे तो अरुचि दूर हो ॥

मातुलिंगकवल ।

अरुचौ मातुलुंगस्य केसरं साज्यसैंधवम् ॥
धात्रीद्राक्षासितानां वा कल्कमास्ये तु धारयेत् ॥

अर्थ-अरुचि होनेसे बिजोरेकी केशरमें सैंधानिमक और घी मिलायके मुखमें रक्खे ॥

सैंधवादियोग ।

नीरेण सिंधूत्थरजोऽतिसूक्ष्मं नस्येऽतिनूनं विनिहंति हिक्काम् ॥
शुंठी हठाद्वा सितया समेता धूपोऽथवा हिंगुसमुद्भवश्च ॥

अर्थ-ज्वरमें हिचकी होनेसे सैंधानिमक बारीक पीस जलमें मिलायके नस्य देवे अथवा सोंठ, मिश्री और तीक्ष्ण पदार्थ इनके सेवन करनेसे अथवा हींगकी धूनी देनेसे हिचकी बंद होवे ॥

अश्वत्थक्षार ।

अश्वत्थं वल्कलं शुष्कं दग्धं निर्वापितं जले ॥
तज्जलं पानमात्रेण हिक्कां छर्दिं च नाशयेत् ॥

अर्थ-पीपलकी सूखी छालको भस्म करके जलमें भिगोय देवे फिर उसको नितारके पानी निकाल लेवे इसे पीनेसे हिचकी और वमन ये नाश होवें ॥

शुष्काश्वपुरीषयोग ।

शुष्कस्याश्वपुरीषस्य धूपो हिक्कां निवारयेत् ॥

अपि सर्वात्मिकां चैव योगराडयमीरितः ॥

अर्थ-सूखी हुई घोडेकी लीदकी धूनी संनिपातकी हिचकीको नाश करे ॥

यावकादिनस्य।

यावकस्य रसेनापि नस्यतो हंति हिक्किकाम् ॥

अर्थ-सींजे हुए जौके रसकी नस्य देवे तो हिचकी दूर हो ॥

ज्वरकी खाँसीपर कणाद्यलेह।

कासे कणा कणामूलं कलिद्रुमफलं रजः ॥
सविश्वभेषजं लिह्यान्मधुना वा वृषारसम् ॥

अर्थ-ज्वरमें खाँसी होनेसे पीपल, पीपरामूल, बहेडा, पित्तपापडा और सोंठ इनके चूर्णका अवलेह अडूसेके रससे अथवा शहतके साथ देवे तो दूर होय ॥

पुष्करादिचटनी।

पुष्करमूलकटुत्रिकशृंगीकट्फलयासककारविकाभिः ॥
मधुललिताभिरयं खलु लेहः कासरिपुः कफरोगहरश्च ॥

अर्थ-पुहकरमूल, त्रिकटु, काकडासींगी, कायफल, धमासा और अजवायन इनका चूर्ण शहतसे चाटे तो खाँसी और कफ इनका नाश होय ॥

विभीतकयोग।

विभीतकं घृताभ्यक्तं गोशकृत्परिवेष्टितम् ॥
स्विन्नमग्नौ हरेत्कासं ध्रुवमास्यविधारितम् ॥

अर्थ-बहेडेको घीसे लपेट उसपर गोबर लपेटके पुटपाक करे इसकी छालको मुखमें रखनेसे खाँसीको दूर करे ॥

लवंगादिवटी।

विभीतकत्वग्मरिचं लवंगं सर्वैः समानं खदिरस्य सारम् ॥
बब्बूलजक्वाथकृता वटीयं मुखस्थिता कासहरी क्षणेन ॥

अर्थ-बहेडेकी छाल, कालीमिरच और लौंग सब समान लेवे और सबकी बराबर खैरसार लेवे सबको बबूलके काढेमें खरल कर गोली बनावे। इस गोलीको मुखमें रक्खे तो यह तत्काल खाँसीको दूर करे ॥

ज्वरदाहचिकित्सा ।

दाहाधिकारलिखितं दाहे कुर्याच्चिकित्सितम् ॥
परं ज्वराविरुद्धं यन्मुख्यो नाश्यो ज्वरो यतः ॥

अर्थ–ज्वरमें दाह होनेसे दाहाधिकारमें जो दाहकी चिकित्सा लिखी है वह करनी चाहिये, परंतु ज्वरदाहमें ज्वर मुख्य है अतएव उसमें ज्वरके विरुद्ध चिकित्सा न करे ॥

गुडूच्यादिकाढा ।

क्वाथो गुडूच्याः समधुः सुशीतः पीतः प्रशांतिर्वमनस्य कुर्यात् ॥
विण्माक्षिकाणां मधुनावलीढा सचंदना शर्करयान्विता वा ॥

अर्थ–गिलोयका काढा शीतल होनेपर उसमें शहत मिलायके पीवे तो ज्वरमें वमन होना शांति होय । अथवा मक्खीकी विष्ठा शहतसे चंदनका चूरा मिलायके देवे अथवा मिश्री और चंदन मिलायके देवे तो ज्वरमें रद्द होना बंद होवे ॥

दंतशठादिकाढा ।

दंतशठबीजपूरकदाडिमबदरैः सचुक्रकैर्वदने ॥
लेपो जयति पिपासामथ रजतगुटीमुखांतस्था ॥

अर्थ–जंभीरी, बिजोरा, अनार, बेर और अमलवेत इनका कल्क तलुएमें, जीभमें और गालोंके भीतर लेप करे तो प्यासको शमन करे । अथवा चांदीकी गोली मुखमें रखनेसे प्यास दूर होवे ॥

जलादियोग ।

शीतं पयः क्षौद्रयुतं निपीतमाकंठमाश्वेव तदुद्वमेच्च ॥
तर्षप्रकर्षप्रशमाय वक्रे दध्यात्कुदक्षौद्रवटाग्रलाजान् ॥

अर्थ–ज्वरमें तृषाके रोकनेको शीतल जलमें शहत मिलायके कंठपर्यंत पीवे और तत्काल वमन द्वारा कुरला कर देवे, अथवा कूठ, वडकी कोपल और खील इनके अवलेहमें शहत मिलायके मुखमें राखे तो तृषाकी शांति होय ॥

ज्वरातिसारचिकित्सा ।

लंघनमेकं मुक्त्वा न चान्यदस्तीह भेषजं बलिनः ॥
समुदीर्णदोषनिचयं शमयति तत्पाचयत्यपि च ॥

अर्थ–ज्वरमें दस्त होनेसे यदि रोगी बलिष्ठ होय तो उसको लंघनही करना औषधी कही है, वे लंघन बढे हुए दोषसमूहका नाश करे हैं और उनको पचावे भी हैं ॥

वत्सादन्यादिकाढा ।

वत्सादनीवत्सकवारिवाहविश्वंभनिंबविषाः सविश्वाः ॥
ज्वरेऽतिसारं त्वरितं जयंति विश्वामृतावत्सकवारिवाहाः ॥

अर्थ–गिलोय, कूडेकी छाल, नागरमोथा, चिरायता, नीमकी छाल, अतीस और सोंठ इनका अथवा सोंठ, गिलोय, कूडेकी छाल और नागरमोथा इनका काढा पीवे तो ज्वरमें होनेवाले अतीसारको नाश करे ॥

पाठादिकाढा ।

पाठामृतापर्पटमस्तुविश्वाकिराततिक्तेंद्रयवान्विपाच्य ॥
पिबन्हरत्येव हठेन सर्वज्वरातिसारानपि दुर्निवारान् ॥

अर्थ–पाढ, गिलोय, पित्तपापडा, नागरमोथा, सोंठ, चिरायता और इन्द्रजौ इनके काढेको पीनेसे निश्चय दुर्निवार अतीसारको दूर करे ॥

ज्वरमें दस्तके अवरोधकी चिकित्सा ।

विड्ग्रहे वातजित्कर्म कुर्यादत्रानुलोमनम् ॥
मलं प्रवर्तयेदाशु तीक्ष्णाभिः फलवर्त्तिभिः ॥

अर्थ–ज्वरमें यदि दस्त न उतरता होय तो वातनाशक ऐसे अनुलोमन द्रव्य अथवा प्रथम तीक्ष्णफलवर्ती आदि करके मलको निकालना चाहिये ॥

पथ्यादिकाढा ।

पथ्यारग्वधतिक्तात्रिवृदामलकैः शृतं तोयम् ॥
जीर्णज्वरे विबंधे दद्यादाश्वेव विड्ग्रहः शाम्येत् ॥

अर्थ–छोटी हरड, अमलतासका गूदा, कुटकी, निसोथ और आमले इनका काढा जीर्णज्वर, उसी प्रकार मलबद्धताको नाश करे ॥

ज्वरपर पथ्य ।

वमनं लंघनं काले यवागुः स्वेदनानि च ॥ कटुतिक्तो रसश्चेति पाचनं तरुणज्वरे ॥ सन्निपाते त्विदं सर्वं कुर्यादामे कफापहम् ॥ अवलेहोऽञ्जनं नस्यं गंडूषश्च रसक्रियाः ॥ पादयोर्हस्तयोर्मूले

कंठकूपे च गंडयोः ॥ स्वेदे भ्रष्टकुलित्थानां चूर्णघर्षणमेव च ॥

अर्थ—वमन और लंघन करना, प्रातःकाल यवागू देवे, पसीने काढने तथा चरपरे, कडुए ये रस और पाचन ये उपचार तरुण ज्वरमें करे और संनिपातमें सर्व कर्म करावे । तथा आमज्वरमें कफनाशक क्रिया करे, अवलेह और अंजन, नस्य, कुरले करना, पसीने काढना और हाथ पैर इनकी जडमें तथा कंठके गडहे एवं कपोलकी जडमें पसीने आनेसे कुलथीको भून और पीसके इसके चूर्णकी मालिश करे ॥

तरुणज्वरपर अपथ्य ।

स्नानं विरेकः सुरतं कषायं व्यायाममभ्यंजनमह्नि निद्रा ॥ दुग्धं घृतं वैदलमामिषं च तक्रं सुरा स्वादु गुरु द्रवं च ॥ अन्नं प्रवातं भ्रमणं च क्रोधं त्यजेत्प्रयत्नात्तरुणज्वरार्तः ॥

अर्थ—स्नान, दस्त, मैथुन, काढा, दंड, कसरत, दिनकी निद्रा, दूध, घी, दोदलका अन्न (दाल आदि), मांस, छाछ, मद्य, भारी पदार्थ, स्वादु पदार्थ, पतली वस्तु, अन्न, हवा खाना, डोलना, क्रोध और बहुत बोलना ये सर्व वस्तु तरुण ज्वरवालेको त्याज्य हैं ॥

मध्यमज्वरमें पथ्य ।

पुरातनाः षष्टिकशालयश्च वार्ताकसोभांजनकारवेल्लम् ॥ वेत्राग्रमाषाढफलं तथैव कर्कोटिकं मूलकपोतिकां च ॥ मुद्गैर्मसूरैश्चणकैः कुलित्थैर्मकुष्टकैर्वाभिहितश्च यूषः ॥ पाठामृतावास्तुकतंदुलीयजीवंतिशाकानि च काकमाची ॥ द्राक्षा कपित्थानि च दाडिमानि वैकंकतान्येव पचेलिमानि ॥ लघूनि सात्म्यानि च भेषजानि पथ्यानि मध्यज्वरिणाममूनि ॥

अर्थ—पुराने सांठी चावल, शालीचावल, वैंगन, सहँजाना, करेले, बाँसकी कोपल, उडद, अरहर, आषाढमहीनेके फल, ककडी, मूली, पोई, मूंग, मसूर, चना, कुलथी, मोंठ इनका यूष, पाढ, गिलोय, बथुआ, चौलाई, जीवंती (डोडी) औ मकोय इनका शाक, दाख, कैथ, अनार, बिकंकत, पचेलिम तथा हलके और हितकारी ऐसी औषध ये ज्वरवाले मनुष्यको हितकारी कही है ॥

सर्वज्वरमें पथ्य ।

तंदुलीयकवास्तुकबालमूलकपर्पटान् ॥ पटोलतिक्तशाकं च गु-

डूचीपल्लवान्यपि ॥ कालशाकं निंबपुष्पं मारिषं दार्विकादलम् ॥ जीवंती चापि चांगेरी सुनिषण्णाकमाविकैः ॥ पत्रशाकप्रियाणां तु ज्वरितानां प्रदापयेत् ॥ मुद्गान्मसूरां चणकान्कुलित्थांश्च मकुष्टकान् ॥ यूषार्थं यूषसात्म्यानां ज्वरितानां प्रदापयेत् ॥ लावान्कपिंजलानेणान्पृषतान् शरभान् शशान् ॥ कालपुच्छान्कुरंगांश्चतथैव मृगमातृकान् ॥ मांसार्थं मांससात्म्यानां ज्वरितानां प्रदापयेत् ॥ सारसक्रौंचशिखिनस्तथा तित्तिरकुक्कुटाः ॥ ज्वरितानां न शस्यंते इति केचिद्व्यवस्थिता ॥ वृंताकं पीलुकर्कोटपटोलककठिल्लकम् ॥ फलशाककृते देयं सर्वं निस्नेहमेव च ॥ वत्सरोषितधान्यस्य तंडुलाद्यं ज्वरे हितम् ॥ रोटिकार्थं प्रदातव्यं द्विवर्षोषितमल्पशः ॥ गोधूमादि यथासात्म्यमन्यदप्यल्पमर्पयेत् ॥

अर्थ–चौलाई, वथुआ, छोटी नवीन मूली, पित्तपापडा, पडवल, वरना, गिलोय, पालक, कालशाक (नाडीका शाक), नीमके फूल, मारिषशाक (मरसेका साग), डोडीका शाक, चूकाका शाक, चौपतिया, वकरीके दूधके पदार्थ, अथवा पत्रका शाक और मूंग, मसूर, चना, कुलथी, मोठ, मटर इनका यूष जिनको हित होवे उनको देय । तथा दुंबाका मांस, लवा, सपेद तीतर, मृग, चित्तलमृग, शरभ और सर्व प्रकारके मृगोंका मांस मांस भक्षण करनेवालोंको देवे, सारस, क्रौंच, मोर, तीतर, मुरगा इन पक्षियोंका मांस ज्वरवालेको न देवे ऐसे कई आचार्य कहते हैं, तथा वैंगन, पीलू, ककोडा, पडवल, करेले ये फल शाकोंमें देवे, परंतु चिकनाई युक्त पदार्थ न देवे, यदि भात देवे तो एक वर्षके पुराने चावलोंका देय, यदि रोटी देय तो एक वर्षके चावलोंकी देवे और गेंहू आदि नित्यही खाते हैं इससे दे, वाकी अन्यवस्तु थोडी २ देवे ॥

जीर्णज्वरपथ्य ।

विरेचनं छर्दनमंजनं च नस्यं च धूमोऽप्यनुवासनं च ॥ संशोधनं संशमनं व्यवायोऽभ्यंगोऽवगाहः शिशिरोपचारः ॥ एणः कुलिंगो हरिणो मयूरो लावः शशस्तित्तिरिकुक्कुटौ च ॥ क्रौंचः कुरंगः पृषतश्चकोरः कपिंजलो वार्तिककालपुच्छौ ॥ गवामजायाश्च

पयो घृतं च हरीतकी पर्वतनिर्झरांभः ॥ एरंडतैलं सितचंदनं च द्रव्याणि सर्वाणि पुरेरितानि ॥ ज्योत्स्ना प्रियालिंगनमप्यथ स्याद्वर्गः पुराणज्वरिणां सुखाय ॥

अर्थ-रेचन, वमन, अंजन, नस्य, धूप, अनुवासन बस्ति, पसीने काढना, स्त्रीसंभोग, उबटना, पानीमें घुसकर स्नान, शीतल उपचार, हरिण, घरका चिडा, एण, मोर, लवा, ससा, तीतर, मुरगा, क्रौंच, कुरंग, चित्तलहिरण, चकोर, सपेद तीतर, बतक और कालपुच्छ इनका मांस और गौ, बकरीका दूध और घी, हरड, पर्वतके झरनेका पानी, अंडीका तेल, सपेद चंदन और पूर्वोक्त कही हुई संपूर्ण द्रव्य, चांदनी, स्त्रीका आलिंगन ये जीर्णज्वरवाले रोगीको सुखकारक पथ्य वर्ग कहा है ॥

आगंतुकज्वरपथ्य।

आगंतुजे ज्वरे नैव नरः कुर्वीत लंघनम् ॥ अभिघातसमुत्थाने पानाभ्यंगे च सर्पिषः ॥ रक्तावसेकैर्मद्यैश्च तथा मांसरसोदनैः ॥ क्षतजे व्रणजे वापि क्षतव्रणचिकित्सितम् ॥ इत्यागंतुज्वरे पूर्वं भिषग्भिः पथ्यमीरितम् ॥ क्रोधजे पित्तजित्कार्या क्रिया सद्वाक्यमेव च ॥ औषधीगंधजे कुर्यात्कर्म पित्तप्रसादनम् ॥ अभिचाराभिशापोत्थे जपहोमादि भेषजम् ॥ उत्पातग्रहपीडोत्थे दानं स्वस्त्ययनादयः ॥ क्रोधोत्थिते पित्तहरं कामजे क्रोधमेव च ॥ कामशोकभयोद्भूते सर्वा वातहरी क्रिया ॥ आश्वासनं चेष्टलाभो हर्षदायीनि यानि च ॥ हर्षेण च समायांति कामशोकभयज्वराः ॥ विशेषतः पुनश्चात्र कामक्रोधसमुत्थिते ॥ भयशोकसमुद्भूते कामक्रोधकरौषधम् ॥ भूताभिषंगजे भूतबाधावेशनताडनम् ॥ अध्वश्रांतेषु चाभ्यंगो दिवा निद्रां च कारयेत् ॥ मनःक्षोभे समुत्पन्ने मनसः सांत्वनानि च ॥ इत्यागंतुज्वरे पूर्वैर्भिषग्भिः पथ्यमिष्यते ॥

अर्थ-आगंतुक ज्वरमें लंघन न करावे, अभिघातज्वरमें घृतका पीना और मालिश, रुधिरका निकालना, मद्यपान, मांसरस और भात ये पथ्य हैं और क्षतजानि-

त अथवा व्रणजनितज्वरमें क्षत (घाव) और व्रण (फोडे) के ऊपर जो चिकित्सा लिखी है वह करनी चाहिये, यह आगंतुक ज्वरपर प्रथम पथ्य है। क्रोधज्वरपर पित्तशमनकर्त्ता क्रिया करे और अच्छी २ बात करे। औषधीगंधज्वर पर चित्तको प्रसन्नकारक चिकित्सा करे। और अभिचारज्वर तथा अभिशापज्वरोंमें जप, होम इत्यादि क्रिया करे । उत्पात और ग्रहपीडा इनसे उठे हुए ज्वरपर दान देना, पुण्याहवाचन इत्यादि करे। और क्रोधज्वरमें पित्तहरणकर्त्ता क्रिया तथा कामज्वरमें क्रोधज्वरकी चिकित्सा करे। और क्रोधज्वरमें कामज्वरोक्त चिकित्सा करे। एवं काम, शोक और भय इनसे उत्पन्न हुए ज्वरपर सर्व वातनाशक क्रिया तथा उस रोगीको आश्वासन (दिलासा देना), इष्टलाभ तथा हर्षदायक पदार्थ ये देवे। तथा कामक्रोध इनसे उत्पन्न ज्वरमें क्रमसे क्रोध और कामोत्पादककर्ता क्रिया करे। भूताभिषंगजनितज्वरमें भूतका देहमें बुलाना, ताडन करना इत्यादि कर्म करे। मार्गश्रम करके आये हुए ज्वरपर अभ्यंग, दिनमें सोना इत्यादि करे। तथा मनके क्षोभसे उत्पन्न ज्वरपर मनकी शांति करना इस प्रकार आगंतुक ज्वरपर वैद्योंने पथ्य कहा है॥

विषमपर।

विषमे प्रतिकुर्वीत भिषग्वमनरेचनैः ॥ विष्णोर्नामसहस्रस्य पठनं श्रवणं श्रुतेः॥ देवानां ब्राह्मणानां च गुरूणामपि पूजनम् ॥ ब्रह्मचर्यं तपो होमः प्रदानं नियमो जपः॥ साधूनां दर्शनं नित्यं रत्नौषधविधारणम्॥ मंगलाचरणं चैव वर्गः सर्वज्वरापहः॥

अर्थ-विषमज्वरमें वमन और विरेचन देवे, विष्णुसहस्रनामका पाठ, वेदोंका श्रवण, गुरु ब्राह्मणोंका पूजन, ब्रह्मचर्य, तप, होम, दान, नियम, जप, साधुमहात्माओंके दर्शन, रत्न और औषध इनका धारण करना, तथा मंगल कर्म ये पथ्य वर्ग हैं॥

सर्वज्वरपर अपथ्य।

वमिवेगं दंतकाष्ठमसात्म्यमपि भोजनम्॥ विरुद्धान्यन्नपानानि विदाहीनि गुरूणि च॥ दुष्टांबुक्षारमम्लानि पत्रशाकं विरूढकम्॥ लळदंबु च तांबूलं कलिंगं लकुचं फलम्॥ तोडिमत्स्यं च पिण्याकं नवान्नं पिष्टवैकृतम्॥ अभिष्यंदीनि चैतानि ज्वरितः परिवर्जयेत्॥

व्यायामं च व्यवायं च स्नानं चंक्रमणानि च ॥ ज्वरमुक्तो न सेवेत यावन्नो बलवान्भवेत् ॥

अर्थ-वमन करना, दँतून करना, आपको अहित ऐसा भोजन, विरुद्ध भोजन, दाहकारी और भारी पदार्थ, दूषित जलपान, खार, खटाई, पत्तेका शाक, अंकुर आये हुए धान्य, पोखरका पानी, तांबूल, तरबूज, वडहर, तथा तोडिजातिकी मछली, खल, नवीन धान्य, पिष्टपदार्थ और पौष्टिक ये पदार्थ ज्वरवाले रोगीको छोड देने चाहिये। उसी प्रकार मेहनत, स्त्रीसंग, स्नान, डोलना, फिरना इत्यादि कर्म जबतक ज्वरमुक्त रोगीके देहमें बल न आवे तबतक न करे ॥

मंत्र।

वज्रहस्तो महाकायो वज्रतुंडो महेश्वरः ॥ हतोऽसि वज्रतुंडेन भूम्यां गच्छ महाज्वर ॥ ठः ठः ठंतः ॥ तालपत्रे लिखित्वा तु कंठे बाहौ च बंधयेत् ॥

अर्थ-ऊपर कहा हुआ मंत्र ताडके पत्तेपर लिख गलेमें अथवा भुजामें बांधे तो ज्वर दूर हो ॥

पेय।

आम्रातकसहस्रेण दलेन सुकृती पिबेत् ॥
पेयां घृतप्लुतां जंतुश्चातुर्थिकहरीं त्र्यहे ॥

अर्थ-जो भीतर घृत मिली पेयाको तीन दिनपर्यंत महुएके हजार पत्तोंसे पीवे तो उसका चातुर्थिक ज्वर दूर होवे ॥

ज्वरनाशकपत्र।

स्वस्ति श्रीलंकातः कौणपाधिपतिर्बिभीषणो यथास्थाने वास्तव्यस्यामुकस्य महाविषमज्वरं समाज्ञापयति रे रे पापिष्ठ दुरात्मन् ज्वर मम पार्श्वं शीघ्रमागन्तव्यं नो चेदन्यथा करिष्यसि तदा चंद्रहासखड्गेन त्वच्छिरः कर्त्तयिष्यामि मा भणिष्यसि तन्नाख्यातमिति ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः ॥

विभीषणेन प्रहितां पत्रिकां लिख्य बुद्धिमान् ॥
विषमज्वरनाशाय भुजायां रोगिणो न्यसेत् ॥

अर्थ—इस मंत्रको शुभदिनमें अष्टगंधसे लिख और गुग्गुलकी धूनी देकर विषमज्वर दूर करनेको रोगीकी भुजामें बांधे तो ज्वर अवश्य दूर हो ॥

लंकेश्वररस ।

तालकं माक्षिकं तुत्थं हरबीजं सगंधकम् ॥ कर्कोटीपत्रतोयेन मर्दयेद्दिनसप्तकम् ॥ चुल्ल्यां पाच्यं चतुर्यामं सशर्करो ज्वरापहः ॥ अयं लंकेश्वरो नाम शीतमातंगकेसरी ॥

अर्थ—हरताल, सुवर्णमाक्षिक, नीलाथोथा, पारा और गंधक ये सब समान भाग ले सबको ककोडेके पत्तोंके रससे सात दिन खरल कर चूल्हेपर चढाय ४ प्रहरकी अग्नि देवे, फिर इसमेंसे बलाबल विचारके रसकी मात्रा मिश्रीके साथ देवे तो यह (लंकेश्वर) रस शीतज्वर हाथीके नाश करनेमें सिंहरूप है ॥

दुग्धफेनगुण ।

गोदुग्धप्रभवं किंवा छागीदुग्धमथापि वा ॥ भवेत्फेनं त्रिदोषघ्नं रोचनं बलवर्द्धनम् ॥ वह्निवृद्धिकरं पथ्यं सद्यस्तृप्तिकरं लघु ॥ अतिसारेऽग्निमांद्ये च ज्वरे जीर्णे प्रशस्यते ॥

अर्थ—गौके दूधको अथवा बकरीके दूधको मथकर झाग प्रगट करे ये झाग त्रिदोषनाशक, रुचिकारी, बलवर्द्धक, जठराग्निवर्द्धक, पथ्य, तत्काल तृप्ति करता और हलके हैं इनको अतिसार रोग, मंदाग्नि और जीर्णज्वरपर देना हितकारी होता है ॥

लाक्षारसविधि ।

दशांशं लोध्रमादाय तद्दशांशं च स्वर्जिकाम् ॥ किंचिच्च बदरीपत्रं वारि षोडशधा मतम् ॥ वस्त्रपूतो रसो ग्राह्यो लाक्षाया पादशोषितः ॥

अर्थ—बहुतसे वैद्योंको लाक्षादितैल बनाते देखा परंतु इसमें मुख्य लाखका रस निकाला जाता है उसकी विधि बहुत वैद्य नहीं जानते फिर लाक्षादि तैलका बनाना वे क्या जानें, उसके वास्ते लाखका रस निकालनेकी विधि कहते हैं जैसे कि—प्रथम जितनी लाख हो उसका दशवाँ भाग लोध लेवे और लोधका दशवाँ भाग सज्जी डाले और उसमें थोडीसी बेरकी पत्ती डाले और लाखसे पानी १६ सोलह गुना डालके औटावे जब चौथाई जल रहे तब उतारके बारीक कपडेमें इस लाखके रसको छान लेवे, फिर इसको लाक्षादि तैलमें मिलाना चाहिये ॥

रोगमुक्तस्नान।

चरे विलग्ने रविभौमवारे रिक्तातिथौ चंद्रबले च हीने ॥
केन्द्रत्रिकोणार्थगतैश्च पापैः स्नानं हितं रोगविमुक्तकानाम् ॥

अर्थ-मेष, कर्क, तुला और मकर ये लग्न रविवार और भौमवारमें तथा रिक्तातिथिमें (४।९।१४) में और चंद्रमा बलकरके हीन हो, तथा पापग्रह (सूर्य, मंगल, शनि और इनका साथी बुध) ये केन्द्र (प्रथम, चतुर्थ, सप्तम और दशम) स्थानमें तथा त्रिकोण (पंचम और नवम) स्थानमें बैठे होवें ऐसे समयमें रोगीको रोगमुक्त होनेपर प्रथम स्नान कराना उत्तम कहा है ॥

चरलग्न स्नानमें लेनेका यह कारण है कि चरलग्न चलायमान होती है इस वास्ते इसमें स्नान रोगी करे तो उसका रोग फिर आगे चला जावे, रोगीके पास नहीं आवे। इसी प्रकार दुष्टवार भी अमंगली है इस कारण अमंगल वारमें स्नान करनेसे रोगभी अमंगलसे डरता है, इसी प्रकार रिक्ता तिथि और हीनबली चंद्रमाका फल जान लेना चाहिये ॥

यह मत ज्योतिषियोंका है मेरा नहीं है न वैद्यशास्त्रका है, वैद्योंका मत सात्म्यके अधीन होता है ॥

ज्वरमुक्तिलक्षण।

संक्षोभणाच्च धातूनां दोषसंचालनादपि ॥ भूयो भवति वेगस्तु मोक्षकाले ज्वरस्य तु ॥ त्रिदोषजे ज्वरे ह्यंतर्दंतर्वेगे च धातुगे ॥ लक्षणं मोक्षकाले स्यादन्यस्मिन्स्वेददर्शनम् ॥

अर्थ-ज्वरके जानेके समय धातुओंके क्षोभसे अथवा दोषोंके चलायमान होनेसे ज्वरका अत्यंत वेग होता है, त्रिदोषज्वर, अंतर्वेगज्वर और धातुगतज्वर इनमें ये लक्षण होते हैं, शेषज्वरोंमें केवल पसीने मात्र आते हैं ॥

इति श्रीमाथुरकृष्णलालतनयदत्तरामनिर्मिते आयुर्वेदोद्धारे बृहन्निघंटुरत्नाकरे सर्वज्वरनिदानचिकित्सापथ्यापथ्यपूर्णतामगात्।

समाप्तमिदं ज्वरप्रकरणम्।

श्रीः ।

अतिसारका कर्मविपाक।

स्मार्ताग्निं शमयेद्यस्तु सोऽतीसारयुतो भवेत् ॥ अग्निरश्मीत्यृचं जप्त्वा दशांशं जुहुयात्तिलान् ॥ सर्पिषा चाप्लुतान्दद्याद्धिरण्यं ब्राह्मणाय वै ॥ अग्निरश्मीतीयमृक्च तारतम्येन वा जपेत् ॥

अर्थ—जो प्राणी स्मार्ताग्निका शमन (शांति) करता है वह अतीसार रोगसे पीडित होता है, इसके दूर करनेको अग्निरश्मि इस ऋचाका जप और दशांश तिलोंका हवन करे तथा घृत मिले तिल और सुवर्णका दान करे, अथवा अग्निरश्मि इस ऋचाका जप और हवनादि करे ॥

दूसरा प्रकार।

अतीसारी स भवति यस्त्रेताग्निविनाशकः ॥ सुवर्णेनाथ ताम्रेण कुर्यात्प्रतिकृतिं बुधः॥ वह्नेः शक्त्यनुसारेण पलेनार्धेन वा पुनः ॥ तथा ज्वालाकुलां रक्तचंदनेन विलेपिताम् ॥ रक्तवस्त्रेण संवीतां मेषस्योपरि संस्थिताम् ॥ रक्तमाल्यैश्च संछन्नां मुक्तादामपरिष्कृताम् ॥ कनकाचलवर्णाभां द्वादशार्कनिभां शुभाम् ॥ ब्रह्मचर्यान्विते विप्रे कनिष्ठे चाग्निहोत्रिणि ॥ अंगुलीयकवस्त्राद्यैर्भूषिते तां निवेदयेत् ॥ मंत्रेणानेन विधिवदाग्निप्रीत्यर्थमादृतः ॥

अर्थ—जो मनुष्य अग्नित्रयीको शांत करे वह अतिसार (दस्त) रोगवाला होता है । वह सुवर्णकी अथवा तामेकी अपनी शक्तिके अनुसार अग्निकी प्रतिमा बनायकर दान करे परंतु दो तोलेसे न्यून न करे उस अग्निका ध्यान कहते हैं, ज्वालासे व्याप्त, लालचंदन लगा हुआ, लालवस्त्र पहने, मेंढेके ऊपर सवार, लाल मालाओंको और मोतियोंके हारको पहने, सुवर्णके पर्वतके समान, बारह सूर्यकी कांतिके समान ऐसी प्रतिमा करके ब्रह्मचारी अथवा अग्निहोत्री इनका वस्त्रालंकार आदिसे पूजन कर आगे कहे हुए मंत्रकरके दान करे ॥

दानका मंत्र।

त्रेतारूपोऽग्निरीड्यस्त्वमंततश्चासि वै नृणाम् ॥ त्वं वेत्थ प्राक्तनं पापमतिसारं विनाशय ॥ एवं कृत्वा नरः सम्यगतिसारं व्यपोहति ॥ निरुजं स सुखी नित्यं दीर्घमायुश्च विंदति ॥

अर्थ-हे अग्नि ! तू अग्नित्रयरूपी तथा पूज्य, मनुष्योंके मरण पर्यंत रहनेवाली तथा मेरे जन्मान्तरके पापोंको जाननेवाला ऐसा है अतएव इस मेरे अतिसाररोगको शांत कर इस प्रकार कहकर दान करे इस विधि दान करनेसे अतिसार रोगको नाश करे है, रोगरहित नित्य सुखी और दीर्घ आयुको प्राप्त होवे ॥

तीसरे प्रकारका कर्मविपाक ।

स्त्रीहंता चातिसारी स्यादश्वत्थान्रोपयेद्दश ॥
दद्याच्च शर्कराधेनुं भोजयेच्च शतं द्विजान् ॥

अर्थ-स्त्रीके मारनेवाला अतिसारी होता है वह दश पीपलके वृक्ष लगावे और शर्कराधेनुका दान करे, तथा १०० ब्राह्मणोंको भोजन करावे, शर्कराधेनुका दान आगे यक्ष्माप्रकरणमें कहेंगे ॥

रक्तातिसारका कर्मविपाक ।

दावाग्निदायकश्चैव रक्तातीसारवान् भवेत् ॥
तेनोदपानं कर्तव्यं रोपणीयस्तथा वटः ॥

अर्थ-वनमें आग लगानेवाला प्राणी रक्तातिसारी होता है उसको प्याऊ इत्यादि जलदान करना चाहिये । तथा १० वडके वृक्ष लगावे इस प्रकार करनेसे रक्तातिसार दूर होवे ॥

अतिसारनिदान ।

गुर्वतिस्निग्धतीक्ष्णोष्णद्रवस्थूलातिशीतलैः ॥ विरुद्धाध्यशनाजीर्णैर्विषमैश्चातिभोजनैः ॥ स्नेहाद्यैरतियुक्तैश्च मिथ्यायुक्तैर्विषैर्भयैः ॥ शोकदुष्टांबुमद्यातिपानैः सात्म्यर्तुपर्ययैः ॥ जलाभिरमणैर्वेगविघातैः कृमिदोषतः ॥ नृणां भवत्यतीसारो लक्षणं तस्य वक्ष्यते ॥

अर्थ-भारी, अत्यंत चिकना, चरपरा, गरम, पतला, मोटा, अत्यंत शीतल इनके सेवन और देश, काल, तथा संयोग इनसे विरुद्ध (जैसे मध्यदेशवालोंको चाहपानी आदि खाना विरुद्ध, वसंत ऋतुमें कफकारी और नदी आदिका जल पीना यह कालविरुद्ध है, दूध मछली मिलायकर खाना संयोगविरुद्ध) तथा भोजनके ऊपर फिर भोजन करना, अजीर्ण, भोजनका काल छोड फिर गरमागरम अधिक खाना, स्नेहादिक द्रव्यका अत्यंत पान, विरुद्ध फल देनेवाले हीनाधिक

योग, विषभक्षण, भय, शोक इन करके तथा दूषित पानी और मद्य इनका अत्यन्त पान करनेसे, ऋतुविपरीत पदार्थोंके भक्षणसे, जलमें गोता मारना, मलमूत्रका वेग रोकनेसे, तथा पेटमें कीडे पड जाना इन कारणोंसे इस प्राणीके अतिसार रोग होता है उसके लक्षण कहते हैं ॥

संप्राप्ति।

संशाम्याऽपां धातुरग्निं प्रवृद्धो वर्चोमिश्रो वायुनाधः प्रणुन्नः।
सरत्यतीवातिसारं तमाहुर्व्याधिं घोरं षड्विधं तं वदंति ॥

अर्थ–शरीरमें जल द्रव रूप धातु (कफ, रस, मूत्र, स्वेद, मेद, पित्त और रुधिर आदि) अति बढे हुए जठराग्निको शमन (मंद) करके स्वयं वायुकरके निकाले हुए मलसंयुक्त वर्च (मल) वा झाडेको गुदाके द्वारा अत्यंत वारंवार निकाले है अतएव वैद्य इसको अतिसार ऐसा कहते हैं। यह घोर व्याधि छः प्रकारकी है ॥

षट्प्रकार।

एकैकशः सर्वशश्चापि दोषैः शोकेनान्यः षष्ठ आमेन युक्तः ॥
केचिच्चाहुर्नैकरूपप्रकारा इत्येवं तं काशिराजो ह्यवादीत् ॥

अर्थ–वातातिसार, पित्तातिसार, कफातिसार, संनिपातातिसार, शोकातिसार और आमातिसार ऐसे अतिसार रोग छः प्रकारके हैं, तथा सातवां द्वंद्वज अतिसार विद्वानोंने माना है। उक्त श्लोकमें यह द्वंद्वज अतिसार अधिक कहा है तथा अन्य ग्रंथोमें इस द्वंद्वज अतिसारकी चिकित्सा लिखी है तथा काशिराजकाभी यह मत है कि अनेक अतिसार हैं ॥

पूर्वरूप।

हृन्नाभिपायूदरकुक्षितोदगात्रावसादानिलसन्निरोधाः ॥
विट्संग आध्मान तथा विपाको भविष्यतस्तस्य पुरःसराणि ॥

अर्थ–हृदय, नाभि, गुदा, पेट और कूख इनमें शूल होवे, अंग रह जावे, अधोवायु रुकजावे, मल उतरे नहीं, पेट फूले, तथा अपक्व अन्न पेटमें रहा आवे ये अतिसार होनेवाले मनुष्यके लक्षण होते हैं ॥

अतिसारके पूर्वरूपकी चिकित्सा।

हितं लंघनमेवादौ पूर्ववत्तेन पाचनम् ॥ षडंगयूषं कृत्वा वा
पिपासादिषु योजयेत् ॥ मुद्गयूषं रसं तक्रं धान्यजीरकसंयुतम् ॥

षडंगयूषमित्याहुः सैंधवेन समन्वितम् ॥ अग्निसंदीपनं प्रोक्तं ग्रहणीदोषनाशनम् ॥ अरोचके ज्वरे चैव श्रेष्ठमेतत्प्रवाहिके ॥

अर्थ—अतिसाररोगवालेको प्रथम लंघन करना हितकारी है, कारण लंघन पाचन करे है, फिर प्यास आदि उपद्रव होवे तो षडंगयूष देवे, मूंगका यूष, रस, छॉछ, धनियां, जीरा, सैंधानिमक इनको षडंग यूष कहते हैं यह अग्निको संदीपन करे, संग्रहणीका नाश करे, तथा अरुचि, ज्वर और प्रवाहिका इनपर हितकारी है ॥

बिल्वादिषडंगयूष।

बिल्वं च धान्यं च सजीरकं च पाठा च शुंठी तिलसंयुता च ॥
पिष्ट्वा षडंगः सहितो नराणां यूषस्त्वतीसारहरः प्रदिष्टः ॥

अर्थ—बेलगिरी, धनिया, जीरा, पाढ, सोंठ और तिल इनके चूर्णका यूष करे। इस षडंग यूषके पीनेसे अतीसार नाश होवे ॥

यवागू।

तृष्णापनयनी लघ्वी दीपनी बस्तिशोधिनी ॥
विरेके चातिसारे च यवागूः सर्वदा हिता ॥

अर्थ—यवागू तृष्णानाशक, हलकी, दीपनी, बस्त्याशयको शोधनकर्ता, रेचक और अतिसार इन पर सदैव हितकारी है ॥

औषधी देना वर्ज्य।

न स्तंभयेदतीसारमपक्वं वृद्धिमागतम् ॥
विना क्षीणस्य वृद्धस्य गर्भिण्या बालकस्य च ॥

अर्थ—क्षीण, बालक, वृद्ध और गर्भिणी इनके हुए अतिसारको त्यागकर अपक्व और बढे हुए अतिसारको बंद न करे ॥

अतिसारपर लंघन।

तस्यादौ लंघनं प्रोक्तं ज्ञात्वा देहबलाबलम् ॥ पाचनं च विधातव्यं त्र्यूषणाद्यं भिषग्वरैः ॥ न पित्तेन विना सोऽपि जायते शृणु पुत्रक ॥ तस्य नो लंघनं प्रोक्तं ज्वरजे चातिसारके ॥ तस्यादौ लंघनं चैव मन्ये वा नैव लंघनम् ॥ तस्माद्देयं कषायं तु पाचनं भोजनेन च ॥

अर्थ-देहशक्तिके अनुसार अतिसार रोगमें प्रथम लंघन करना चाहिये, फिर त्र्यूषणादि द्वारा पाचन देवे, कोई वैद्य अपने पुत्रसे कहता है कि हे पुत्र ! अतिसार रोग विना पित्तके नहीं होता, अतएव पित्ताधिक अतिसारपर लंघन नहीं कराना। उसी प्रकार ज्वरातिसारपर भी लंघन न करावे इन दोनोंको पाचन काढा भोजनके साथ देवे ॥

यवान्यादिदीपन।

यवानीनागरोशीरधानिकाबिल्वमुस्तकम् ॥
द्विपर्णिका पचेच्चैतद्दीपनं पाचनं स्मृतम् ॥

अर्थ-अजमायन, सोंठ, खस, धनियाँ, वेलगिरी, नागरमोथा, सालपर्णी और पृष्ठपर्णी इनका काढा दीपन पाचन है ॥

अतिसारप्रक्रिया।

अतिसारे ज्वरे चैव रक्तपित्ते दृगामये ॥
आदौ न प्रतिकुर्वीत व्याधिवेगो हि दुस्तरः ॥

अर्थ-अतिसार, ज्वर, रक्तपित्त, नेत्ररोग इतने रोगोंमें रोग उत्पन्न होतेही चिकित्सा न करे कारण यह है कि, इन रोगोंका वेग कठिन है, अतएव जब इनका वेग घटे तब इलाज करना चाहिये ॥

दूसरा प्रकार।

आमपक्वक्रिया हित्वा नातिसारे क्रिया हिता ॥
अतः सर्वातिसारेषु ज्ञेयं पक्वामलक्षणम् ॥

अर्थ-आम पक्व करनेकी क्रियाको छोडकर दूसरी क्रिया अतिसारमें हितकारी नहीं है अतएव संपूर्ण अतिसारोंमें आम पक्व हुई है या नहीं हुई यह जानना चाहिये॥

तीसरा प्रकार।

आमे विलंघनं शस्तमादौ पाचनमेव च ॥
कार्यं वानशनस्यांते सद्रवं लघु भोजनम् ॥

अर्थ-आमातिसारमें प्रथम लंघन और पाचन उत्तम है अथवा लंघनके अनंतर पतला और हलका भोजन देवे ॥

धान्यपंचकपाचन।

धान्यवालकबिल्वाद्वा नागरैः साधितं जलम् ॥ आमशूलहरं ग्राहि

भेदि दीपनपाचनम् ॥ पित्ते धान्यचतुष्कं तु शुंठीत्यागाद्ददांति हि ॥

अर्थ-धनिया, नेत्रवाला, बेलगिरी, नागरमोथा और सोंठ इनका काढा आमशूलनाशक, ग्राहि, रेचक, दीपन और पाचन है, तथा पित्तमें शुंठीके विना धान्यपंचक देवे ॥

धातक्यादिमोदक ।

धातकीविश्वपाषाणमालूरमजमोदकम् ॥
मुस्तं मोचरसं चुक्रं सर्वातिसारशांतये ॥

अर्थ-धायके फूल, सोंठ, पाषाणभेद, बेलगिरी, अजमोद, नागरमोथा, मोचरस और चूका इनके लड्डू सर्व प्रकारके अतिसारोंको शमन करें ॥

कुटजाष्टककाढा ।

कुटजवालविषाघनधातकीकुसुमदाडिमलोध्रमथो वृकी ॥ क्वथनमेभिरिदं मधुना युतं विमलमोचरसेन समाहितम् ॥ पीयमानं महातीव्रमतिसारं सदाहकम् ॥ रक्तशूलामरोगं च निहंति कुटजाष्टकम् ॥

अर्थ-कूडेकी छाल, नेत्रवाला, अतीस, नागरमोथा, धायके फूल, अनारका छीतरा, लोध और पाढ इनके काढेमें सहत और मोचरस मिलायके पीवे तो दाहयुक्त अतिसार, रक्तशूल, आमका रोग इन सबको यह कुटजाष्टक नष्ट करे ॥

वातातिसारनिदान ।

अरुणं फेनिलं रूक्षमल्पमल्पं मुहुर्मुहुः ॥
शकृदामं सरुक्शब्दं मारुतेनातिसार्यते ॥

अर्थ-वादीके योगसे अतिसारके दस्तोंका रंग लाल झागयुक्त, रूक्ष और कचा तथा वारंवार गुडगुडाहटके साथ गुदाके द्वारा थोडा २ गिरता है उसको वातातिसार जानना ॥

पूतिकादिकाढा ।

पूतिकं मागधी शुंठी बला धान्यं हरीतकी ॥
पक्त्वांबुना पिबेत्सायं वातातीसारशांतये ॥

अर्थ-कंजा, पीपल, सोंठ, खरेंटी, धनिया, हरड इनका काढा सायंकालके समय लेनेसे आम और वातातिसार शमन होवे ।

पथ्यादिकाढा।

पथ्या दारुवचा शुंठी मुस्ता चातिविषामृता ॥
क्काथ एषां हरेत्पीतो वातातीसारमुल्बणम् ॥

अर्थ—हरड, देवदारु, वच, सोंठ, मोथा, अतीस और गिलोय इनका काढा ोर वातातिसारको नाश करे ॥

वचादिकाढा।

वचा चातिविषा मुस्तं बीजानि कुटजस्य च ॥
श्रेष्ठः कषाय एतेषां वातातीसारशांतये ॥

अर्थ—वच, अतीस, मोथा, इन्द्रजौ इनका काढा वातातिसारको नाश करे ॥

सुवर्चलादिकाढा।

सुवर्चलं वचा हिंगु हैमज्योतिविषासमम् ॥
वातातीसारहृत्प्रोक्तं सकटुत्रयमंभसा ॥

अर्थ—कालानिमक, वच, हींग, चिरायता, चीतेकी छाल, अतीस, सोंठ, कालीमिरच और पीपल इनका काढा वातातिसारनाशक है ॥

कपित्थाष्टकचूर्ण।

अष्टौ भागाः कपित्थस्य षड्भागा शर्करा मता ॥ दाडिमं तिंतिडीकं च श्रीफलं धातकी तथा ॥ अजमोदा च पिप्पल्यः प्रत्येकं स्युस्त्रिभागिकाः ॥ मरीचं जीरकं धान्यं ग्रथिकं वालकं तथा ॥ सौवर्चलं यवानी च चातुर्जातं सचित्रकम् ॥ नागरं चैकभागाः स्युः प्रत्येकं सूक्ष्मचूर्णिताः ॥ कपित्थाष्टकसंज्ञं स्याच्चूर्णमेतज्जलामयान् ॥ निहंति ग्रहणीरोगानतिसारं व्यपोहति ॥

अर्थ—कैथका गूदा ८ तोले, मिश्री ६ तोले, अनारदाना, इमली, बेलगिरी, धायके फूल, अजमोद और पीपल ये प्रत्येक तीन २ तोले लेवे तथा कालीमिरच, जीरा, धनियां, पीपरामूल, नेत्रवाला, काला निमक, अजवायन, दालचीनी, पत्रज, इलायची, नागकेशर, चीतेकी छाल और सोंठ ये प्रत्येक एक एक तोला लेवे सबका चूर्ण करे। इसको कपित्थाष्टक चूर्ण कहते हैं। यह संपूर्ण जलसंबंधी रोग, संग्रहणी और अतिसार इनको नाश करे ॥

लाईचूर्ण ।

चित्रकं त्रिफला व्योषं विडंगं जीरकद्वयम् ॥ भल्लातकं यवानी च हिंगुर्लवणपंचकम् ॥ गृहधूमं वचा कुष्ठं घनमभ्रं च गंधकम् ॥ क्षारत्रयं चाजमोदा पारदं गजपिप्पली ॥ एतेषां चूर्णितं यावत्तावच्छक्राशनस्य च ॥ अभ्यर्च्य लाइकां प्रातर्योगिनीं कामरूपिणीम् ॥ बिडालपदमात्रं तु भक्षयेदस्य गुंडकम् ॥ मंदाग्निकासदुर्नामप्लीहपांडुचिरज्वरान् ॥ प्रमेहशोथविष्टंभसंग्रहग्रहणीहरः ॥ सर्वातिसारशमनः सर्वशूलनिवारणः ॥ आमवातगजोच्छेदी सूतिकातंकनाशनः ॥ नैतस्मिन् व्याधयः संति वातपित्तकफोद्भवाः ॥ काष्ठमप्युदरे तस्य भक्षणाद्याति जीर्णताम् ॥ वार्यं न च व्यवायं च स्नानं पिशितभोजम् ॥ कांजिकाम्लं सदा पथ्यं दग्धमीनं तथा दधि ॥ तस्मादसौ सदा सेव्यो गुंडको लाइकाकृतिः ॥

अर्थ–चीतेकी छाल, त्रिफला, त्रिकुटा, वायविडंग, जीरा, काला जीरा, भिलावे, अजमायन, हींग, पाचों निमक, घरका धूंआ, वच, कूठ, नागरमोथा, अभ्रक, गंधक, सज्जीखार, जवाखार, सुहागा, अजमोद, पारा, गजपीपर इन सबके चूर्णके बराबर भांग अथवा इन्द्रजव मिलायके प्रातःकाल कामरूपिणी लाई योगिनीका पूजन कर दो तोले नित्य लेवे तो मंदाग्नि, खांसी, बवासीर, प्लीहा, पांडु, अरुचि, ज्वर, प्रमेह, सूजन, विष्टंभ, संग्रहणी, सर्वातिसार, शूल, आमवात, प्रसूतका रोग, त्रिदोषजन्य, व्याधी ये सब नाशको प्राप्त हों। इस चूर्णके खानेवालेने यदि काष्ठ भक्षण करा होय तो वहभी पचजावे। इसपर पथ्य नहीं है, मैथुन, स्नान, मांस ये वस्तु वर्जित नहीं हैं, खट्टी कांजी, भुनी मछली और दही ये पथ्य है और लाईके आकृतिवाला गोला सेवन करना चाहिये ॥

कुटजचूर्ण ।

इंद्रजमेघमदाकुसुमं श्रीलोधमहौषधमोचरसानाम् ॥
चूर्णमिदं गुडतक्रानिपीतं हंत्यचिरादतिसारमुदारम् ॥

अर्थ–इन्द्रजौ, नागरमोथा, धायके फूल, बेलगिरी, लोध, सोंठ और मोचरस इनके चूर्णको गुड और छाँछके साथ लेवे तो घोर अतिसारको नष्ट करे ॥

शुंठीचूर्ण।

कल्याणि कांचनलतालालितांगयष्टे तांबूलशालिवदने ललने शृणुष्व ॥ शुंठीमदाकुसुममोचरसाजमोदास्तक्रान्विताः प्रशमयंत्यतिसारमुग्रम् ॥

अर्थ—सोंठ, धायके फूल, मोचरस और अजमोदा इनका चूर्ण छॉछके साथ पीवे तो घोर अतिसार नष्ट होवे यह लोलिंबराजमें लिखा है॥

बृहल्लवंगादिचूर्ण।

लवंगमेला तजपत्रजोत्पलमुसीरमासी तगरं सवालकम् ॥ कंकोलकृष्णागरुनागकेसरं जातीफलं चंदनजातिपत्रिका ॥ द्वयजाजिसत्र्यूषणपुष्करं शुठीं फलत्रिकं कुष्ठविडंगचित्रकम् ॥ तालीसपत्रं सुरदारु धान्यकं यवानि यष्टी खादिराम्लवेतसम् ॥ तुंगाजमोदा घनसारमभ्रकं शृंगी विषा ग्रंथिकमाग्निमंथकम् ॥ प्रियंगु मुस्तातिविषा शतावरी सत्त्वं गुडूच्यास्त्रिवृता दुरालभा ॥ समानि सर्वैश्च समा सिता भवेद्बृहल्लवंगाद्यमिदं निगद्यते ॥ सायं प्रगे खादति कर्षसंमितं भवंति देहे बलवीर्यपुष्टयः॥ प्रमेहकासारुचियक्ष्मणी तथा क्षयास्रदाहग्रहणीत्रिदोषनुत् ॥ हिक्कातिसारप्रदरं गलग्रहं निहंति पांडुस्वरभंगमश्मरीम् ॥

अर्थ—लौंग, इलायची, तज, पत्रज, कमलगट्टा, खस, जटामांसी, तगर, नेत्रवाला, कंकोल, काली अगर, नागकेशर, जायफल, सपेद चंदन, जावित्री, काला ..., सपेद जीरा, सोंठ, मिरच, पीपल, कचूर, हरड, बहेडा, आमला, कूठ, वायविडंग, चीतेकी छाल, तालीसपत्र, देवदारु, धनिया, अजवायन, मुलहटी, खैरसार, ..., वंशलोचन, अजमोद, कपूर, अभ्रक, काकडासिंगी, अतीस, पीपरामूल, ..., फूलप्रियंगु, मोथा, सपेद अतिविष, सतावर, गिलोयसत्व, निसोथ और ... ये सब समान भाग ले सब चूर्णके समान मिश्री मिलावे। इस चूर्णको ...गादि चूर्ण कहते हैं। इसमेंसे १ तोला सायंकाल और प्रातःकाल देवे तो ... बल, वीर्य और पुष्टि करे तथा प्रमेह, खॉसी, अरुचि, राजयक्ष्मा, पीनस,

क्षई, रक्तदाह, संग्रहणी, सन्निपात, हिचकी, अतिसार, प्रदर, गलग्रह, पांडुरोग, स्वरभंग और पथरी इन सबको नाश करे ॥

विजयायोग ।

मधुना विजयाभवं रजो निशि लीढं मधुना सुभर्जितम् ॥
अतिसारमनिद्रतां हरेद्ग्रहणीं वै दहनस्य मंदताम् ॥

अर्थ—रात्रिमें भाँगका भुना हुआ चूर्ण शहतके साथ देवे तो अतिसार, निद्रानाश संग्रहणी और मंदाग्नि इनका नाश करे ॥

कुटजावलेह ।

क्षुण्णं कुटजमूलस्य चूर्णतोयार्मणे पचेत् ॥ क्वाथे पादावशेषेऽस्मिन् लेहे पूते पुनः पचेत् ॥ सौवर्चलयवक्षारविडसैंधवपैप्पलम् ॥ पाठा चेंद्रयवाजाजीचूर्णं दत्त्वा पलद्वयम् ॥ लिह्याद्बदरमात्रं तु तच्छीतं मधुसंयुतम् ॥ पक्वापक्वमतीसारं नानावर्णं सवेदनम् ॥ दुर्वारं ग्रहणीरोगं जयेच्चैतत्प्रवाहिकम् ॥

अर्थ—कूडेकी जडकी छालको बारीक कूट १०२४ तोले जलमें काढा करे जब चतुर्थांश रहे तब उतारके छान लेवे और इसमें संचर निमक, जवाखार, बिडनोन, सैंधानिमक, पीपल, पाढ, इन्द्रजौ और अजाजी इनका चूर्ण दो २ पल मिलाय शीतल करे । इस कुटजावलेहको बेरके समान शहतके साथ देवे तो पक्व, अपक्व, अनेकवर्णवाला, पीडायुक्त ऐसा अतिसार तथा दुर्निवार संग्रहणी रोग और प्रवाहिका इनका नाश करे ॥

दूसरा कुटजावलेह ।

क्वाथो वत्सकजो नितांतविमलैः पादावशेषः स्थितो मुस्ता क्षीरविडंगबीजरुचकं सिंधूद्भवं धातकी ॥ कृष्णा चेति विचूर्णितं सममिदं सम्पाचयेत्पावके यावत्तद्घनतां प्रयात्यतितरां शीते मधुक्षेपणम् ॥ कृत्वा वत्सकलेह एष शमयेत्कृच्छ्रातिसारं रुजं दुर्नामग्रहणीभगन्दरगदान् श्वासप्रमेहानपि ॥

अर्थ—कूडेकी छालका चतुर्थांश काढा कर उसमें नागरमोथा, दूध, वायविडंग, पाँगानिमक, सैंधानिमक, धायके फूल और पीपल इनका चूर्ण समान

ाग ले अग्निपर रखके जबतक गाढा न होवे तबतक पचावे फिर कुछ पतले इनेपर उतारके शीतल करे उसमें शहत मिलाय अनुपानके साथ देवे तो यह कुटजावलेह अतिसार, बवासीर, संग्रहणी, भगंदर, श्वास और प्रमेह इनका ाश करे ॥

कुटजपुटपाक।

तत्कालं कृष्णकुटजत्वचं तंडुलवारिणा ॥ पिष्ट्वा चतुःपलमितां जंबूपल्लववेष्टिताम् ॥ सूत्रेण बद्धां गोधूमपिष्टेन परिवेष्टिताम् ॥ लिप्त्वा च घनपंकेन गोमयैर्वह्निना दहेत् ॥ अंगारवर्णां च मृदं दृष्ट्वा वह्नेः समुद्धरेत् ॥ ततो रसं गृहीत्वा च शीतं क्षौद्रयुतं पिबेत् ॥ जयेत्सर्वानतीसारान् दुस्तरान् सुचिरोत्थितान् ॥

अर्थ-काले कूडेकी गीली १६ तोले छालको चांवलोंके धुले हुए पानीमें पीस गोला बनावे उसके चारों तरफ जामुनके पत्ते लपेटकर सूतसे लपेट देवे उसके ऊपर गेंहूके चूनको सानके गाढा गाढा लेप करे फिर उसपर गाढी गाढी कीचका लेप करे उसको आरने उपलोंकी अग्निमें धरके फूंक देवे जब गोला अंगारेके वर्ण होजावे तब निकाल ऊपरका लेप दूर करे उसका रस निचोड शहत मिलायके शीतल पीवे तो बहुत दिनका घोर अतिसार दूर होवे ॥

तंडुलजल।

कंडितं तंडुलपलं जलेऽष्टगुणिते क्षिपेत्।
भावयित्वा जलं ग्राह्यं देयं सर्वत्र कर्मसु ॥

अर्थ-उत्तम बिने हुए चावल ३९ तोले लेकर अठगुने पानीसे धोवे उस पानीको सर्वत्र योगमें देना चाहिये ॥

मृतसंजीवनरस।

शुद्धसूतं समं गंधं सूतपादं विषं क्षिपेत् ॥ सर्वतुल्यं मृतं चाभ्रं मर्द्यं धत्तूरजैर्द्रवैः ॥ सर्पाक्ष्याश्च द्रवैर्यामं कषायेणाथ भावयेत् ॥ धातक्य-तिविषा मुस्ता शुंठी बालकजीरकम् ॥ यवानी धातकी बिल्वं पाठा पथ्या कणान्विता ॥ कुटजस्य त्वचं बीजं कपित्थं दाडिमी बला ॥ प्रत्येकं कर्षमात्रं स्यात्कल्कितं क्वथितं जलैः ॥ कल्काच्चतुर्गुण तोयं

क्वाथं पादावशेषितम् ॥ अनेन त्रिदिनं भाव्यं पूर्वोक्तं मर्दितं रसम् ॥ रुद्ध्वा तद्वालुकायंत्रे क्षणं मृद्वग्निना पचेत् ॥ मृतसंजीवनो नाम रसो गुंजाचतुष्टयम् ॥ दातव्यमनुपानेन असाध्यमपि साधयेत् ॥ नागरातिविषा मुस्ता देवदारु वचा कणा ॥ यवानी धान्यकं बालकुटजस्य त्वचाभया ॥ धातकींद्रयवा पाठा बिल्वमोचरसं समम् ॥ चूर्णितं मधुना लेह्यमनुपानं सुखावहम् ॥

अर्थ-शुद्ध पारा और गंधक समान भाग तथा सिंगियाविष पारेकी चतुर्थांश लेवे और सबकी बराबर अभ्रकभस्म ये सब एकत्र कर धतूरेके रसमें खरल करे फिर सरफोंकाके रसकी अथवा काढेकी एक प्रहर भावना देवे और धायके फूल, अतीस, नागरमोथा, सोंठ, नेत्रवाला, जीरा, अजवायन, जव, बेलगिरी, पाढ, हरड, पीपल, कूडेकी छाल, इन्द्रजौ, कैथ, अनारदाना और खरेटी ये प्रत्येक एक एक तोला लेकर सबका कल्क करे अथवा जब गाढा होजावे तब कल्कका चौगुना पानी मिलाय उसका चतुर्थांश काढा करे उसको पूर्वोक्त औषधोंकी तीन दिन भावना देकर सुखाय शीशीमें भर कपटमिट्टी कर वालुकायंत्रमें रखके इसको थोडी देर मंद आँचसे पचावे इसको मृतसंजीवन रस कहते हैं। यह रस सोंठ, अतीस, नागरमोथा, देवदारु, वच, पीपल, अजमायन, धनिया, नेत्रवाला, कूडेकी छाल, हरड, धायके फूल, इन्द्रजौ, पाढ, बेलगिरी और माचरस इनके चूर्ण और सहत इनसे देवे यह अनुपान सुखकारी है, इससे सर्व प्रकारके अतिसार अवश्य दूर हों ॥

कारुण्यसागररस ।

रसभस्म द्विधा गंधं तस्माद्विघ्नं मृताभ्रकम् ॥ दिनं सक्रतुतैलेन पिष्ट्वा यामं विपाचयेत् ॥ रसं मार्कवमूलोत्थे निर्यासे संविमर्द्य च ॥ त्रिक्षारपंचलवणं विषं व्योषाग्निजीरके ॥ साचित्रकैः समानांशैर्युक्तः कारुण्यसागरः ॥ माषद्वयं प्रयुंजीत रसः स्यादातिसारके ॥ सज्वरे विज्वरे वाथ सशूले शोणितोद्भवे ॥ निरामे शोथयुक्ते वा ग्रहण्यां सानुपानकः ॥ अनुपानं विना ह्येष कार्यसिद्धिं करिष्यति ॥

अर्थ-चंद्रोदय १ भाग, गंधक २ भाग, अभ्रकभस्म ४ भाग, सबको एकत्र कर अंडीके तेलसे १ दिन खरल कर १ प्रहर अग्निपर पचावे फिर भांगरेके रससे खरल करे और जवाखार, सज्जीखार, सुहागा, निमक, सैंधा, विडलवण, संचर, सिंगियाविष, सोंठ, मिरच, पीपर, केशर, जीरा, चीतेकी छाल इनका समान भाग चूर्ण मिलावे इसको करुणासागर रस कहते हैं। यह अतिसारपर दो मासे देवे तो यह ज्वरसहित किंवा ज्वररहित और शूलसहित रक्तातिसार किंवा सूजनयुक्त अतिसार, संग्रहणी इनपर अनुपानके साथ देवे अथवा यह विना अनुपानकेही सर्व कार्य करता है ॥

कुंकुमवटी।

कीटनिष्ठीवने घृष्टं नागफेनं सकुंकुमम् ॥ तंदुलप्रमितं दत्तमाति-
सारनिषूदनम् ॥ इदं मया गुरोर्लब्धं न तु शास्त्राद्भिषग्वराः ॥
भवतामुपकाराय गुरोस्तत्त्वं प्रकाशितम् ॥

अर्थ-मोम, अफीम और केशर ये समान भाग ले एकत्र खरल कर इसमेंसे चावलके अनुमान देवे तो अतिसारको नाश करे। यह प्रयोग मैंने गुरुसे लेकर आप लोगोंके उपकारके वास्ते इस जगह प्रकाश कर दिया है, शास्त्रमें नहीं है, यह वैद्यामृत ग्रंथमें लिखा है ॥

कपित्थादिपेया।

कपित्थबिल्वचांगेरीतक्रदाडिमसाधिता ॥
ग्राहिणी पाचनी पेया वाते वा पंचमूलिका ॥

अर्थ-कैथका गूदा, वेलगिरी, चूका, छाछ और अनारदाना इनसे बनी हुई पेया ग्राहिणी और पाचनी है, किंवा वाताधिक अतिसारपर पंचमूलसे बनी हुई पेया देवे ॥

पंचमूलबलादिपेया।

पंचमूलीबलाविश्वाधान्यकोत्पलबिल्वजा ॥
वातातिसारिणो देया सूक्तेनान्यतमेन च ॥

अर्थ-पंचमूल, खरेटी, सोंठ, धनिया, कमलगट्टा और बेलगिरी इन औषधोंसे बनी पेया वातातिसारको नष्ट करे है, अथवा इसको सिरकेके साथ किंवा दूसरे योगोंके साथ देवे ॥

मसूराद्यघृत ।

मसुराणां पलशतं जलद्रोणे विपाचयेत् ॥ पादशेषं शृतं नीत्वा दत्त्वा बिल्वपलाष्टकम् ॥ घृतप्रस्थं पचेत्तेन सर्वातिसारनाशनम् ॥ ग्रहणीभिन्नविट्कं च नाशयेच्च प्रवाहिकाम् ॥

अर्थ–४०० तोले मसूर लेकर १०५४ तोले पानीमें औटावे जब चतुर्थांश रहे तब उतार लेवे, फिर बेलगिरीका चूर्ण ३२ तोले और घी ६४ तोले मिलायके पचावे जब घी मात्र शेष रहे तब उतारले। इसके सेवन करनेसे सर्व प्रकारके अतिसार, संग्रहणी, मलका टूटना और प्रवाहिका इनका नाश करे ॥

लोकनाथरस ।

रसभस्मभागमेकं चत्वारः शुद्धगंधकम् ॥ पिष्ट्वा वराटिकामूलं टंकणेन निरुध्य च ॥ भांडे रुद्ध्वा पुटे पाच्यं स्वांगशीतं विचूर्णयेत् ॥ लोकनाथो रसो नाम्ना क्षौद्रे गुंजाचतुष्टयम् ॥ नागरातिविषामुस्तादेवदारुवचान्वितम् ॥ कषायमनुपानं स्याद्वातातीसारनाशनम् ॥ क्षीरिण्या वा कषायेण योगवाहं नियोजयेत् ॥

अर्थ–चंद्रोदय १ भाग, शुद्ध गंधक ४ भाग, दोनोंको एकत्र खरल कर कजली कर इसको कौडियोंमें भरके दूधसे पिसे हुए सुहागेसे कौडियोंका मुख बंद कर देवे फिर शरावमें धरके कपडमिट्टी कर गजपुटमें फंकदे जब स्वांग शीतल होय तब निकालके खरल कर शीशीमें भरके धर रक्खे। इसको लोकनाथ रस कहते हैं। ४ रत्ती इस रसको सहतके साथ देवे अथवा सोंठ, अतीस, नागरमोथा, देवदारु, वच इनके काढेसे अथवा खिरनीके काढेसे किंवा योगवाहक अनुपानोंके साथ देवे तो वातातिसार दूर होवे ॥

महारस ।

भस्मसूतस्य तीक्ष्णस्य मरिचाज्यं समं समम् ॥ स्नुक्क्षीरकाकमाचीभ्यां मर्दयेद्यामभात्रकम् ॥ निरुध्य भूधरे पाच्यं दिनैकेन महारसम् ॥ निष्कार्धं भावयेच्चानुपाययेद्दधिसंयुतम् ॥ सर्पाक्षिकर्षमात्रं तु पीत्वा वातातिसारनुत् ॥

अर्थ–चंद्रोदय, खेरी लोहकी भस्म, काली मिरच और घी ये पदार्थ समान

भाग ले इनको थूहरका दूध, मकोय इनके रससे खरल करे फिर सरावसंपुटमें रखके कपडमिट्टी कर १ दिन भूधरयंत्रमें पचावे तो यह (महारस) सिद्ध होवे। इसमेंसे १॥ मासा अनुपानके साथ देवे और इसके ऊपर दही और सरफोका मिलाय १० मासे पिवावे तो वातातिसारका नाश होवे॥

द्वितीय महारस।

शुद्धसूतं समं गंधं मरिचं टंकणं कणा॥ स्वर्णबीजं समं मर्द्यं भृंगिद्रावैर्दिनार्धकम्॥ सूततुल्यो रसो योज्यो रसः कनकसुंदरः॥ योज्यो गुंजाद्वयं हंति वातातिसारमद्भुतम्॥ दध्यन्नं दापयेत्पथ्यमाज्यं वाथ गवां दधि॥

अर्थ–शुद्ध पारा १ भाग, गंधक १ भाग, काली मिरच, सुहागा, पीपल और धतूरेके बीज प्रत्येक दो दो तोले लेवे सबको भँगरेके रससे दो प्रहर खरल करे फिर पारेकी बराबर इसमें कनकसुंदर रस मिलावे सबको खरल कर इसमेंसे २ रत्ती सेवन करे तो यह महारस वातातिसारको दूर करे, ऊपर दहीभातका पथ्य देवे अथवा गौका घी और दही देवे॥

वातातिसारपर शाक।

फंजी शाल्मलिरक्ताक्षी कपित्थं दाडिमान्यथ॥ श्लेष्मातो बदरी वाथ क्षीरिणी बाकुची शिवा॥ तर्कारिबाबली चैषां बालपत्राणि वा पुनः॥ पक्वानि व्यंजनार्थाय योजयेदतिसारिणाम्॥

अर्थ–सेमर, गूगल, कैथ, अनार, निसोरे, बेर, खिरनी, बावची, अरनी, बबूर इनके कोमल पत्ते अथवा पुराने पत्रोंका शाक यथायोग्य बनाकर देवे तो अतिसारमें हितकारी जानना॥

पित्तातिसारनिदान।

पित्तात्पीतं नीलमालोहितं वा तृष्णामूर्च्छादाहपाकोपपन्नम्॥

अर्थ–पित्तके कोपसे पीला, नीला, अथवा कुछ ललोही लिये दस्त होता है और प्यास, मूर्च्छा, दाह और गुदाका पकना ये लक्षण होते हैं॥

पित्तातिसारचिकित्साक्रम व पेया।

आमान्वितमतीसारं पैत्तिकं लंघनैर्जयेत्॥ लंघितस्य यथासात्म्यं

यवागूमंडतर्पणैः ॥ शृतं चंदनमुस्ताभ्यां पटोलादीप्यनागरैः ॥ पेयामम्लामतक्रां वा पाचनीं ग्राहिणीं पिबेत् ॥

अर्थ-आमयुक्त पित्तातिसारको लंघनद्वारा जीते अथवा लंघन करनेके उपरांत यथासात्म्य यवागू, मंड, तृप्तिकारी पदार्थ और चंदन, मोथा, पटोलपत्र, जीरा और सोंठ इनका काढा देवे ॥

पित्तातिसारपर पानी वा अन्न ।

धान्योदीच्यशृतं तोयं तृष्णादाहातिसारवान् ॥
ताभ्यामेव सपाठाभ्यां सिद्धमाहारमाचरेत् ॥

अर्थ-धनिया और नेत्रवाला इनका काढा प्यास, दाह और अतिसार इनके निवारणार्थ जलके पलटेमें देवे और धनिया, नेत्रवाला और पाठ इनके काढेमें सिद्ध करा अन्न देवे ॥

मधुकादियोग ।

मधुकं कफट्लं लोध्रं दाडिमस्य फलत्वचौ ॥
पित्तातिसारे मध्वक्तं पाययेत्तंदुलाबुना ॥

अर्थ-मुलहटी, कायफल, लोध, अनारदाना और अनारकी छाल इनका चूर्ण और कल्क चावलके धोवनमें शहत डालके देवे तो पित्तातिसारको दूर करे ॥

शुंठ्यादिकाढा ।

शुंठी सुवर्चला हिंगुरभयेंद्रयवा मताः ॥
पित्तातीसारहृत्क्काथो निपीतो मधुना सह ॥

अर्थ-सोंठ, ब्राह्मी, हींग, हरड और इन्द्रजौ इनके काढेमें शहत डालके देवे तो पित्तातिसारको दूर करे ॥

बिल्वादिकाढा ।

बिल्वशक्रयवांभोदवालकातिविषाकृतः ॥
कषायो हंत्यतीसारं सामं पित्तसमुद्भवम् ॥

अर्थ-बेलगिरी, इन्द्रजौ, नागरमोथा, नेत्रवाला और अतीस इनका काढा आमसहित पित्तातीसारको दूर करे ॥

कट्फलादिकाढा ।

कट्फलातिविषांभोदवत्सकं नागरान्वितम् ॥
शृतं पित्तातिसारघ्नं दातव्यं मधुसंयुतम् ॥

अर्थ-कायफल, अतीस, नागरमोथा, कूडेकी छाल और सोंठ इनका काढा सहतयुक्त देवे तो पित्तातीसार दूर होवे ॥

मधुयष्ट्यादिकाढा ।

मधुयष्टिः सिता लोध्रमुत्पलं समभागतः ॥
मधुक्षीरयुतं पीतं रक्तपित्तातिसारजित् ॥

अर्थ-मुलहटी, मिश्री, लोध, कमलगट्टा इनका काढा सहत और दूध डालके देवे तो रक्तातिसारको नाश करे ॥

समंगादिचूर्ण ।

समंगा धातकीपुष्पं बिल्वं सौवर्चलं बिडम् ॥ सक्षौद्रं दाडिमं चैव पीतं तंदुलवारिणा ॥ चूर्णं पित्तातिसारघ्नं शूलं चाशु नियच्छति ॥

अर्थ-खरेटी, धायके फूल, वेलगिरी, संचरनोन और बिडनोन इनके चूर्णमें सहत और अनारदाना मिलाय चावलके धोवनके साथ पीवे तो शूलयुक्त पित्तातिसार तत्काल दूर हो ॥

अतिविषादियोग ।

सक्षौद्रातिविषा पिष्टा वत्सकस्य फलं त्वचम् ॥
तंदुलोदकसंयुक्तं पेयं पित्तातिसारनुत् ॥

अर्थ-अतीस, कूडेकी छाल और इन्द्रजौ इनके चूर्णको चावलके धोवनके साथ शहत डालके पीवे तो पित्तातिसार और शूल इनका नाश करे ॥

जम्ब्वादिचूर्ण ।

जंबू चूतफलस्यास्थि द्राक्षा पथ्या च पिप्पली ॥ खर्जूरं शाल्मली छल्ली ह्युदुंबरसवल्कलम् ॥ एतच्चूर्णं समं श्लक्ष्णं मधुना सह भक्षितम् ॥ रक्तपित्तोद्भवं शीघ्रं हंत्यतीसारमुल्बणम् ॥

अर्थ-जामुन और आमकी गुठली, दाख, हरड, पीपल, खजूर, सेमरकी छाल, गूलर और लोध इनका समान भाग चूर्ण कर शहतके साथ देवे तो रक्त और पित्त इनसे उत्पन्न हुए अतिसारका शीघ्र नाश करे ॥

लोकेश्वररस।

रसस्य भस्मना हेम पादांशं मारितं क्षिपेत्॥ उभयोर्द्विगुणं गंधं मर्द्दयेच्चित्रकांबुना॥ पूर्य्या वराटिका तेन टंकणेन निरोधयेत्॥ मृत्तिकाचूर्णलिप्ते तु भांडे क्षिप्त्वा निरुध्य च॥ शुष्कं गजपुटे पक्कं रात्रौ ग्राह्यं सुशीतलम्॥ रसो लोकेश्वरो नाम चूर्णं गुंजाचतुष्टयम्॥ मधुना सह दातव्यं सर्वातीसारनाशनम्॥ बालबिल्वं गुडं तैलं पिप्पली नागरं समम्॥ लेहयेन्मधुना सार्धमनुपानं सुखावहम्॥

अर्थ—चंद्रोदय, स्वर्णभस्म ३ मासे और गंधक २॥ तोले ले सबको चीतेकी छालके रससे खरल कर कौडियोंमें भरके सुहागेसे मुख बंद कर दे फिर मिट्टी और चूनेसे लेहस किसी पात्रमें भर मुख बंद कर गजपुटमें फूंक देवे जब शीतल हो जावे तब निकाल लेवे। यह लोकेश्वररस ४ रत्ती सहतके साथ देवे तो सर्व प्रकारके अतीसारोंको नष्ट करे, इसके ऊपर कच्ची बेलगिरी, गुड, तेल, पीपल और सोंठ इनका चूर्ण सहतके साथ चाटे यह अनुपान है॥

दूसरा प्रकार।

लोकनाथो रसोऽप्यत्र क्षौद्रैर्गुंजाचतुष्टयम्॥
दातव्यश्च पिबेच्चानुपेषितं तंडुलोदकम्॥

अर्थ—इस अतिसार रोगमें लोकनाथरस ४ रत्ती सहतके साथ देवे और ऊपर पीसे चावलोंका जल पीवे तो अतिसार रोग दूर हो॥

वत्सकादिघृत।

पलं वत्सकसंसिद्धं चतुर्गुणजले घृतम्॥
पित्तातिसारे भिषजा देयं दीपनपाचनम्॥

अर्थ—४ तोले कूडेकी छालके काढेमें घृत सिद्ध कर देवे तो पित्तातिसार दूर हो और दीपन तथा पाचन है॥

कफातिसारनिदान।

शुक्कं सांद्रं सकफं श्लेष्मयुक्तं विस्रं शीतं हृष्टरोमा मनुष्यः॥

अर्थ—जिसका दस्त सपेद रंगका गाढा, कफ मिला, आमगंधी और शीतल हो और उसके रोमांच खडे रहे उसके कफातिसार जानना॥

कफातिसारचिकित्साक्रम ।

श्लेष्मातिसारे प्रथमं हितं लंघनपाचनम् ॥
योज्यश्चामातिसारघ्नो यथोक्तो दीपनो गणः ॥

अर्थ—कफातिसारमें प्रथम लंघन और पाचन देना हित है तथा आमातिसार-हरणकर्ता यथाविधिपूर्वक दीपनीय गण देना चाहिये ॥

न तु संग्रहणं दद्यात्पूर्वमामातिसारिणाम् ॥
दोषो ह्यादौ वर्धमानो जनयत्यामयान्बहून् ॥

अर्थ—आमातिसारवालेको संग्राही अर्थात् दस्त रोकनेवाली औषधी न देवे क्योंकि दस्त रोकनेसे दोष बढकर अनेक प्रकारके रोगोंको प्रकट करे है अतएव दस्तोंका रोकना अहित है ॥

डिंभजः स्थाविरो वापि वातपित्तात्मकश्च यः॥ क्षीणधातुबलातस्य बहु-दोषो हि विश्रुतः ॥ आमोऽपि स्तंभनीयः स्यात्पाचनान्मरणं भवेत् ॥

अर्थ—छोटे बालकके और वृद्धके तथा धातुक्षीणवालेके यदि आम अधिक बढ गई होवे तो इसे पित्तयुक्त जाननी इसलिये उसको रोकनी चाहिये, यदि उसको पाचन करे तो वह मरण करे ॥

पथ्यादिकाढा ।

पथ्याग्निकटुकापाठावचामुस्तकवत्सकैः ॥
सनागरैर्जयेत्क्वाथः कल्को वा श्लैष्मिकां स्रुतिम् ॥

अर्थ—हरड, चीता, कुटकी, पाढ, वच, नागरमोथा, कूडेकी छाल और सोंठ इनका काढा अथवा कल्क कफके दस्त होनेको दूर करे ॥

कृमिशत्र्वादिकाढा ।

कृमिशत्रुवचाबिल्वपेशीधान्याककट्फलम् ॥
एषां क्वाथं भिषग्दद्यादतीसारे बलासजे ॥

अर्थ—वायविडंग, वच, बेलगिरी, धनिया, कायफल इनका काढा कफजन्य अतिसार रोगमें वैद्य देवे ॥

पूतिकादिकल्क ।

पूतिकव्योषबिल्वाग्निपाठादाडिमहिंगुभिः ॥
योजयेत्सक्तुभिः पेष्यैः श्लेष्मातीसारपीडितम् ॥

अर्थ-कंजा, सोंठ, मिरच, पीपल, बेलगिरी, चीतेकी छाल, पाढ, अनारदाना और हींग इनका काढा कफातिसारपीडावाला पीवे ॥

गोकंटकादिकाढा।

गोकंटकं गुहो व्याघ्री कषायं सुशृतं पिबेत् ॥
आमश्लेष्मातिसारघ्नं दीपनं पाचनं परम् ॥

अर्थ-गोखरू, कांगनी और कटेरी इनका काढा आमश्लेष्मातिसारनाशक और दीपन तथा पाचन है ॥

चव्यादिचूर्ण।

चव्यं सातिविषा कुष्ठं बालबिल्वं सनागरम् ॥
वत्सकत्वक्फलं पथ्या छर्दिः श्लेष्मातिसारनुत् ॥

अर्थ-चव्य, अतीस, कूठ, बेलगिरी, सोंठ, कूडेकी छाल, इन्द्रजौ और हरड इनका काढा वमनयुक्त कफातिसारको दूर करे ॥

कणादिचूर्ण।

पाठा वचा त्रिकटुकं कुष्ठं कटुकरोहिणी ॥
उष्णांबुना विनिघ्नंति श्लेष्मातीसारमुल्बणम् ॥

अर्थ-पाठा, वच, सोंठ, मिरच, पीपल, कूठ, कुटकी इनका चूर्ण गरम जलके साथ पीवे तो कफातिसार दूर होवे ॥

हिंग्वादिचूर्ण।

हिंगु सौवर्चलं व्योषमभयातिविषा वचा ॥
पीतमुष्णांबुना चूर्णमेतच्छ्लेष्मातिसारनुत् ॥

अर्थ--हींग, संचरनोन, सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, अतीस और वच इनका चूर्ण गरम जलके साथ पीवे तो कफातिसार दूर करे ॥

बब्बुलादियोग।

बब्बूलपत्रं संपिष्टं रात्रौ जीरद्वयं हितम् ॥
कर्षमात्रं भवेद्भक्ष्यं कफातीसारनाशनम् ॥

अर्थ-रात्रिमें बबूलके पत्तोंको दोनों जीरेके साथ पीस १ तोला भक्षण करे तो कफातिसार नाश होवे ॥

पथ्यादिचूर्ण।

पथ्या पाठा वचा कुष्ठं चित्रकः कटुरोहिणी ॥
चूर्णमुष्णांभसा पीतं श्लेष्मातीसारनाशनम् ॥

अर्थ-हरड, पाढ, वच, कूठ, चीता और कुटकी इनके चूर्णको गरम जलके साथ पीवे तो कफातिसार दूर होवे ॥

अभयादिचूर्ण।

अभयातिविषाहिंगुसौवर्चलकटुत्रयम् ॥
एतच्चूर्णं सुतप्तांभः पीतं श्लेष्मातिसारजित् ॥

अर्थ-हरड, अतीस, हींग, संचरनोन, सोंठ, मिरच, पीपल इनके चूर्णको गरम जलके साथ पीवे तो कफातिसार दूर होवे ॥

पथ्यादिचूर्ण।

पथ्या सौवर्चलं हिंगु सैंधवातिविषा वचा ॥
आमातिसारं सकफं पीतमुष्णांबुना जयेत् ॥

अर्थ-हरड, संचरनिमक, हींग, सैंधानिमक, अतीस और वच इनके चूर्णको गरम जलके साथ पीवे तो कफयुक्त आमातिसार दूर हो ॥

शुंठीपुटपाक।

महौषधं सूक्ष्मचूर्णं कृत्वा तोयेन पेषयेत् ॥ ततस्तु गोलकं कृत्वा लेपयेत्तदनंतरम् ॥ वातारिशूलकल्केन श्रीपत्रैर्वेष्टयेत्तथा ॥ सूत्रबद्धं मृदा लिप्तं मृदुवह्नौ विपाचयेत् ॥ सुस्निग्धं गोलकं तं तु स्फोटयित्वा समुद्धरेत् ॥ शीतीभूतं मधुयुतं खादेन्माषद्वयोन्मितम् ॥ अथ तक्रेण गव्येन सह देयं पलेन च ॥ योगोऽयं कफवातोत्थदुष्टातीसारनाशनः ॥ शोफकासहरः कांतिकृष्णवर्त्मविवर्धनः ॥

अर्थ-सोंठका बारीक चूर्ण कर जलसे पीस फिर उसका गोला बनाय उसपर अंडके कल्कका लेप कर बेलके पत्तोंसे लपेट सूतसे कस देवे, फिर ऊपर मिट्टी चढायके मंद अग्निमें पचावे फिर उसको फोडके सोंठके गोलेको निकाल लेवे शीतल होनेपर २ मासेके अनुमान सहतके साथ भक्षण करे अथवा ४ तोले

गौकी छाँछके साथ देवे तो यह योग कफ और वायुके दुष्ट होनेसे उत्पन्न हुए अतिसारको नाश करे तथा सूजन खांसीको हरण करे और कांति तथा अग्निको वढावे ॥

त्रिदोषातिसारनिदान ।

वराहस्नेहमांसांबुसदृशं सर्वरूपिणम् ॥
कृच्छ्रसाध्यमतीसारं विद्यादोषत्रयोद्भवम् ॥

अर्थ–जिस रोगीके दस्त सूअरके वसाके समान मांसधोवनजलके समान, तथा वातादि सर्व अतिसारोंके लक्षण करके युक्त होवे उसको त्रिदोषका अतिसार जानना, यह कष्टसाध्य है ॥

कुटजावलेह ।

कुटजस्य त्वचः क्काथो वस्त्रपूतो घनीकृतः ॥ स लीढोऽतिविषायुक्तः स्यात्रिदोषातिसारनुत् ॥ इच्छंत्यत्राष्टमांशेन क्काथादतिविषारजः ॥ प्रक्षिपेद्वा चतुर्थांशमिति केचिद्वदंति हि ॥

अर्थ–कूडेकी छालके काढेको कपडेमें छान उसमें अतीसका चूर्ण मिलायके फिर पचावे जब गाढा होजावे तब उतारके उसे चाटे तो त्रिदोषका अतिसार दूर हो । इसमें अष्टमांश अतीस डाले ऐसा कोई आचार्य कहते हैं तथा चतुर्थांश डाले ऐसा किसी आचार्यका मत है इसमें वैद्य अपनी बुद्धिसे दोषोंकी अनुसार कल्पना करे ॥

समंगादिकाढा ।

समंगातिविषा मुस्ता विश्वह्रीबेरधातकी ॥
कुटजत्वक्फलं बिल्वं क्काथः सर्वातिसारनुत् ॥

अर्थ–खरेटी, अतीस, नागरमोथा, सोंठ, हाऊबेर, धायके फूल, कूडेकी छाल, इन्द्रजौ और बेलगिरी इनका काढा सर्व प्रकारके अतिसारोंका नाश करे ॥

पंचमूलीबलादिकाढा ।

पंचमूलीबलाबिल्वगुडूचीमुस्तनागरैः ॥ पाठाभूनिंबबार्हिष्ठकुटजत्वक्फलैः शृतम् ॥ सर्वजं हंत्यतीसारं ज्वरं चापि तथा वमिम् ॥ सशूलोपद्रवं श्वासं कासं वापि सुदुस्तरम् ॥

अर्थ—पंचमूल, खरेटी, बेलगिरी, गिलोय, नागरमोथा, सोंठ, पाढ, चिरायत नेत्रवाला, कूडेकी छाल, इन्द्रजौ इनका काढा त्रिदोषातिसार, ज्वर, वातशूल, श्वास और खाँसीको नाश करे ॥

पंचमूलयोजना।

पंचमूलयत्र सामान्या पित्ते योज्या कनीयसी ॥
वाते पुनर्बलासे च सा योज्या महती मता ॥

अर्थ—पित्तमें लघुपंचमूल देवे और बादी तथा कफमें बृहत्पंचमूल देना चाहिये ॥

कुटजपुटपाक।

अवेदनं सुसंपक्कं दीप्ताग्नेः सुचिरोत्थितम् ॥ नानावर्णमतीसारं पुटपाकैरुपाचरेत् ॥ स्निग्धं घनं कुटजवल्कलजं त्वजग्धमादाय तत्क्षणमतीव च पेषयित्वा ॥ जंबूपलाशदलतंदुलतोयसिक्तं बद्धं कुशेन च बहिर्घनपंकलिप्तम् ॥ सुस्विन्नपिष्टमपि पीड्य रसं गृहीत्वा क्षौद्रेण युक्तमतिसारवते प्रदद्यात् ॥ कृष्णात्रिपुत्रमतपूजित एष योगः सर्वातिसारहरणे स्वयमेव राजा ॥

अर्थ—शूलरहित पक्क दीप्ताग्निवालेका, अनेक वर्णसंयुक्त और पुराने अतिसारको पुटपाक देवे। कूडेकी गीली छाल लाकर तत्काल पीस और चावलके धोवनको मिलाय गोला करे फिर जामुनके पत्तोंसे लपेट ऊपर सूतसे लपेट देवे फिर उसके ऊपर गाढी २ कीचका लेप कर मंदाग्निमें पचन करावे फिर उसको निकाल उसकी मट्टी और पत्ते दूर कर रस निकाल ले उसमें सहत मिलायके अतिसाररोगवालेको देवे तो यह योग सर्वातिसारको नष्ट करे। यह कृष्णात्रेय ऋषिका कहा सर्व प्रयोगोंका राजा है ॥

सूतादिवटी।

मृतं सूतं मृतं स्वर्णं मृतं ताम्रं समं समम् ॥ तुल्यं च खादिरं सारं तथा मोचरसं क्षिपेत् ॥ द्रवैः शाल्मलिमूलोत्थैर्मर्दयेत्प्रहरद्वयम् ॥ चणमात्रां वटीं कृत्वा खादेज्जीरकसंयुताम् ॥ त्रिदोषाढ्यमतीसारं सज्वरं नाशयेद्ध्रुवम् ॥

अर्थ—चंद्रोदय, सुवर्णभस्म, तामेकी भस्म प्रत्येक बराबर लेवे, सबकी बराबर खैरसार और मोचरस लेकर सेमरकी जडके रससे २ प्रहर खरल कर

चनेकी बराबर गोली बनावे । इसको जीरेके साथ खाय तो त्रिदोषका अतिसार ज्वरयुक्त निश्चय दूर होवे ॥

चतुःसमागुटी ।

अभया नागरं मुस्तं गुडेन सह योजितम् ॥ चतुःसमेयं गुटिका त्रिदोषघ्नी प्रकीर्तिता ॥ आमातिसारमानाहसविबंधं विषूचिकाम् ॥ कृमीनरोचकं हन्यादीपयत्याशु चानलम् ॥

अर्थ-हरड, सोंठ, नागरमोथा और गुड ये समान भाग ले गोली बनावे इसे खाय तो त्रिदोष, आमातिसार, अफरा, विबंध, विषूचिका, कृमिरोग और अरुचि इनको दूर करे और अग्निको दीपन करे ॥

तृप्तिसागररस ।

रसभस्म च भागैकं रसाद्द्विगुणगंधकम् ॥ गंधकाद्द्विगुणं चाभ्रं निश्चंद्रं मर्दयेत्ततः ॥ दिनैकं कटुतैलेन रुद्धा चुल्ल्यां विपाचयेत् ॥ यामैकं वालुकायंत्रे समुद्धृत्य विमर्दयेत् ॥ हयमारकमूलोत्थरसैर्यामं निरुध्य च ॥ पूर्ववत्पाचयेच्चुल्ल्यां समादाय विमिश्रयेत् ॥ त्रिक्षारं पंचलवणं निष्कांशग्निद्वयजीरकैः ॥ विडंगेन च तत्तुल्यं युक्तोऽयं तृप्तिसागरः ॥ भक्षयेन्माषमात्रं च सान्निपातातिसारजित् ॥ सज्वरां ग्रहणीं हंति ह्यनुपानं विना रसः ॥

अर्थ-चंद्रोदय १ तोला, गंधक २ तोले, अभ्रक ४ तोले ये संपूर्ण पदाथ एकत्र कर एक प्रहर खरल करे फिर उसको सरसोंके तेलमें १ दिन खरल करे फिर शीशीमें भरके मुख बंद कर १ प्रहर वालुकायंत्रमें पचावे फिर कनेरकी जडके रससे १ प्रहर खरल कर पूर्वविधिसे चूल्हेपर चढाय वालुकायंत्रमें पचावे फिर निकालकर तीनों क्षार, पाँचों निमक, चीतेकी छाल, जीरा, काला जीरा, वायविडंग इनका चूर्ण तीन २ मासे लेकर मिलावे इनको तृप्तिसागररस कहते हैं । १ मासा सेवन करे तो संनिपातातिसार, ज्वरयुक्त संग्रहणी इसको विना अनुपानके नष्ट करे ॥

आनंदभैरवी ।

मूलं कटुकरोहिण्या बिल्वमज्जा गुडूचिका ॥ दध्ना पिष्ट्वा पिबेच्चानु वटी चानंदभैरवी ॥ सन्निपातातिसारघ्नी पथ्यमूला च पूर्ववत् ॥

अर्थ–कुटकी, बेलगिरी, गिलोय इनके चूर्णको दहीसे पीसके देवे तो संनिपातातिसार नष्ट हो इसको आनंदभैरवी कहते हैं। इसपर पथ्य पूर्ववत् देवे ॥

शोकभयातिसारनिदान।

तैस्तैर्भावैः शोचतोऽल्पाशनस्य बाष्पोष्मा वै वह्निमाविश्य जंतोः ॥
कोष्ठं गत्वा क्षोभयेत्तस्य रक्तं तच्चाधस्तात्काकणंतीप्रकाशम् ॥
निर्गच्छेद्वै विड्भिमिश्रं ह्यविड्वा निर्गंधं वा गंधवद्वातिसारः ॥
शोकोत्पन्नो दुश्चिकित्स्योऽतिमात्रं रोगो वैद्यैः कष्ट एष प्रदिष्टः ॥

अर्थ–जिसके धन बंधु इत्यादि नाश होनेसे अत्यंत भयभीत हो इसी कारण उसका अन्न थक जावे, उसके नेत्रोंसे उदकादि तथा देहसे कांत्यादिक तेज ये भीतर प्रवेश होकर कोठेमें जायकर जठराग्निको व्याकुल कर रुधिरको क्षोभित करे फिर वह रुधिर अपान (गुदा) द्वारा निकलने लगे उसका रंग गुंजा (घूंघची) के समान होवे तथा वह रुधिर कभी २ मलमिश्रित किंवा केवल गंधरहित किंवा सगंध ऐसा होय उसको शोकातिसार कहते हैं। यह कष्टसाध्य है, वैद्योंकरके दुश्चिकित्स्य है, क्योंकि विना शोक नष्ट हुए इसका दूर होना असंभव है ॥

चिकित्सा।

भयशोकसमुद्भूतौ ज्ञेयौ वातातिसारवत् ॥
तयोर्वातहरी कार्या हर्षणाश्वासनैः क्रिया ॥

अर्थ–भय और शोकसे उत्पन्न हुए अतिसारोंकी चिकित्सा वातातिसारके सदृश जानना। तथा उसको हर्षकारक पदार्थ अथवा धीरज बढावना और वातहरणकर्त्ता क्रिया करावे ॥

पृश्निपर्ण्यादिकाढा।

पृश्निपर्णीबलाबिल्वधान्यकोत्पलनागरैः ॥ विडंगातिविषामुस्तादारुपाठाकलिंगकैः ॥ मरिचेन समायुक्तं शोकातीसारनाशनम् ॥

अर्थ–पृश्निपर्णी, खरेटी, बेलगिरी, धनिया, कूठ, सोंठ, वायविडंग, अतीस, नागरमोथा, दारुहलदी, पाढमूल और कूडेकी छाल इनका काढा काली मिरचका चूर्ण मिलायके पीवे तो शोकातिसार नष्ट होवे ॥

आमातिसारनिदान ।

अन्नाजीर्णात्प्रद्रुताः क्षोभयंतः कोष्ठं दोषा धातुसंघान्मलांश्च ॥
नानावर्णं नैकशः सारयंति शूलोपेतं षष्ठमेनं वदंति ॥

अर्थ—अन्नके अजीर्णसे वातादिक दोष अपने स्थानसे उठकर सब उदरको दूषित करते हुए संपूर्ण पेटमें फिरने लगते हैं, फिर रसादि सप्तधातु और पुरीषादि मल इनसे अनेक वर्णका और अनेक प्रकारका अपान द्वारा शूलयुक्त थोडा २ मल बाहर निकले उसे आमातिसार कहते हैं उसको छठा अतिसार जानना ॥

आमातिसारचिकित्साक्रम ।

आमपक्वक्रमं हित्वा नातिसारे क्रिया हिता ॥
अतोऽतिसारे सर्वस्मिन्नामं पक्वं च लक्षयेत् ॥

अर्थ—आम पचन होनेके विना अतिसारपर औषध हितकारी नहीं होती अत एव सर्व अतिसारमें आम पचन हुई या नहीं हुई यह देखना चाहिये ॥

आमेऽपि लंघनं शस्तमादौ पाचनमेव च ॥
कार्यं वानशनस्यांते सद्रवं लघु भोजनम् ॥

अर्थ—आमातिसारमें लंघन और पाचन करावे अथवा लंघनके अंतमें हलके भोजन करे ॥

लंघनमेकं मुक्त्वा नान्यच्चास्तीह भेषजं बलिनाम् ॥
समुदीर्णदोषनिचयं शमयति तत्पाचयत्येव ॥

अर्थ—बलवानोंके आमातिसारमें लंघनके विना दूसरी औषध नहीं है क्योंकि यही सब दोषसमूहका शांत करता है पचाता है ॥

न तु संग्रहणं दद्यात्पूर्वमामातिसारिणाम् ॥ दोषो ह्यादौ वर्धमानो जनयत्यामयान्बहून् ॥ शोफपांड्वामयप्लीहकुष्ठगुल्मोदराज्वरान् ॥ दंडकालसकाध्मानग्रहण्यर्शोगदांस्तथा ॥ डिंभस्थः स्थविरस्थश्च वातपित्तात्मकश्च यः ॥ क्षीणधातुबलस्यापि बहुदोषो हि विश्रुतः ॥ आमो न स्तंभनीयः स्यात्पाचनान्मरणं भवेत् ॥ अतीसारे ज्वरे चैव यस्तु पित्ते हृगामये ॥ आदौ न प्रतिकुर्याद्वा व्याधिवेगो हि दुस्तरः ॥

अर्थ-आमातिसारी रोगीको प्रथमही मल बांधनेवाली औषध न देवे, वर्धमान आमरूप दोष सूजन, पांडु, प्लीहा, कुष्ठ, गुल्म, उदर, ज्वर, दंडक, अलसक, अफरा, संग्रहणी, बवासीर इत्यादि अनेक रोग करे है, और बालक तथा वृद्ध इनका तथा वातपित्तात्मक और धातुक्षीण, बलक्षीण इनका अनेक दोषयुक्त आमका स्तंभन न करे, स्तंभन करनेसे रोगी मरजावे और अतिसार, ज्वर, पित्त, नेत्ररोग और कफ इनपर प्रथमही चिकित्सा न करे क्यों कि व्याधिका वेग दुःसह है अतएव तीन चार दिन व्यतीत होनेपर चिकित्सा करनी चाहिये ॥

धान्यकादिकाढा पाचन वा दीपन।

धान्यनागरजःक्काथः पाचनो दीपनस्तथा ॥
एरंडमूलयुक्तश्च जयेदामानिलव्यथाम् ॥

अर्थ-धनिया और सोंठ इन दो औषधोंका काढा पीवे। यह दीपन और पाचन करे है, तथा इन काढेमें अंडकी जड डालके लेवे तो आमवातको नाश करे॥

अभयाविरेचन।

स्तोकं स्तोकं विबृद्धं वा सशूलं योऽतिसार्यंत ॥
अभयापिप्पलीकल्कैः सुखोष्णैस्तं विरेचयेत् ॥

अर्थ-थोडा २ किंवा बहुत शूलयुक्त अतिसार होय तो उसको हरड और पीपल इनके कल्कका रेचन देवे ॥

विडंगादिरेचन।

दीप्ताग्निर्बहुदोषो यो विबद्धमतिसार्यंते ॥
विडंगत्रिफलाकृष्णाकषायैस्तं विरेचयेत् ॥

अर्थ-दीप्ताग्नि पुरुषको बहुत दोषयुक्त, तथा गांठदार मल उतरता है उसको वायविडंग, त्रिफला और पीपल इनके काढे करके रेचन करावे ॥

क्षुधितका अतिसार।

क्षुत्क्षामस्य विरेके तु पेयां युंज्याद्विचक्षणः ॥
भेषजैर्मारुतघ्नैश्च दीपनीयैश्च कल्पिताम् ॥

अर्थ-भूखसे पीडित होनेसे जिसके दस्त होते हों उसकी वातनाशक दीपन ऐसी औषधोंसे सिद्ध करी पेया पिलानी चाहिये ॥

देवदारुजलपान ।

योऽतिबद्धं प्रभूतं च पुरीषमतिसार्यते ॥ तस्यादौ वमनं योज्यं पश्चाल्लंघनमेव च ॥ देवदारु वचा कुष्ठं नागरातिविषाभया ॥ सर्वाजीर्णप्रशमनं पेयमेतैः शृतं पयः ॥

अर्थ—जिस रोगीका अति कठोर और बहुत मल उतरता हो उसको प्रथम वमन फिर लंघन फिर देवदारु, वच, कूठ, सोंठ, अतीस और हरड इनसे दूधको औटायकर देवे तो अजीर्णको नाश करे ॥

चित्रकादिकाढा ।

चित्रकं पिप्पलीमूलं वचा कटुकरोहिणी ॥ पाठा वत्सकबीजानि हरीतक्यो महौषधम् ॥ एतदामसमुत्थानमतिसारं सवेदनम् ॥ कफात्मकं सपित्तं च सवातं हन्ति वै ध्रुवम् ॥

अर्थ—चीतेकी छाल, पीपरामूल, वच, कुटकी, पाढ, इन्दजौ, हरड और सोंठ इनका काढा आमातिसार, कफातिसार, पित्तातिसार और वातातिसारको नाश करे ॥

विश्वादियोग ।

विश्वाभयाघनवचातिविषासुराह्वाक्काथोऽथ विश्वजलदातिविषा· शृतो वा ॥ आमातिसारशमनः क्वथितः कषायः शुंठीघनाप्रति· विषामृतवल्लिजो वा ॥

अर्थ—सोंठ, हरड, नागरमोथा, अतीस और देवदारु इनका, अथवा सोंठ, नागरमोथा और अतीस इनका अथवा सोंठ, नागरमोथा, अतीस और गिलोय इनका काढा आमातिसारनाशक है ॥

पथ्यादिकाढा ।

पथ्यादारुवचामुस्तैर्नागरातिविषान्वितैः ॥
आमातिसारशूलघ्नं दीपनं पाचनं परम् ॥

अर्थ—हरड, देवदारु, हलदी, वच, नागरमोथा, सोंठ और अतीस इनका काढा देवे तो आमातिसार नाश करे ॥

एरंडादिरस।

एरंडरससंपिष्टं पक्वमामं च नागरम् ॥
आमातिसारशूलघ्नं दीपनं पाचनं परम् ॥

अर्थ—अंडके रसमें भुनी हुई और कच्ची सोंठको पीसके देवे तो आमातिसार और शूलको नाश करे। यह दीपन और पाचन है ॥

शुंठ्यादिचूर्ण।

शुंठीप्रतिविषाहिंगुमुस्ताकुटजचित्रकैः ॥
चूर्णमुष्णांबुना पीतमामातीसारनाशनम् ॥

अर्थ—सोंठ, अतीस, भुनी हींग, नागरमोथा, इन्द्रजौ और चीतेकी छाल इनका चूर्ण कर चौगुने गरम पानीमें पीवे तो आमातिसार नाश होवे ॥

दूसरा हरीतक्यादिचूर्ण।

हरीतकी प्रतिविषा सिंधुसौवर्चलं वचा ॥ हिंगु चेति कृतं चूर्णं पिबे-दुष्णेन वारिणा ॥ आमातिसारशमनं ग्राहि चातिप्रबोधनम् ॥

अर्थ—छोटी हरड, अतीस, सैंधानिमक, संचर निमक, वच और भुनी हींग इन छः औषधोंका चूर्ण गरम जलके साथ पीवे तो आमातिसार दूर होवे तथा मलका अवष्टंभ होकर अग्नि प्रदीप्त होवे ॥

शुंठीपुटपाक।

चूर्णं किंचिद्घृताभ्यक्तं शुंठ्या एरंडजैर्दलैः ॥ वेष्टितं पुटपाकेन विप-चेन्मंदवह्निना ॥ तत उद्धृत्य तच्चूर्णं ग्राह्यं प्रातः सितासमम् ॥ तेन याति शमं पीडा ह्यामातीसारसंभवा ॥ कुक्षिशूलामशूलघ्नं विबंधाध्मानसारजित् ॥

अर्थ—सोंठके चूर्णको थोडेसे घीसे चुपड अंडके पत्तोंसे लपेट फिर ऊपर गोवर मिट्टीका लेप कर मंदाग्निसे पचावे, फिर बराबरकी खांड मिलाय प्रातःकालमें खाय तो आमातिसार दूर होवे, तथा आमातिसारसंबंधी सर्व पीडा नाश हो और कूखका शूल, आमशूल, मलबद्धता, पेटका फूलना तथा अतिसारको नाश करे ॥

दूसरा शुंठ्यादिचूर्ण।

शुंठी जीरं सैंधवं हिंगु जातिबीजं तद्वत्साहकारं प्रशस्तम् ॥ ज्ञेयं

सद्भिः सावरूढं स बिल्वं माकंद्या वा शोधितं सूक्ष्मचूर्णम् ॥ दध्ना च वटिकां कुर्यात्तेनैव सह लेहयेत् ॥ आमातिसारं मांद्यं च ह्यरुचिं हंति तत्क्षणात् ॥

अर्थ—सोंठ, जीरा, सैंधानिमक, हींग, जायफल, आमकी गुठली, बेलगिरी खाखसेके पत्र इनको बारीक कपडछान चूर्ण कर उसकी दहीसे गोली बनावे और दहीसे खाय तो तत्क्षण आमातिसार, मंदाग्नि और अरुचि दूर होवे ॥

तीसरा शुंठ्यादिचूर्ण ।

सत्वा शुंठ्योषणं भृंगी समांशं सूक्ष्मचूर्णकम् ॥ यथासात्म्यं सेवनीयं शीततोयानुपानतः ॥ सशूलमामदोषं च नाशमायाति सत्वरम् ॥ दध्योदनं पथ्यमात्रमुचितं रोगशांतये ॥

अर्थ—सोंठका सत्व, काली मिरच, भांग ये समान भाग ले चूर्ण करे, इसको शीतल जलके साथ सेवन करे तो शूल, आमातिसार इनको शीघ्र दूर करे, इसपर दहीभात पथ्य कहा है ॥

साखरुंडचूर्ण ।

जयाखंडं साखरुंडं जीरकं दधिमिश्रितम् ॥
आमातिसारं रक्तं च हंति वेगेन कौतुकम् ॥

अर्थ—भांग, मिश्री, साखरुंड, जीरा और दही ये एकत्र करके पीवे तो आमातिसार और रक्तातिसारका बहुत जल्दी नाश करे, यह कौतुक है ॥

यवान्यादिकाढा ।

यवानीनागरोशीरधनिकातिविषाघनैः ॥
बालबिल्वाद्विपर्णीभिर्दीपनं पाचनं भवेत् ॥

अर्थ—अजवायन, सोंठ, खस, धनिया, अतीस, नागरमोथा, बेलगिरी, सालपर्णी और पृष्ठपर्णी इनका काढा दीपन और पाचन है ॥

कलिंगादिकाढा ।

कलिंगातिविषा हिंगु पथ्या सौवर्चलं वचा ॥
शूलस्तंभविबंधघ्नं पेयं दीपनपाचनम् ॥

अर्थ—इन्द्रजौ, अतीस, हींग, हरड, काला निमक और वच इनका का शूल, स्तंभता, मलका रुकना इनको दूर करे । यह दीपन और पाचन है ॥

त्रिकंटादियवकांजी ।

त्रिकंटकैरंडबिल्वैः साधितं यावकांजिकम् ॥
आमातिसारशूलानि जयेत्क्षौद्रान्विता शिवा ॥

अर्थ-गोखरू, अंडकी जड, बेलगिरी ये वस्तु डालके जवोंकी कांजी बनावे । यह आमातिसार, शूल इनका नाश करे अथवा शहत और हरड देवे तो आमातिसार दूर हो ॥

शोषपर ह्रीवेरादिकाढा ।

ह्रीवेरशृंगवेराभ्यां मुस्तापर्पटकेन च ॥
मुस्तोदीच्यशृतं तोयं देयं वापि पिपासिते ॥

अर्थ-नेत्रवाला, अदरख, नागरमोथा, भद्रमोथा, खस इनका काढा प्यासवालेको देवे ॥

त्र्यूषणादिचूर्ण ।

त्र्यूषणातिविषा हिंगु वचा सौवर्चलाभया ॥
पीतोष्णेनांभसा दद्यादामातीसारमुत्तमम् ॥

अर्थ-सोंठ, मिरच, पीपल, अतीस, हींग, वच, काला निमक और हरड इनका चूर्ण गरम जलके साथ देवे तो घोर आमातिसारको नष्ट करे ॥

पाठादिचूर्ण ।

पाठाहिंग्वाजमोदोग्रापंचकोलाब्दजं रजः ॥
उष्णांबुपीतं सरुजं जयत्यामं ससैंधवम् ॥

अर्थ-पाठ, हींग, अजमोद, वच, पीपल, पीपरामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ औ नागरमोथा इनके चूर्णमें सेंधानिमक मिलाय गरम जलसे देवे तो पीडायुक्त आमरोगको नाश करे ।

पयमुस्तायोग ।

पयसि क्वाथ्य मुस्तानां विंशतिस्त्रिगुणांभसि ॥
क्षीरावशेषं तत्पीतं हंत्यामं शूलमेव च ॥

अर्थ-दूध १ भाग, जल ३ भाग और नागरमोथेका काढा २० भाग, सबको एकत्र कर औटावे जब केवल दूध मात्र शेष रहे तब प्यावे । यह आम और शूल इनका नाश करे ॥

आमपक्वातिसारलक्षण ।

संसृष्टमेभिर्दोषैस्तु न्यस्तमप्स्ववसीदति ॥ पुरीषं भृशदुर्गंधि पिच्छिलं चामसंज्ञितम् ॥ एतान्येवं तु लिंगानि विपरीतानि यस्य वै ॥ लाघवं च विशेषेण तस्य पक्वं विनिर्दिशेत् ॥

अर्थ—पूर्वोक्त कहे हुए वातादिक अतिसारोंके लक्षणों करके युक्त ऐसा मल जलमें गेरनेसे आम भारी है अतएव डूब जावे, तथा उसमें अत्यंत दुर्गंध आवे और चिकना होवे उसकी आमसंज्ञा है । इससे विपरीत लक्षणवाला और शरीरमें अत्यंत हलकापन होवे उस मनुष्यका मल पक्व जानना । इक प्रकार वैद्यको आम और पक्वमलकी परीक्षा करना चाहिये ॥

असाध्यलक्षण ।

पक्वजांबवसंकाशं यकृत्पिंडनिभं तनु ॥ घृततैलवसामज्जावेसवारपयोदधि ॥ मांसधावनतोयाभं कृष्णं नीलारुणप्रभम् ॥ मेचकं कर्बुरं स्निग्धं चंद्रिकोपगतं घनम् ॥ कुणपं मस्तुलिंगाभं दुर्गंधं कुथितं बहु ॥ तृष्णादाहारुचिश्वासहिक्कापार्श्वास्थिशूलिनम् ॥ संमूर्च्छारतिसंमोहयुक्तपक्वबलीगुदम् ॥ प्रलापयुक्तं च भिषग्वर्जयेदतिसारिणम् ॥

अर्थ—जिस रोगीका मल पकी हुई जामुनके सदृश हो, कलेजेके रंग समान तथा घी, तेल, वसा, मज्जा इनके समान, वेसवार (मसाले) के पानीके समान, दूध, दही, मांस धोनेके जल समान, काजलके समान काला, नीला, ललोही लिये, मृदंगकी स्याहीके समान, अनेक प्रकारके रंगका, चकचकाहट लिये, मोरपंखके ऊपर जैसे अनेक प्रकारके रंग हो ऐसा दस्तका रंग हो, गाढा मुर्देकीसी दुर्गंधवाला, मस्तकसे मेद निकले ऐसा हो, दुर्गंधयुक्त, बहुत ऐसा मल गिरे और रोगीको प्यास, दाह, अन्नद्वेष, श्वास, हिचकी, पसवाडेके हाडोंका दूखना, मनको मोह, वेकली ये लक्षण होवें और गुदाकी वली (आंटे) पकजावे तथा बकवाद करे ऐसा अतिसाररोगी वैद्यको त्याज्य है ॥

दूसरा असाध्यलक्षण ।

असंवृत्तगुदं क्षीणं दुराध्मानमुपद्रुतम्[1] ॥
गुदे पक्वे गतोष्माणमतिसारिणमुत्सृजेत् ॥

---

१ दुरात्मानमुपद्रुतम् इति पाठान्तरम् ।

अर्थ-जिस रोगीकी गुदा दस्त होनेके पश्चात् मूँदे नहीं, ऐसा क्षीण हुआ अत्यंत अफरा करके और सूजन इत्यादि उपद्रवों करके युक्त तथा गुदाके ऊपर छोटी २ फुंसी होकर पके तथा जिसके देहमें गरमी न रहे अथवा जठराग्नि शांत हो जावे ऐसे अतिसाररोगीको वैद्य त्याग देवे ॥

अतिसारके उपद्रव।

शोथं शूलं ज्वरं तृष्णां श्वासं कासमरोचकम् ॥
छर्दिं मूर्च्छां च हिक्कां च दृष्ट्वातीसारिणं त्यजेत् ॥

अर्थ-सूजन, शूल, ज्वर, प्यास, श्वास, खाँसी, अरुचि, वमन, मूर्च्छा और हिचकी इनको देखकर वैद्य अतिसारवाले रोगीको त्याग देवे ॥

असाध्यलक्षण।

श्वासशूलपिपासार्तं क्षीणं ज्वरनिपीडितम् ॥
विशेषेण नरं वृद्धमतिसारो विनाशयेत् ॥

अर्थ-श्वास, शूल, प्यास, कृश और ज्वरसे पीडित ऐसे उपद्रवों करके युक्त बढा हुआ अतिसार रोग रोगीका नाश करे है ॥

लोध्रादिचूर्ण।

सलोध्रं धातकी बिल्वं मुस्ताम्रास्थिकलिंगकम् ॥
पिबेन्माहिषतक्रेण पक्वातिसारनाशनम् ॥

अर्थ-लोध पठानी, धायके फूल, बेलगिरी, नागरमोथा, आमकी गुठली, इन्द्रजौ इनके चूर्णको भैंसकी छाँछके साथ पीवे तो पक्वातिसार दूर हो ॥

पद्मादिचूर्ण।

पद्मं समंगा मधुकं बिल्वजं तु शलाटु च ॥
पिबेत्तंडुलतोयेन सक्षौद्रमगदंकरम् ॥

अर्थ-पद्माख, मुलहटी, महुआ, बेलगिरी, हरे और कोमल गूलर इन सबके चूर्णको चावलोंके चूर्णके जलमें सहत डालके पीवे तो पक्वातिसार दूर होवे ॥

कुटजादिचूर्ण।

कुटजातिविषाचूर्णं मधुना सह लेहितम् ॥
चिरोत्थितमतीसारपक्वं पित्तास्रजं जयेत् ॥

अर्थ-कूडेकी छाल, अतिस इनके चूर्णमें सहत मिलायके चाटे तो बहुत दिनका अतिसार, पक्कातिसार और रक्तपित्त इन सबको दूर करे ॥

अंबष्ठादिगण ।

अंबष्ठा धातकी लोध्रसमंगा पद्मकेसरम् ॥
मधुकारतुबिल्वं च पक्कातीसारहा गणः ॥

अर्थ-पाढ, धायके फूल, लोध, मँजीठ, कमलकी केशर, मुलहटी, टेंटू और बेलगिरी इनका चूर्ण अथवा काढा पक्कातिसारको नाश करे ॥

समंगादिचत्वारिचूर्ण ।

समंगा धातकीपुष्पं मंजिष्ठा लोध्र एव च ॥ शाल्मलीवेष्टको लोध्रदाडिमद्रुफलत्वचौ ॥ आम्रास्थिमध्यं लोध्रं च बिल्वमध्यं प्रियंगु च ॥ मधुकं शृंगबेरं च दीर्घवृंतत्वगेव च ॥ चत्वार एते योगाश्च पक्कातीसारनाशनाः ॥ ते योगा उपयोज्या वै सक्षौद्रा-स्तंडुलांबुना ॥

अर्थ-लजालू, धायके फूल, मँजीठ और लोध, अथवा मोचरस, लोध, अनारदाना, अनारकी छाल, अथवा आमकी गुठली, लोध, बेलगिरी और फूलप्रियंगु, अथवा मुलहटी, अदरख, अरलू और दालचीनी ये चार योग इनमेंसे किसी एक योगको चावलोंके धोवनमें सहत मिलाय उसके साथ पीवे तो पक्कातिसार नष्ट होवे ॥

कंचटादिचूर्ण ।

कंचटजंबूदाडिमशृंगाटकपत्रबिल्वबर्हिष्ठम् ॥
जलधरनागरसहितं गंगामपि वेगवाहिनीं रुंध्यात् ॥

अर्थ-गजपीपल, जामुनके पत्ते, अनारकी छाल, सिंघाडेके पत्ते, बेलगिरी, नेत्रवाला, नागरमोथा और सोंठ इनको समान भाग ले चूर्ण करके पीवे तो गंगाके प्रवाह समान भी दस्तोंको रोके ॥

अंकोटकल्क ।

अंकोटमूलकल्कस्तंडुलपयसा समाक्षिकः पीतः ॥
सेतुरिव वारिवेगं झटिति निरुंध्यादतीसारम् ॥

अर्थ-अंकोलकी जडके कल्कको चावलोंके धोवनमें सहत मिलायके

पीवे तो जैसे नदीके वेगको सेतु (मेड) रोक देता है उसी प्रकार अतिसारको यह रोग बंद कर देता है ॥

मोचरसादिचूर्ण।

मोचरसमुस्तानागरपाठारलुधातकीकुसुमैः ॥
चूर्णं मथितसमेतं रुणद्धि गंगाप्रवाहमपि ॥

अर्थ-मोचरस, नागरमोथा, सोंठ, पाढ, अरलू और धायके फूल इनको समान भाग ले चूर्ण करे फिर इसमेंसे १ तोला गौकी छाँछके साथ पीवे तो यह गंगाके वेगसमान अतिसाररोगको दूर करे ॥

मुस्तादिचूर्ण।

मुस्तमोचरसलोध्रधातकीपुष्पबिल्वगिरिकोटजैः फलैः ॥
चूर्णितं सगुडतक्रसेवितं निम्नगाजलरयोऽपि रुध्यते ॥

अर्थ-नागरमोथा, मोचरस, लोध, धायके फूल, वेलगिरी, इन्द्रजौ इनके चूर्णको छाँछ और उसमें गुड मिलायके पीवे तो नदीके वेगको भी बंद करे फिर दस्तोंका बंद करना क्या बडी बात है ॥

विश्वादिवटी।

विश्वजीरकसिंधूत्थहिंगुजातिफलानि च ॥ साम्रास्थि शंखखंडं च दध्नाम्लेन प्रपेषयेत् ॥ ईषदंगारकैर्भ्रष्टा वटिका कर्षसंमिता ॥ पक्कापक्कमतीसारं सशूलं ग्रहणीगदम् ॥ चिरोत्थमचिरोत्थं च नाशयेन्नात्र संशयः ॥

अर्थ-सोंठ, जीरा, सैंधानिमक, हींग, जायफल, आमकी भीतरकी गुठली, शंखका टुकडा इन सबको खट्टे दहीसे घोटे फिर अंगारोंपर कुछ थोडी भून लेवे फिर एक २ तोलेकी गोलियाँ बनावे। १ गोली नित्य सेवन करे तो पक्कातिसार, शूल, संग्रहणी ये रोग बहुत दिनके अथवा नये हों सबका नाश होवे ॥

वटप्ररोहयोग।

वटप्ररोहं संपिष्ट्वा श्लक्ष्णं तंडुलवारिणा ॥
तं पिबेत्तक्रसंयुक्तमतिसारप्रशांतये ॥

अर्थ-चावलके धोवनके जलमें वडके नवीन अंकुरोंको पीस छाँछ मिलायके अतिसार नाशके अर्थ देवे ॥

कुटजावलेह ।

कुटजत्वक्तुलामार्द्रां द्रोणाद्भिश्च पचेद्भिषक्॥ पादशेषं शृतं नीत्वा वस्त्रपूतं पुनः पचेत् ॥ लज्जालुधातकी बिल्वं पाठा मोचरसस्तथा ॥ मुस्तं प्रतिविषा चैव चूर्णमेषां पलं पलम् ॥ निक्षिप्य प्रपचेत्तावद्यावद्दर्वीप्रलेपनम् ॥ जलेन छागदुग्धेन पीतो मंडेन वा जयेत् ॥ घोरान्सर्वानतीसारान्नानावर्णान्सवेदनान् ॥ असृग्दरं समस्तं च तथार्शांसि प्रवाहिकाम् ॥

अर्थ–गीली कूडेकी छाल ४०० चार सौ तोले, जल १०२४ तोले लेकर काढा करे । जब चतुर्थांश बाकी रहे तब उतारके छान लेवे, उसमें लजालूका कंद, धायके फूल, बेलगिरी, पाढ, सेमरका गोंद, नागरमोथा और अतीस प्रत्येक चार चार तोले लेकर चूर्ण करके उस काढेके जलमें मिलाय देवे, फिर उसको अग्निपर चढायके औटावे जब कलछीसे लिपटने लगे तब इसको उतारके किसी पात्रमें भरके धर देवे, उसको जलसे अथवा बकरीके दूधसे, अथवा मंडसे देय तो घोर और अनेक वर्णके सर्व अतिसार, शूल, रक्तप्रदर, अर्श और प्रवाहिका इनको नाश करे ॥

रालयोग ।

चिरोत्थितमतीसारं रालो हन्यात्सितायुतः ॥

अर्थ–रालके चूर्णको मिश्रीसे मिलायके फंकी लेवे तो बहुत दिनके अतिसाररोगको नाश करे ॥

नाभिमें क्षेपणीय ।

कृत्वालवालं सुदृढं पिष्टैरामलकैर्भिषक् ॥ आर्द्रकस्वरसेनाशु पूरयेन्नाभिमंडलम् ॥ नदीवेगोपमं घोरं प्रवृद्धं दुर्जरं नृणाम् ॥ वृद्धातिसारमजयं नाशयत्येष योगराट् ॥

अर्थ–रोगीके नाभिके चारों तरफ आमके चूर्णसे थावलासा बनायके उसमें अदरखका रस भर देवे और रोगीको उसी तरहसे ४ घडी पर्यंत लेटा रहने दे तौ नदीके वेग समान घोर बढा हुआ दुर्जय अतिसारको यह योगराज नाश कर दे॥

पाठादियोग ।

पाठा पिष्टा च गोदध्ना तथा मध्यत्वगाम्रजा ॥

अतिसारं व्यथादाहयुक्तं हंत्युदरे धृता ॥

अर्थ-पाढकी जडको अथवा आमके भीतरकी छालको दहीसे पीसके पेटपर रखनेसे दाहयुक्त अतिसारकी पीडाको नाश करे ॥

जातीफलादियोग।

जातीफलं नागरसर्जकेनौ खर्जूफलं भिन्नभिदं च नित्यम् ॥ योज्यं द्विनिष्कं च करीषजातादरण्यजाद्भस्मसमं च सर्वैः ॥ निष्कार्ध-मात्रं भिषजा प्रयोज्यं द्विवारमेतच्छुभतंदुलोदकैः ॥ जीर्णाति-सारे रुधिरामयुक्ते हितः सशूले बहुवेगयुक्तम् ॥

अर्थ-जायफल, सोंठ, राल, केनावृक्षकी छाल और छुहारा ये प्रत्येक छः छः मासे लेवे सबका चूर्ण करे सब चूर्णके बराबर आरने उपलोंकी राख लेवे सबको एकत्र कर १॥ डेढ मासे चावलोंके धोवनके साथ दिनमें दो वार देवे तो जीर्णातिसार, रक्तातिसार, आमातिसार और शूल इन रोगोंपर यह चूर्ण हितकारी है ॥

रक्तातिसारनिदान।

पित्तकृंति यदात्यर्थं द्रव्याण्यश्नाति पैत्तिके ॥
तदोपजायतेऽभीक्ष्णं रक्तातीसार उल्बणः ॥

अर्थ-पित्तातिसार होनेसे अथवा होनेवाला हो उस समय यदि पित्तकारी पदार्थ बहुत और निरंतर भोजन करे तो बडा भारी घोर रक्तातिसार उत्पन्न होवे उसके लाल और काले रंग आदिसे वातादि दोष जानने। कोई आचार्य इस प्रकार कहते हैं कि, रक्तजभी अतिसार है परंतु यदि सातवां मानोगे तो षट्संख्यामें विरोध आता है इसवास्ते पैत्तिकका एक अवस्थाभेद है ऐसा मान लियाहै ॥

यष्ट्यादिकाढा।

यष्टीमधु सिता लोध्रं मधुकं नीलमुत्पलम् ॥
अजाक्षीरेण क्वथितं रक्तातीसारशांतये ॥

अर्थ-मुलहटी, मिश्री, लोध, महुआ और नीलकमल इनका बकरीके दूधमें काढा करके देवे तो रक्तातिसार शांत होवे ॥

कुटजादिकाढा।

कुटजातिविषा मुस्ता बालकं लोध्रचंदनम् ॥ धातकी दाडिमं

पाठाक्काथं क्षौद्रयुतं पिबेत् ॥ दाहे रक्ते च शूले च आमरोगे च दुस्तरे ॥ कुटजाष्टमिदं ख्यातं सर्वातिसारनाशनम् ॥

अर्थ-कूडेकी छाल, अतीस, नागरमोथा, नेत्रवाला, पठानी लोध, रक्तचंदन, धायके फूल और पाठ इनके काढेमें सहत मिलायके पीवे तो दाह, रक्तशूल, आम और सर्वातिसार इनको नष्ट करे । इसको कुटजाष्टक कहते हैं ॥

वत्सकादिकाढा ।

सवत्सकः सातिविषः सबिल्वः सोदीच्यमुस्तश्च कृतः कषायः ॥
सामे सशूले च सशोणिते च चिरप्रवृत्तेऽपि हितोऽतिसारे ॥

अर्थ-कूडेकी छाल, अतीस, बेलगिरी, नेत्रवाला और नागरमोथा इनका काढा आमसंबंधी शूल, रक्तातिसार और बहुत दिनका अतिसार इनपर हितकारी है ॥

तंदुलजलयोग ।

लघुचेतकिजीरके समे मृदुभृष्टे सुचूर्णिते पीते ॥
सह तंदुलवारिणा मतोऽतिसृतिघ्न इति प्रसिद्धयोगः ॥

अर्थ-जंगी हरड और जीरे दोनों समान भाग लेवे दोनोंको कुछ २ भून लेवे फिर चूर्ण कर चावलके जलसे पीवे तो अतिसारका नाश करे । यह सिद्धयोग अर्थात् सिद्धपुरुषोंका कहा हुआ है ॥

दाडिमादिकाढा ।

अयि कंदुकतिंदुकस्तनि प्रमदारूपमदापहारिणि ॥
रुधिरातिसृतौ कषायकः समधुदाडिमवत्सकत्वचः ॥

अर्थ-हे कंदुकतिंदुकस्तनि ! हे प्रमदारूपमदापहारिणि ! अनारकी छाल, और कूडेकी छाल इनके काढेमें सहत मिलायके देवे तो रक्तातिसारका नाश होवे ॥

चंदनादियोग ।

चंदनं विमलतंदुलांबुना संयुतं मधुयुतं सितायुतम् ।
तृड्विखंडनमसृग्विखंडनं खंडनं प्रचुरदाहमोहयोः ॥

अर्थ-चांवलोंके धोवनमें चंदनको मिलायके उसमें सहत और मिश्री मिलायके देवे तो तृषा, रक्तातिसार, दाह और मोह इनको नाश करे ॥

ह्रीबेरादिकाढा ।

ह्रीबेरातिविषा मुस्ता बिल्वधान्यकवत्सकम् ॥ समंगा धातकी

लोध्रं विश्वं दीपनपाचनम् ॥ हंत्यरोचकपिच्छामविबंधं चातिवेदनम् ॥ सशोणितमतीसारं सज्वरं वाथ विज्वरम् ॥

अर्थ-नेत्रवाला, अतीस, नागरमोथा, बेलगिरी, धनिया, कूडेकी छाल, मँजीठ, धायके फूल, लौंग और सोंठ इनका काढा देवे तो यह दीपन और पाचन है, तथा अरुचि, आम, बद्धकोष्ठ, शूल, रक्तातिसार, सज्वर अथवा गतज्वर अतिसार इनको नाश करे ॥

बिल्वादियोग।

बिल्वं छागपयःसिद्धं सितामोचरसान्वितम् ॥
कलिंगचूर्णसंयुक्तं रक्तातीसारनाशनम् ॥

अर्थ-बेलगिरीको भेडके दूधमें औटावे, फिर इसमें मिश्री और मोचरस तथा इन्द्रजौके चूर्णको मिलायके पीवे तो रक्तातिसार नाश होवे ॥

कलिंगयवषट्क।

सहरीतकीप्रतिविषारुचकं साहिंगु सकलिंगयुतम् ॥
इति तत्कलिंगयवषट्कमिदं रुधिरातिसारगदशूलहरम् ॥

अर्थ-हरड, अतीस, संचरनिमक, हींग, कूडेकी छाल और इन्द्रजौ इनका काढा अथवा चूर्ण रक्तातिसार, शूल इनका नाश करे। इसको कलिंगयवषट्क कहते हैं ॥

कुटजक्षीर।

निःक्वाथ्य मूलममलं गिरिमल्लिकायाः सम्यक्पलं द्वितयमंबु चतुः शरावे ॥ तत्पादशेषसलिलं खलु शोषणीयं क्षीरे पलद्वयमिते कुशलैरजायाः ॥ प्रक्षिप्य माषकानष्टौ मधुनस्तत्र शीतले ॥ रक्तातिसारी तत्पीत्वा नैरुजत्वमवाप्नुयात् ॥

अर्थ-८ तोले कूडेकी जडकी छालको लेकर १०० सौ तोले जलमें औटायकर काढा करे चतुर्थांश रहनेपर उतार लेवे और छान ले फिर दूसरे पात्रमें भर चूल्हेपर चढावे और इसमें ८ आठ तोले बकरीका दूध डालके औटावे जब खूब औटा जावे तब उतारके शीतल कर लेवे फिर इसमें आठ मासे शहत मिलायके पीवे तो रक्तातिसारी इसको पीकर शीघ्र निरोगी होवे ॥

रसांजनादिचूर्ण ।

रसांजनं सातिविषं कुटजस्य फलत्वचम् ॥ धातकी शृंगबेरं च पिबेत्तंदुलवारिणा ॥ क्षौद्रेण युक्तं नुदति रक्तातीसारमुल्बणम् ॥

अर्थ–रसोत, अतीस, कूडेकी छाल, धायके फूल और सोंठ इनके चूर्णको शहत मिले चावलोंके धोवनके साथ मिलायके पीवे तो रक्तातिसार दूर होवे ॥

कुटजावलेह ।

कुटजस्य पलं ग्राह्यमष्टभागजले शृतम् ॥ तथैवाद्भिः पचेद्भूयो दाडिमोदकसंयुतम् ॥ कुटजक्काथतुल्योऽत्र दाडिमस्य रसो मतः ॥ यावच्च रसिकाभासं मृतं तमुपकल्पयेत् ॥ तस्यार्धं कर्षतक्रेण पिबेद्रक्तातिसारवान् ॥ अवश्य मरणीयोऽपि न मृत्युर्याति गोचरम् ॥

अर्थ–कूडेकी छाल १ पल लेकर ८ पल जलमें अष्टावशेष काढा करे फिर जितना कूडेका काढा होवे उतनाही अनारका रस लेवे दोनोंको मिलायके फिर औटावे जब गाढा हो जावे तब उतार लेवे, शीतल होनेपर इसमेंसे छःमासे छाँछके साथ रक्तातिसारीको देवे तो अवश्य मरनेवाला रोगीभी बचजावे ॥

सल्लक्यादिस्वरस ।

सल्लकी बदरी जंबू प्रियालाम्राजुनत्वचः ॥
पीताः क्षीरेण मध्वाढ्याः पृथक्शोणितनाशनाः ॥

अर्थ–हरफारेवडी, बेर, जामुन, चिरोंजी, आम और कोह इनके वृक्षोंमेंसे किसी एक वृक्षकी छालको दूधमें पीसके और शहत मिलायके पीवे तो रक्तातिसारका नाश होवे ॥

जंब्वादि अंगरस ।

जंब्वाम्रामलकीनां च पल्लवोत्थो रसो जयेत् ॥
मध्वाज्यक्षीरसंयुक्तो रक्तातीसारमुल्बणम् ॥

अर्थ–जामुन, आम और आमले इनमेंसे किसी एकके पत्तोंका रस शहत घी और दूधके साथ पीवे तो घोर रक्तातिसार दूर होवे ॥

गुडबिल्वयोग ।

गुडेन खादयेद्बिल्वं रक्तातीसारनाशनम् ॥

आमशूलविबंधघ्नं कुक्षिरोगविनाशनम् ॥

अर्थ–बेलगिरीको गुडके साथ मिलायके खाय तो रक्तातिसार, आमका शूल, विबंध और कूखके रोग इन सबको दूर करे ॥

शतावरीकल्क।

पीत्वा शतावरीकल्कं पयसा क्षीरभुग्जयेत् ॥
रक्तातिसारं पीत्वा वा तथा सिद्धं घृतं नरः ॥

अर्थ–शतावरीके कल्कको दूधके साथ पीकर ऊपर दूधकाही पथ्य करे अथवा शतावर करके सिद्ध घृतकोही पीवे तो अतिसार दूर होवे ॥

तिलादिकल्क।

कल्कस्तिलानां कृष्णानां शर्कराव्यश्च भागिकः ॥
आजेन पयसा पीतः सद्यो रक्तं नियच्छति ॥

अर्थ–काले तिलोंके कल्कमें एक भाग मिश्री मिलाय बकरीके दूधसे पीवे तो तत्काल रुधिरका गिरना बंद होवे ॥

नवनीतावलेह।

गोदुग्धं नवनीतं तु मधुना सितया सह ॥
लीढं रक्तातिसारेषु ग्राहिकं परमं मतम् ॥

अर्थ–गौका दूध और गौका मक्खन इनको सहत और मिश्रीके साथ मिलायके पीवे तो रक्तातिसारको दूर करे ॥

शाल्मलिपुष्पयोग।

शाल्मलेरार्द्रपुष्पाणि पुटपाककृतानि च ॥ संकुट्योलुखले तस्य गृह्णीयात्पयसि श्रिते ॥ गृहीत्वा च पलं तस्य त्रिपलं घृततैलयोः ॥ युक्तं मधुककल्केन माक्षिकात्रिपलेन च ॥ युक्तस्तु वपुषो दद्याद्धस्तौ प्रत्यागते रसे ॥ भोजयेत्पयसा वापि पित्तातीसारपीडितम् ॥

अर्थ–सेमरके गीले फूल लेकर पुटपाकविधिसे पचायके फिर उनको खरल कर कूट गरम दूधमें १ पल रस मिलायके पीवे तथा उसमें घृत और तेल १२ तोले

तथा मुलहटीका कल्क १२ तोले, सहत बारह तोले ये सर्व मिलायके देवे जब यह रस बस्तीमें आन पहुँचे तब दूधभात भोजन करावे ॥

गुदपाक ।

विरेकैर्बहुभिर्यस्य गुदं पित्तेन दह्यते ॥
पच्यते वा तयोः कार्यं सेकप्रक्षालनादिकम् ॥

अर्थ–जिसकी गुदा बहुत दस्तोंके होनेसे पित्त करके जलने लगे अर्थात् चिनचिनाने लगे अथवा पकजावे उसको सेचन अथवा शीतल जलसे धुलानी चाहिये ॥

पटोलादिकाढा गुदक्षालनार्थं ।

पटोलयष्टिमधुकक्वाथेनाशिशिरेण हि ॥
गुदप्रक्षालनं कार्यं तेनैव गुदसेचनम् ॥

अर्थ–पटोलपत्र, मुलहटी और महुएकी छाल इनका शीतल काढा करके उससे गुदापर तरडा देवे अथवा इस काढेसे धोवे तो गुदाका पाक और पीडा होना शांत होवे ॥

गुदक्षालनार्थं जल ।

दाहे पाके हितं छागीदुग्धं सक्षौद्रशर्करम् ॥
गुदस्य क्षालने सेके युक्तं पाने च भोजने ॥

अर्थ–गुदामें दाह अथवा गुदापाक होनेसे बकरीके दूधमें सहत और चीनी मिलायके गुदाका प्रक्षालन करे अर्थात् धोवे, सेचन, पान (पीवे) और भोजन करे तो गुदाका विकार दूर हो ॥

चांगेरीघृत ।

गुदनिःसरणे शस्तं चांगेरीघृतमुत्तमम् ॥ अतिप्रवृत्त्या महती भवेद्यदि गुदव्यथा ॥ स्विन्नमूषकमांसेन तथा संस्वेदयेद्गुदम् ॥

अर्थ–गुदभ्रंश अर्थात् कांछ निकल आई होवे तो इसपर चांगेरीघृतसेवन उत्तम है । यदि कांछ अधिक बाहर निकलनेसे अत्यंत पीडा होती होवे तो मूसे (चूहे) के मांसको अग्निपर सेककर गुदाको सेके तो गुदाकी पीडा शांत हो ॥

मूषकमांसस्वेद ।

स्वेदोऽथ मूषिकामांसैस्तद्वत्सामृक्षणं तथा ॥ शंबूकमांसं सुस्विन्नं

सतैलळवणान्वितम् ॥ ईषद्धस्तेन चाभ्यक्तं स्वेदयेत्तेन यत्नतः ॥
गुदभ्रंशमशेषेण नाशयेत्क्षिप्रमेव च ॥

अर्थ–गुदभ्रंश अर्थात् कांछ निकलनेसे मूसेके मांसका बफारा देवे, अथवा उस मांसको गुदाके ऊपर बांधे, उसी प्रकार छोटे शंखका मांस सिजायके उसमें तेल और निमक मिलाय गुदापर तेल लगायके उस मांससे सेक करावे तो निःशेष पीडा तत्काल दूर होवे ॥

गोधूमचूर्णस्वेद।

अथ गोधूमचूर्णस्य स्विन्नितस्य तु वारिणा ॥
साज्यस्य गोलकं कृत्वा मृदु संस्वेदयेद्गुदम् ॥

अर्थ–गेहूंके भीतरके रवाको जलमें भिगोय देवे, जब भीगजावे तब घी मिलाय गोला करके उसको भूनलेवे, फिर उस गोलेको निकालके उससे सुहाता २ सेक करे तो गुदाकी पीडा शांत होवे ॥

गुदांतःप्रवेशन।

गुदभ्रंशे गुदं स्नेहैरभ्यज्यांतः प्रवेशयेत् ॥ प्रविष्टं स्वेदयेन्मंदं मूषकस्यामिषेण हि ॥ गुदभ्रंशाभिधो व्याधिः प्रणश्यति न संशयः ॥

अर्थ–कांछ निकल आई होवे तो उसपर तेल चुपडके धीरे २ भीतर घुसेडे फिर मूसेके मांससे धीरे २ सेंके तो गुदभ्रंश (कांछका निकलना) दूर होवे इसमें संशय नहीं है ॥

चांगेरीघृत।

चांगेरीकोलदध्यम्लक्षारनागरसंयुतम् ॥
घृतं विपक्वं पातव्यं प्रणश्यति न संशयः ॥

अर्थ–चूका, बेर, दही, नींबू, जवाखार और सोंठ इनके काढेमें घी डालके घृतपाककी विधिसे पचावे जब सिद्ध हो जावे तब उतारके धर रक्खे फिर इसमेंसे सेवन करे तो गुदभ्रंश रोगका नाश होय इसमें संदेह नहीं है ॥

कमलपत्रभक्षण।

कोमलं पद्मिनीपत्रं यः खादेच्छर्करान्वितम् ॥
एतन्निश्चित्य निर्दिष्टं न तस्य गुदनिर्गमः ॥

अर्थ-कोमल कमलके पत्तोंको खांडमें मिलायके सेवन करे तो उसकी गुदा कदाचित् बाहर नहीं निकले यह निश्चय करके कहा है ॥

ज्वरातिसारचिकित्साक्रम ।

ज्वरातिसारयोरुक्तं भेषजं यत्पृथक्पृथक् ॥
न तन्मीलितयोः कार्यमन्योन्यं वर्धयेद्यतः ॥
अतस्तौ प्रतिकुर्वीत विशेषोक्तचिकित्सितैः ॥

अर्थ-ज्वर और अतिसार इनपर जो पृथक् २ औषधी कही है उनको मिलायके ज्वरातिसारपर उपचार कदाचित् न करे यदि अज्ञानसे मिलायके देवे तो वह औषध ज्वर और अतिसार दोनोंको परस्पर बढाती है इसीसे ज्वरातिसारपर विशेष क्रिया जो कही है वही करना चाहिये ॥

उत्पलषष्टिक ।

लंघनमुभयोरुक्तं मीलितकार्यो विशेषतस्तदनु ॥
उत्पलषष्टिकासिद्धं लाजकमंडादिकं पेयम् ॥

अर्थ-ज्वर और अतिसार इन दोनोंपर लंघन कहा है सो लंघन ज्वरातिसार पर कराना चाहिये फिर कमलकंद (भसीडा) और साठीचावल इनकी खीलोंका मंड करके देवे ॥

दाडिमावलेह ।

दाडिमादिरसप्रस्थं चतुःप्रस्थे जले पचेत् ॥ चतुर्भागकषायेऽस्मिञ्छर्कराप्रस्थमेव च ॥ नागरं पिप्पलीमूलं कणाधान्यकदीप्यकम् ॥ जातीपत्रमरीभंजी जीरकं करकं तुगा ॥ विजया निंबपत्रं च समंगा वत्सशाल्मली ॥ अरलातिविषापाठालवंगं च पृथक्पलम् ॥ घृतस्य मधुनः प्रस्थं सर्वलेहं विपाचयेत् ॥ दाडिंबलेहकं नाम ज्वरातीसारनाशनम् ॥

अर्थ-अनारका रस १ सेर, जल ५ सेर, दोनोंको चूल्हेपर चढायके चतुर्थांश शेष काढा करके उसमें १ सेर खॉड और सोंठ, पीपलामूल, पीपर, धनिया, अजवायन, जावित्री, कसोंदी, जीरा, वंशलोचन, भाँग, नीमके पत्ते, लजालूका कंद, कूडेकी छाल, सेमर, टेंटू, अतीस, पाढकी जड और लौंग ये प्रत्येक चार २

तोले लेवे घी, सहत, केशर इन सबको एकत्र करके अवलेह सिद्ध करे। इसको कुटजावलेह कहते हैं। यह ज्वरातिसारको नाश करे ॥

कणादिकाढा।

कणाकरेणुजलदक्काथो मधुसितायुतः ॥
पीतो ज्वरातिसारस्य तृष्णावम्योश्च नाशनः ॥

अर्थ-पीपल, गजपीपल और नागरमोथा इनके काढेमें सहत और मिश्री मिलाय पीवे तो अतिसार, प्यास और वांति इनको नाश करे ॥

पाठादिकाढा।

पाठेंद्रयवभूनिंबमुस्तापर्पटकैः शृतः ॥
जयत्याममतीसारं ज्वरं च समहौषधम् ॥

अर्थ-पाढकी जड, इन्द्रजौ, चिरायता, नागरमोथा, पित्तपापडा और सोंठ इनका काढा आमातिसार और ज्वर इनका नाश करे ॥

नागरादिकाढा।

नागरातिविषामुस्ताभूनिंबामृतवत्सकैः ॥
सर्वज्वरहरः क्काथः सर्वातीसारनाशनः ॥

अर्थ-सोंठ, अतीस, नागरमोथा, चिरायता, गिलोय और कूडेकी छाल इनका काढा संपूर्ण ज्वर और संपूर्ण अतिसार इनका नाश करे ॥

कलिंगादिकाढा।

कलिंगातिविषा शुंठी किरातांबु यवासकम् ॥
ज्वरातिसारसंतापं नाशयेदविकल्पतः ।

अर्थ-कूडेकी छाल, अतीस, सोंठ, चिरायता, नेत्रवाला और जवासा इनका काढा ज्वरातिसारसंबंधी संताप इनको निःसंशय नाश करे है ॥

गुडूच्यादिकाढा।

गुडूच्यतिविषाधान्यशुंठीबिल्वाब्दवालकैः ॥ पाठाकुटजभूनिंब-
चंदनोशीरपर्पटैः ॥ पिबेत्कषायं सक्षौद्रं ज्वरातीसारशांतये ॥
हृल्लासारोचकच्छर्दिपिपासादाहनाशनम् ॥

अर्थ-गिलोय, अतीस, धनिया, सोंठ, बेलगिरी, नागरमोथा, नेत्रवाला, पाढ,

कूडेकी छाल, चिरायता, लालचंदन, खस और पित्तपापडा इनका काढा शहत डालके पीवे तो ज्वरातिसार, हृल्लास, अरुचि, वमन, तृषा और दाह इनको नाश करे ॥

वत्सकादि दो काढे ।

वत्सकस्य फलं दारु रोहिणी गजपिप्पली ॥ श्वदंष्ट्रा पिप्पली धान्यबिल्वपाठा यवानिका ॥ द्वावप्येताविमौ योगौ श्लोकार्धेनाऽवभाषितौ ॥ ज्वरातिसारशमनौ विशेषाद्दाहनाशनौ ॥

अर्थ—इन्द्रजौ, देवदार, कुटकी, गजपीपल इनका अथवा गोखरू, पीपल, धनिया, बेलगिरी, पाढ और अजवायन इनका काढा ज्वरातिसार और विशेष करके दाह इनको शमन करे ॥

उशीरादिकाढा ।

उशीरं वालकं मुस्तं धान्यकं बिल्वमेव च ॥ समंगा धातकी लोध्रं विश्वं दीपनपाचनम् ॥ हंत्यरोचकपिच्छामं विबंधमतिवेदनम् ॥ सशोणितमतीसारं सज्वरं वाथ विज्वरम् ॥

अर्थ—नेत्रवाला, खस, नागरमोथा, धनिया, बेलगिरी, मँजीठ, धायके फूल, लोध और सोंठ इनका काढा दीपन और पाचन है तथा अरुचि, आमातिसार, मलबंध, शूल, रक्तातिसार और ज्वर इनका नाश करे । यह काढा ज्वररहित अतिसारहीपर चलता है ॥

बिल्वादिकाढा ।

बिल्वबालकभूनिंबगुडूचीधान्यनागरैः ॥
कुटजाब्दामृताक्वाथो ज्वरातीसारशूलनुत् ॥

अर्थ—बेलगिरी, नेत्रवाला, चिरायता, गिलोय, धनिया, सोंठ, कूडेकी छाल, नागरमोथा और आमले इनका काढा ज्वरातिसार और शूल इनका नाशक है ॥

पंचमूलादिकाढा ।

पंचांघ्रिवृक्ष्यब्दबलेंद्रबीजत्वग्सेव्यातिक्तामृतविश्वबिल्वैः ॥
ज्वरातिसारान्सवमीन्सकासान्सश्वासशूलाञ्छमयेत्कषायः ॥

अर्थ-पंचमूल, कटेरी, नागरमोथा, खिरेटी, कूडेकी छाल, इन्द्रजौ, नेत्रवाला, कुटकी, गिलोय, सोंठ, बेलगिरी इनका काढा ज्वरातिसार, वमन, खाँसी, श्वास और शूल इनको शमन करे है ॥

अरल्वादिकाढा।

अरल्वातिविषा मुस्ता शुंठी बिल्वं सदाडिमम् ॥
सर्वज्वरहरः क्वाथः सर्वातिसारनाशनः ॥

अर्थ-टेंटू, अतीस, नागरमोथा, सोंठ, बेलगिरी और अनारदाना इनका काढा संपूर्ण ज्वर और संपूर्ण अतिसारोंका नाश करे ॥

उत्पलादिचूर्ण।

उत्पलं दाडिमत्वचं संचूर्ण्य पद्मकेशरम् ॥
पिबेत्तंदुलतोयेन ज्वरातीसारनाशनम् ॥

अर्थ-कुलिंजन, अनारकी छाल और कमलकी केशर इनको पीस चावलोंके धोवनके साथ पीवे तो ज्वरातिसार नाश होय ॥

व्योषादिचूर्ण।

व्योषवत्सकबीजानि निंबभूनिंबमार्कवम् ॥ चित्रकं रोहिणी पाठा दार्वी ह्यतिविषा समम् ॥ श्लक्ष्णचूर्णीकृतानेतान्तत्तुल्यां वत्सकत्वचम् ॥ सर्वमेकत्र संयोज्य पिबेत्तंदुलवारिणा ॥ सक्षौद्रं वा लिहेदेवं पाचनं ग्राहि भेषजम् ॥ तृष्णारुचिप्रशमनं ज्वरातीसारनाशनम् ॥ कामलाग्रहणीरोगान्गुल्मं प्लीहानमेव च ॥ श्वयथुं पांडुरोगं च प्रमेहं च विनाशयेत् ॥

अर्थ-सोंठ, मिरच, पीपल, इन्द्रजौ, नीमकी छाल, चिरायता, भांगरा, चीतेकी छाल, कुटकी, पाढकी जड, दारुहलदी, अतीस इनको समान भाग मात्रा लेकर चूर्ण करे, तथा सब चूर्णकी बराबर कूडेकी छालका चूर्ण लेवे सबको एकत्र कर चावलके धोवनसे अथवा शहतसे देवे। यह पाचन तथा ग्राहक है तथा तृषा, अरुचि, ज्वरातिसार, कामला, संग्रहणी, गोला, प्लीहा, सूजन, पांडुरोग और प्रमेह इनका नाश करे ॥

इसबगोलयोग।

इसबगोल इति प्रथितो जने हरति तज्ज्वरभाजमतिसृतिम् ॥

अनुभवाल्लिखितं न तु शास्त्रतो भवतु तद्भिषजामुपयोगिकम् ॥

अर्थ–जिसको मनुष्य इसबगोल कहते हैं वह ज्वरातिसारनाशक है यह मैं अपने अनुभवसे लिखता हूं यह शास्त्रसे नहीं लिखा परंतु यह वैद्योंके उपकारार्थ होओ ॥

लाजमंड ।

उत्पलषष्टिकासिद्धं लाजकमंडादिकं पेयम् ॥

अर्थ–सांठी चावलकी खीलोंके मंडमें कमलकंदका चूर्ण मिलाय देवे तो ज्वरातिसारको शांत करे ॥

पृश्निपर्ण्यादिपेया ।

पृश्निपर्णीबलाबिल्वानागरोत्पलधान्यकैः ॥
ज्वरातिसारी पेयां वा पिबेत्साम्लां शृतां नरः ॥

अर्थ–पिठवन, खिरेटी, बेलगिरी, सोंठ, कमल और धनिया इनकी खट्टी पकाई हुई पेया ज्वरातिसारवाले रोगीको पीनी चाहिये ॥

धातक्यादिपेया ।

धातकीक्वाथसंसिद्धा विश्वभेषजकल्पिता ॥
दाडिमाम्लयुता पेया ज्वरातीसारशूलिनाम् ॥

अर्थ–धायके फूलोंका काढा, सोंठका कल्क और अनारदानेका रस इनकरके तैयार करी हुई पेया ज्वरातिसारमें शूलपर हितकारी है ॥

विजयायोग ।

एरंडबिल्वयवगोक्षुरकारनालैः स्विन्नां लिहंति विजयां मधुनान्वितां ये ॥ तेषां प्रणाशमुपयात्युदरामयास्तु सर्वे सशूलविषमज्वरकासहिक्काः ॥

अर्थ–अंडकी जड, बेलगिरी, इन्द्रजौ, गोखरू इनकी पेयामें भांग अथवा मोचरस शहत मिलायके सेवन करनेसे संपूर्ण उदररोग, संपूर्ण शूल, विषमज्वर, खांसी और हिचकी ये संपूर्ण उपद्रव नाश होवें ॥

पंचामृतपर्पटीरस ।

सूतायसी च ताम्राभ्रसमं द्विगुणगंधकम् ॥ लोहपात्रे बादराग्नौ मृदुपा-

को भवेद्रसः ॥ लेपयेत्कदलीपत्रे कर्तव्या रसपर्पटी ॥ पंचामृता-पर्पटी च रसो वह्निप्रदीपनः ॥ ज्वरातिसारकासघ्नी कामलापांडु-मेहजित् ॥ अनुपानं मले बद्धे ज्वरे जीर्णे च मूत्रकम् ॥ पलं पथ्यं तु तैलाम्लवर्ज्यमन्यच्च युक्तितः ॥

अर्थ-पारा, लोहेकी भस्म, तामेकी भस्म और अभ्रककी भस्म ये समान भाग लेवे, गंधक दो भाग ले, सबकी वारीक कजली करके लोहेके कडछलेमें रखके बेरकी लकडीकी धीमी २ अग्निसे तपायके एक जीव करे, फिर पृथ्वीमें केलेका पत्र बिछायके ऊपरसे इस कजलीके रसको अथवा पंचामृतपर्पटीको तायके ढाल देवे। यह पर्पटी अग्निदीपक है और ज्वरातिसार, खाँसी, कामला, पांडुरोग और प्रमेह इनका नाश करे। यह मलावष्टंभ होनेसे अथवा जीर्णज्वर होनेसे बकरीके चार तोले मूत्रसे देवे। इसपर पथ्यमें तेल और खटाई वर्जित है बाकीको युक्तिसे जानना चाहिये ॥

दरदादिपुटपाक।

दरदश्चैकभागो हि सार्धभागोऽहिफेनकः ॥ अर्धभागो भवेट्टंकः पिष्टिकां च प्रलेपयेत् ॥ जातीफलं च विन्यस्य सर्वं च पुटपाचितम् ॥ मुद्गमात्रं पिबेन्नित्यं पयसा च गवां हितम् ॥ ज्वरातिसारे मांद्ये च निद्रानाशेऽरुचौ तथा ॥ योजयेद्भिषजा नित्यं बलपुष्टिकरं परम् ॥

अर्थ-हींगूल ४ तोले, अफीम ६ तोले, सुहागा २ तोले और जायफल २ तोले इन सबको एकत्र कर पुटपाक करे, फिर मूंगके समान गोली बनावे। १ गोली गौके दूधसे देवे तो ज्वरातिसार, मंद अग्नि, निद्रानाश, अरुचि इनको नष्ट करे तथा यह औषध बल और पुष्टता करती है ॥

दुग्धयोग।

विबद्धवातो विट्शूलपरीतः सप्रवाहिकः ॥ सरक्तपित्तश्च पयः पिबेत्तृष्णासमन्वितः ॥ यथामृतं तथा क्षीरमतीसारेषु पूजितम् ॥ सरक्तोत्थेषु ततोऽयमपां भागेषु संस्कृतम् ॥

अर्थ-आधा जल और आधा दूध मिलायके दूध मात्र रहने पर्यंत औटावे इसको पेटकी बादी और शूल, प्रवाहिका, रक्तपित्त और प्यास इनपर देना

चाहिये। जैसे अमृत होता है ऐसा यह दूध है इसको संपूर्ण रक्तविकारोंपर देना चाहिये ॥

कट्फलादिचूर्ण ।

कट्फलं मधुकं लोध्रस्त्वग्दाडिमफलस्य च ॥
सतंदुलजलं चूर्णं वातपित्तातिसारनुत् ॥

अर्थ–कायफल, मुलहटी, लोध और अनारकी छाल इनका चूर्ण चावलोंके धोवनके जलसे पीवे तो वातपित्तातिसार नष्ट हो ॥

पित्तकफातिसार ।

द्विदोषलक्षणैर्विद्यादतीसारं द्विदोषजम् ॥
तेषां चिकित्सा प्रोक्तैव विशिष्टा च निगद्यते ॥

अर्थ–दो दोषोंके लक्षणोंसे द्विदोषज अतिसार रोग जानना, उस द्विदोषजोंकी चिकित्सा कह आये हैं परंतु इस जगह कुछ विशेष चिकित्साको कहते हैं ॥

मुस्तादिकाढा ।

मुस्ता सातिविषा मूर्वा वचा च कुटजः समः ॥
एषां कषायः सक्षौद्रः पित्तश्लेष्मातिसारहृत् ॥

अर्थ–नागरमोथा, अतीस, मूर्वा, वच और कूडेकी छाल इनका काढा कर सहत मिलायके सेवन करे तो पित्तकफातिसारका नाश करे ॥

समंगादिकाढा ।

समंगा धातकी बिल्वमाम्रास्थ्यंभोजकेशरम् ॥ बिल्वं मोचरसं लोध्रं कुटजस्य फलत्वचौ ॥ पिबेत्तंदुलतोयेन कषायं कल्कमेव च ॥ श्लेष्मपित्तातिसारघ्नं रक्तं वाथ नियच्छति ॥

अर्थ–खिरेटीकी जड, धायके फूल, बेलगिरी, आमकी गुठली, कमलकेशर, बेलकी छाल, मोचरस, लोध, कूडेकी छाल और इन्द्रजव इनका काढा अथवा चूर्ण चावलके धुले हुए पानीसे पीवे तो कफपित्तातिसार और रक्तातिसार इनका नाश करे ॥

वातकफातिसारनिदान ।

रसैः स्वादुकटुप्रायैरुभौ वातकफौ नृणाम् ॥ कुरुतस्तावतीसारं

रौद्रौ वह्निं निहत्य च ॥ द्रवं सफेनं पुरिषं तत्वतो ह्यामगंधिकम् ॥ सशब्दं वेदनावच्च तत्र संपरिपच्यते ॥ नित्यं गुडगुडायंतं तंद्रामूर्च्छाभ्रमक्लमैः ॥ प्रसक्तं सक्थिकक्ष्यूरुजानुपृष्ठास्थिशूलिनः ॥

अर्थ-मिष्ट और तीखे रसोंके अत्यंत सेवनसे वातकफ दोनों कुपित होते हैं और अग्निको शांत करके अतिसाररोगको प्रगट करे हैं, वह पतला, झागदार, कच्ची, दुर्गंधयुक्त, शब्दयुत और शूल, आम, गुडगुडाहटशब्दयुक्त होवे तथा तन्द्रा, मूर्च्छा, भ्रम, ग्लानि और कमर, जंघा, पिंडरी, पीठकी हड्डी इनमें पीडा इन लक्षणोंकरके युक्त हो उसको वातकफातिसार जानना ॥

वातकफातिसारिअन्न।

धान्यपंचकसंसिद्धो धान्यविश्वकृतोऽथवा ॥
आहारो भिषजा योज्यो वातश्लेष्मातिसारिणे ॥

अर्थ-वातकफातिसारी रोगीको धान्यपंचकके काढेमें अथवा धनिया और सोंठ इनके काढेमें सिद्ध करे हुए भोजनके पदार्थ वैद्य खानेको देवे ॥

चित्रकादिकाढा।

चित्रकातिविषा मुस्तं बला बिल्वं सनागरम् ॥
वत्सकत्वक्फलं पथ्या वातश्लेष्मातिसारनुत् ॥

अर्थ-चीतेकी छाल, अतीस, नागरमोथा, खरेटी, बेलगिरी, सोंठ, कूडेकी छाल, इंद्रजौ और हरड इनका काढा वातकफातिसारको दूर करे ॥

उपचारक्रम।

वातातिसारे यच्चोक्तं पाचनं ग्राहि भेषजम् ॥
तदत्रापि च युंजीत सपित्तकफमारुते ॥

अर्थ-जो वातातिसारमें औषधी कही है अथवा पाचन और ग्राही औषधी कही है वह इस पित्तयुक्त वातकफातिसारमें भी देनी चाहिये ॥

बिल्वादिकाढा।

बिल्वचूतास्थिनिर्यूहः पीतः सक्षौद्रशर्करः ॥
निहन्याच्छर्द्यतीसारं वैश्वानर इवाहुतिम् ॥

अर्थ-बेलगिरी, आमकी गुठलीका रस, मिश्री और सहत इन सबको मिला-

यके सेवन करे तो वांति और अतिसार इनका नाश करे जैसे अग्नि सबका नाश करे है ॥

प्रियंग्वादिकाढा ।

प्रियंग्वंजनमुस्ताख्यं पाययेत्तु यथाबलम् ॥
तृष्णातिसारछर्दिघ्नं सक्षौद्रं तंदुलाम्बुना ॥

अर्थ–फूलप्रियंगु, सुरमा और नागरमोथा इनका चूर्ण अथवा कल्कको चावलोंके धोवनके साथ सहत मिलायके बलाबल देखकर देवे तो तृषा, अतिसार और वांति इनका नाश करे ॥

आम्रादि काढा ।

आम्रास्थिमध्यमालूरफलक्वाथः समाक्षिकः ॥
शर्करासहितो हन्याच्छर्द्यतीसारमुल्बणम् ॥

अर्थ–आमके भीतरकी गुठली और बेलगिरी इनका काढा सहत और मिश्री मिलायके देवे तो वमन, अतिसार, तृषा, दाह, ज्वर और भ्रम इनका नाश होय ॥

मुद्गकषाय ।

कषायो भृष्टमुद्गानां सलाजमधुशर्करः ॥
निहन्याच्छर्द्यतीसारं तृष्णां दाहं ज्वरं भ्रमम् ॥

अर्थ–भुनीहुई मूंगका काढा, खील, सहत और मिश्री मिलायके देवे तो छर्दि, अतिसार, तृषा, दाह, ज्वर और भ्रम इनका नाश करे ॥

पटोलादि काढा ।

पटोलयवधान्याकक्वाथः पीतः सुशीतलः ॥
शर्करामधुसंयुक्तश्छर्द्यतीसारनाशनः ॥

अर्थ–पटोलपत्र, इन्द्रजौ और धनिया इनका काढा शीतल करके सहत और मिश्री डालके पीवे तो छर्द्यतिसारनाशक होय ॥

जंब्वादि काढा ।

जंब्वाम्रपल्लवोशीरं वटशृंगावरोहकम् ॥ रसः क्वाथोऽथवा चूर्णं क्षौद्रेण सह योजितम् ॥ छर्दिं ज्वरमतीसारं मूर्च्छां तृष्णां च दुर्जयाम् ॥ नियच्छत्याचिराद्धंति ग्लानिं वानेकहेतुकाम् ॥

अर्थ-जामुन और आम इन दोनोंके कोमल पत्ते, नेत्रवाला, वडकी कली और सिंघाडे इनका काढा अथवा चूर्ण अथवा रस सहतसे सेवन करे तो ओकारियोंका आना, ज्वर, अतिसार, मूर्च्छा और प्यास ये यदि दुर्जयभी होवें तथापि इनका नाशक है और अनेक प्रकारका अतिसारकाभी नाशक है ॥

पुरीषातिसारपर।

दीप्ताग्निभिः पुरीषं यत्सार्यते फेनिलं शकृत् ॥
स पिबेत्फाणितं शुंठी दधि तैलं पयो घृतम् ॥

अर्थ-दीप्ताग्निवाले पुरुषको झागयुक्त और मलमिला दस्त होवे वह राब, सोंठ, दही, तेल, दूध, घी ये पदार्थ भोजन करे ॥

पुरीषक्षयपर।

बलाविश्वशृतं क्षीरं गुडतैलानुयोजितम् ॥
दीप्ताग्निं पाययेत्प्रातः सुखदं वर्चसः क्षये ॥

अर्थ-दीप्ताग्निवाले पुरुषके मलक्षय होनेसे उसको खिरेटी, सोंठ इनके योगसे तपा हुआ दूध, तेल और गुड डालके प्रातःकाल पिलावे तो सुखकारक होय ॥

दूसरा प्रकार।

रंभाखंडं रुचिकरं सघृतं दधिमिश्रितम् ॥
खादेत्सेवेच्च मृद्वन्नं तद्धितं शकृतः क्षये ॥

अर्थ-केलाकी गहरका टूक, घी और दही इनमे मिलायके भक्षण करे तथा मृदु अन्न भोजन करे तो पुरीषक्षयपर अत्यंत हितकारी होय ॥

शोफातिसारपर देवदार्व्यादिकाढा।

सदेवदारुः सविषः सपाठः सजंतुशत्रुः सघनः सतीक्ष्णः ॥
सवत्सकः क्वाथ उदाहृतोऽसौ शोफातिसारांबुधिकुंभजन्मा ॥

अर्थ-देवदारु, अतीस, पाढ, वायविडंग, नागरमोथा, कालीमिरच, कूडेकी छाल इनका काढा शोफातिसाररूप समुद्रको अगस्त्य ऋषिके समान है ॥

विडंगादिकाढा।

विडंगातिविषा मुस्ता दारुपाठा कलिंगकम् ॥
मरीचेन समायुक्तं शोथातीसारनाशनम् ॥

अर्थ-वायविडंग, अतीस, नागरमोथा, देवदारु, पाढ, कूडेकी छाल और काली मिरच इनका काढा शोथातिसारनाशक है ॥

किराताादिकाढा ।

किराताब्दामृताविश्वचंदनोशीरवत्सकैः ॥
शोथातीसारशमनं विशेषाज्ज्वरनाशनम् ॥

अर्थ-चिरायता, नागरमोथा, गिलोय, सोंठ, चंदन, खस और कूडेकी छाल इनका काढा शोथातिसार और विशेषकरके ज्वरका नाश करे है ॥

पाठादिकाढा ।

पाठाविषावत्सकमेघदारुविडंगकामोचरसैः कषायम् ॥
कृतं प्रभाते प्रपिबेद्दार्विशोफातिसारार्णववाडवाग्निः ॥

अर्थ-पाढ, अतीस, कूडेकी छाल, नागरमोथा, दारुहलदी, वायविडंग और मोचरस इनका काढा प्रातःकाल पीवे तो शोफातिसारसमुद्रके सोखनेको वाडवाग्निरूप है ॥

शोथघ्नादिकाढा ।

शोथघ्नींद्रयवा पाठा विडंगातिविषा घनाः ॥
क्वथित्वा सोषणाः पीताः शोथातीसारनाशनाः ॥

अर्थ-पुनर्नवा, इन्द्रजव, पाढ, वायविडंग, अतीस और नागरमोथा इनका काढा सोंठ, मिरच और पीपलका चूर्ण मिलाकर पीवे तो शोथातिसार नाश होवे ॥

भस्त्रातिसारनिदान ।

कोष्ठाग्निः शीतपवनेन पच्यते न वारि तृषार्तः समये न पिबाति जंतुः ॥ शैथिल्यस्निग्धसदृशं द्रवमामयुक्तं भस्त्रातिसारकगदः खलु एष दिष्टः ॥

अर्थ-शीतवायुक याग करके कोष्ठाग्नि आहारको उत्तम रीतिसे पचावे नहीं तथा तृषा लगे उस समय पानी पीवे नहीं उसके शिथिल, चिकना, पतला और आमयुक्त ऐसा भस्त्रा शौचका होता है उसको भस्त्रातिसार कहा है ॥

शाल्मलिचूर्ण ।

शाल्मलीशुष्कनिर्यासयवानी धातकी शिफा ॥ तिला सर्जर-

सः सर्पिर्लोध्रं समविचित्रितम् ॥ तद्भक्षणमतीसारं निहंति भसरापहम् ॥

अर्थ-मोचरस, अजवायन, धायके फूल, तिल, राल और लोध इनका चूर्ण घृतके साथ सेवन करे तो यह भस्रातिसारको नाश करे ॥

हिंग्वादिजलयोग।

हिंगु शुंठी विडंगं च सौवर्चलसमन्वितम् ॥
कर्षयुग्ममितं तोयं भक्षितं भसरापहम् ॥

अर्थ-हींग, सोंठ, वायविडंग और संचलनिमक इनका चूर्ण दो तोले जलसे दे तो भस्रातिसारका नाश होय ॥

रोहिण्यादिपाचन।

रोहिण्यतिविषापाठावचाकुष्ठसमुद्भवः ॥
क्काथः पीतो निहंत्येव सर्वातीसारजां रुजम् ॥

अर्थ-कुटकी, अतीस, पाढ, वच और कूठ इनका काढा पीवे तो यह संपूर्ण अतिसारको नाश करे ॥

ह्रीबेरादिकाढा।

ह्रीबेरधातकीलोध्रपाठालज्जालुवत्सकैः ॥ धान्यकातिविषामुस्तगुडूचीबिल्वनागरैः ॥ कृतः कषायः शमयेदतीसारं चिरोत्थितम् ॥ अरोचकामशूलास्रज्वरघ्नः पाचनः स्मृतः ॥

अर्थ-नेत्रवाला, धायके फूल, लोध, पाढ, लजालू, कूडेकी छाल, धनिया, अतीस, नागरमोथा, गिलोय, कोमल बेलफल और सोंठ इन बारह औषधोंका काढा पीनेसे बहुत दिनका अतिसार, अरुचि, आमशूल और ज्वर इनको दूर करे (उसी प्रकार बेलकी छाल तथा बडे आमकी छाल इनका काढा करके उसमें शहत और मिश्री डालके पीवे तो सर्व अतिसार नष्ट हों ऐसा ग्रंथांतरमें लिखा है) ॥

धातक्यादिकाढा बालकोंके सर्वातिसारपर।

धातकीबिल्वलोध्राणि वालकं गजपिप्पली ॥ एभिः कृतं शृतं शीतं शिशुभ्यः क्षौद्रसंयुतम् ॥ प्रदद्यादवलेहं वा सर्वातीसारशांतये ॥

अर्थ-धायके फूल, बेलगिरी, लोध, नेत्रवाला और गजपीपल इन पांच औष-

थोंका काढा करे फिर शीतल होनेपर उसमें शहत डालके पिवावे अथवा चटनी बनायके देवे तो बालकोंके सर्व अतिसार दूर होवें ॥

आनंदभैरवरस।

दरदं वत्सनाभं च मरिचं टंकणं कणा ॥ चूर्णयेत्समभागेन रसो ह्यानंदभैरवः ॥ गुंजैका वा द्विगुंजं वा बलं ज्ञात्वा प्रयोजयेत् ॥ मधुना लेहयेच्चानु कुटजस्य फलं त्वचम् ॥ चूर्णितं कर्षमात्रं तु त्रिदोषोत्थातिसारनुत् ॥ दध्यन्नं दापयेत्पथ्यं गवाज्यं तक्रमेव च ॥ पिपासायां जलं शीतं विजया च हिता निशि ॥

अर्थ–शुद्ध करा सिंगरफ, शुद्ध करा बच्छनागविष, काली मिरच, सुहागा, और पीपल ये पांच औषध समान भाग लेकर सबको एकत्र खरल कर बारीक चूर्ण करे। इसको आनंदभैरवरस कहते हैं। यह आनंदभैरव इन्द्रजौ और कूडेकी छाल दोनों १ तोला लेकर चूर्ण करके इसके साथ रोगीका बलाबल विचारके १ रत्तीके अनुमान देवे, अथवा दो रत्ती प्रमाण शहतसे देवे तो त्रिदोषसे हुए अतिसारको नष्ट करे, इसपर पथ्यमें गौका दही भात, अथवा घी भात अथवा छाँछ भात देवे और जब २ प्यास लगे तब २ शीतल जल पनिको देय तथा रात्रिमें थोडी भांग शुद्ध कर घोंट छानके पीवे तो यह भांग अतिसारवालेको हितकारी होती है ॥

आनंदरस।

जातीफलं सैंधवहिंगुलं च वराटशुंठीविषहेमबीजम् ॥ सपिप्पलीकं वटिकां च कुर्याद्गुंजाप्रमाणां जठरामयघ्नीम् ॥ निहंति वातं कफशूलमात्रमामातिसारं ग्रहणीविकारम् ॥ निहंति शुष्कं सितया समेतं रसोऽयमानंद इति प्रदिष्टः ॥

अर्थ–जायफल, सैंधानिमक, हींगलू, कौडीकी भस्म, सोंठ, बच्छनागविष, धतूरेके बीज, पीपल ये सब एकत्र करके खरल करे फिर १ रत्तीकी गोली बनावे। १ गोली मिश्रीके साथ देवे तो पेटका रोग, वादी, कफ, शूल, आमातिसार, संग्रहणी और योनिरोग इनका नाश करे। इसको आनंदरस ऐसा कहते हैं ॥

दाडिमाष्टक।

कर्षोन्मिता तुगाक्षीरी चातुर्जातं त्रिकार्षिकम् ॥ यवानी धान्य-

काजाजी ग्रंथी व्योषपलांशकम् ॥ पलानि दाडिमान्यष्टौ सिता-
याश्चैकतः कृतम् ॥ गुणैः कपित्थाष्टकवच्चूर्णं तद्दाडिमाष्टकम् ॥

अर्थ--वंशलोचन १ तोला, दालचीनी, पत्रज, इलायचीके दाने, नागकेशर सबको मिलायके ३ तोले लेवे, अजवायन, धनिया, जीरा, पीपरमूल, सोंठ, काली मिरच, पीपर सब मिलाकर चार तोले लेवे, अनारदाना बत्तीस तोले, मिश्री ३२ बत्तीस तोले सबको एकत्र करके चूर्ण करे। इसको दाडिमाष्टक चूर्ण कहते हैं। यह गुणोंमें कपित्थाष्टकके समान है ॥

लघुगंगाधरचूर्ण ।

मुस्तमिंद्रयवं बिल्वं लोध्रं मोचरसं तथा ॥ धातकीं चूर्णयेत्तक्र-
गुडाभ्यां पाययेत्सुधीः ॥ सर्वातिसारशमनं निरुणद्धि प्रवाहि-
काम् ॥ लघुगंगाधरं नाम चूर्णं ग्राहकरं परम् ॥

अर्थ--नागरमोथा, इन्द्रजव, बेलगिरी, लोध, मोचरस और धायके फूल इन छः औषधोंका चूर्ण करके छाँछमें गुड मिलायके उसमें इस चूर्णको मिलायके पीवे तो संपूर्ण अतिसारोंको दूर करे तथा प्रवाहिकाको बंद करे। इस चूर्णको लघुगंगाधर कहते हैं तथा यह चूर्ण मलको अवष्टंभ करता उत्तम है ऐसा जानना ॥

वृद्धगंगाधरचूर्ण ।

मुस्तारलुकशुंठीभिर्धातकीलोध्रवालकैः ॥ बिल्वमोचरसाभ्यां
च पाठेंद्रयववत्सकैः ॥ आम्रबीजं प्रतिविषा लज्जालूरिति चूर्णि-
तम् ॥ क्षौद्रतंदुलपानीयैः पीतैर्याति प्रवाहिका ॥ सर्वातिसारग्रहणी
प्रशमं याति वेगतः ॥ वृद्धगंगाधरं चूर्णं सरिद्वेगविबंधकम् ॥

अर्थ—नागरमोथा, टेंटू, सोंठ, धायके फूल, लोध, नेत्रवाला, बेलगिरी, मोचरस, पाढ, इन्द्रजव, कूडेकी छाल, आमकी गुठली, अतीस और लजालू इन चौदह औषधोंका चूर्ण चाँवलके धोवनमें सहत मिलायके इस पानीके साथ पीवे तो प्रवाहिका और सर्व प्रकारके अतिसार तथा संग्रहणी तत्काल दूर होवे। इस चूर्णको वृद्धगंगाधर कहते हैं। यह चूर्ण नदीसमान वेगवाले अतिसार-कोभी स्तंभन करे है ॥

अजमोदादिचूर्ण ।

अजमोदा मोचरसं सशृंगबेरं सधातकीकुसुमम् ॥

गोदधिमंथितयुक्तं गंगामपि वाहिनीं रुंध्यात् ॥

अर्थ–अजमोदा, मोचरस, अदरख और धायके फूल इन चार औषधोंके चूर्णको विना पानीके मथी हुई गौकी छाँछमें मिलायके पीवे तो गंगाके समान वेगवालेभी अतिसारको स्तंभन करता है अर्थात् अत्यंत प्रबल अतिसारभी थम जावे ॥

बृहद्दाडिमाष्टक ।

दाडिमस्य पलान्यष्टौ शर्करायाः पलाष्टकम् ॥ पिप्पली पिप्पलीमूलं यवानी मरिचं तथा ॥ धान्यकं जीरकं शुंठी प्रत्येकं पलसंमितम् ॥ कर्षमात्रा तुगाक्षीरी त्वक्पत्रैलाश्च केशरम् ॥ प्रत्येकं कोलमात्राः स्युस्तच्चूर्णं दाडिमाष्टकम् ॥ अतीसारं क्षयं गुल्मं ग्रहणीं च गलग्रहम् ॥ मंदाग्निं पीनसं कासं चूर्णमेतद्व्यपोहति ॥

अर्थ–अनारदाना ८ पल, मिश्री ८ पल, पीपल, पीपरामूल, अजमोदा, काली मिरच, जीरा और सोंठ ये सात औषध एक २ पल लेवे तथा वंशलोचन १ तोला, दालचीनी, पत्रज, इलायची और नागकेशर ये चार औषध एक एक कोल लेवे सब औषधोंको कूट पीस चूर्ण करे। इसको बडा दाडिमाष्टक चूर्ण कहते हैं। यह सेवन करनेसे अतिसार, क्षय, गोला, संग्रहणी, कंठरोग, मंदाग्नि, पीनस और खाँसी इनको नष्ट करे ॥

धातक्यादिचूर्ण ।

श्रीधातकीमोचरसाब्दलोध्रकालिंगविश्वौषधचूर्णमेतत् ॥
पेयं गुणाढ्यं गुडतक्रयुक्तं गाढं त्वतीसारकनाशकं च ॥

अर्थ–बेलगिरी, धायके फूल, मोचरस, नागरमोथा, लोध, कूडेकी छाल और सोंठ इनका चूर्ण गुड और छाछ इनसे पीवे तो अतिसार नाश होवे ॥

भल्लातादिचूर्ण ।

भल्लातानां द्विखंडानां द्वे पले भर्जिते क्षिपेत् ॥ शुंठ्याः पलं तु चेतक्याः पलार्धं सुमनापलम् ॥ कर्षं मेथिवेल्लजीराः सर्षपाः कोलमात्रतः ॥ ततो यवान्यर्धपलं पिप्पलीशामठोषणम् ॥ बिडं सैंधवजीरं च क्रिमिणिसंज्ञिकं तथा ॥ कर्षप्रमाणं विज्ञेयं वैद्यविद्याविशारदैः ॥ सर्वमेकत्र संचूर्ण्य यथासात्म्यं तु भक्षयेत् ॥ दध्ना सह तथा खादेत्सर्वातीसारनाशनम् ॥

अर्थ-मिलावे दो टूक करके भुने हुए ८ तोले, सोंठ ४ तोले, हरड २ ताल, मेथी, काली मिरच और जीरा ये एक तोला, सरसों २ मासे, अजवायन २ तोले और पीपल हींग, चीता, बिडनोन, सैंधा, जीरा तथा किरमानी अजवायन ये प्रत्येक एक एक तोला लेय, इस प्रमाण सब औषध एकत्र कर चूर्ण करलेवे। इसमेंसे प्रकृतिके अनुसार दहीके साथ देवे तो यह सर्व अतिसारोंका नाश करे॥

लघुलाईचूर्ण।

सूतं गंधं त्रिकटुकं दीप्यकं जीरकद्वयम्॥ सौवर्चलं सैंधवं च रामठं विडमेव च॥ शक्राह्वस्य च चूर्णं तु चूर्णतुल्यं प्रदापयेत्॥ संग्रहं शूलमानाहं हन्यान्नानातिसारकम्॥

अर्थ-शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, सोंठ, मिरच, पीपल, अजवायन, जीरा, काला जीरा, संचलनिमक, सैंधा, हींग और बिडनोन ये सब समान भाग लेवे और सब चूर्णके बराबर कूडेकी छालका चूर्ण ले सबको एकत्र करे। इसको लघुलाई चूर्ण कहते हैं। यह संग्रहणी, शूल, अफरा और नाना प्रकारके अतिसार इनका नाश करे॥

यवान्यादिचूर्ण।

यवानी पिप्पलीमूलचातुर्जातकनागरैः॥ मरीचाग्निजलाजाजीधान्यसौवर्चलैः समैः॥ वृक्षाम्लधातकीकृष्णाबिल्वदाडिमदीप्यकैः॥ त्रिगुणैः षड्गुणासीतैः कपित्थाष्टगुणीकृतैः॥ चूर्णोतिसारग्रहणीक्षयगुल्मानलामयान्॥ कासश्वासारुचिहिक्कां कपित्थाष्टमिदं जयेत्॥

अर्थ-अजवायन, पीपरामूल, दालचीनी, पत्रज, इलायचीके दाने और नागकेशर, सोंठ, मिरच, चीतेकी छाल, नेत्रवाला, जीरा, धनिया और संचल निमक ये सब समान भाग लेवे और तंतडीक, धायके फूल, पीपर, बेलगिरी, अनारदाना और पीला जीरा ये तिगुने लेवे, खाँड छःगुनी और कैथका गूदा आठगुना इनका चूर्ण एकत्र करे। इसको कपित्थाष्टक चूर्ण कहते हैं। यह अतिसार, संग्रहणी, क्षय, गोला, गलेका रोग, खाँसी, श्वास, अरुचि और हिचकी इनका नाश करे॥

वत्सकादिघृत।

वत्सकस्य च बीजानि दार्व्याश्चैव त्वगुत्तमा॥ पिप्पली शृंगवेरं

च लाक्षा कटुकरोहिणी ॥ षड्भिरेतैर्घृतं सिद्धं पेयं मंडाविश्रितम् ॥

अर्थ–इन्द्रजव, दारुहलदी, पीपल, सोंठ, लाख और कुटकी इन छः औषधोंसे घीको सिद्ध कर मंडके साथ पीवे तो अतिसार शमन होवे ॥

बिल्वतैल।

तुलां संकुट्य बिल्वस्य पचेत्पादावशेषितम् ॥ सक्षीरं साधयेत्तैलं श्लक्ष्णपिष्टैरिमैः समैः ॥ बिल्वं सधातकी कुष्ठं शुंठी रास्ना पुनर्नवा ॥ देवदारु वचा मुस्ता लोध्रमोचरसान्वितम् ॥ एतन्मृद्वग्निना पक्वं ग्रहण्यर्शोविकारनुत् ॥ बिल्वतैलमिति ख्यातमात्रिपुत्रेण भाषितम् ॥ ग्रहण्यर्शोविकारे ये स्नेहाः समुपदर्शिताः ॥ प्रयोज्यास्तेऽतिसारेऽपि त्रयाणां तुल्यहेतुता ॥

अर्थ–बेलगिरी ४०० चार सौ तोलेको कूटकर उसका चतुर्थांश काढा करे उसमें दूध और तेल ये मिलायके फिर बेलगिरी, धायके फूल, कूठ, सोंठ, रास्ना, पुनर्नवा, देवदारु, वच, नागरमोथा, लोध और सेमरका गोंद इनका कल्क मिलावे, फिर अग्निपर धरके औटावे जब तेलमात्र शेष रहे तब उतारले यह (बिल्वतैल) अत्रिपुत्रने कहा है। यह संग्रहणी, बवासीर और आतिसार इन पर योजना करे तथा संग्रहणी और अर्शरोगपर कहे हुए तैलादि उपचार वह तीनोंपरही सदृश हेतु है अतएव उनको संपूर्ण अतिसारोंपर योजना करने चाहिये ॥

शंखोदररस।

सूतभस्म बली लोहं विषं त्रिकटुकं समम् ॥ पिष्ट्वा निंबुजतोयेन शंखे सर्वचतुर्गुणे ॥ क्षिप्त्वा मृदं शुकैर्लिप्त्वा भांडे गजपुटे पचेत् ॥ शीते च प्राग्विषं क्षिप्त्वा वल्लमात्रं प्रयोजयेत् ॥ जातीफलं च विजयामधुनातिसृतौ ददेत् ॥ ग्रहण्यां चित्रकार्द्रांबुविजयाविश्वभेषजम् ॥ पृथग्देयं समधुना मरिचैश्च घृतान्वितम् ॥ वह्निमांद्यक्षये तद्वदुदरार्त्यनिलामये ॥ पथ्यं दध्ना च तक्रेण क्षीरशाकैश्च संयुतम् ॥

अर्थ–पारेकी भस्म, गंधक, सिंगियाविष, सोंठ, मिरच और पीपल ये समान भाग ले नींबूके रसमें खरल कर सबसे चौगुने शंखमें भर उसपर सात कप-

डमिट्टी करके किसी पात्रमें रखके गजपुटमें रखके फूंक देवे जब स्वांगशीतल होजावे तब उसमें एक भाग सिंगियाविष मिलायके सबका चूर्ण कर किसी शीशी आदि पात्रमें भरके धर देवे। फिर २ रत्ती इस रसको जायफल, भांग और शहत इनसे अतिसार और संग्रहणी इनपर देवे तथा चीतेकी छाल, अदरख, नेत्रवाला, भांग और सोंठ, मिरच इनका चूर्ण, घी और शहत इनके साथ मंदाग्नि, क्षय, उदर और वायु इनपर देवे, तथा पथ्यमें दही, छॉछ, दूध और शाग ये पदार्थ देवे॥

मूलिकाबंध।

रक्तसूत्रैः कटौ बद्धा सर्पाक्षी वाट्यमूलकैः॥
स्नुह्या वा सहदेव्या वा मूलं स्यादतिसारजित्॥

अर्थ-लाल सूत करके गिलोयको, खिरेटी, थूहर अथवा सहदेई इनकी जडको बाँधे तो अतिसारका नाश करे (इस जगह सर्पाक्षी करके गिलोयकाही ग्रहण है)॥

दाडिमीवटी।

शुंठी जातफलं चाहिफेनकं द्विगुणं भवेत्॥ अपक्कं दाडिमीबीजं सर्वतुल्यं प्रदापयेत्॥ अपक्कदाडिमीबीजं कोशे क्षिप्त्वा मृदालिपेत्॥ पुटपाकविधानेन पक्त्वा कोशसमन्वितम्॥ पिष्ट्वा कल्कं विधायाथ गुटिकाः संप्रकल्पयेत्॥ बादरास्थिप्रमाणेन तक्रेण सह दापयेत्॥ पक्कातिसारशमनी दाडिमीवटिका मता॥

अर्थ-सोंठ और जायफल इनकी दुगुनी अफीम और इनके समान हरे अनारके दाने कच्चे अनारमें डालके कपडामिट्टी करके पुटपाककी विधिसे पाक करके पीसके कल्क कर बेरके समान गोली बनावे। १ गोली छॉछके साथ देय तो अतिसारका नाश करे॥

बब्बूल्यादिस्वरस।

स्थूलबब्बूलिकापत्ररसः पानाद्व्यपोहति॥
सर्वातिसारांश्छ्योनाककुटजत्वग्रसोऽथवा॥

अर्थ-कांटे रहित बडे बबूलके पत्तोंका स्वरस पीनेसे संपूर्ण अतिसार दूर होते हैं अथवा टेंटूकी छालका स्वरस अथवा कूडेकी छालका स्वरस इनमेंसे कोई स्वरस पीनेसे संपूर्ण अतिसार दूर होवे॥

न्यग्रोधादिपुटपाक ।

न्यग्रोधादेश्च कल्केन पूरयेद्गौरतित्तिरैः ॥ निरंत्रमुदरं सम्यक्पु-
टपाकेन तत्पचेत् ॥ तत्कल्कः स्वरसक्षौद्रयुक्तः सर्वातिसारनुत् ॥

अर्थ–बड, गूलर, पीपल, पाखर और जलवेत इनकी छालका चूर्ण करके पानीमें पीस कल्क करे फिर इस कल्कको आँतें रहित सपेद तीतरके पेटमें भरके पूर्वोक्त पुटपाककी विधिसे अग्नि देकर पुटपाक करे, जब सिद्ध होजावे तब उस गोलेको बाहर निकाल मिट्टी पत्ते आदिको दूर कर उस तीतरके पेटमेंसे कल्क निकाल लेवे, उस रसमें शहत मिलायके पीवे तो संपूर्ण अतिसारके रोग दूर होते हैं ॥

अहिफेनयोग ।

अहिफेनं सुसंभृष्टं खर्परे मृदुवह्निना ॥
पक्वातिसारशमनं भेषजं नास्त्यतः परम् ॥

अर्थ–खिपडेमें अफीम डालके मंदी २ अग्निसे भूने फिर बलाबल विचारके देवे इसके समान पक्वातिसारशमनकर्त्ता दूसरी औषध नहीं है ॥

मुक्ताभस्मयोग ।

मुक्ताभस्मेति नामेदं दोषं दृष्ट्वा प्रदापयेत् ॥ गुंजार्धमेकगुंजं वा
कर्पूरेण सुवासितम् ॥ जातीफलादिसंयुक्तं रहस्यं परमं मतम् ॥

अर्थ–मोतीकी भस्म दोषोंका बलाबल विचारके एक रत्ती अथवा आध रत्ती अथवा डेढ रत्ती कपूर और जायफल आदिके साथ देवे । यह अतिसार रोगपर परम रहस्य प्रयोग कहा है ॥

जातीफलादिवटी ।

जातीफलं च खर्जूरमहिफेनं तथैव च ॥ समभागानि सर्वाणि नाग-
वल्लीरसेन च ॥ वल्लमात्रा वटी कार्या देया तक्रानुपानतः ॥
अतिसारं जयेद्घोरं वैश्वानर इवाहुतिम् ॥

अर्थ–जायफल, छुहारा और अफीम ये पदार्थ समान भाग लेकर नागवेलपानके रसमें २ रत्तीकी गोली बनायके छाँछके साथ देवे तो घोररूप अतिसारका नाश करे जैसे अग्नि आहुतिका नाश करे है ॥

मरीचादिवटी।

मरीचं खर्परं नागफेनं तंदुलतज्जलैः ॥ मर्द्यं तंदुलतोयेन गुटी सर्वातिसारजित् ॥ जीरकं विजया बिल्वं नागफेनं समांशकम् ॥ दधिनीरेण सा कार्या गुटी सर्वातिसारजित् ॥

अर्थ-मिरच, खपरिया और अफीम इन तीनों औषधोंको चावलके धोवनसे घोटके गोली बनावे। इसके सेवन करनेसे सर्व प्रकारके अतिसारोंका नाश करे। अथवा जीरा, भांग, बेलगिरी और अफीम ये पदार्थ समान ले दहीके जलमें घोटके गोली बनावे। यह गोली सर्वप्रकारके अतिसारोंका नाश करे है ॥

अंकोलकल्क।

अंकोलमूलकल्कश्च सक्षौद्रस्तंदुलांबुना ॥
अतिसारहरः प्रोक्तस्तथा विषहरः स्मृतः ॥

अर्थ-अंकोल वृक्षकी जडको पीसके कल्क करे उसमें शहत मिलाय चावलोंके धोवनके साथ पीवे तो अतिसार दूर होय, तथा वच्छनागादिक विष तथा सर्पादिकका विष दूर होय ॥

कपित्थकल्क।

मध्यं लीढ्वा कपित्थस्य सव्योपक्षौद्रशर्करम् ॥
कट्फलं मधुयुक्तं वा मुच्यते जठरामयात् ॥

अर्थ-कैथका गूदा, सोंठ, मिरच, पीपल और शहत, मिश्री ये एकत्र करके भक्षण करे अथवा कायफलके चूर्णको शहतके साथ चाटे तो पेटका रोग नष्ट होय ॥

आर्द्रकुटजावलेह।

कुटजत्वक्तुलामार्द्रां द्रोणनीरे विपाचयेत् ॥ पादशेषं शृतं नीत्वा चूर्णान्येतानि दापयेत् ॥ लज्जालुधातकी बिल्वं पाठा मोचरसस्तथा ॥ मुस्तं प्रतिविषा चैव प्रत्येकं स्यात्पलं पलम् ॥ ततस्तु विपचेद्भूयो यावद्दर्वीप्रलेपनम् ॥ जलेन छागदुग्धेन पीतो मंडेन वा जयेत् ॥ सर्वातिसारान्घोरांस्तु नानावर्णान्सवेदनान् ॥ असृग्दरं समस्तं च सर्वाशांसि प्रवाहिकाम् ॥

अर्थ–कूडेकी गीली छाल १ तुला ले जवकुट करके उसमें १ द्रोण पानी डालके काढा करे जब चतुर्थांश शेष रहे तब उतारके कपडेमें छान लेवे फिर लजालू, धायके फूल, बेलगिरी, पाढ, मोचरस, नागरमोथा और अतीस ये सात औषध एक २ पल प्रमाण लेके चूर्ण कर उस काढेमें डाल देवे फिर इस काढेको कडाहीमें चढायके फिर औटावे जब गाढा होकर कलछीसे लिपटने लगे तब उतार लेवे। इस अवलेहको पानीके साथ अथवा बकरीके दूधके साथ अथवा मंडके साथ पीवे तो पीडायुक्त तथा नीलपीतादिक अनेक प्रकारके वर्णवाला अतिसार, तथा घोररूप संपूर्ण अतिसार दूर होवे। तथा स्त्रियोंके संपूर्ण प्रकारके रक्तप्रदर तथा संपूर्ण बवासीर और प्रवाहिका जो अतिसारका भेद है ये सब रोग दूर होवें॥

दाडिमपुटपाक।

पुटपाकेन विपचेत्सपक्कं दाडिमीफलम्॥
तद्रसो मधुसंयुक्तः सर्वातीसारनाशनः॥

अर्थ–पके हुए अनारको पूर्वोक्त पुटपाककी विधिसे पुटपाक करके फिर उसके पत्ते और मिट्टी आदिको दूर करके अनारको निकाल लेवे फिर उसको दाबकर उसका रस निकाल लेवे इसको पीवे तो संपूर्ण अतिसार दूर होवें॥

जातीफलादिपुटपाक।

जातीफलं सफेनं टंकं गंधकजीरके॥ एतानि समभागानि बाल-
दाडिमबीजकैः॥ पेषयेत्तेन कल्केन पूरयेद्दाडिमीफलम्॥
अंगारे तच्च गोधूमचूर्णेनालेपितं पचेत्॥ अतीसारस्तंभनं
स्यात्परं दीपनपाचनम्॥

अर्थ–जायफल, अफीम, सुहागा, गंधक और जीरा ये समान भाग लेवे और इनकी बराबर ताजा अनारदाना लेवे सबको एकत्र खरल करे फिर इस घुटी हुई पिट्ठीको अनारके भीतर भरके बाहर चून लगायके अंगारोंपर भूने तो यह अतिसारको स्तंभन करे, दीपन और पाचन होवे, रोगीका बलाबल विचारके २ रत्ती या चार रत्ती देवे॥

मोचरसादिपुटपाक।

समोचसारं सहनागफेनं सतीनसस्यं पुटपाकयोगात्॥
निहंति मालूरफलं नराणां सर्वातिसारे ह्यनुभूतमेतत्॥

अर्थ-मोचरस, अफीम, जायफल और बेलगिरी इन सबको एकत्र कूट पीस बिजोरेमें (नींबूका भेद है) भरके पुटपाककी विधिसे पुटपाक करे यह सर्वातिसारनाशक अजमाया हुआ प्रयोग है ॥

लघ्वीमाईचूर्ण ।

लघ्वीमाई मोचरसमाम्रबीजाश्मभेदकम् ॥ धातकीपुष्पकं चैव तथातिविषकं स्मृतम् ॥ सर्वाणि शाणमानानि पृथग्ग्राह्याणि पंडितैः ॥ अहिफेनं द्विशाणं स्याद्गैरिकं च द्विशाणकम् ॥ सूक्ष्मचूर्णं विधायाथ माषमानं तु दापयेत् ॥ तंदुलानां जलेनैव ह्यामशूलातिसारके ॥ रक्तजेऽपि विशेषेण देयं सर्वातिसारके ॥ प्रेमाख्यपंडितेनैव ह्यनुभूतं पुनः पुनः ॥

अर्थ-छोटीमाई, मोचरस, आमके भीतरकी गुठली, पाखानभेद, धायके फूल, अतीस ये प्रत्येक चार २ मासे ले और अफीम ८ मासे, गेरू ८ मासे सबका बारीक चूर्ण करे फिर इसमेंसे २ मासे चावलोंके धोवनके साथ देवे तो आमका शूल और आमातिसार, रक्तातिसार एवं संपूर्ण अतिसारोंमें देवे । यह प्रेम पंडितका वारंवार अनुभव करा हुआ चूर्ण है ॥

दूसरी दाडिमीवटी ।

विश्वा च शतपुष्पा च यष्ट्याह्वं चाहिफेनकम् ॥ खर्जूरस्य फलं बिल्वं तथा मोचरसं स्मृतम् ॥ समभागानि सर्वाणि सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत् ॥ अपक्वदाडिमीबीजं सर्वतुल्यं प्रदापयेत् ॥ अपक्वदाडिमीबीजकोशे क्षिप्त्वाखिलं हि तत् ॥ पुटपाकविधानेन पक्त्वा कोशसमन्वितम् ॥ पिष्ट्वा कल्कं विधायाथ गुटिकाः संप्रकल्पयेत् ॥ कर्कंधूवत्प्रमाणेन तक्रेण सह दापयेत् ॥ पक्वातीसारशमनो दाडिमीवटिका स्मृता ॥

अर्थ-सोंठ, सौंफ, मुलहटी, अफीम, खजूरके फल अर्थात् छुहारे, कच्चा बेलफल और मोचरस ये सब बराबर ले सबका बारीक चूर्ण करे फिर इसमें सबकी बराबर कच्चे अनारके बीज मिलावे सबको कूट पीस कच्चे अनारके फल खाली करके भर देवे ऊपर उसके कपडमिट्टी देकर पुटपाककी विधिसे परिपक्व करे जब पुटपाक हो जावे तब आगसे निकालके उस अनारकी कपडमिट्टी दूर करके

खरलमें डालके उस अनारको पीस कल्क कर बेरके बराबर गोली बनावे। एक गोलीको छाँछके साथ देवे। यह पक्कातिसारके शमन करनेवाली दाडिमीगुटिका कही है।

शतपुष्पादिचूर्ण।

शतपुष्पा च विश्वा च श्वेताजाजी हरीतकी॥ खाखसस्य फलं चैव पलार्धं तु पृथक्पृथक्॥ सूक्ष्मचूर्णं विधायाथ घृतभृष्टं तु कारयेत्॥ सर्वार्द्धा तु सिता देया पलार्द्धं दधिसंयुतम्॥ प्रातःकाले भक्षयेत्तु सर्वातिसारनाशनम्॥ पथ्यं कुर्याद्विशेषेण शालिभक्तं सतक्रकम्॥

अर्थ—सौंफ, सोंठ, सपेद जीरा, हरड, पोस्तके डोडा ये प्रत्येक दो दो तोले लेवे सबका बारीक चूर्ण करके घीमें भून लेवे और सब चूर्णसे आधी सपेद कची खांड मिलावे। इस चूर्णको २ तोले लेके दहीके साथ प्रातःकाल खाय तो सर्वप्रकारके अतीसार दूर होवें तथा इसके ऊपर दहीभातका पथ्य देना चाहिये।

लीलावतीवटी।

मस्तंगी तीक्ष्णलोध्रोदककुटजमदाश्वाम्रमज्जा मधूकं साभापुष्पं सजातीफलमथ कलिका मुद्रिता सारजाता॥ वांशीपित्साथ माजूफलमपि लघुरं वष्टिकाशाणमेषा प्रत्येकं खादिरं त्रिस्त्वथ पिचुयुगलं सोमकाबीजमज्जः॥ एकीकृत्वा प्रमर्द्य सकलमिदमथो यामयुग्मं नवीनैर्नीरैः पोस्तप्रभूतैर्लघुबदरमिता संविधेया वटी सा॥ सर्वातिसारहंत्री बलजठरशिखीप्रोद्यदोजःप्रकर्त्री तक्रश्यामाकलाजाकरकदधि हितं षष्टिका कोद्रवाश्च॥

अर्थ—रूमीमस्तंगी, राई, काली मिरच, लोध, नेत्रवाला, कूडेकी छाल, आमकी गुठली, महुआ, साभपुष्प, जायफल, सेमरकी मुँहमुदी कली, वंशलोचन, माजूफल, छोटीमाई ये प्रत्येक चार २ मासे लेवे खैरसार तीन तोले कोहफलके बीज इन सबको एकत्र कर पीस ले फिर नये पोस्तके डोडोंके जलसे दो प्रहर खरल करके छोटे बेरके समान गोली बनावे। यह संपूर्ण अतिसारको नष्ट करे, बल बढावे, उदरकी जठराग्निको प्रबल करे। इसके ऊपर पथ्यमें छाँछ, सामाखिया, खील, अनार, दही, सांठी चावल और कोदों ये देवे॥

नृसिंहपोटलीरस।

रसश्च गंधपाषाणः प्रत्येकः कर्षमात्रकः ॥ श्लक्ष्णचूर्णं द्वयोः सम्यक्कुर्याद्वैद्येन निश्चितम् ॥ तच्चूर्णं पीतवर्णाभकपर्दाभ्यंतरे कृतम् ॥ शरावपुटके न्यस्य लिप्त्वा संभृतगोमयैः ॥ सुदुह्याग्नौ पचेत्तावद्यावद्गच्छति भस्मताम् ॥ समुद्धृत्याऽश्मना सर्वं चूर्णितं सकपर्दकम् ॥ गव्येन सर्पिषा नित्यं भक्षयेद्रक्तिकाद्वयम् ॥ ज्वरातिसारकं सर्वं हन्याच्चूर्णं च दुर्जयम् ॥ अतीसारं समग्रं च ग्रहणीं सर्वजां तथा ॥ चिरज्वरं च मंदाग्निं क्षीणज्वरहरं च तत् रस एष नृसिंहस्य मता पोटलिका हिता ॥ हिता सर्वज्वरीणां तु सर्वातीसारिणां शुभा ॥

अर्थ-पारा, गंधक प्रत्येक एक २ तोला, दोनोंका वारीक चूर्ण करे इस चूर्णको पीली कौडियोंके भीतर भरे, फिर उन कौडियोंको शरावसंपुटमें रख कपडमिट्टी करके आरने उपलोंमें रखके फूंक देवे, जब भस्म हो जावे तव सरावमेंसे उन कौडियोंको निकाल खरलमें डालके पीस डाले, इस भस्ममेंसे २ रत्ती ले गौके घीसे नित्य भक्षण करे तो यह ज्वरातिसार दुर्जयको भी शीघ्र दूर करे तथा सर्व प्रकारके अतिसार, सर्व दोषोंकी संग्रहणी, प्राचीनज्वर, मंदाग्नि, क्षीणज्वर इन सर्व रोगोंको यह नृसिंहपोटलीरस दूर करे है। यह सर्व प्रकारके ज्वरोंमें तथा सर्वप्रकारके अतिसारोंमें हितकारी है।

गंगाधररस।

मुस्ता मोचरसं लोध्रं कुटजत्वक्तथैव च ॥ बिल्वास्थि धातकीपुष्पमहिफेनं च गंधकम् ॥ शुद्धं हि पारदं चैव सर्वमेकत्र मर्दयेत् ॥ रसो गंगाधरो नाम्ना माषमात्रं प्रयोजयेत् ॥ वल्लमात्रमिदं खादेद्गुडतक्रसमान्वितम् ॥ सर्वातिसारग्रहणी प्रशमं याति वेगतः ॥ पथ्यं तक्रौदनं देयं सात्म्यं ज्ञात्वा भिषग्वरः ॥

अर्थ-नागरमोथा, मोचरस, लोध, कूडेकी छाल, बेलगिरी, धायक फूल, अफीम, गंधक और शुद्ध पारा प्रत्येक समान भाग लेकर खरल करे तो यह गंगाधररस सिद्ध होय। इसमेंसे १ महीनेपर्यंत ३ रत्ती गुड और छॉछके साथ

खाय तो सर्वप्रकारके अतिसार दूर होवें और संग्रहणी दूर हो । इसके ऊपर छाँछ भात खानेको वैद्य देवे, परंतु उस रोगीका सात्म्यभी जानना जरूर है अर्थात् इस रोगीको क्या २ वस्तु पचती है ।

अतिसारमें लवणनिषेध ।

सर्वेषु मलभेदेषु लवणं न प्रयोजयेत् ॥
तद्धि तैक्ष्ण्यात्सरत्वाच्च दोषक्षोभाय कल्पते ॥

अर्थ-संपूर्ण मलभेदोंमें अर्थात् दस्तकी बीमारीमें निमक खानेको नहीं देना चाहिये, क्योंकि निमक तीक्ष्ण है और दस्तावर है इसवास्ते इसके सेवन करनेसे दोष क्षुभित होते हैं ॥

प्रवाहिकासंप्राप्ति ।

वायुः प्रवृद्धो निचितं बलासं नुदत्यधस्तादहिताशनस्य ॥
प्रवाहतोऽल्पं बहुशो मलाक्तं प्रवाहिकां तां प्रवदंति तज्ज्ञाः ॥

अर्थ-अपथ्य सेवन करनेवाले पुरुषके कुपित हुई जो वात सो संचित हुए कफको मलसंयुक्त करके वारंवार गुदाके मार्गसे बाहर निकाले और मरोडाके साथ थोडा थोडा मल निकाले इसको प्रवाहिका कहते हैं । प्रवाहिका और अतिसार इन दोनोंका एकसा धर्म है इसीसे अतिसाररोगमें प्रवाहिका कही है । परंतु अतिसारमें अनेक प्रकारके द्रवधातु निकले हैं और प्रवाहिकामें केवल कफ निकले है । इतना भेद है । इसमें (निचितं बलासं) यह जो पद कहा अर्थात् कफसे मिलकर सो यह केवल कफका तो उपलक्षण है अर्थात् कफके कहनेसे पित्त और रुधिरभी जानना । भोजने इस रोगका नाम विवसी कहा है, पराशरऋषिने इसको अन्तरग्रंथी कहा है, हारीतऋषिने निश्वारक कहा है, कोई आचार्य निर्वाहिका कहते हैं ॥

प्रवाहिका वातकृता सशूला पित्तात्सदाहा सकफा कफाच्च ॥
सशोणिता शोणितसंभवा च ताः स्नेहरूक्षप्रभवा मतास्तु ॥

अर्थ-वातकी प्रवाहिकामें शूल होता है, पित्तकी दाहयुक्त, कफकी कफयुक्त और रक्तसे रक्तयुक्त होती है, यह चिकने और रूखे पदार्थ भोजन करनेसे होय है अर्थात् चिकने पदार्थसे कफकी, रूखे पदार्थसे वातकी, तुशब्दकरके तीक्ष्ण और खट्टे पदार्थसे क्रमसे पित्तकी और रुधिरकी होती है ऐसा जानना ॥

प्रवाहिकालक्षणादि।

तासामतीसारवदादिशेच्च लिंगं क्रमं चामविपक्वतां च ॥

अर्थ-इस प्रवाहिकाके लक्षण क्रम आम और पक्वावस्था ये अतिसार निदानके सदृश जानना ॥

अतिसारनिवृत्तिलक्षण।

यस्योच्चारं विना मूत्रं सम्यग्वायुश्च गच्छति ॥
दीप्ताग्नेर्लघुकोष्ठस्य स्थितस्तस्योदरामयः ॥

अर्थ-जिस मनुष्यको मूत्र करते समय दस्त न होय और अपानवायु जिसकी शुद्ध निकले और अग्नि देदीप्यमान होवे, कोठा हलका होवे, उस मनुष्यका अतिसार गया जानिये ॥

बालबिल्वकल्क।

कल्कः स्याद्बालबिल्वानां तिलकल्कश्च तत्समः ॥
दध्नः सारोऽम्लस्नेहाढ्यो हन्याद्वै तत्प्रवाहिकाम् ॥

अर्थ-कोमल बेलफलोंको कूटकर कल्क तथा कल्कके समान तिलकल्क, दहीकी मलाई तथा स्नेहयुक्त खटाई ये सब एकत्र करके भक्षण करे तो प्रवाहिकाका नाश करे ॥

मुद्गयूषादि।

मुद्गयूषरसं तक्रं धान्यजीरकसंयुतम् ॥ तत्षड्गुणमिति प्रोक्तं सैंधवेन समन्वितम् ॥ अग्निसंदीपनं प्रोक्तं ग्रहणीदोषनाशनम् ॥
अरोचकं ज्वरं चैव श्रेष्ठमेतत्प्रवाहिके ॥

अर्थ-मूंगका यूष, रस, छॉछ, धनिया, जीरा और सैंधानिमक इनके यूषको षड्गुण यूष कहते हैं। यह अग्नि दीपन करता है, संग्रहणी, अरुचि, ज्वर और प्रवाहिका इनपर उत्तम है ॥

बालबिल्वादियोग।

बालबिल्वं गुडं तैलं पीतं वा मरिचोद्भवम् ॥
त्र्यहात्प्रवाहिकां हन्याच्चिरकालानुबंधिनीम् ॥

अर्थ-कच्चा बेलफल और काली मिरच इसका काढा गुड और तेल डालके सेवन करे तो तीन दिनमें बहुत दिनकीभी प्रवाहिकाका नाश करे ॥

बिल्वपेश्यादिकाढा ।

बिल्वपेशी गुडं लोध्रं तैलं मरिचसंयुतम् ॥
लिह्यात्प्रवाहिकाक्रांतः सत्वरं सुखमाप्नुयात् ॥

अर्थ-बेलगिरी, गुड, लोध, तेल और काली मिरच ये पदार्थ समान भाग ले चूर्ण करके चाटे तो प्रवाहिकावाले रोगीको सुख होय ॥

धातक्यादियोग ।

धातकी बदरीपत्रं कपित्थरसमाक्षिकम् ॥
सलोध्रमेकतो दध्ना पिबेन्निर्वाहिकार्दितः ॥

अर्थ-धायके फूल, बेरकी पत्ती, अथवा कैथका रस, शहत और लोध इनको दहीमें मिलायके प्रवाहिका रोगवाले प्राणीको पिवावे तो प्रवाहिकाका दुःख दूर हो ॥

मुस्तावत्सकादियोग ।

मुस्तावत्सकबीजं मोचरसो बिल्वधातकीलोध्रम् ॥
भृगुमथितसंप्रयुक्तं गंगामपि प्रवाहिकां रुंध्यात् ॥

अर्थ-नागरमोथा, इन्द्रजव, मोचरस, बेलगिरी, धायके फूल और लोध ये पदार्थ एकत्र करके इनमें दही डाल रईसे थोडा मथकर उस दहीको पीवे तो गंगाके समान प्रवाहवाले प्रवाहिकाको नष्ट करे ॥

तैलादियोग ।

तैलं सर्पिर्दधि क्षौद्रं विषा विश्वं सफाणितम् ॥
सर्वमालोड्य पातव्यं सद्यो निर्वाहिकां हरेत् ॥

अर्थ-तेल, घी, दही, शहत, अतीस, सोंठ और गुडकी राब ये सब एकत्र कर पीवे तो प्रवाहिकाको जीते ॥

त्र्यूषणादिघृत ।

त्र्यूषणा त्रिफला चैव चित्रको गजपिप्पली ॥ बिल्वकर्कटिका हिंस्रा विडंगं सनिदिग्धिकम् ॥ घृतप्रस्थं पचेदेभिर्गवां मूत्रे चतुर्गुणे ॥ तत्प्रयोगं पिबेत्कोलं हन्यात्तेन प्रवाहिकाम् ॥

अर्थ-सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आँवला, चीतेकी छाल, गजपीपल, बेलगिरी, काकडासींगी, जटामांसी, वायविडंग और कटेरी इनका काढा एक

भाग तथा गोमूत्र चार भाग, गौका घी ६४ तोले डाले मधुरी अग्निपर रखके घीको सिद्ध करे फिर इसमेंसे छः मासे सेवन करे तो प्रवाहिका नष्ट होवे ॥

मुस्तादिगुटी।

मुस्तं मोचरसं लोध्रं धातकी बिल्वकौटजम् ॥ अहिफेनं रसं गंधं सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत् ॥ वल्लमात्रामिदं खादेद्गुडतक्रसमान्वितम् ॥ अतिसारे प्रवाहे च ग्रहण्यां च विशेषतः ॥

अर्थ–नागरमोथा, मोचरस, लोध, धायके फूल, बेलगिरी, इन्द्रजौ, अफीम, पारा और गंधक ये एकत्र कर चूर्ण करे। इसमेसे ३ रत्तीकी गोली गुड तथा छॉछ इनसे अतिसार और प्रवाहिका इनपर विशेष करके देवे, तथा संग्रहणी परभी देवे तो उक्तरोग निश्चय दूर होवे ॥

पथ्य।

वमनं लंघनं निद्रा पुराणाः शालिषष्टिकाः ॥ विलेपी लाजमंडश्च मसूरस्तुवरीरसः॥ शशो वै लावहरिणकपिंजलभवा रसाः॥ सर्वक्षुद्रझषा शृंगीडिंडिशो मधुरालिका ॥ तैलं छागघृतं क्षीरं दधि तक्रं गवामपि ॥ दधिजं वा पयोजं वा नवनीतं गवां जयेत् ॥ नवं रंभाफलं पुष्पं क्षौद्रं जंबुफलानि च ॥ भव्यं सहार्द्रकं विश्वं शालूकं च विकंकतम् ॥ कपित्थं बदरं बिल्वं तिंदुकं दाडिमद्वयम् ॥ तालं वटफलं वापि चांगेरी विजया कणा ॥ जातीफलमफेनं च जीरकं गिरिमाल्लिका ॥ कुस्तुंबुरु महानिंबकषायः सकलो रसः ॥ अन्नपानानि सर्वाणि दीपनानि लघूनि च ॥ नाभेर्द्व्यंगुलतोऽधस्ताच्छस्त्रेणार्धेन्दुवद्दहेत् ॥ तथा वंशास्थिमूलेऽपि पथ्यवर्गोऽतिसारिणाम् ॥

अर्थ–उलटी करना, लंघन करना, निद्रा, पुराने सांठी चावल और शालिचावल, खीलोंका मंड, मसूर, अरहर इनका रस, तथा ससा, लवा, हिरण, सपेद तीतर इनका मांस, सर्व प्रकारकी छोटी मछली, तथा शृंगिजातिकी मछली, टेंडसका फल, शहत, राल, तेल, बकरीका और गौका घी, दूध, दही, छाँछ, तथा गौके दहीकी एवं दूधकी लोनी, नवीन केलाकी गहर, मद्य, जामुन, करोंदा, अदरख, सोंठ, कमलकंद, विकंकत, कैथ, बेर, बेलका फल, तेंदू, खट्टा अनार

और मीठा अनार, तालके फल, वडके फल, चूका, भांग, पीपल, जायफल, अफीम, जीरा, कूडा और धनिया, वकायन, संपूर्ण कसेले पदार्थ तथा दीपन, हलके ऐसे अन्न और पान तथा नाभिके नीचे और ऊपर दो दो अंगुलपर अर्धचंद्राकार तथा वंशास्थिके नीचे अर्धचंद्राकार लोहेकी सलाईसे दाग देना यह अतिसार रोगीको पथ्यवर्ग कहा है ॥

जल।

दशांशं षोडशांशं वा शतांशं वा शृतं जलम् ॥ सुशीतं पाचनं ग्राहि दीपनं दोषनाशनम् ॥ यथा यथा शृतं तोयं ज्वरातीसारिणो भवेत् ॥ दीपनं पाचनं ग्राहि आरोग्यं च तथा तथा ॥

अर्थ—दशांश, षाडशांश, अथवा शतांश औटायके शीतल करा हुआ जल ग्राहक, दीपन और सर्व दोषनाशक होताहै, एवं जैसे २ पानीको अधिक औटाया जावे उसी २ प्रकार अधिक गुणकारी होताहै तथा आरोग्य देनेवाला है ॥

अतीसारपर अपथ्य।

स्नानावगाहमभ्यंगगुरुस्निग्धान्नभोजनम् ॥ व्यायाममग्निसंतापमतिसारी विवर्जयेत् ॥ नवान्नोष्णं गुरु स्निग्धं भोजनं न हितं नवम् ॥ व्यायामं मैथुनं चिंतामतिसारी विवर्जयेत् ॥ स्वेदोंऽजनं रुधिरमोक्षणमंबुपानं स्नानं व्यवायमपि जागरधूमनस्यम् ॥ अभ्यंजनं पललवेगविधारणं च रूक्षाण्यसात्म्यशयनं च विरुद्धमन्नम् ॥ कूष्मांडतुंबिबदरं गुरु चान्नपानं तांबूलमिक्षुगुडमद्यमुपोदिकां च ॥ द्राक्षाम्लवेतसफलं लशुनं च धात्री दुष्टांबु मस्तु गृहवारि च नारिकेलम् ॥ संस्नेहनं मृगमदाखिलपत्रशाका क्षारं रसानि सकलानि पुनर्नवा च ॥ उर्वारुकं लवणमम्लमग्निप्रकोपं वर्ज्योऽतिसारगदपीडितमानवेषु ॥

अर्थ—स्नान, अवगाहन, उबटना, भारी और चिकना ऐसा भोजन, दंड कसरत, अत्यंत अग्निका संताप, नवीन अन्न, उष्ण, भारी, स्निग्ध, अपथ्य पदार्थ, व्यायाम, मैथुन करना, चिंता, पसीने काढना, अंजन, रुधिर निकालना, जलपीना, स्नान, स्त्रीगमन, जागरण, धूमपान, नस्य, अभ्यंजन, मांस, मलमूत्रादि वेगका धारण, तथा रूक्ष और असात्म्य ऐसा भोजन, विरुद्ध भोजन, गेहूं, उडद,

बथुआ, मकोय, चौरा, शहत, सहंजना, आंब, पूडी, पूरन पोली, पेठा, सपेदतूंबा, बेर, भारी अन्न अथवा भारी पदार्थका भोजन और भारी जलका पीना, बीडा, ईख, गुड, मद्य, पोईका साग, दाख, अमलवेत, लहसन, आंवले, दूषित जल, छॉछ, घरका पानी, नरियल, सेहन, कस्तूरी, सर्व प्रकारके पत्तोंका साग, खार, संपूर्ण रस, सूपपदार्थ, पुनर्नवा (सांठ), कांकडी, खीरा, निमक, खट्टे पदार्थ और क्रोधका करना यह अतिसार रोगवालेको वर्जित करना चाहिये ॥

ज्योतिःशास्त्राभिप्रायेण अतिसाररोगस्य कारणमाह ।

जलराशौ यदा लग्ने जलर्क्षे लग्ननायकः ॥
गुदेशे सूर्यसंयुक्ते स भवेदतिसारवान् ॥

अर्थ-यदि जलराशि (कुम्भ मीन आदि) लग्नमें होय और लग्नका पति जलराशिमें होवे, एवं गुदास्थानका पति सूर्य करके युक्त होय तो वह प्राणी अतीसारवाला होवे ॥

एवं क्षितिजसंयोगे रक्तातीसारकारकः ॥

अर्थ-यदि पूर्वोक्त ग्रह मंगलके साथ बैठे होंय तो उस प्राणीके रक्तातिसार अर्थात् रुधिरका दस्त होनेवाला होवे ॥

मृत्युयोग ।

मारकेण युते विद्धेऽतीसारेण मृतिर्वदेत् ॥

अर्थ-यदि पूर्वोक्तग्रह मारकेशकरके युक्त अथवा विद्ध होवे तो उस प्राणीकी अतिसाररोग करके मृत्यु कहनी चाहिये ॥

लग्नेशे कफराशिस्थे कफग्रहसमन्विते ॥
षष्ठेशे जलराशिस्थे छर्द्यतीसारकारकः ॥

अर्थ-लग्नेश कफराशिस्थ होकर कफकर्त्ताग्रहोंकरके युक्त होवे तथा षष्ठेश (रोगेश) ग्रह जलराशिमें स्थित होय तो वमन और अतिसारकारक जानना ॥

मृतीशे स्वल्पराशिस्थे जलराशिगतेऽथवा ॥
लग्नेशेन तथा युक्तोऽतीसारेण मृतिर्वदेत् ॥

अर्थ-यदि अष्टमेश उन राशिमें हो अथवा जलराशिमें होय और वह लग्नेशकरके युक्त होय तो उसकी अतिसाररोग करके मृत्यु जाननी ॥

लग्नेशरिपुभावेशौ शत्रुदृष्ट्या विशेषतः ॥
लग्ने मंदयुते दृष्टे ज्वरातीसारकारकः ॥

अर्थ–लग्नेश और रिपुभावेश आपसमें शत्रुदृष्टि करके देखते हों और लग्न शनि करके युक्त हो अथवा दृष्ट होय तो वह ज्वरातिसारकारक जानना ॥

इति बृहन्निघंटुरत्नाकरे अतिसारप्रवाहिकाचिकित्सा समाप्ता ।

संग्रहणी।

ज्योतिःशास्त्राभिप्रायसे संग्रहणीरोगका निदान तहां सप्तधातुओंके स्वामी।

स्नाय्वस्थ्यसृक्त्वगथ शुक्रवसा च मज्जा
मंदार्कचंद्रबुधशुक्रसुरेज्यभौमाः ॥

अर्थ–स्नायु, हड्डी, रुधिर, त्वचा, शुक्र, वसा, मज्जा इन सात धातुओंके स्वामी क्रमसे शनि, सूर्य, चंद्र, बुध, शुक्र, बृहस्पति और भौम कहिये मंगल है ॥

ग्रहणीकर्त्तायोग ।

शनिशुक्रौ सप्तमस्थौ निर्बलौ लग्नपुत्रपौ ॥
विड्बंधग्रहणीचित्तवैकल्यात्यतिकष्टदौ ॥

अर्थ–शनि और शुक्र ये दोनों ग्रह सप्तममें स्थित हों तथा लग्नेश और पंचमेश निर्बल होवें तो विड्बंध (मलका न उतरना), संग्रहणी, चित्तमें बेकली और अतिकष्ट होय ॥

गदेशे गदराशिस्थे गदभावानिरीक्षिते ॥
क्षीणचंद्रो भवेत्तस्य ग्रहणी दुःखकारिणी ॥

अर्थ–रोगेश (छठे घरका स्वामी) छठे घरमें अर्थात् रोगघरमें बैठा होवे, अथवा अन्य स्थानमें बैठके रोगघरको देखता होय और चंद्रमा जिसका क्षीण होय तो उसके दुःखकर्ता संग्रहणी रोग होय ॥

लग्नस्थे क्षीणशीतांशौ शनिभौमतमैर्युते ॥
ग्रहणीरोगवान् जात अथवा कटिशूलवान् ॥

अर्थ–क्षीणचंद्रमा जन्मलग्नमें बैठा होय और शनि भौम तथा राहुकरके युक्त होय तो उस प्राणीको संग्रहणीका रोग होय अथवा कमरमें पीडा होय ॥

रोगाधीशो मृत्युभावे रोगसद्मेश्वरस्तनौ ॥
ग्रहणीगदतो मृत्युर्जायते नात्र संशयः ॥

अर्थ–रोगका मालिक अष्टमघरमें बैठा होय और छठे घरका मालिक लग्नमें बैठा होय तो उस मनुष्यकी संग्रहणी रोगसे मृत्यु होय इसमें संदेह नहीं है ॥

एवं रविसमायोगे ग्रहणीपित्तसंभवा ॥
गुरुणा कफकोपेन जायते नात्र संशयः ॥

अर्थ–इसी प्रकारके योगमें यदि सूर्यका समागम होय तो पित्तजन्य संग्रहणीका रोग होय और बृहस्पतिका संयोग होवे तो कफजन्य संग्रहणी होय इसमें संदेह नहीं है ॥

रोगसद्मेश्वरो मंदभूपुत्राभ्यां समन्वितः ॥
वातामयोत्था ग्रहणी जायते नात्र संशयः ॥

अर्थ–रोगघरका मालिक शनैश्चर और मंगलकरके युक्त होवे तो उस प्राणीको बादीकी संग्रहणी होती है इसमें संदेह नहीं है ॥

ग्रहणीरोगका कर्मविपाक।

साध्वीं भार्यां च यो मर्त्यः परित्यजति कामतः ॥
ग्रहणीरोगसंयुक्तः सदा भवति मानवः ॥

अर्थ–जो प्राणी विना कारण अपनी सुशीला स्त्रीका परित्याग करता है वह प्राणी सदैव संग्रहणी रोगकरके पीडित होता है ॥

अनन्यगतिकां भार्यामदुष्टां कारणं विना ॥
परित्यजति यः सोऽपि ग्रहणीरोगवान् भवेत् ॥

अर्थ–जो दुष्टपुरुष अनन्यगतिक (जिसको दूसरेका आसरा न हो) और पवित्र ऐसी सुशीला अपनी स्त्रीको कारणके विना त्याग देवे इस अपराधसे इस प्राणीको संग्रहणी रोग होता है ॥

संग्रहणीरोगकी शांति ।

शिवसंकल्पसूक्तस्य जपः स्यात्तत्र शांतये ॥ अष्टोत्तरसहस्रं हि हिरण्यं च तथा मधु ॥ दद्याद्वित्तानुसारेण सौरमंत्रजपस्तथा ॥ धेनुं सलक्षणां दद्याद्वस्त्राभरणसंयुताम् ॥ पयस्विनीं गुणोपेतां ब्राह्मणाय कुटुंबिने ॥ वत्साभरणसंयुक्तां वस्त्रेणाभरणेन च ॥

अर्थ—उस पापकी शांति करनेको शिवसंकल्पसूक्तको १००८ एक हजार आठ पाठ करावे और ब्राह्मणको सुवर्ण और शहत अपने वित्तानुसार देवे तथा सौर मत्रका जप करावे, तथा सुन्दर लक्षणयुक्त और वस्त्राभरण करके युक्त ऐसी गौका दान कुटुंबवाले विद्वान् ब्राह्मणको देवे तथा उस गौके बछडेको भी वस्त्र आभरणोंसे भूषित करना चाहिये ॥

पद्मपुराणे गौतमः ।

धेनुं पयस्विनीं दद्याद्घंटाभरणभूषिताम् ॥ हेमशृंगीं रौप्यखुरां वासोभिर्वेष्टितां नरः ॥ नवधान्यैः समायुक्तामेकैकं द्रोणपंचकम् ॥ सहिरण्यां तु गां दद्याद्ब्राह्मणाय कुटुंबिने ॥ अलोलुपाय शांताय धर्मज्ञाय विशेषतः ॥

अर्थ—पद्मपुराणमें गौतम ऋषिका वाक्य है कि संग्रहणी रोगवाला प्राणी घंटा और भूषणोंसे भूषित सुवर्णके सींग चांदीके खुर और वस्त्रोंसे आच्छादित और दूधके देनेवाली गौका दान करे तथा नवधान्य पांच २ द्रोण उसके साथ तथा सुवर्णसहित कुटुंबी ब्राह्मण जो लोलुप न हो तथा शांतस्वभाववाला और धर्मज्ञ ऐसेको दान देवे ॥

होमं च पूर्ववत्कुर्यात्समिदाज्यचरूत्करैः ॥ तस्मै हुतवते दद्यात्पूजितायांगुलीयकैः ॥ गां कृष्णां कृष्णरूपाय मंत्रेणानेन रोगवान् ॥

अर्थ—संग्रहणीरोगवाला ढाककी समिधा, घृत, चरु इनसे पूर्वोक्त क्रमसे हवन करे, फिर हवन करानेवाले ब्राह्मणका पूजन कर उसको सुवर्णकी अँगूठी और काले रंगकी गौ कृष्णस्वरूपी ब्राह्मणको नीचे लिखे मंत्रको पढकर देवे ॥

मंत्र ।

देवकीपुत्र चाणूरकंसारिष्टविनाशन ॥
नाशय ग्रहणीं कृष्ण गोपीजनमनोहर ॥

अर्थ-हे देवकीपुत्र ! हे कंसअरिष्टासुरके नाशक ! हे कृष्ण ! हे गोपीजनमनोहर ! मेरे इस संग्रहणीरोगको नष्ट करो ॥

मंत्रेणानेन दानेन ग्रहणी शांतिमृच्छति ॥
तस्मादेतच्च कर्तव्यं ग्रहणीरोगिणां सदा ॥

अर्थ-इस मंत्रकरके करे हुए दानसे संग्रहणीरोग शांत होता है इसीवास्ते यह गोदान संग्रहणीरोगवालेको अवश्य कर्त्तव्य है ॥

ग्रहण्याः स्वरूपमाह।

ग्रहण्यग्निधराकला।

अर्थ-जठराग्निके धारण करनेवाली कलाको ग्रहणी इस प्रकार कहते हैं ॥

यदाह चरकः।

अग्न्यधिष्ठानमन्नस्य ग्रहणाद्ग्रहणी मता ॥
अपक्वं धारयत्यन्नं पक्वं त्यजति चाप्यधः ॥

अर्थ-जैसे चरकमें लिखा है कि अन्नका अग्नि अधिष्ठान है और उस अन्नके ग्रहण करनेसे उसको ग्रहणी कही है, यह ग्रहणी अपक्व (कच्चे) अन्नको धारण करती है और पक्के अन्नको नीचे गेर देती है ॥

ग्रहण्या बलमग्निर्हि स चापि ग्रहणीं श्रितः ॥ तस्मादग्नौ प्रदुष्टे तु ग्रहण्यपि विदुष्यति ॥ तस्मात्कार्यः परीहारो ह्यतिसारे विरक्तवत् ॥ विरक्तेनेव विरक्तवत् ॥

अर्थ-और भी लिखाहै ग्रहणीका बल अग्नि है वह ग्रहणीस्थानके आश्रयीभूत है, इसी कारण अग्निके दूषित होनेसे ग्रहणीभी दूषित होती है इसीवास्ते अतिसारमें विरक्त (वैराग्यवान्) पुरुषके समान पथ्याचरण करना चाहिये ॥

अन्यच्च।

पक्वामाशयमध्ये पित्तधरा नाम या कला कथिता ॥
सा ग्रहणीत्युपदिष्टा दुष्टा ग्रहणीगदं कुरुते ॥

अर्थ-तथा अन्य वाग्भटादिग्रंथोंमें लिखाहै कि पक्वाशय और आमाशयके

१ अतिसाररोग और संग्रहणीरोगमे इतनाही भेद है कि अतिसारमे द्रवधातु निकले है और संग्रहणीमें बंधा हुआ भी मल निकले है ॥

वीचमें जो पित्तधरा नामक कला है उसीको ग्रहणी ऐसा कहा है वह दुष्ट होक संग्रहणीरोगको करती है ॥

ग्रहणीका स्थान ।

षष्ठी पित्तधरा नाम या कला परिकीर्त्तिता ॥
पक्कामाशयमध्यस्था ग्रहणी सा प्रकीर्त्तिता ॥

अर्थ—छठी पित्तधरा नामक जो कला पक्काशय और आमाशयके बीचमें है उसीको संग्रहणी वैद्योंने कहा है ॥

संग्रहणीनिदान ।

अतीसारे निवृत्तेऽपि मन्दाग्नेरहिताशिनः ॥
भूयः संदूषितो वह्निर्ग्रहणीमभिदूषयेत् ॥

अर्थ—पहले मनुष्यके अतिसाररोग होकर जाता रहा होय, फिर उस मनुष्यके कुपथ्य करनेसे मन्द हुई जो अग्नि सो पुरुषके उदरमें रहनेवाली जो पित्तधरा-नामक छठी कला जिसको ग्रहणी कहते हैं, उसको बिगाड अपिशब्द करके अतिसार न भया होय तो भी अपने कारणकरके पूर्वोक्त ग्रहणीको बिगाडकर संग्रहणीरोगको प्रगट करे यह सूचना करी । कोई आचार्य ऐसे कहते हैं, कि अतिसार न गया होय वीचमेंही ग्रहणीरोग होताहै । (मन्दाग्नेः) इस पद करके यह सूचना करी कि जिस पुरुषकी अग्नि तीक्ष्ण है वह कुपथ्यभी करे तथापि कुछ नहीं होय, अन्नको ग्रहण करे है इसीसे इसको ग्रहणी कहे हैं । अतएव ग्रहणीके बिगडनेसे अन्नका परिपाक अच्छे प्रकार नहीं होय अर्थात् बारंबार आममिश्रित मल गुदाके मार्गसे गिरता है ।

ग्रहणीकी संप्राप्ति वा लक्षण ।

एकैकशः सर्वशश्च दोषैरत्यर्थमूर्च्छितैः ॥ सा दुष्टा बहुशो भुक्त-
माममेव विमुंचति ॥ पक्कं वा सरुजं पूति मुहुर्बद्धं मुहुर्द्रवम् ॥
ग्रहणीरोगमाहुस्तमायुर्वेदविदो जनाः ॥

अर्थ—अत्यंत कुपित हुए पृथक् पृथक् दोष (वात पित्त कफ) और सर्व दोष मिलकर ग्रहणीको दुष्ट करे, सो ग्रहणी दुष्ट होकर कच्चे अथवा पक्के अन्नको गुदाके मार्ग होकर निकाले और पीडा होय, तथा उस मलमें दुर्गंधि आवे, बादीसे

पतला मल और पित्तसे गाढा दस्त वारंवार होवे और कभी कफसे पानी सरीखा अधोवायुयुक्त निकले इसको आयुर्वेदके जाननेवाले वैद्य संग्रहणी रोग कहते हैं ॥

अन्यच्च ।

सामं सान्नमजीर्णेऽन्ने जीर्णे पक्वं तु नैव वा ॥ अकस्माद्वा
मुहुर्बद्धमकस्माच्चोपवेशयेत् ॥ सा चतुर्द्धा पृथग्दोषैः
सन्निपाताच्च जायते ॥

अर्थ-अजीर्ण अन्नमें आमसहित और कच्चे अन्नसहित दस्त हो और वही भोजन करा हुआ अन्न जीर्ण होजावे तथा पक्व होजावे तब न गिरे तथा अकस्मात् वारंवार दस्त बँधा हुआ होय और अकस्मात् पतला तथा अकस्मात् दस्त बंद होजावे ऐसा संग्रहणीरोग चार प्रकारका है जैसे १ वातका २ पित्तका ३ कफका और चतुर्थ संनिपातका ॥

संग्रहणीके पूर्वरूप ।

प्राग्रूपं तस्य सदनं चिरात्पचनमम्लकः ॥ प्रसेको वक्त्रवैरस्यमरुचिस्तृट्क्लमो भ्रमः ॥ आनद्धोदरता छर्दिः कर्णक्ष्वेडोऽन्त्रकूजनम् ॥ सामान्यं लक्षणं कार्श्यं धूमकस्तमको ज्वरः ॥ मूर्च्छा शिरोरुग्विष्टंभः श्वयथुः करपादयोः ॥

अर्थ-अब उस ग्रहणीरोगका पूर्वरूप कहते हैं जैसे देहका थकासा हो जाना और बहुत देरमें खट्टी डकार आवे, मुखसे लार बहे, मुखमें स्वाद न रहे, अरुचि, प्यास, क्लम, भ्रम, पेटका तनासा होना, वमन, कानमें घाव, आंतोंका बोलना, देहकृश, धूंएका मुखसे निकलना, तमक, श्वास, ज्वर, मूर्च्छा, मस्तकमें पीडा, अफरा, हाथ पैरोंमें सूजन ये ग्रहणीरोगके सामान्य लक्षण हैं ॥

पूर्वरूपं तु तस्येदं तृष्णालस्यं बलक्षयः ॥
विदाहोऽन्नस्य पाकश्च चिरात्कायस्य गौरवम् ॥

अर्थ-प्यास, आलस, बलनाश, अन्नका दाह (पाकके समय अग्निसी जले) और अन्नका पाक देरमें होय; देह भारी होय यह ग्रहणीरोगका पूर्वरूप है ॥

पक्षाद्वापि दशाहाद्वा विंशतेर्वा दिनात्परम् ॥
मासाद्वापि भवेत्कोपो ग्रहणीरुजमानवे ॥

अर्थ-इस प्राणीके पंद्रह दिनमें, दश दिनमें, बीस दिनमें अथवा एक महीनेमें ग्रहणीरोग कुपित होता है ॥

वातिकग्रहणीके कारण।

कटुतिक्तकषायातिरूक्षसंदुष्टभोजनैः ॥ प्रमितानशनात्यध्ववेगनिग्रहमैथुनैः ॥ मारुतः कुपितो वह्निं संच्छाद्य कुरुते गदान् ॥

अर्थ-चरपरा, कडुआ, कसैला, अतिरूखा और संयोगविरुद्ध ऐसे भोजनसे तथा थोडे भोजनसे, उपवाससे, बहुत चलनेसे, मलमूत्रादि वेगोंके रोकनेसे, अत्यंत मैथुनसे कुपित हुई जो वात सो अग्निको दूषित कर रोगोंको प्रगट करे है ॥

वातिकग्रहणीके रूप।

तस्यान्नं पच्यते दुःखं शुक्तपाकं खरांगता ॥ कंठास्यशोषः क्षुत्तृष्णा तिमिरं कर्णयोः स्वनः ॥ पार्श्वोरुवंक्षणग्रीवारुगभीक्ष्णं विषूचिका ॥ हृत्पीडा कार्श्यदौर्बल्यं वैरस्यं परिकर्तिका ॥ गृद्धिः सर्वरसानां च मनसः स्यंदनं तथा ॥ जीर्णे जीर्यति चाध्मानं भुक्ते स्वास्थ्यमुपैति च ॥ सवातगुल्महृद्रोगप्लीहाशंकी च मानवः ॥ चिराद्दुःखं द्रवं शुष्कं तन्वामं शब्दफेनवत् ॥ पुनः पुनः सृजेद्वर्चः कासश्वासार्दितोऽनिलात् ॥

अर्थ-उस वातग्रहणीवालेके अन्न दुःखसे पचे, अन्नका पाक खट्टा होय, अंगमें कर्कशता (यह वायुकरके त्वचाका चिकनापन सोखनेसे होती है), कंठ, मुखका सूखना, भूँख, प्यास लगे, मन्द दीखे, कानोंमें शब्द हो, पँसवाडे जांघ पेडू और कंधेमें पीडा होवे, विषूचिका हो (अर्थात् दोनों द्वारसे कच्चे अन्नकी प्रवृत्ति होवे), हृदय दूखे, देह दुबला होजाय, जीभका स्वाद जाता रहे, गुदामें कतरनीकीसी पीडा हो, मीठेसे आदि ले सर्व रसोंके खानेकी इच्छा, मनमें ग्लानि, अन्न पचने उपरांत पेटका फूलना, भोजन करनेसे स्वस्थता, पेटमें गोला, हृद्रोग, तापतिल्लीकीसी शंका, वातके योगसे खांसी, श्वाससे पीडित बहुत देरमें बडे कष्टसे कभी पतला कभी गाढा थोडा शब्द और झाग मिला वारंवार दस्त हो जाय ॥

वातसंग्रहणीका चिकित्साक्रम ग्रहणी रोगमें पाचन।

धान्यबिल्वबलाशुंठीशालपर्णीशृतं जलम् ॥

स्याद्वातग्रहणीदोषे सानाहे सपरिग्रहे ॥

अर्थ-धनिया, बेलगिरी, खिरेटी, सोंठ, और सालवन इनके काढेको वातकी संग्रहणीमें अफरामें और मलकी दुष्टतामें पीवे तो ये दूर हों ॥

दारुनागरनिशासुवासकं कुंडलीमगधयाशठीघनम् ॥
रास्नाभार्ग्यशरलाभपौष्करं पाचनं भवति वातके ग्रहे ॥

अर्थ-देवदारु, सोंठ, हलदी, अडूसा, गिलोय, पीपल, कचूर, नागरमोथा, रास्ना, भारंगी, शरल, पुहकरमूल इनका क्वाथ वादीकी संग्रहणीमें पाचन कहा है ॥

यवान्यादिचूर्ण ।

यवानी व्योषसिंधूत्थं जीरके द्वे च हिंगुकम् ।
आद्यग्रासाशितं साज्यं चूर्णं वातनुदग्निकृत् ॥

अर्थ-अजवायन, सोंठ, मिरच, पीपल, सैंधानिमक, सपेद जीरा, काला जीरा और हींग इनका चूर्ण करके भोजनके प्रथम ग्रासमें घी मिलायके खाय तो अग्निको प्रबल करे यह यवानीचूर्ण है, परंतु वास्तवमें हिंग्वाष्टक चूर्ण है ॥

ग्रंथिका चाभया कृष्णा विडंगाक्ते घटे स्थितम् ।
मासं तक्रं ग्रहण्यार्शकासगुल्मकृमीहरम् ॥

अर्थ-पीपरामूल, जंगीहरड, पीपल, वायविडंग इनको पीसके एक कोरे घडेमें लपेट देवे, फिर इसमें छॉछको भर देवे। इस छॉछको १ महीने पर्यंत पीवे तो संग्रहणी बवासीर, खॉसी, गोला और कृमिरोग इनको हरण करे ॥

रामठादिचूर्ण ।

रामठातिविषापथ्यावचेन्द्रयवचूर्णकम् ।
वारि पीतं निहंत्येव ग्रहणीं वातसंभवाम् ॥

अर्थ-हींग, अतीस, हरड, वच और इन्द्रजौ इनका चूर्ण कर जलके साथ पीवे तो वातकी संग्रहणीको नष्ट करे ॥

चूर्णं हिंग्वादिकं चापि वातिके षट्घृतान्वितम् ।
स्नेहाम्ललवणैर्युक्तं बहुवातस्य शस्यते ॥

अर्थ—हिंगाष्टक चूर्णको थोडेसे घीमें मिलाय, स्नेह, खटाई और निमकके साथ जिस संग्रहणीवालेके अधिक बादी होवे उसको सेवन करना चाहिये ॥

शुंठीघृत।

घृतनागरकल्केन सिद्धं वातानुलोमनम् ॥
ग्रहणीपांडुरोगघ्नं प्लीहकासज्वरापहम् ॥

अर्थ—सोंठके कल्कमें घी डाल अग्निपर सिद्ध करे, यह घृत वादीको अनुलोमन करे तथा संग्रहणी, पांडुरोग, प्लीहा, खांसी और ज्वर इसको नष्ट करे ॥

पंचमूलघृत।

पंचमूलाभयाव्योषपिप्पलीमूलसैंधवैः ॥ रास्नाक्षारद्वयाजाजीविडंगशठिभिर्घृतम् ॥ पक्केन मातुलुंगस्य स्वरसेनार्द्रकस्य च ॥ शुष्कमूलककोलांबुचुक्रिकादाडिमस्य च ॥ तक्रमस्तुसुरामंडसौवीरकतुषोदकैः ॥ कांजिकेन च तत्पक्त्वा पीतमग्निकरं परम् ॥ शूलगुल्मोदरानाहकाइर्यानिलगदापहम् ॥

अर्थ—पंचमूल, जंगी हरड, सोंठ, मिरच, पीपल, पीपरामूल, सैंधानिमक, रास्ना, सज्जीखार, जवाखार, जीरा, वायविडंग और कचूर इन सब औषधोंके कल्कमें घी सिद्ध करे फिर उस घीको पके हुए बिजोरेके रसमें, अदरखके रसमें, सूखी हुई मूलीके काढेमें, सूखे हुए बेरके काढेमें, चूकके रसमें, अनारके रसमें, छाँछ, दहीका तोर, सुरा, जवकी पेया, तुषोंके काढे और कांजी इन प्रत्येकमें पचाय २ के सिद्ध करे तो यह अग्निकारक, शूल, गोला, उदर, अफरा, देहकी कृशता और बादीके रोग इन सबको नाश करे ॥

संग्रहणीका चिकित्साक्रम।

ग्रहणीमाश्रितं दोषमजीर्णवदुपाचरेत् ॥ लंघनैर्दीपनीयैश्च सदातीसारभेषजैः ॥ दोषं सामं निरामं च विद्यादत्रातिसारवत् ॥ अतिसारोक्तविधिना तस्य चामं विपाचयेत् ॥ पेयादि पटु लघ्वन्नं पंचकोलादिभिर्युतम् ॥ दीपनानि च तक्रं च ग्रहण्यां योजयेद्भिषक् ॥

अर्थ—संग्रहणीके रोगमें अजीर्णके समान औषध करे अर्थात् जो औषधी अजीर्णपर कही हैं वेही इस संग्रहणीपरभी करे तथा लंघन दीपन और अतिसारपर कही हुई औषधोंको देवे। अतिसारके समानही दोष आमसहित किंवा

आमरहित है यह प्रथमही देख लेवे और अतिसारपर उक्त विधिके अनुसार आमका पाचन करे, पेया इत्यादि क्षार, पंचकोलादिक करके युक्त ऐसे हलके अन्न सेवन करे, दीपन पदार्थ तथा तक्र (छॉछ) देना चाहिये ॥

ज्ञात्वा तु परिपक्कं च वातजं ग्रहणीगदम् ॥
दीपनैर्भेषजैः पक्कैः सर्पिर्भिः समुपाचरेत् ॥

अर्थ–परिपक्क वातसंग्रहणीकी परीक्षा करके उसको दीपन और घृत इन करके उपचार करे ॥

शालिपर्ण्यादिकाढा ।

शालिपर्णीबलाबिल्वधान्यशुंठीकृतः शृतः ॥
आध्मानशूलसहितां वातजां ग्रहणीं जयेत् ॥

अर्थ–शालपर्णी, खिरेटीकी जड, बेलगिरी, धनिया और सोंठ इन पांच औषधोंका काढा करके पीवे तो पेटका फूलना और शूलयुक्त वातसंग्रहणीको दूर करे ॥

मधुपक्कहरीतकी ।

हरीतकीनां च शतं दोलायंत्रे शनैः पचेत् ॥ सुस्विन्नं गोमये नीरे संसृष्टं वा पुनस्ततः ॥ पश्चात्क्षुद्रशलाकाभिश्छिद्रितं तत्समं ततः ॥ शतं पलानां मधुनो वस्त्रपूतं विनिःक्षिपेत् ॥ स्निग्धभांडे विनिःक्षिप्य क्षौद्रं देयं तथा तथा ॥ यथा यथा हि मधुनो जलत्वं याति निश्चितम् ॥ पुनर्देयं मधु तथा यावन्नायाति विक्रियाम् ॥ तिष्ठत्येवं तथा पथ्या कषायगुणवर्जिता ॥ पिप्पली मरिचं शुंठी लवंगं वंशलोचनम् ॥ प्रत्येकं कर्षमात्रं हि चूर्णितं तत्र निःक्षिपेत् ॥ मधुपक्काभिधा पथ्या बलवर्णाग्निदीपनी ॥ एकैकां भक्षयेत्प्रातः सर्वरोगनिवारिणम् ॥ दुष्टवातं संग्रहं च तथामं दुष्टशोणितम् ॥ जीर्णज्वरं प्रतिश्यायं व्रणं विस्फोटकं तथा ॥ वातशूलं संग्रहणीं सरुजां नाशयत्यपि ॥

अर्थ–बडी २ सौ हरडोंको लेकर गौके गोबरके पानीमें दोलायंत्रकी विधिसे नरम होनेपर्यंत औटावे जब नम्र हो जावें तब उतारके उनमें सलाईसे छिद्र करके युक्तिसे उनकी गुठली निकासले, फिर ४०० तोले शहत घीके चीकने बासनमें

भरके उसमें उन हरडोंको गेर देवे, फिर वह शहत जैसे २ जलरूप होता जाय उसी प्रकार उसमें और नवीन शहत डालता जावे इस प्रकार जबतक शहत जैसाका तैसा बना रहे तबतक डाले, इस क्रियाके करनेसे हरडोंका कषेलापना नहीं रहे, फिर सोंठ, मिरच, पीपल, लौंग, वंशलोचन ये प्रत्येक तोला २ ले चूर्ण करके उसमें गेर देवे । इसे मधुपक्वहरीतकी कहते हैं । यह हरड बल वर्ण करे है और अग्निको दीपन करे है । नित्यप्रति प्रातःकाल एक एक भक्षण करे तो दुष्टवात, संग्रहणी, आमांश, दुष्टरक्त, जीर्णज्वर, सरेकमा, व्रण (घाव), विस्फोटक, बादीका शूल और सशूल संग्रहणी इत्यादि सर्वरोगोंका नाश करे है ॥

मुद्गयूष ।

मुद्गयूषं रसं तक्रं धान्यजीरकसंयुतम् ॥
सैंधवेनान्वितं दद्यात्षड्यूषमिति कीर्तितम् ॥

अर्थ—मूंगका यूष, मूंगका रस, छाँछ, धनिया और जीरा इनके यूषमें सैंधानिमक मिलावे, इसे षड्यूष कहते हैं । यह संग्रहणी नष्ट करे है ॥

कपित्थादियवागू ।

कपित्थबिल्वचांगेरी तक्रदाडिमसाधिता ॥
यवागूः पाचयत्यामं शकृत्संवर्तयत्यपि ॥

अर्थ—कैथ, बेल, चूका, छाँछ और अनार इनके शाकमें यवागू सिद्ध करे । यह आमको पचावे और मलको सारण करे अर्थात् निकाले ॥

पित्तसंग्रहणीनिदान ।

कट्वजीर्णविदाह्यम्लक्षाराद्यैः पित्तमुल्बणम् ॥ आप्लावयद्धंत्यनलं जलं तप्तमिवानलम् ॥ सोऽजीर्णं नीलपीताभं पीताभं सार्यते द्रवम् ॥ सधूमोद्गारहृत्कंठदाहारुचितृडर्दितः ॥

अर्थ—जो पुरुष कटु, अजीर्ण, मिरच आदि तीखी, दाहकारक (वंश, करीलकी कोपल आदि), खट्टी, खारी (ओंगा आदिका खार), आदिशब्दसे नोनका गरम पदार्थ भक्षण करे इन कारणसे कुपित हुआ जो पित्त सो जठराग्निको बुझायदे, जैसे तत्ता जल अग्निको शांत करदे और कच्चाही नीले पीले रंगके पतले मलको निकाले, तथा धूमयुक्त डकार आवे, हिये और कंठमें दाह होवे, अरुचि और प्यास करके पीडित होवे ये पित्तकी संग्रहणीके लक्षण हैं ॥

पित्तसंहणीकी चिकित्सा।

वह्नेः प्रदूषकं पित्तमेकेन वमनेन वा ॥
कृत्वा भोज्यैर्लघुग्राहिदीपनैरविदाहिभिः ॥
तिक्तकैर्बृंहयेद्वह्निं चूर्णैः स्नेहैश्च तिक्तकैः ॥

अर्थ–जठराग्निके दूषित करनेवाले पित्तको जुलाब करके तथा वमन करके निकाल देवे फिर हलके, ग्राही, दीपनकर्त्ता और जो दाह न करे ऐसा भोजन करावे तथा तिक्त चूर्ण और तिक्त स्नेहोंसे जठराग्निको बढावे ॥

नलवेणुकुशानां च काशेक्षूणां च मूलकम् ।
क्राथपानं हितं चात्र पाचनं पैत्तिके ग्रहे ॥

अर्थ–सरपते, बांस, कुशा, कास और ईख इनकी जडोंका काढा करके इस पित्तकी संग्रहणीमें देवे तो इसका पाचन करे तथा हितकारी है ॥

द्राक्षादिक्षीर।

द्राक्षाक्षीरेण संपाच्य यावद्दर्व्युपलेपनम् ॥ पश्चाद्द्याद्भिषक् प्राज्ञो औषधानि पृथक् पृथक् ॥ पर्पटातिविषा मूर्वा पटोलं घनवालकम् ॥ तथाभयानां चूर्णं तु समं शर्करया युतम् ॥ तेन क्षीरेण संयोज्य विदार्याः कन्दमेव च ॥ घनेन नवनीतेन पिंडं कृत्वा तु भक्षयेत् ॥ ग्रहणीं पित्तजां पांडुं कामलार्तितृषापहम् ॥ भ्रमं मूर्च्छां तथा हिक्कां तथोन्मादमपस्मृतिम् ॥ महापित्तं च कुष्ठं च नाशयत्याशु निश्चितम् ॥

अर्थ–दाखोंको दूधमें औटावे जब औटते २ कलछीसे लिपटने लगे तब आगे लेखी हुई औषध पृथक् २ मिलावे। पित्तपापडा, अतीस, मूर्वा, पटोलपत्र, नागमोथा, नेत्रवाला और जंगी हरड इनको समान भाग ले चूर्ण करके मिलाय देवे। तथा सब चूर्णकी बराबर खांड डाले। एवं विदारीकंदका चूर्ण एक औषधके बराबर उस दूधमें मिलावे फिर मक्खन मिलायके गोली बनाय लेवे। इस गोलीके भक्षण करनेसे पित्तकी संग्रहणी, पांडुरोग, कामला, प्यास, भ्रम, मूर्च्छा, हिचकी, उन्माद, मृगी, घोर पित्त और कोढ इनको तत्काल नाश करे ॥

तंडुलोदकम्।

जलमष्टगुणं दत्त्वा पलकंडिततंडुलान् ॥

भावयित्वा ततो देयं तंदुलोदककर्मणि ॥

अर्थ-१ पल बिने चुने चावलोंमें आठ पल जल मिलावे और उनको थोडी देर भीगने दे फिर हाथोंसे मसलके जलको छानले यह तंदुलोदक जहाँ २ इसका प्रयोजन पडे उस जगह सर्वत्र देवे ॥

भूनिंबाद्यचूर्ण ।

भूनिंबकटुकाव्योषमुस्तकेन्द्रयवान्समान् ॥ द्वौ चित्रकाद्वत्सकत्वक् भागान्षोडश चूर्णयेत् ॥ गुडः शीतांबुना पीतो ग्रहणीदोषगुल्मनुत् ॥ कामलाज्वरपांडुप्रमेहारुच्यातिसारनुत् ॥

अर्थ-चिरायता, कुटकी, सोंठ, मिरच, पीपल, नागरमोथा और इन्द्रजौ ये प्रत्येक समान भाग ले, चीतेकी छालके दो भाग और कूडेकी छाल सोलह भाग ले, सबका चूर्ण करे फिर इसमें गुड मिलायके शीतल जलसे पीवे तो संग्रहणी, गोला, कामला, ज्वर, पांडुरोग, प्रमेह, अरुचि और अतिसार इनको दूर करे ॥

द्वितीय भूनिम्बाद्यचूर्ण ।

एकैकं भागमादाय भूनिम्बव्योषमुस्तकम् ॥ कटुकेंद्रयवोपेतं द्वौ भागौ चित्रकस्य च ॥ कुटजस्य त्वचो भागान्षोडशात्र विनिक्षिपेत् ॥ सर्वमेकीकृतं चूर्णं शीताम्बुगुडसंयुतम् ॥ पिबेत्संग्रहणीपांडुज्वरातीसारनाशनम् ॥

अर्थ-चिरायता, कुटकी, सोंठ, मिरच, पीपल, नागरमोथा, कडुए इन्द्रजौ ये प्रत्येक एक २ भाग ले, चित्रककी छाल दो भाग, कूडेकी छाल सोलह भाग, सबको एकत्र कर गुड और शीतल जलके साथ पीवे तो संग्रहणी, पांडुरोग, ज्वर और अतिसार रोग इनको नाश करे । इन दोनों भूनिंबादि चूर्णोंमें पाठांतर है औषधी दोनोंमें एकही हैं ।

पाठाद्यचूर्ण ।

पाठा बिल्वानलव्योषं जंबुदाडिमधातकी ॥ कटुकातिविषामुस्तदार्वीभूनिंबवत्सकैः ॥ सर्वैरतैः समं चूर्णं कौटजं तंडुलांबुना ॥ सक्षौद्रेण पिबेच्छर्दिज्वरातीसारशूलवान् ॥ हृद्दाहग्रहणीदोषारोचकानलसादजित् ॥

अर्थ-पाढ, छोटा बेलफल, चीतेकी छाल, सोंठ, मिरच, पीपल, जामुन,

अनारदाना, धायके फूल, कुटकी, अतीस, नागरमोथा, दारुहलदी, चिरायता और कूडेकी छाल ये समान भाग ले और सबकी बराबर इन्द्रजव मिलावे इसको चावलके धोवनके साथ शहत मिलायके पीवे तो वमन, ज्वर, अतिसार, शूल, हृद्रोग, दाह, संग्रहणी, अरुचि और मंदाग्निको नाश करे ॥

कटुकेन्द्रयवा पाठा कुटजत्वग्रसांजनम् ॥ धातक्यतिविषा शुंठी मुस्ता पिष्ट्वा च वारिणा ॥ विष्टंभमरुचिं रक्तं दाहं च गुदवेदनाम् ॥ पित्तोत्थां ग्रहणीं हन्ति मधुना सह भक्षितः ॥

अर्थ–कुटकी, इन्द्रजव, पाढ, कूडेकी छाल, रसोत, धायके फूल, अतीस, सोंठ, नागरमोथा इन सबको जलमें पीसके पावे तो अफरा, अरुचि, रक्तका दाह, गुदाकी पीडा, पित्तजन्य संग्रहणीका विकार इनको दूर करे परंतु इसमें शहत और मिलाय लेना चाहिये ॥

चंदनादिघृत ।

चंदनं पद्मकोशीरपाठा मूर्वा कटुत्रयम् ॥ षड्ग्रंथा सारिवा स्फोता सप्तपर्णी परूषकम् ॥ पटोलोदुंबराश्वत्थवटप्लक्षकपित्थकम् ॥ कटुका रोहिणी मुस्ता निंबं च द्विपलांशकम् ॥ द्रोणेऽभसि क्षिपेत्पादशेषे प्रस्थं घृतं पचेत् ॥ किराततिक्तेंद्रयवावीरामागधिकोत्पलैः ॥ कल्कैरक्षसमैः पेयं तत्पित्तग्रहणीगदे ॥

अर्थ–चंदन, पद्माख, खस, पाढ, मूर्वा, सोंठ, मिरच, पीपल, वच, सरिवन, पलसरी, सातवन, फालसे, पटोलपत्र, गूलर, पीपल, वड, पाखर, कैथ, कुटकी, रड, नागरमोथा और नीमकी छाल ये प्रत्येक औषध आठ ८ तोले लेय सब १०२४ तोले जलमें डालके काढा करे जब चतुर्थांश शेष रहे, तब उतारके छान ले फिर इसमें ६४ तोले घी डालके फिर चूल्हेपर चढाय उसम चिरायता, इन्द्रजौ, काकोली, पीपल, कमल इनका एक २ तोला कल्क डालके घृत सिद्ध करे, इस घृतको बलाबल विचारके १ तोला देवे तो पित्तकी संग्रहणीका नाश हाय ॥

तिक्तादिकाढा ।

तिक्तामहौषधरसांजनधातकीभिः पथ्येंद्रबीजघनकौटजभंगुराभिः ॥ क्वाथो हरेद्बहुविधं ग्रहणीविकारं पित्तोद्भवं सगुदशूलमतिप्रवृद्धम् ॥

अर्थ—कुटकी, सोंठ, रसोत, धायके फूल, हरड, इन्द्रजव, नागरमोथा, कूडेकी छाल और सपेद अतीस इनका काढा अनेक प्रकारकी संग्रहणी, गुदाकी पीडा और पित्तसंग्रहणी इन सब रोगोंको नाश करे ॥

श्रीफलादिकल्क ।

श्रीफलशलाटुकल्को नागरचूर्णेन मिश्रितः सगुडः ॥
ग्रहणीगदमत्युग्रं तक्रभुजा शीलितो जयति ॥

अर्थ—कच्चे बेलगिरीके कल्कमें सोंठका चूर्ण और गुड डालके देवे तथा छांछ भात पथ्यमें देवे तो संग्रहणीका नाश करे ॥

नागरादिचूर्ण ।

नागरातिविषा मुस्ता धातकी सरसांजनम् ॥ वत्सकत्वक्फलं बि-
ल्वं पाठा तिक्तकरोहिणी ॥ पिबेत्समांशकं चूर्णं सक्षौद्रं तंदुलांबु-
ना ॥ पित्तजे ग्रहणीदोषे रक्तं यश्चोपवेश्यते ॥ अर्शांसि हृद्गुदशू-
लं जयेच्चैव प्रवाहिकाम् ॥ नागराद्यमिदं चूर्णं कृष्णात्रेयेण भाषितम्॥

अर्थ—सोंठ, अतीस, नागरमोथा, धायके फूल, रसोत, कूडेकी छाल, इन्द्रजौ, बेलगिरी, पाढ, चिरयता और कुटकी ये समान भाग लेवे सबको कूट पीस चूर्ण कर चावलके धोवनमें शहत मिलायके इसका सेवन करे तो पित्तकी संग्रहणी, रक्तसंग्रहणी, बवासीर, हृद्रोग, गुदाके रोग, शूल और प्रवाहिका इनको नष्ट करे। यह नागरादि चूर्ण कृष्णात्रेयने कहा है ॥

यवान्यादिचूर्ण ।

यवानी पिप्पलीमूलं चातुर्जातकनागरैः ॥ धातकी तिंतिणी कृष्णा
बालकश्चैकभागिकः ॥ सिताषड्भागसंयुक्तं सर्वं चूर्णं प्रकल्प-
येत् ॥ कर्षैकं भक्षयेन्नित्यमजाक्षीरं पिबेदनु ॥ नाशयेद्ग्रहणीरोगं
पित्तोत्थं सप्रवाहिकम् ॥

अर्थ—अजमायन, पीपरामूल, चातुर्जात, सोंठ, धायके फूल, इमली, पीपर और नेत्रवाला ये प्रत्येक तोले २ भर लेवे तथा मिश्री छः तोले डाले इन सबका चूर्ण कर नित्य १ तोला खाय, इसके ऊपर बकरीका दूध पीवे तो पित्तसंग्रहणी और प्रवाहिका इनका नाश करे ॥

चंदनादिकाढा ।

चंदनं पद्मकोशीरपाठा मूर्वा कुटंनटम् ॥ सौराष्ट्र्यतिविषा
पत्रत्वगेला देवदारु च ॥ मरिचं चूर्णयेत्तुल्यं मधुना लेहयेदनु ॥
अजाक्षीरं जलार्धेन क्वाथ्य दुग्धावशेषकम् ॥ पिबेत्पित्तहरं रात्रौ
क्षीरिणीशाकमाचरेत् ॥ दध्यन्नं दापयेत्पथ्यं दुग्धैर्वा लाजमंडकम् ॥

अर्थ–चंदन, पद्माख, खस, पाढ, मूर्वा, टेंटू, फिटकरी, अतीस, पत्रज, दालचीनी, इलायची, देवदारु और कालीमिरच सब समान भाग लेय । सबका चूर्ण कर शहतसे सेवन करे और इसके ऊपर बकरीके दूधमें आधा पानी डालके औटावे जब दूध मात्र शेष रहे तब उतारके इस पित्तहरण करनेवालेको रात्रिमें पींवे, खिरनीका साग पथ्यमें देवे, तथा दही भात अथवा खीलोंका मड पथ्यम देना चाहिये ॥

रसांजनादिचूर्ण ।

रसांजनं प्रतिविषा वत्सकस्य फलत्वचौ ॥ नागरं धातकीं चैत-
त्सक्षौद्रं तंदुलांबुना ॥ पित्तग्रहणिदोषार्शरक्तपित्तातिसारनुत् ॥

अर्थ–रसोत, अतीस, इन्द्रजौ, कूडेकी छाल, सोंठ और धायके फूल ये समान भाग लेवे, सबका चूर्ण कर चावलके पानीमें शहत मिलायके इसके साथ सेवन करे तो पित्तसंग्रहणीके दोष और बवासीर, रक्तपित्त और पित्तातिसार इनको नाश करे ॥

भूनिंबादिपुटपाक ।

भूनिंबरोहिणी पथ्या पटोलं निंबपर्पटम् ॥ तुल्यं माहिषमूत्रेण
मर्द्यमंतः पुटे दहेत् ॥ कर्षैकं लेहयेदाज्यैर्वाह्निदीपनमुत्तमम् ॥
दीपनं बहुपित्तस्य तिक्तं मधुरसंयुतम् ॥

अर्थ–चिरायता, कुटकी, हरड, पटोलपत्र, नीमकी छाल और पित्तपापडा ये समान भाग ले सबको भैंसके मूत्रमें पीस पुटपाकविधिसे भूनके इसको १ तोला घीके साथ सेवन करे तो यह अग्निका दीपन करे । यदि पित्तरोगपर लेना होके तो कुटकी और शहत इनके साथ लेवे ॥

आम्रादियोग ।

आम्रास्थिविश्वगोशृंगवत्सश्चाम्ररसेन तु ॥ मर्दयेत्त्रिदिनं सम्य-

क्सितया सह योजयेत् ॥ तस्य पित्तोद्भवां हंति ग्रहणीं रोगकारिणीम् ॥ ज्वरातिसारं तीव्रं च रक्तस्रावं सशूलनुत् ॥

अर्थ-आमकी गुठली, सोंठ, बबूर और कूडेकी छाल ये सब पदार्थोंको आमके रससे तीन दिन खरल कर इसमें मिश्री मिलायके सेवन करे तो पित्तकी संग्रहणी, ज्वरातिसार, रक्तस्रावं और शूल इनका नाश करे ॥

आम्रादिपेया।

आम्रमाम्रातकं जंबूत्वक्कषाये पचेद्भिषक् ॥
यवागूशालिभिर्युक्तां भुक्त्वा तां ग्रहणीं जयेत् ॥

अर्थ-आम, अंबाडा और जामुन इनकी छालका काढा करके उस काढेमें शाली चावलोंकी यवागू सिद्ध करे, चावलसहित सेवन करे तो पित्तकी संग्रहणी नष्ट होवे ॥

कफसंग्रहणीकी उत्पत्ति।

गुर्वतिस्निग्धशीतादिभोजनादतिभोजनात् ॥ भुक्तमात्रस्य च स्वप्नाद्धंत्यग्निं कुपितः कफः ॥ तस्यान्नं पच्यते दुःखं हृल्लासच्छर्द्यरोचकाः ॥ आस्योपदेहमाधुर्यकासष्ठीवनपीनसाः ॥ हृदये मन्यते स्त्यानमुदरं स्तिमितं गुरु ॥ दुष्टो मधुरमुद्गारः सदनं स्त्रीष्वहर्षणम् ॥ भिन्नामश्लेष्मसंसृष्टगुरुवर्चप्रवर्तनम् ॥ अकृशस्यापि दौर्बल्यमालस्यं च कफात्मके ॥

अर्थ-भारी, अत्यंत चिकना, शीतल आदि पदार्थके खानेसे अति भोजनसे तथा भोजन करके सोनेसे इन कारणोंसे कुपित हुआ कफ जठराग्निको शांत करे तब इसका खाया अन्न कष्टसे पचे, हृदयमें पीडा होय, वमन, अरुचि, मुखका कफसे लिपासा, तथा मुखका मीठा रहना, खांसी कफ थूके, सरेकमा होय, हृदय पानीसे भरा सदृश होय, पेट भारी और जड हो, दुष्ट और मीठी डकार आवे, अग्निशांति हो, स्त्रीरमणमें अरुचि, पतला आम कफ मिला और भारी ऐसा मल निकले, बल विना शरीर पुष्ट दीखे, आलस्य बहुत आवे ये कफकी संग्रहणीके लक्षण हैं ॥

पंचकोलाभयाधान्यपाठागंधपलाशकैः ॥ बीजपूरप्रवालैश्च सिद्धैः पेयादि कल्पयेत् ॥ ग्रहण्यां श्लेष्मदुष्टायां वमितस्य यथाविधि ॥

अर्थ-पीपर, पीपरामूल, चव्य, चीतेकी छाल, सोंठ, हरड, धनिया, पाढ और गंधक ये प्रत्येक एक २ पल लेवे; फिर बिजोरेके पत्तों करके सहित पेया बनावे इस पेयाके पीनेसे कफकी दुष्ट संग्रहणी और वमनका रोग ये दूर होवें ॥

ग्रहण्यां कफदुष्टायां तीक्ष्णैः प्रच्छर्दने कृते ॥
कट्वम्ललवणक्षारैस्तिक्तैश्चाग्निं विवर्द्धयेत् ॥

अर्थ-कफके दूषित होनेसे जो संग्रहणी हुई हो उसको तीक्ष्ण वमनकी औषधी करके कटु, अम्ल, निमक, क्षार और तिक्त (कडुए) रसों करके इस रोगीकी अग्निको वैद्य बढावे ॥

चित्रकं ग्रंथिकं पथ्या कुष्ठं प्रतिविषां वचाम् ॥ शुंठी मुस्तविडंगं च सुरा तक्रोष्णवारिभिः ॥ श्लैष्मिके ग्रहणीदोषे पीतं चाग्निविवर्द्धनम् ॥

अर्थ-चीतेकी छाल, पीपरामूल, हरड, कूठ, अतीस, वच, सोंठ, नागरमोथा, वायविडंग इनका चूर्ण करके दारु, छांछ, गरम जल इनके साथ कफके संग्रहणीमें पीवे तो संग्रहणी दूर होय और जठराग्नि बढे ॥

हिंगु क्षारौ समौ पथ्या शुंठी पिप्पलिचित्रकाः ॥
द्व्यंशास्तत्पूर्ववत्पीतश्लेष्मग्रहणिदोषनुत् ॥

अर्थ-हींग, जवाखार, दोनों समान ले, हरड, सोंठ, तथा पीपर और चित्रककी छाल ये दो दो भाग लेके चूर्ण करे और दारु, छाँछ अथवा गरम जलके साथ पीवे तो कफकी संग्रहणीका विकार नष्ट होय ॥

अभयातिविषा शुंठी वचा मुस्ता कणा शिफा ॥ विडादिलवणं वह्निः कुष्ठं दारु समांशतः ॥ सुश्लक्ष्णचूर्णमेतेषां भक्षितं तप्तवारिणा ॥ श्लेष्मजां ग्रहणीं हंति रक्तमाभ्यां सहाचिरात् ॥

अर्थ-जंगी हरड, अतीस, सोंठ, वच, नागरमोथा, पीपरामूल, विडादि पंच निमक, चीतेकी छाल, कूठ, देवदारु ये प्रत्येक समान भाग लेवे सबका चूर्ण कर गरम जलके साथ भक्षण करे तो कफजन्य संग्रहणी, तथा रक्त और आमयुक्त संग्रहणीभी शीघ्र दूर होवे ॥

पलाशं चित्रकं चव्यं मातुलुंगं हरीतकी ॥ पिप्पली पिप्पलीमूलं पाठा

धान्यकनागरम् ॥ कार्षिकान्युदकप्रस्थे पक्त्वा पादावशेषितम् ॥
पानीयार्थे प्रयुंजीत यवागूं तैश्च साधिताम् ॥

अर्थ-ढाकके बीज, चीतेकी छाल, चव्य, बिजोरा, हरड, पीपल, पीपरामूल, पाढ, धनिया और सोंठ ये प्रत्येक एक २ तोला लेवे, सबको जवकूट करके १ सेर जल डालके औटावे, जब चतुर्थांश शेष रहे तब उतारके छान लेवे, इस क्काथमें यवागू सिद्ध करे इस यवागूके सेवन करनेसे कफजन्य संग्रहणी नष्ट होवे ॥

पथ्या शुंठी कणा वह्निश्चूर्णमेषां समासतः ॥
तक्रपीतं ध्रुवं हंति ग्रहणीं श्लेष्मसंभवाम् ॥

अर्थ-हरड, सोंठ, पीपल, चीतेकी छाल इनका चूर्ण करके छांछके साथ पीवे तो कफकी संग्रहणी दूर होय ॥

समूला पिप्पली क्षारौ द्वौ पंचलवणानि च ॥ मातुलुंगाभया रास्ना-
सठीमरिचनागरैः ॥ कृत्वा समांशं तच्चूर्णं पिबेत्प्रातः सुखांबुना ॥
श्लैष्मिके ग्रहणीदोषे बलमांसाग्निवर्द्धनम् ॥ एतैरेवौषधैः सिद्धं
सर्पिः पेयं समारुते ॥

अर्थ-पीपर, पीपरामूल, सज्जीखार, जवाखार, पांचों निमक, बिजोरा, हरड, रास्ना, कचूर, कालीमिरच, सोंठ इनका समानभाग चूर्ण करके प्रातःकाल सुखोष्ण जलके साथ पीवे तो कफकी संग्रहणीको नष्ट करे तथा बल और मांसको बढावे । यदि बादीकी संग्रहणी होय तो इन्हीं पूर्वोक्त औषधोंसे घी सिद्ध करके पीवे ॥

सठ्यादिचूर्ण ।

सठी व्योषाभया क्षारौ ग्रंथिकं बीजपूरकम् ॥
लवणाम्लांबुना पेयं श्लैष्मिके ग्रहणीगदे ॥

अर्थ-कचूर, सोंठ, काली मिरच, पीपर, हरड, जवाखार, सज्जीखार, पीपरामूल और बिजोरा इनका चूर्ण सैंधानिमक और निंबूका रस इनके साथ पीवे तो यह कफसंग्रहणीका नाश करे ॥

रास्नादिचूर्ण ।

रास्ना पथ्या सठी व्योषं द्वौ क्षारौ लवणानि च ॥ ग्रंथिकं मातुलुंगं
च सममेकत्र चूर्णयेत् ॥ पिबेदुष्णेन तोयेन श्लैष्मिके ग्रहणीगदे ॥

अर्थ-रास्ना, हरड, कचूर, सोंठ, मिरच, पीपल, सज्जीखार, जवाखार, सैंधानिमक, संचर, बिडनोन, पीपरामूल और बिजोरेकी केशर इनका चूर्ण गरम जलके साथ पीवे तो कफकी संग्रहणीको नाश करे ॥

पथ्यादितक्रयोग।

पथ्याकणानागरवह्निचूर्णं तक्रेण पीतं ग्रहणीगदघ्नम् ॥
तक्रेण हन्यात्किल केवलं वा शुंठीकणाभ्यां ग्रहणीं सशूलाम् ॥

अर्थ-हरड, पीपल, सोंठ और चीतेकी छाल इनका चूर्ण छाँछसे पीवे तो शूलयुक्त संग्रहणी और कफसंग्रहणी इनका नाश करे। अथवा केवल सोंठ और पीपलका चूर्ण छाँछसे पीवे तो कफकी संग्रहणीको नाश करे ॥

चतुर्भद्रादिकाढा।

गुडूच्यातिविषाशुंठीमुस्तैः क्वाथः कृतो जयेत् ॥
आमानुषक्तां ग्रहणीं ग्राही दीपनपाचनः ॥

अर्थ-गिलोय, अतीस, सोंठ और नागरमोथा इनका काढा सेवन करनेसे आम-संग्रहणीका नाश करे तथा ग्राहक, अग्निदीपक और पाचन है ॥

कठिन मलकी चिकित्सा।

कृच्छ्रेण काठिनत्वेन यः पुरीषं विमुंचति ॥
सघृतं लवणं तस्य पाययेत्क्लेशशांतये ॥

अर्थ-जिस प्राणीका कष्टसे और कठोर ऐसा मल उतरे उसको घीमें निमक मिलायके पिवावे तो उसका कष्टयुक्त कठोर दस्त होना दूर होवे ॥

विडंगादियोग।

विडं यवानी विष्टंभे पिबेदुष्णेन वारिणा ॥

अर्थ-वायविडंग और अजवायन इनके चूर्णको गरम जलसे पीवे तो विष्टंभ (कष्टसे मलका उतरना) नाश होय ॥

वातश्लेष्मसंग्रहणी।

वातश्लेष्माधिके योज्या कुटजाद्यवलेहिका ॥ पर्पटीरसगुंजाष्टौ लिहेन्मध्वाज्यकेन या ॥ सहिंगुजीरकं व्योषं निष्कार्धं भक्षये-दनु ॥ ग्रहणीं कफवातोत्थां शमयेत्तक्रभोजने ॥

अर्थ–वातकफाधिक्य संग्रहणीपर कुटजावलेह देना चाहिये अथवा पर्पटीरस रत्ती ८ लेकर शहत और घीसे देवे और इसके ऊपर हींग, जीरा, सोंठ, मिरच और पीपल इनका चूर्ण २ मासे देवे तथा छाँछ भातका उसको भोजन करावे तो कफवातजन्य संग्रहणीका नाश होय ॥

कचूरादिचूर्ण ।

कचूरो लवणं पंच रास्ना त्र्यूषं हरीतकी ॥ सर्जिक्षारं यवक्षारं मातुलुंगं समं समम् ॥ चूर्णमुष्णांबुना पेयं बलवर्णाग्निवर्धनम् ॥ श्लेष्मिकं ग्रहणीदोषं सवातं च विनाशयेत् ॥

अर्थ–कचूर, पांचों निमक, रास्ना, सोंठ, काली मिरच, पीपल, हरड, सज्जीखार, जवाखार और बिजोरेका जीरा ये समान भाग लेवे इनका चूर्ण गरम जल पीवे तो बल तथा अग्नि इनको बढावे और कफवातजन्य संग्रहणीका नाश करे

तालीसादिवटी ।

तालीसपत्रचविकामरिचानां पलं पलम् ॥ कृष्णा तन्मूलयोर्द्वे द्वे पले शुंठी पलत्रयम् ॥ चातुर्जातमुशीरं च कर्षांशं सूक्ष्मचूर्णितम् ॥ चूर्णस्य त्रिगुणेनैव गुडेन वटिका कृता ॥ भक्षयेत्तु पलार्ध च वातश्लेष्मोत्थिते गदे ॥ उत्कटां ग्रहणीं छर्दिं कासं श्वासं ज्वरारुचीं ॥ शोफगुल्मोदरं पांडुं तालीसाद्येन नाशयेत् ॥

अर्थ–तालीसपत्र, चव्य, काली मिरच ये प्रत्येक चार २ तोले लेवे, पीपल और पीपरामूल ये आठ २ तोले लेवे, सोंठ बारह तोले, चातुर्जात तथा नेत्रवाला ये एक एक तोला लेकर सबका चूर्ण करे और चूर्णसे तिगुना गुड मिलाय दो तोलेकी गोली बनावे । इसके भक्षण करनेसे कष्टतर संग्रहणी, वमन, खांसी, श्वास, ज्वर, अरुचि, सूजन, गोला, उदरका रोग तथा पांडु (पीलियाका) रोग इनको नाश करे । इसको तालीसादि वटी कहते हैं ॥

कफपित्तसंग्रहणीपर रसादिवटिका ।

शुद्धं सूतं त्रिधा गंधं जंबीरैर्मर्दयेद्दिनम् ॥ सर्वांशं जीवशंबूकमरीचिमधुसंयुतम् ॥ निष्ककेन निहंत्याशु ग्रहणीं कफपित्तजाम् ॥

अर्थ–शुद्ध पारा १ तोला और शुद्ध गंधक ३ तोले इन दोनोंकी कजली करके

इसमें सबकी बराबर जीवसहित छोटा शंख डालके जंभीरीके रससे एक दिन खरल करे और मिरचके चूर्ण तथा शहतसे चार मासेकी मात्रा देवे तो कफपित्तजन्य संग्रहणीको नष्ट करे ॥

मुसल्यादियोग।

मुसलीं पेषयेत्तक्रे अथवा तंडुलोदकैः ॥
कर्षैकं योजयेच्चानु पथ्यं तक्रौदनं हितम् ॥

अर्थ-मूसलीके चूर्णको छाँछमें अथवा चावलके धोवनमें पीसके एक तोला देवे तथा पथ्यमें छाँछ और भात देय तो यह संग्रहणीको नाश करे ॥

वातपित्तसंग्रहणीपर मुंड्यादिगुटिका।

मुंडी शतावरी मुस्ता वानरी दुग्धिकामृता ॥ यष्टीकं सैंधवं तुल्यं सूक्ष्मचूर्णं प्रकल्पयेत् ॥ चूर्णस्य द्विगुणा योज्या विजया मृदुभर्जिता ॥ घृतस्निग्धे पचेद्भांडे दुग्धं दशगुणं गवाम् ॥ यावत्पिंडत्वमापन्ना तावन्मृद्वग्निना पचेत् ॥ पिंडतुल्यं तु सक्षौद्रं मिश्रीनिष्कत्रयं त्रयम् ॥ भक्षयेद्विजयेदेव द्वंद्वजग्रहणीगदम् ॥ पित्तवाते श्लेष्मपित्ते सम्यक्पित्ते च योजयेत् ॥

अर्थ-गोरखमुंडी, शतावर, नागरमोथा, कौंचके बीज, दूधी, गिलोय और सैंधा निमक इनका बारीक चूर्ण कर चूर्णसे दुगुनी भुनी हुई भांग मिलायके घीके बासनमें गौके दसगुने दूधमें मंदाग्निसे पक्क करे जब गोला बँधने लगे तब उतारके इसमें गोलेके समान शहत मिलाय देवे फिर इसमेंसे १ तोलेको तीन तोले मिश्रीके साथ भक्षण करे तो द्वंद्वजसंग्रहणी, पित्तवात, श्लेष्मापित्त और पित्त इनका नाश करे। यह मुंड्यादिगुटिका कहाती है ॥

सन्निपातग्रहणीनिदानलक्षण।

पृथग्वातादिनिर्दिष्टहेतुलिंगसमन्विते ॥
त्रिदोषं निर्दिशेदेनं तस्य वक्ष्यामि लक्षणम् ॥

अर्थ-वातादि तीनों दोषोंके जो लक्षण कह आये हैं वे सब जिसमें मिलते होंय उसको त्रिदोषकी संग्रहणी जानिये (तेषां वक्ष्यामि भेषजम्) यह पद केवल पादपूरणार्थ लिखा है ॥

आमं बहु सपैच्छिल्यं सशब्दं मंदवेदनम् ॥

पक्षान्मासाद्दशाहाद्वा नित्यं चापि विमुंचति ॥

अर्थ-त्रिदोषसंग्रहणी रोग अपक्क, बहुत लहसदार, मंडपीडा और शब्द इन करके युक्त ऐसे मलको १५ पंद्रह दिनमें किंवा १ महीनेमें अथवा दश दिनमें तथा नित्य प्रति गुदाद्वारा त्याग करे ॥

असाध्यलक्षण ।

दिवा प्रकोपो भवति रात्रौ शांतिं व्रजत्यपि ॥
दुर्विज्ञेया दुर्निवारा चिरकालानुबंधिनी ॥

अर्थ-जो संग्रहणी दिनमें कुपित हो और रात्रिमें यत्किंचित् शांत हो जावे वह अत्यंत दुर्ज्ञेय (जो जाननेमें न आवे) और दुर्निवार (जो दूर न हो सके) तथा बहुत काल पर्यंत रहनेवाली जाननी ॥

घटीयंत्रग्रहणीलक्षण ।

प्रसुप्तिः पार्श्वयोः शूलं तथा जलघटीध्वनिः ॥
तं वदंति घटीयंत्रमसाध्यं ग्रहणीगदम् ॥

अर्थ-जिस संग्रहणीमें अंगमें नोचनेसे मालूम न हो, ऐसी शून्यता होवे तथा दोनों कूखोंमें शूल होवे, पेटमें गुडगुडाहटशब्द हो उस व्याधिको घटीयंत्रसंग्रहणी कहते हैं । (घटी नाम घडेका है उस भरे घडेको रीता करनेके समान शब्द होनेसे वैद्योंने इसका घटीयंत्रनाम रक्खा है) यह असाध्य है ऐसा जानना ॥

लिंगैरसाध्यो ग्रहणीविकारो यैस्तैरतीसारगदो निषिध्येत् ॥
वृद्धस्य नूनं ग्रहणीविकारो हत्वा तनुं नो विनिवर्ततेच ॥

अर्थ-जिन लक्षणों करके अतिसार रोग असाध्य कहा है यदि वह लक्षण संग्रहणीमें मिले तो वह संग्रहणीरोग असाध्य जानना । तथा वृद्धमनुष्यके संग्रहणीका रोग हुआ होय तो विना प्राणहरण करे नहीं छोडे यह निश्चय है ॥

अतीसारस्य रिष्टानि ग्रहण्यामपि लक्षयेत् ॥

अर्थ-अतिसाररोगमें जो उपद्रव होते हैं वेही प्रायः संग्रहणीमें होते हैं ऐसा वैद्यको जानना चाहिये ॥

उसकी चिकित्सा ।

सर्वजायां ग्रहण्यां तु सामान्यो विधिरिष्यते ॥ दीपनान्यन्नपाना-

नि चूर्णारिष्टघृतानि च ॥ प्रविभज्य यथावस्थं सर्वजे बस्तिकर्म च ॥

अर्थ-अब संपूर्ण दोषोंसे होनेवाली संग्रहणीकी सामान्य विधि कही जाती है । यावन्मात्र दीपनकर्ता अन्न, पान, चूर्ण, अरिष्ट, घृत है उनको यथायोग अवस्था विचारके देवे तथा सन्निपातजन्य संग्रहणीमें बस्तिकर्म करना चाहिये ॥

शतावरीघृत ।

शतावरी चंदन चोत्पलं च प्रियंगु पाठा मगधास्थिराभिः ॥ बिल्वाजमोदातिविषा समंगा जीवंतिवह्नीन्द्रयवैः सुपिष्टैः ॥ घृतं कषाये तु कलिंगकानां पक्वं निहन्याद्ग्रहणीं त्रिदोषाम् ॥ पित्तातिसारं रुधिरप्रवाहं तथार्शसां दोषसमुद्भवं च ॥

अर्थ-शतावर, चंदन, कमलफूल, प्रियंगु, पाढ, पीपर, सालपर्णी, बेलगिरी, अजमोद, अतीस, मंजीठ, जीवंती, चीतेकी छाल, इन्द्रजौ इन सबको समान भाग लेके काढा करे इस काढेसे घृत बनावे । यह घी त्रिदोषकी संग्रहणीको, पित्तातिसारको, रुधिरके प्रवाहको तथा बवासीर इन सबको नष्ट करे ॥

अरुष्करघृतम् ।

अरुष्करं हिंगुकणा सयष्टी भूतीकशुंठी मरिचं शताह्वा ॥ अजाजिचव्यारुचकं सवह्निं विडं विडंगं सहदीप्यकं च ॥ सक्षारहिंगुत्रिकटूग्रगंधापलार्धभागैर्विपचेद्विधिज्ञः ॥ अजाधान्यकचांगेरीदशमूलीशृतैः पृथक् ॥ हविःप्रस्थं निहंत्याशु ग्रहणीं सर्वजां नृणाम् ॥ विष्टंभमामजान्रोगान्कृमिजान्कुक्षिजांस्तथा ॥ मंदानलभवान्सर्वान्नभस्वानिव वारिदम् ॥

अर्थ-भिलावे, हींग, पीपल, मुलहटी, रोहिषतृण, सोंठ, मिरच और शतावर, सपेद जीरा, चव्य, संचरनिमक, चीतेकी छाल, बिडनिमक, वायविडंग, अजवायन, जवाखार, हींग, त्रिकटु, वच ये प्रत्येक दो दो तोले लेवे इनको बकरीका मूत्र, धनिया, चूका और दशमूल इनके काढेमें पृथक् २ पचाय १ प्रस्थ घृत सिद्ध करे । यह घी सर्वदोषजन्य संग्रहणीको दूर करे, तथा अफरा, आमवातके रोग, कृमिजन्यरोग, कूखके रोग, मंदाग्निसे होनेवाले रोग इन सबको जैसे पवन बादलोंको नष्ट करे इस प्रकार यह नष्ट करे । कोई आचार्य अरुष्कर करके अमलतासका ग्रहण करते हैं ॥

सामस्तथा निरामो दोषो ग्रहणीमुपाश्रितो द्विविधः ॥
प्रोक्तोऽतिसारिणां च विज्ञेयोपाचरेद्वैद्यः ॥

अर्थ–संग्रहणी दो प्रकारकी है एक साम दूसरी निराम यह भेद अतिसार-रोगमें कह आये हैं उसके अनुसार सामनिरामके लक्षण विचारके वैद्य चिकित्सा करे॥

अतिसारिणोऽतिसारे यदभिहितं पाचनादि तदभिज्ञैः ॥
अत्राप्यनुसंधेयं किन्तु विशेषः क्वचित्तंत्रे ॥

अर्थ–अतिसारवालेको अतिसाररोगमें जो विद्वान् वैद्योंने पाचनादि कहे हैं वह सब इस संग्रहणीरोगमेंभी देना चाहिये तथा किसी २ तंत्रमें जो विशेष औषध कही है वह देवे ॥

तक्रसेवन ।

दुःसाध्यो ग्रहणीरोगो भेषजैर्नैव शाम्यति ॥ सहस्रशोऽपि विहि-तैर्विना तक्रस्य सेवनात्॥ दोषधातुबलापेक्षो ग्रहण्यां तक्रमापिबेत्॥

अर्थ–संग्रहणी रोग दुःसाध्य है वह हजारों औषधोंके सेवन करनेपर भी शांत नहीं होता अतएव दोष, धातु और बल इनके सामर्थ्यके अनुसार छाँछका सेवन करे, क्योंकि विना तक्र (छाँछ) सेवन करनेके ग्रहणीरोग शांत नहीं होवे ॥

तक्रसेवन ।

ग्रहणीरोगिणां तक्रं संग्राहि लघु दीपनम् ॥ सेवनीयं सदा गव्यं त्रिदोषशमनं हितम् ॥ तक्रं च मधुरं शुंठीचूर्णयुक्तं पिबेत्सदा ॥ शनैः शनैर्हरेदन्नं तक्रं तु परिवर्धयेत् ॥ तक्रमेव यथाहारो भवे-दन्नविवर्जितः ॥ तक्रसात्म्यं यथा कुर्यान्नैवान्नं तत्र भक्षयेत् ॥ बुभुक्षायां पिपासायां पिबेत्तक्रं सनागरम्॥ मौनं च कुर्याद्बहुशो न कुर्याद्बहुभाषणम् ॥ न कुर्यान्मैथुनं तक्रपाने क्रोधं विवर्जयेत् ॥ एवं यः सेवते तक्रं ग्रहणी तस्य नश्यति ॥ शीघ्रमेव न संदेहः श्रीर्यथानृतकारिणः ॥

अर्थ–संग्रहणीवाले रोगीको छाँछ पीना लघु और दीपन है । गौकी छाँछ त्रिदोषनाशक, तथा हितकारी है, इसमें सोंठका चूर्ण मिलायके पीवे और धीरे २ क्रमसे अन्नको घटाता जाय और छाँछको बढाता जावे, इस प्रकार करते २ केवल छाँछ मात्र रह जावे अन्न सर्वथा छूट जाय वहांतक करे । इसपर अन्न न खाय, जब २ भूख और प्यास लगे तभी २ सोंठका चूर्ण डालके छांछ पिलानी

चाहिये, और जहांतक होसके मौन रहे, बहुत बोलना इसपर निषेध है तथा छाँछ पीनेवालेको मैथुन करना तथा क्रोध करना वर्जित है, इस प्रकार छॉछ पीनेसे शीघ्र संग्रहणीरोग नाश होवे ॥

दूसरा प्रकार।

वातेऽम्लं सैंधवोपेतं पित्ते स्वादु सशर्करम् ॥ पिबेत्तक्रं कफे चापि क्षारत्रिकटुसंयुतम् ॥ हिंगुजीरयुतं घोलं सैंधवेनावधूलितम् ॥ ग्रहण्यर्शोऽतिसारघ्नं भवेद्वातहरं परम् ॥

अर्थ–वातसंग्रहणीपर खट्टी छॉछमें सैंधानिमक डालके देवे। पित्तकी संग्रहणीपर मिष्ट छॉछमें सपेद बूरा वा सपेद खांड मिलायके पीवे। कफकी संग्रहणीमें क्षार, तथा त्रिकटु डालके देवे और हींग, जीरा, तथा सैंधानिमक मिलायके दहीकी मथी हुई छॉछ देवे तो यह संग्रहणी, ववासीर, अतिसार और वायु इनको नाश करे ॥

तक्रयोग्य गौ।

चारयेद्विपिने दोग्ध्रीं लताशाद्वलसंकुले ॥ पीतांभसं गतायासां कामगां तां गृहं नयेत् ॥ दुग्ध्वा दुग्धमुपादद्यात्ततस्तक्रे कृते कृती ॥ अशृतं तद्धितं वाते पित्ते किंचिच्छृतं स्मृतम् ॥ सान्निपातरुजि श्लेष्मण्यपि पादोनसंसृते ॥

अर्थ–जिस गौका तक्र (छॉछ) बनाना हो उसको जिस वनमें अनेक प्रकारकी लतापता (वनस्पति) हो उसमें चरावे फिर सायंकालके समय जल पीके और परिश्रम दूर होगया हो उसको उसकी इच्छापूर्वक धीरे २ घरमें लावे, फिर उसका दूध दुहके छॉछ बनानेकी विधिसे तक्र (छाँछ) बनावे। बादीके रोगमें कच्चे दूधको जमायके छॉछ बनावे, पित्तके रोगमें कुछ थोडासा औटायके छाँछ बनावे, और सन्निपातके रोगमें तथा कफके विकारमें एक हिस्सा दूध जल जावे तब छाँछ बनावे ॥

पक्क और अपक्क तक्रके गुण।

तक्रमामं कफं कोष्ठे हन्ति कंठ करोति च ॥
पीनसश्वासकासादौ पक्कमेवावशिष्यते ॥

अर्थ-कची छाँछ कोठेके कफको नष्ट करे और कंठमें कफको करे है, तथा पीनस, श्वास, खांसी इनमें पक्क (पकी) छाँछ देनी चाहिये ॥

ज्वालालिंगरस ।

शुद्धं सूतं मृतं स्वर्णं मरिचं तुत्थकं समम् ॥ ज्वालामुख्याग्निजैर्द्रावैर्जलं मंदं विपाचयेत् ॥ दिनैकं मर्दयेत्खल्वे गुंजामात्रं च भक्षयेत् ॥ ज्वालालिंगरसो नाम त्रिदोषे योजयेत्सदा ॥ कर्षैकं वह्निमूलं तु तक्रे पिष्ट्वा पिबेदनु ॥ तक्रारिष्टयुतं पथ्यं शाल्यन्नं भक्षयेत्सदा ॥

अर्थ-शुद्ध पारा, सुवर्णकी भस्म, काली मिरच और नीलाथोथा ये समान भाग लेवे सबको खरल कर ज्वालामुखी और चीतेकी रससे मंदाग्नि पचन करे फिर एक दिन खरल करे इसमेंसे एक रत्ती त्रिदोषपर देवे ऊपरसे चीतेकी जडको छाँछमें पीसके वह १ तोला छाँछ पीनेको देवे तथा पथ्यमें छाँछ और भात और मद्य देय तो यह त्रिदोषजन्य संग्रहणीको नष्ट करे ॥

ग्रहणीकपाटरस ।

तारमौक्तिकहेमानि साराश्चैकैकभागिकाः ॥ द्विभागो गंधकः सूतस्त्रिभागो मर्दयेद्भिषक् ॥ कपित्थस्वरसैर्गाढं मृगशृंगे तु तत्क्षिपेत् ॥ पुटेन्मध्यपुटेनैव तत उद्धृत्य मर्दयेत् ॥ बलारसैः सप्तवेलमपामार्गरसैस्त्रिधा ॥ माषमात्रं रसो देयो मधुना मरिचैस्तथा ॥ हन्यात्सर्वानतीसारान्ग्रहणीं सर्वजामपि ॥ कपाटो ग्रहणीरोगे रसोऽयं वह्निदीपनः ॥

अर्थ-रूपेकी भस्म, मोतीकी भस्म, सुवर्णभस्म, कांतलोहकी भस्म ये प्रत्येक एक एक तोला लेवे तथा गंधक २ तोले लेय और पारा ३ तोले इन सबको एकत्र कर कैथके रसमें खरल कर हरणके सींगमें भरके मध्यम पुटमें धरके फूंक देवे, जब स्वांग शीतल होजावे तब निकालके खरेटीके रसकी सात भावना देवे तथा औंगाके रसकी तीन भावना देय तो यह (ग्रहणीकपाटरस) तैयार हो । इसमेंसे १ मासा रस शहत तथा काली मिरचोंका चूर्ण इनके साथ देवे तो संपूर्ण अतिसार और सन्निपातात्मक संग्रहणी इनका नाश करे तथा अग्निको दीपन करे ॥

दूसरा प्रकार ।

रसेन गंधातिविषाभयाभ्रं दश त्रयं मोचरसं वचा च ॥

जया च जंबीररसेन पिष्टः पिंडीकृतः स्याद्ग्रहणीकपाटः ॥

अर्थ—शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, अतीस, हरड और अभ्रकभस्म ये प्रत्येक दश २ तोले लेवे और मोचरस, वच और भांग ये प्रत्येक तीन २ तोले लेय सबको एकत्र कर खरलमें डाल नींबूके रसमें घोटके गोली बनावे इसको ग्रहणीकपाटरस कहते हैं। यह संग्रहणीरूप दरवाजोंके बंद करनेको किवाडरूप है ॥

तीसरा प्रकार।

शुद्धैः कर्कवराटकैर्गणनया भल्लातका तत्समान्स्रोतान् बब्बुलकंटकैर्लघुपुटैस्तस्यांघ्रिभागस्य च ॥ लेलीतेन समं विचूर्ण्य जयया सप्तानुभाव्यं शिवप्रोक्तोऽयं ग्रहणीकपाटकरसस्त्रैवल्लकः स्वौषधैः ॥

अर्थ—उत्तम सपद बडी २ कौडी लेवे, जितनी कौडी होवे उन्हीके समान मिलायके लेय, उनको बबूलके कांटोंसे छेदकर लघुपुटमें उनका तेल निकास लेवे इस प्रकार भिलावेका निकाला हुआ तेल चतुर्थांश ले, तथा गंधक कौडियोंकी बराबर लेवे इन सबको एकत्र खरल करे और इसमें सात पुट भांगकी देवे। यह (ग्रहणीकपाट) शिवका कहा हुआ रस अनुमानसे तीन वल्ल देवे तो संग्रहणीको दूर करे ॥

वज्रकपाटरस।

मृतसूताभ्रकं गंधं यवक्षारं सटंकणम् ॥ अग्निमंथं वचां कुर्यात्सूततुल्यानिमान्सुधीः॥ ततो जयंतीजंबीरभृंगद्रावैर्विमर्दयेत् ॥ त्रिवासरं ततो गोलं कृत्वा संशोष्य साधयेत् ॥ लोहपात्रे शरावे च दत्त्वोपरि च मुद्रयेत् ॥ अधो वह्निं शनैः कुर्याद्यामार्धं तत उद्धरेत् ॥ रसतुल्यां प्रतिविषां दद्यान्मोचरसस्तथा ॥ कपित्थविजयाद्रावैर्भावयेत्सप्तधा पृथक् ॥ धातकींद्रयवामुस्तालोध्रबिल्वगुडूचिका ॥ एतैर्द्रवैर्भावयित्वा वह्निकैकं तु शोषयेत् ॥ रसं वज्रकपाटाख्यं माषैकं मधुना लिहेत् ॥ वह्नि शुंठी विडं बिल्व लवणं चूर्णयेत्समम् ॥ पिबेदुष्णांबुना चानु सर्वजां ग्रहणीं हरेत् ॥

अर्थ—पारेकी भस्म, अभ्रक भस्म, गंधक, जवाखार, सुहागा, अरनी और वच ये प्रत्येक समान भाग लेवे चूर्ण करे उसमें भांग, नींबू और भांगरा इनके

रसमें तीन दिन खरल करे। फिर इसका गोला करके धूपमें सुखाय ले फिर इसको लोहके पात्रमें अथवा शरावसंपुटमें रखके मुद्रा करे फिर इसको अग्निपर चढायके चार घडी पचन करावे फिर उतारके संपुटमेंसे औषधोंको निकाल समान भाग अतीसका चूर्ण और मोचरस मिलायके कैथ और भांगके रसकी सात २ भावना देवे पश्चात् धायके फूल, इन्द्रजौ, नागरमोथा, लोध, बेलगिरी और गिलोय इनके काढेमें अथवा इनके रसमें एक एक भावना देवे फिर २ अथवा ३ रत्तीकी गोलियां बनावे तो यह (वज्रकपाटरस) तैयार होवे। यह एक मासा रस शहतसे देय और इसके ऊपर चीता, सोंठ, वायविडंग, बेलगिरी और निमक इनका चूर्ण कर गरम जलसे पीवे तो सर्व प्रकारकी संग्रहणीको नष्ट करे॥

ग्रहणिकामदवारणसिंह।

सुरभिपारदहिंगुलचित्रकान् गगनभृष्टसुटंकणजातिकान् ॥ कनकबीजमथोऽतिविषाकटुत्रयहरीतकिभस्मसुदीप्यकान् ॥ गरलबिल्वकलिंगकपित्थकान्नलदमोचकदाडिमधातकी ॥ जलदशाल्मलिपिच्छयुतान्समान्कनकसाम्यमफेनमिदं दृढम् ॥ कनकपत्ररसैः परिमर्दयेन्मरिचमानवटी मधुसंयुता ॥ विनिहरेद्ग्रहणीगदमुत्कटं ज्वरयुतामसतीं च विषूचिकाम् ॥ अग्निमांद्यमथ शूलविबंधं गुल्मशूलमथ पांडुममंदम् ॥ सरुधिराममतीव समुत्कटं ग्रहणिकामदवारणसिंहः ॥

अर्थ-शुद्ध पारा, शुद्ध हिंगुल, चीता, अभ्रकभस्म, भुना सुहागा, शुद्ध धतूरके बीज, अतीस, सोंठ, मिरच, पीपल, जंगीहरड, आरने उपलोंकी राख, अजवायन, सिंगिया विष, बेलगिरी, इन्द्रजौ, कैथ, नेत्रवाला, मोचरस, अनारकी छाल, धायके फूल, नागरमोथा, सेमरके फूल, धतूर और अफीम ये समान भाग लेवे सबको धतूरेके पत्तोंके रससे खरल करे, काली मिरचके समान गोली बनावे। १ गोली शहतसे देवे तो ज्वरयुक्त संग्रहणी, दुष्टविषूचिका, मंदाग्नि, शूल, अनेक प्रकारके गोला, तीव्र पांडुरोग और रक्तस्रावी आमका रोग इन सबको नाश करे अतएव इसको ग्रहणिकामदवारणसिंह कहते हैं॥

पारदादिवटी।

पारदं गंधकं तारममृतं चानु शुल्बकम् ॥ त्रिफला त्रिसुगंधी च

चित्रकोशीररेणुकाः ॥ रजनीद्वयसंयुक्तं संपिष्य वटकीकृतम् ॥
ग्रहण्यष्टविधं शूलं शोथातीसारनाशनम् ॥

अर्थ-पारा, गंधक, रूपेकी भस्म, विष, तामेकी भस्म, त्रिफला, त्रिसुगंध, चीता, नेत्रवाला, पित्तपापडा, हलदी और दारुहलदी ये सब एकत्र करके घोटे ...र गाढा होनेपर गोली बनाय लेय तो यह संग्रहणी, आठ प्रकारका शूलरोग, ...जन और अतिसार इनका नाश करे ॥

सज्जीक्षारादियोग।

सर्जिका यवशूकं वा विजयातिविषासमम् ॥ दीप्यकं पारदं गंधं
निंबुनीरेण भावयेत् ॥ माषार्धं मधुना देयं सितया वा घृतान्वि-
तम् ॥ अमुं दद्याद्ग्रहण्यार्तिज्वरातीसारशांतये ॥ सशूलशोथस-
हितां ग्रहण्यार्तिं प्रणाशयेत् ॥

अर्थ-सज्जीखार, जवाखार, भांग, अतीस, अजमायन, पारा और गंधक ये ...ब औषध समान भाग लेवे सबका एकत्र चूर्ण करके नींबूके रसकी भावना देवे, ...समेंसे ४ रत्ती रस शहतमें मिलायके देवे और ऊपरसे खांड और घी, मिलायके ...क्षण करे तो यह योग संग्रहणी और ज्वर, अतिसार, शूल और सूजन इन ...रके युक्त संग्रहणीको नाश करे ॥

पारदादिवटी।

दग्ध्वा वराटकान्पीतान् त्र्यूषणं टंकणं विषम् ॥ गंधकं शुद्धसूतं
च समं जंबीरजैर्द्रवैः ॥ मर्दयेद्भक्षयेन्माषं मरीचाज्यं लिहेदनु ॥
निहंति ग्रहणीरोगान्पथ्यं तक्रौदनं हितम् ॥

अर्थ-पारा, गंधक, रूपेकी भस्म, सिंगियाविष, ताम्रभस्म, त्रिफला, त्रिसुगंध, ...तेकी छाल, पीले रंगकी कौडी लेकर अग्निमें राख कर ले, उस कौडीकी राखके ...मान, सोंठ, मिरच, पीपल, सुहागा, विष, गंधक और पारा ये समान भाग लेवे ...नका नींबूके रसमे खरल कर इसमेंसे १ मासा रस काली मिरच और घीके साथ ...वे पथ्यमें छाँछ भात देय तो संग्रहणीका नाश करे, तथा ज्वरप्रकरणमें व्याधि-...जकेसरी रस कहा है उसको भी देवे ॥

सुवर्णरसपर्पटी।

शुद्धसूतं पलमितं तुर्यांशं स्वर्णसंयुतम् ॥ मर्दयेन्निंबुनीरेण याव-

देकत्वमाप्नुयात् ॥ प्रक्षाल्योष्णांबुना पश्चात्पलमात्रे सुगंधके ॥ द्रुते लोहमये पात्रे बादरानलयोगतः ॥ प्रक्षिप्य चालयेल्लौह्या मंदं मंदं विलोक्य च ॥ ततः पाकं विदित्वा तु रंभापत्रे विनिःक्षिपेत् ॥ गोमयस्थे तदुपरि रंभापत्रेण यंत्रयेत् ॥ शीतं तच्चूर्णितं गुञ्जाक्रमवृद्ध्या निषेवयेत् ॥ माषमात्रं भवेद्यावत्ततो मात्रां न वर्धयेत् ॥ सक्षौद्रेणोषणेनैव लेहयेद्भिषगुत्तमः ॥ ग्रहणीं हंति शोषं च सुवर्णरसपर्पटी ॥ सद्यो बलकरी शुक्रवर्धनी वह्निदीपनी॥ क्षयकासश्वासमोहशूलातीसारपांडुनुत् ॥

अर्थ–शुद्ध पारा ४ तोले और सुवर्णके वर्क १ तोला एकत्र करके नींबूके रस खरल करे, जब मिलके एकरूप होजावे तब इसको गरम जलसे धोयकर इसमें चार तोले शुद्ध गंधक डालके लोहेके पात्रमें बेरकी अग्निपर रखके पतली व उसमें शुद्ध सुवर्णके पत्र और पारा मिलायके लोहेकी कलछीसे धीरे २ चलाक जब परिपक्व होजावे तब गोबरमें केलाका पत्ता बिछाय उसपर उसको ढाल दे और तत्काल दूसरे पत्तेसे ढककर गोबरकी पोटलीसे दाब देवे, जब शीत होजावे तब निकास लेवे यह पपडीके माफिक होजावेगी, इसमेंसे १ रत्तीसे लेक छः रत्ती पर्यंत बलाबल देखकर वैद्य रोगीको देय तथा शहत और त्रिकुटा चूर्णमें मिलायके लेवे तो संग्रहणी, शोष, क्षय, खांसी, श्वास, प्रमेह, शूल, अतिसार और पांडुरोग इनको नाश करे तथा यह सुवर्णपर्पटी रस तत्काल बल शुक्र और अग्निको बढावे है ॥

पर्पटी ।

शुद्धपारदगंधाभ्यां कृता पर्पटिका नृणाम् ॥
निहंति ग्रहणीं क्षौद्रयुक्ता पथ्यभुजां भृशम् ॥

अर्थ–शुद्ध पारा और गंधक इन दोनोंकी कजली कर पर्पटी करके शहतके साथ भक्षण करे तो यह संग्रहणीका नाश करे इस पर्पटीके सेवन करनेवालेको पथ्य करना चाहिये ॥

ग्रहणीगजकेसरीरस ।

गंधं पारदमभ्रकं च दरदं लोहं च जातीफलं बिल्वं मोचरसं विषं प्रतिविषं व्योषं तथा धातकी ॥ भ्रष्टामप्यभयां कपित्थजलदौ दीप्या-

नलौ दाडिमं टंकाद्वसम कलिंगकात्कनकजं बीजं च यक्षेक्षणम् ॥ एतत्तुर्यमफेनमेतदखिलं संमर्द्य संचूर्णयेद्धत्तूरच्छदजै रसैः सुमतिमान्कुर्यान्मरीचाकृतिम् ॥ दत्ता सा ग्रहणीगदं सरुधिरं सामं सशूलं चिरातीसारं विनिहंति जूर्तिसहितां तीव्रां विषूचीमपि ॥ साध्यासाध्यमपि स्वयं परिहरेदुक्तानुपानैरपि नाम्ना तु ग्रहणीमतंगजमदध्वंस्येष कंठीरवः ॥

अर्थ—गंधक, पारा, अभ्रकभस्म, हिंगुल, लोहभस्म, जायफल, बेलगिरी, गोचरस, सिंगियाविष, अतीस, सोंठ, कालीमिरच, पीपल, धायके फूल, भुनी हुई हरड, कैथ, नागरमोथा अजमायन, चीतेकी छाल, अनारदाना, कूडेकी छालकी राख १ तोला, धतूरेके बीज तथा लताकरंज ये समान भाग लेवे और अफीम चार भाग ले सबको एकत्र खरल कर धतूरेके रससे मिरचके समान गोली बनावे। इसके देनेसे संग्रहणी, रक्त, आम, शूल, बहुत दिनोंका अतिसार ज्वर, विषूचिका (हैजा) तथा साध्यासाध्य संग्रहणी इन सबका नाश करे। इस रसको ग्रहणीगजकेसरी रस कहते हैं ॥

अग्निसुतरस।

भागो दग्धकपर्दकस्य च तथा शंखस्य भागद्वयं भागो गंधकसूतयोर्मिलितयोः पिष्टा मरीचादपि ॥ भागस्य त्रितयं नियोज्य सकलं निंबूरसे चूर्णितं नाम्ना वह्निसुतो रसोऽयमचिरान्मांद्यं जयेद्दारुणम् ॥ घृतेन खंडैः सह भक्षितोऽसौ क्षीणान्नरानाशु समीकरोति ॥ समागधीचूर्णघृतेन लीढो नरः प्रमुंचेद्ग्रहणीविकारात् ॥ शोषज्वरारोचकशूलगुल्मान्पांडूदरार्शोग्रहणीविकारान् ॥ तक्रानुपानो जयति प्रमेहान्युक्त्या प्रयुक्तोऽग्निसुतो रसेंद्रः ॥

अर्थ—कौडीकी भस्म १ भाग, शंखभस्म २ भाग, गंधक और पारा दोनों मिलाकर १ भाग, काली मिरचका चूर्ण ३ भाग ले सबका एकत्रित चूर्ण कर नींबूके रसमें खरल करे, यह अग्निसुतरस युक्तिके साथ घी और मिश्रीके संग सेवन करनेसे बहुत दिनोंकी मंदाग्नि, क्षीणता इनका नाश करे तथा पीपलके चूर्ण और घी इनके साथ सेवन करनेसे संग्रहणीविकार तथा छाँछके साथ शोष ज्वर, अरुचि, शूल, गोला, पांडुरोग, उदर, बवासीर, संग्रहणी विकार इनका नाश करे। इसको प्रमेहपर भी वैद्य अपनी युक्तिसे देवे तो प्रमेहको दूर करे ॥

ग्रहणीकपाटरस।

पारदाद्द्विगुणो गन्धस्ताभ्यां तुल्यं कटुत्रयम् ॥ अजाजी टंकणं धान्यं हिंगुजीरयवानिकाः ॥ प्रत्येकं द्विगुणं सूताद्रुचकं च चतुर्गुणम् ॥ सर्वेषां च समा ज्ञेया दग्धा सुज्ञैर्वराटिका ॥ सर्वमेकीकृतं चूर्णं माषद्वयमितं ततः ॥ तक्रेणालोड्य मतिमान्भक्षयेत्सततं नरः ॥ ग्रहणीकपाटो ह्येष हितः स्याद्ग्रहणीगदे ॥

अर्थ–पारा १ तोला, गंधक २ तोले, त्रिकुटा ३ तोले, जीरा, सुहागा, धनिया, हींग, काला जीरा और अजमायन ये प्रत्येक दो दो तोले लेवे और पांगा निमक ४ तोले तथा इन सबके चूर्णके समान कौडीकी भस्म लेक ये संपूर्ण एक खरल करे तो यह ग्रहणीकपाटरस तैयार हो, इसमेंसे दो मासे रस छांछके साथ पीवे तो यह संग्रहणीरोगका नाश करे ॥

सूतादिगुटी।

सूतकं गन्धकं लोहं विषं चित्रकपत्रकम् ॥ विडग रेणुका मुस्तमेला ग्रंथिककेसरम् ॥ फलत्रिकं त्रिकटुकं शुल्बभस्म तथैव च ॥ एतानि समभागानि दीयते द्विगुणो गुडः ॥ कासे श्वासे क्षये गुल्मे प्रमेहे विषमज्वरे ॥ लूतायां ग्रहणीमांद्ये शूले पार्श्वामये तथा ॥ हस्तपादादिरोगेषु गुटिकेयं प्रशस्यते ॥

अर्थ–पारा, गंधक, लोहभस्म, सिंगियाविष, चीतेकी छाल, पत्रज, वायविडंग, पित्तपापडा, नागरमोथा, इलायची, पीपरामूल, नागकेशर, त्रिफला त्रिकुटा और ताम्रभस्म ये समान भाग लेवे और गुड इसमें दो भाग मिलावे सबको कूट पीस गोली बनावे। यह खांसी, श्वास, क्षय, गोला, प्रमेह, विषमज्वर, लूता, संग्रहणी, मंदाग्नि, शूल, कूखका रोग और हाथ पैरोंका रोग इनपर देवे यह परमोत्तम है ॥

कणादिलेह।

कणानागरपाठाभिस्त्रिवर्गद्वितयेन च ॥ बिल्वचंदनह्रीबेरैः सर्वातीसारनुन्मतः ॥ सर्वोपद्रवसंयुक्तामपि हंति प्रवाहिकाम् ॥ नानेन सदृशो लेहो विद्यते ग्रहणीहरः ॥

अर्थ–पीपर, सोंठ, पाढ, त्रिफला, त्रिकुटा, बेलगिरी, चंदन और नेत्रवाला

इनका अवलेह बनायके सेवन करे तो संपूर्ण उपद्रवयुक्त संग्रहणी और प्रवाहिका इनको नाश करे। इससे बढिया दूसरा प्रयोग संग्रहणीरोगपर नहीं है ॥

अभ्रकादिवटी।

रसं गंधं विषं व्योषं टंकणं लोहभस्मकम् ॥ अजमोदाहिफेनं च सर्वतुल्यं मृताभ्रकम् ॥ चित्रकत्वक्कषायेण मर्दयेद्याममात्रकम् ॥ मरीचाभां वटीं कृत्वा खादेदेकां जयेदसौ ॥ चतुर्विधां च ग्रहणीं रहस्यं तदिदं स्मृतम् ॥

अर्थ–शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, सिंगियाविष, सोंठ, मिरच, पीपल, सुहागा, लोहकी भस्म, अजमोद और अफीम ये समान भाग ले सबकी बराबरकी अभ्रक भस्म लेवे, सबको एकत्र कर चीता, दालचीनी इनके काढेमें एक प्रहर खरल करे फिर काली मिरचके समान गोली बनावे। १ गोली नित्य खाय तो चार प्रकारकी संग्रहणीका नाश करे यह गुप्त प्रयोग कहा है ॥

सूतराज।

रसगंधाभ्रकाणां च भागानेकाद्विकाष्टकान् ॥ संचूर्ण्य सर्वरोगेषु युंज्याद्वल्लचतुष्टयम् ॥ ग्रहणीक्षयगुल्मार्शोमेहधातुगतज्वरान् ॥ निहंति सूतराजोऽयं मंडलस्य च सेवनात् ॥

अर्थ–शुद्ध पारा १ तोला, शुद्ध गंधक २ तोले, अभ्रक भस्म ८ तोले, इस प्रमाणसे लेकर सबकी कजली करे फिर इसमेंसे ४ वल्ल अर्थात् ८ रत्ती एक मंडल पर्यंत सेवन करे तो यह सूतराज संग्रहणी, क्षय, गोला, अर्श (बवासीर), प्रमेह और धातुगतज्वर इन सबको नाश करे ॥

पूर्णचंद्ररसेंद्र।

सूतं गंधं चाश्वगंधागुडूचीयष्टीतोयैर्मर्दयेदेकघस्रम् ॥ क्षुद्रं शंखं मौक्तिकं लोहकिट्टं भस्मीभूतं सूततुल्यं तु दद्यात् ॥ भूकूष्मांडैर्वासरं संविमर्द्य गोलं कृत्वा भूधरे तं पुटेच्च ॥ चूर्णं कृत्वा नागवल्लीरसेन दद्यादेतं मर्दयित्वैकयामम् ॥ मध्वाज्याभ्यां पूर्णचंद्रो रसेंद्रः पुष्टिं वीर्यं दीपनं चैव कुर्यात् ॥ प्रायो योज्यः पित्तरोगे ग्रहण्यामक्षिरोगे पित्तजे घोलयुक्तम् ॥ स्त्रीणां तापे शाल्मलीनीरयुक्तं योज्यं चाज्यं वा शताह्वाविपक्वम् ॥

अर्थ–पारा, गंधक इन दोनोंको असगंध, गिलोय और मुलहटी इनके काढेमें एक दिन खरल करे, फिर छोटे शंख, मोती और मंडूर इनकी भस्म पारेके समान मिलायके विदारीकंदके रसमें एक दिन खरल कर उसका गोला बनायके भूधर-यंत्रमें रखके फूंक देवे, जब शीतल होजावे तब उसको निकाल बारीक पीस नागरवेलपानके रसमें १ प्रहर खरल करे तो यह पूर्णचंद्ररस बनके तैयार हो। इसको घी और शहतसे सेवन करे तो पुष्टता वीर्यको और जठराग्निको प्रबल करे। इसको पित्तरोगमें, संग्रहणी और नेत्ररोगमें घोलके साथ देवे, स्त्रियोंके ज्वरमें सेमरके रससे वा शतावरके रससे सिद्ध करे घृतके साथ सेवन करे॥

दंभ ।

नाभौ द्व्यंगुलकादधोर्धशशिवद्वंशास्थिमूले तथा ॥
दाहः प्रज्वलितायसस्य कथितो दंभो ग्रहण्यातुरे ॥

अर्थ–संग्रहणी रोगवालेके नाभि (टूडीके) ऊपर दो अंगुलपर तथा नाभिके नीचे अंगुलपर अर्धचंद्राकार और उसी प्रकार वंशास्थिमूलके विषे लोहके टुकडेको अग्निमें तपाकर दाग देवे॥

दूसरा प्रकार ।

दंभं ताम्रशलाकया ग्रहणिकां लोहस्य वा स्वर्णयोर्देयं नाभिरधस्थ-द्व्यंगुलमितं बस्तिद्वयोर्मध्यगम् ॥ पूयस्रावमपथ्यमेव विहितं पेयं जलं शीतलं वातोत्थामपि पित्तजामपि चिराद्धन्याद्वलासादिकम् ॥

अर्थ–संग्रहणीपर ताम्र, लोह अथवा सुवर्ण इनकी सलाईसे नाभिके नीचे दो अंगुलपर तथा नाभिके ऊपर दो अंगुलपर, नाभि और बस्ति इनमें दाग देवे और पूयस्राव होवे ऐसा पथ्य करे और शीतल जल पीवे तो वातपित्तकफात्मक बहुत दिनोंकी संग्रहणी नाश होवे॥

सिंहनपुरीचूर्ण ।

एकः प्रदेयो रुचकस्य भागो ह्यर्धोऽजमोदस्य च सैंधवस्य ॥
शुंठ्यास्त्रयो द्वौ मरिचस्य भागौ चूर्णं चतुर्थं सितजीरकस्य ॥
तक्रेण पानात्कफवातरोगांस्तद्भोजनांते खलु दीपनाय ॥
सिंहेन राज्ञा कथितं च चूर्णं प्लीहोदराजीर्णविषूचिकासु ॥

अर्थ-संचरनिमक १ तोला, अजमोद ६ मासे, सैंधानिमक ६ मासे, सोंठ घाडकी ३ तोले, काली मिरच २ तोले, सपेद जीरा ४ तोले सबका चूर्ण करके छाँछके साथ सेवन करे तो कफवातके रोग नष्ट होवें, यदि भोजनके पश्चात् इसका सवन करे तो अग्निको दीपन करेहै; सिंहन राजाने यह चूर्ण कहा है। यह तापतिल्ली, उदररोग, अजीर्ण और विषूचिका इन रोगोंमें देवे तो सबको नष्ट करे॥

द्वितीय सिंहनपुरीचूर्ण।

रुचकसैंधवहिंगुयवानिका समघृता द्विगुणोषणवेतसाः॥ जरणनागरसागरसंयुतः पिबति तक्रयुतं हि चतुर्गुणम्॥ हरति मंदहविर्भुजमंजसा गुदगदान्ग्रहणीमतिदुर्जयाम्॥ विषमशूलरुजामरुचिं तथा विविधवारिकृतानखिलामयान्॥ विरचितं खलु सिंहनभूभुजा रुचिरचूर्णमिदं कृपया नृणाम्॥

अर्थ-संचरनिमक, सैंधानिमक, हींग, अजवायन ये सब समान भाग लेवे, और कालीमिरच एक औषधसे दूनी लेवे, तथा मिरचोंके बराबर अमलवेत लेवे तथा जीरा और सोंठ ये चार २ भाग लेवे, सबको कूट पीस चूर्ण बनावे; इसको चौगुनी छाँछके साथ पीवे तो मंदाग्नि, गुदाके रोग, दुर्जय संग्रहणी, विषम शूलका रोग, अरुचि तथा अनेक प्रकारके संपूर्ण जलविकार इन सब रोगोंको यह दूर करे, यह चूर्ण सिंहनराजाधिराजने प्राणियोंकी कृपा विचार निर्माण करा है, इसीसे यह सिंहनपुरीचूर्ण विख्यात है॥

तृतीय सिंहनपुरीचूर्ण।

एकांशो रुचकादुभौ मरिचतः शुंठ्यास्त्रयो जीरतश्चत्वारोऽर्द्धयुतः समुद्रलवणो भागस्तथा सैंधवः॥ चूर्णं सिंहनभूभुजा हि कथितं तक्रेण संसेवितं गुल्मानाहविषूचिकागुदरुजः श्वासानिलान्नाशयेत्॥

अर्थ-संचरनिमक १ पल, कालीमिरच २ पल, सोंठ घाडकी ३ पल, सपेद जीरा ४ पल, समुद्रलवण २ तोले, सैंधानिमक २ तोले ले सबको कूट पीस चूर्ण बनावे यह सिंहन महाराजने कहा है इसीसे इसको सिंहनपुरी चूर्ण कहते हैं। इसको छाछके साथ सेवन करे तो गोला, अफरा, विषूचिका (हैजा), बवासीर, श्वास (दमा) और वादी इन सब रोगोंका नाश करे॥

लाईचूर्ण।

सूतं गंधं त्रिकटुकं दीप्यकं जीरकद्वयम्। सौवर्चलं सैंधवं तु राम-

ठं बिडमेव च ॥ शक्राशनस्य चूर्णं तु सर्वतुल्यं प्रदापयेत् ॥ संग्रहं शूलमानाहं हन्यान्नानातिसारजित् ॥

अर्थ-शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, त्रिकटु (सोंठ, मिरच, पीपल), अजवायन सपेद जीरा, काला जीरा, संचरनिमक, सैंधानिमक, हींग, बिडनिमक ये सब औषधी बराबर भांग लेवे और सब औषधोंकी बराबर भांग लेवे सबको कूट पीसकर सेवन करे तो मलके संग्रहको, शूल, अफरा और अनेक प्रकारके अतिसारोंको दूर करे।

ज्वालामुखचूर्ण ।

शक्राशनं सप्तपलं सितायाः पलत्रयं छिन्नरुहा शताह्वा । तथैव मूलं गिरिकर्णिकायाः पलं पलं वै कथितं त्रयाणाम् ॥ सर्वं तु चूर्णं वरभृंगराजद्रवेण चालोड्य पुनः पुनस्तु ॥ घर्मेषु संशोष्य च सप्तवारं नित्यं लिहेत्कर्षप्रमाणकं तत् । वितुल्यसर्पिर्मधुभिः समेतं स्निग्धाम्लमुद्गा हितभोजनं च ॥ करोति वह्निं ग्रहणीं च हन्यात्सामातिसारानसृजो विकारान् ॥ कुष्ठामवातं पिटकान्विसर्पं ज्वालामुखं नाम हितं नराणाम् ॥ व्याधीन्समस्तानपि हंति शीघ्रं यानंत्रभूताञ्जठरोद्भवांश्च ॥

अर्थ-भांग ७ पल, खांड ३ पल, गिलोय, सतावर, अपराजिता ये प्रत्येक एक एक पल लेवे सबका चूर्ण करके भांगरेके रसकी सात भावना देवे और प्रत्येक भावना देदेकर धूपमें सुखायले फिर इस चूर्णमेंसे १ तोले प्रमाण नित्य घी और सहत विषम भाग लेकर इसमें चूर्ण मिलायके सेवन करे इसके ऊपर चिकने, खट्टे, मूंगके पदार्थ इत्यादि हित भोजन करे तो यह जठराग्निको बढावे, संग्रहणी, आमातिसार, रुधिरके विकार, कुष्ठरोग, आमवात, पिडका, विसर्परोग, तथा आंतडेके और उदररोगोंको यह ज्वालामुख चूर्ण शीघ्र दूर करे ॥

नारायणचूर्ण ।

गुडूचीं वृद्धदारुं च कुटजस्य फलं तथा ॥ बिल्वं चातिविषं चैव भृंगराजं च नागरम् ॥ शक्राशनस्य चूर्णं च सर्वमेकत्र मेलयेत् ॥ चूर्णमेतत्समं ग्राह्यं कुटजस्य त्वचोऽपि च ॥ गुडेन मधुना वापि लेहयेद्भिषजां वरः ॥ शोथं रक्तमतीसारं चिरजं दुर्जयं तथा ॥ ज्वरं तृष्णां च कासं च पांडुरोगं हलीमकम् ॥ मंदानलं

प्रमेहं च शूलं चापि त्रिदोषजम् ॥ अरुचिं गुदजं चैव हन्यादेव न संशयः ॥ एतन्नारायणं चूर्णं श्रीनारायणभाषितम् ॥

अर्थ-गिलोय, विधायरा, इन्द्रजौ, वेलगिरी, अतीस, भांगरा, सोंठ घाडकी और भांग ये सब समान भाग ले और सब चूर्णकी बराबर कूडेकी छाल लेवे, सबका चूर्ण करे इस चूर्णको गुडमें मिलायके सेवन करे अथवा सहतके साथ चूर्ण करे तो सूजन, रुधिरातिसार, घोर और दुर्जय अतिसार, ज्वर, तृष्णा, खांसी, पांडुरोग, हलीमक, मंदाग्नि, प्रमेह, त्रिदोपजन्य शूल, अरुचि, गुदाके रोग इन सबको यह दूर करे। यह नारायण चूर्ण श्रीनारायणका कहा हुआ है ॥

चित्रांबररस।

शुद्धं सूतं मृतं चाभ्रं गंधकं मर्दयेत्समम् ॥ लोहपात्रे घृताभ्यक्ते क्षणं मृद्वग्निना पचेत् ॥ चालयेल्लोहदण्डेन अवतार्य विभावयेत् ॥ त्रिदिनं जीरकक्काथैर्माषैकं भक्षयेत्सदा ॥ ग्रहणी शांतिमायाति सर्वोपद्रवसंयुता ॥ रसश्चित्रांबरो नाम ग्रहणीग्रहहृन्मतः ॥ शमयेदनुपानेन आमशूलं प्रवाहिकाम् ॥

अर्थ-शुद्ध पारा और गंधक दोनोंकी कजली तथा अभ्रकभस्म ये सब पदार्थ लोहेके पात्रमें-अग्निपर रख मंद २ अग्निसे पचावे, तथा लोहेके मूसलसे घोटता जावे, फिर इसको उतारके तीन दिन जीरेके काढेकी भावना देवे तो यह (चित्रांबररस) बनके तैयार हो। यह अनुपानके साथ एक मासा खाय तो संपूर्ण उपद्रवसहित संग्रहणीको, आमशूल और प्रवाहिकाको नाश करे ॥

अगस्तिसूतराजरस।

रसवलिसमभागं तुल्यहिंगूलयुक्तं द्विगुणकनकबीजं नागफेनेन तुल्यम् ॥ सकलविहितचूर्णं भावयेद्भृंगनीरैर्ग्रहणिजलधिशोषे सूतराजो ह्यगस्तिः ॥ त्रिकटुकमधुयुक्तो सर्ववांतिं च शूलं कफपवनविकारं वह्निमांद्यं च निद्राम् ॥ घृतमरिचयुतोऽयं गुंजमात्रः प्रवाहीं हरति षडतिसाराञ्जीरजाजीफलेन ॥

अर्थ-पारा, गंधक और हींगलू ये २ तोले लेवे, धतूरेके बीज और अफीम ये दो दो तोले ले, सबको एकत्र करके भाँगरेके रसकी भावना देवे, यह (अगस्तिसूतराज) सोंठ, मिरच, पीपल और सहत इनके अनुपानसे १ रत्ती देय तो वांति,

शूल, कफ, वातसंबंधी विकार, मंदाग्नि और निद्रा इनको दूर करे तथा छः प्रकारके अतिसारपर जीरा और जायफलके साथ देना चाहिये ॥

कनकसुंदररस ।

हिंगुलं मरिचं गंधं पिप्पली टंकणं विषम् ॥ कनकस्य च बीजानि समांशं विजयाद्रवैः ॥ मर्दयेद्याममात्रं तु चणमात्रा वटी कृता ॥ भक्षणाद्ग्रहणीं हंति रसः कनकसुंदरः ॥ अग्निमांद्यं ज्वरं तीव्रमतीसारं च नाशयेत् ॥ दध्यन्नं दापयेत्पथ्यं तथा तक्रौदनं चरेत् ॥

अर्थ–हींगलू, काली मिरच, गंधक, पीपल, सुहागा, सिंगियाविष और धतूरेके बीज सबको समान भाग लेकर भांगके काढेमें १ प्रहर खरल कर चनेके बराबर गोली बनावे तो यह संग्रहणी, मंदाग्नि, ज्वर और अतिसार इनको नाश करे । इसपर दही भात, अथवा छाँछ भात ये पथ्य है ॥

क्षारताम्ररस ।

शंखक्षारार्कभूतिं च वराटं लोहभस्मकम् । अयोमलं यवक्षारं टंकणं क्षारमेव च ॥ त्रिकटुं सैंधवं तुल्यं भृंगतोयेन मर्दयेत् ॥ आटरूषरसैर्मर्द्यमार्द्रकस्वरसेन च ॥ चणमात्रां वटीं कृत्वा रसोऽयं क्षारताम्रकः ॥ श्वासे कासे प्रतिश्याये पुराणज्वरपीडिते ॥ मंदाग्नौ ग्रहणीदोषे त्वनुपानं यथोचितम् ॥ सेवयेत्सप्तरात्रेण नाशयेन्नात्र संशयः ॥ चिरकालानुबंधे च सेवयेन्मंडलावधि ॥ तत्तद्व्याधिहरं पथ्यं नियमेन समाचरेत् ॥

अर्थ–शंखकी भस्म, जवाखार, तामेकी भस्म, कौडीकी भस्म, लोहभस्म, मंडूर, जवाखार, सुहागा, सोंठ, मिरच, पीपल, सैंधानिमक ये सब समान भाग लेवे सबको भाँगरेके रससे, अडूसेके रससे और अदरखके रससे पृथक् २ खरल करके चनेके बराबर गोली बनावे । यह (क्षारताम्ररस) श्वास, खाँसी, पीनस, जीर्णज्वर, मंदाग्नि और संग्रहणीका दोष इनपर रोगानुरूप अनुपानके साथ देवे तो सात दिनमें गुण दिखावे । यह बहुत कालकी व्याधिपर १ मंडल पर्यंत देवे तथा जिस २ व्याधिपर दे उसपर जो जो वस्तु पथ्य कही है वह करनी चाहिये ॥

चित्रकादिगुटी ।

चित्रकं पिप्पलीमूलं द्वौ क्षारौ लवणानि च ॥ व्योषं हिंग्वजमोदा च

चव्यमेकत्र चूर्णयेत् ॥ गुटिका मातुलुंगस्य दाडिमस्य रसेन वा ॥ कृता विपाचयत्वामं दीपयत्याशु चानलम् ॥

अर्थ-चीतेकी छाल, पीपरामूल, सज्जीखार, जवाखार, निमक, सोंठ, मिरच, पीपल, हींग, अजमोद, चव्य इन सबको एकत्र कर कूट पीस बिजोरेके रससे अथवा अनारदानेके रससे घोंटकर गोली बनावे, इसको बलाबल विचारके देवे तो यह आमका पाचन करे और मंदाग्निको दीपन करे है ॥

शंबूकयोग।

दग्धशंबूकसिंधूत्थं तुल्यं क्षौद्रेण लेहयेत् ॥
निष्कैककं निहंत्याशु ग्रहणीरोगमुत्कटम् ॥

अर्थ-शंखकी भस्म और सैंधानिमक दोनों समान भाग लेके चूर्ण कर तीन मासे शहतके साथ चाटे तो घोर संग्रहणी रोग दूर करे ॥

कांकायनगुटी।

पथ्या पंचपलान्येकमजाज्यामरिचस्य च ॥ पिप्पली पिप्पलीमूलं चव्यचित्रकनागरैः ॥ पलाभिवृद्धैः क्रमशो यवक्षारं पलद्वयम् ॥ भल्लातकपलान्यष्टौ सूरणो द्विगुणो मतः ॥ द्विगुणेन गुडेनैषा वटिका चाक्षसंमिता ॥ एकैकां भक्षयेत्प्रातस्तक्रमम्लं पिबेदनु ॥ वह्निं संदीपयत्याशु ग्रहणीपांडुरोगजित् ॥ कांकायनेन शिष्येभ्यः शस्त्रक्षाराग्निभिर्विना ॥ कथिता गुटिका चैषा गुदजानां विनाशिका ॥

अर्थ-बडी हरड २० तोले, तथा जीरा, मिरच, पीपल, पीपरामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ ये प्रत्येक चार २ तोले बढतीके क्रमसे लेवे, तथा जवाखार ८ तोले, भिलावे ३२ तोले, जमीकंद ६४ तोले और गुड सब चूर्णसे दूना लेवे सबको कूट पीस एक तोलेकी गोली बनावे। इसको प्रातःकाल एक एक देवे ऊपरसे खट्टी छाँछ पिलावे तो अग्निको दीपन करे तथा संग्रहणी और पांडुरोग इनका नाश करे। यह कांकायन ऋषिने अपने शिष्योंको शस्त्रकर्म और क्षारकर्मके विना बवासीर और गुदारोग नाश करनेको कही है ॥

महाकल्याणगुड।

पिप्पली पिप्पलीमूलं चित्रकं गजपिप्पली ॥ धान्यकं च विडंगानि यवानी मरिचानि च। त्रिफला चाजमोदा च नलिनी जीरकस्तथा॥ सैंधवं रोमकं चापि सामुद्रं रुचकं तथा ॥ आरग्वधश्च त्वक्पत्रं

सूक्ष्मैला चोपकुंचिका ॥ शुंठी शक्रयवाश्चैव प्रत्येकं कर्षसंमितम् ॥ मृद्वीकाया पलान्यत्र चत्वारि कथितानि हि ॥ त्रिवृतायाः पलान्यष्टौ गुडस्यार्धपलं तथा ॥ तिलतैलं पलान्यष्टौ चामलक्या रसस्य तु ॥ प्रस्थत्रयमिदं सर्वं शनैर्मृद्वग्निना पचेत् ॥ उदुंबरं चामलकं बादरं वा यथाफलम् ॥ तावन्मात्रमिदं खादेद्भक्षयेद्वा यथाबलम् ॥ निखिलान्ग्रहणीरोगान्प्रमेहांश्चैकाविंशतिम् ॥ उरोघातं प्रतिश्यायं दौर्बल्यं वह्निसंक्षयम् ॥ ज्वरानपि हरेत्सर्वान्कुर्यात्कांतिमतिस्वरम् ॥ यथाबलं वर्द्धिता सा रक्तपित्तं च विड्ग्रहम् ॥ धातुक्षीणो वयःक्षीणः स्त्रीषु क्षीणः क्षयी च यः ॥ तेभ्यो हितश्च वंध्यायै महाकल्याणको गुडः ॥

अर्थ—पीपर, पीपरामूल, चीता, गजपीपर, धनियाँ, वायविडंग, अजवायन, काली मिरच, हरड, बहेडा, आमला, अजमोद, कमलगट्टा, जीरा, सैंधानिमक, साम्हरनिमक, समुद्रनिमक, संचरनिमक, विडनिमक, अमलतासका गूदा, दालचीनी, पत्रज, छोटी इलायची, बडी इलायची, सोंठ, इन्द्रजव ये प्रत्येक औषध एक एक तोला लेवे तथा कालीदाख १६ तोले, निसोथ ३२ तोले, गुड २०० तोले, तिलोंका तेल ३२ तोले और आमलेका रस ६४ तोले इन सबको एकत्र करके मधुरी २ आँचपर पचावे, फिर इसमेंसे गूलर, आवला, अथवा बेर इतनी बडी बलाबल विचारके गोली बनायके रोगीको देवे तो संपूर्ण संग्रहणीके रोग बीस प्रकारके प्रमेह, उरोघात (छातीकी चोट), पीनस, दुर्बलता, मंदाग्नि, संपूर्ण ज्वर इनको नष्ट करे। इसको थोडी २ शक्तिके अनुसार बढावे तो रक्तपित्त, विड्बंध, धातुकी क्षीणता, अवस्थाकी क्षीणता, स्त्रीक्षीण और क्षय इनपर हितकारी है तथा महाकल्याण गुड वंध्याको हितकारी है ॥

कूष्मांडगुड ।

कूष्मांडानां सुपक्वानां स्विन्नानां निष्फलत्वचाम् ॥ सर्पिःप्रस्थे पलशतं ताम्रपात्रे शनैः पचेत् ॥ पिप्पली पिप्पलीमूलं चित्रकं गजपिप्पली ॥ धान्यकानि विडंगानि नागरं मरिचानि च ॥ त्रिफला चाजमोदा च कलिंगा जातिसैंधवम् ॥ एकैकस्य पलं चैकं त्रिवृतोऽष्टौ पलानि च ॥ तैलस्य च पलान्यष्टौ गुडात्पंचदशैव तु ॥ आमलक्या रसं चात्र प्रस्थत्रयमुदीरितम् ॥ तावत्पाकं प्रकुर्वीत

मृदुना वह्निना भिषक् ॥ यावद्दर्वीप्रलेपः स्यात्तदैनमवतारयेत् ॥
औदुंबरं चामलकं बदरं वा यथाबलम् ॥ तावन्मात्रमिदं खादे-
द्भक्षयेद्वा यथाबलम् ॥ अनेनैव विधानेन प्रयुक्तस्य दिने दिने ॥
निहंति ग्रहणीरोगान्कुष्ठमर्शो भगंदरम् ॥ ज्वरमानाहहृद्रोगगु-
ल्मोदरविषूचिकाः ॥ कामलां पांडुरोगं च प्रमेहांश्चैकविंशतिम् ॥
वातशोणितवीसर्पदद्रुयक्ष्महलीमकान् ॥ वातपित्तकफान्सर्वा-
न्कुष्ठान्सर्वान्समाहरेत् ॥ व्याधिक्षीणा वयःक्षीणा स्त्रीषु क्षीणाश्च
ये नराः ॥ तेभ्यो हितो गुडोऽयं स्याद्वंध्यानामपि पुत्रदः ॥
वृष्यो बल्यो बृंहणश्च वयःसंस्थापनः परः ॥

अर्थ—उत्तम पके हुए तथा छिले और सीजे हुए पेठेके टुकडे ४०० तोले लेवे इनको चौंसठ तोले उत्तम घीमें डाल तामेके पात्रमें मंद २ अग्निसे पचावे फिर पीपल, पीपरामूल, चीतेकी छाल, गजपीपल, धनिया, वायविडंग, सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आवला, अजमोद, कूडेकी छाल, जीरा और सैंधानिमक ये प्रत्येक चार २ तोले ले और निसोथ ३२ तोले, और तेल ३२ तोले, गुड ६० तोले और आवलेका रस १९२ तोले सबको एकत्र करके मंदाग्नि पर रखके जब-तक कलछीसे लिपटे तबतक पचावे, फिर उतार शीतल करके किसी उत्तम पात्रमें भरके रख देवे, इसमेंसे गूलर, आवला अथवा बेरकी बराबर बलाबल विचारके देय इसी प्रकार नित्य प्रति देनेसे संग्रहणीरोग, कोढ, बवासीर, भगंदर, ज्वर, अफरा, हृदयके रोग, गोला, उदर, विषूचिका, कामला, पांडुरोग, इक्कीस प्रकारकी[1] प्रमेह, वातरक्त, विसर्प, दाद, खई, हलीमक, वादीके रोग, पित्तके रोग, संपूर्ण कफके रोग, संपूर्ण कोढ इन सब रोगोंको नष्ट करे, तथा जो रोगोंसे क्षीण हुए हैं, अवस्थाकरके क्षीण, स्त्रीसंभोग करके जो क्षीण हैं उनको यह प्रयोग परम हितकारी है, तथा वंध्या स्त्रियोंको पुत्रका देनेवाला है तथा वृष्य, बलकारी, पौष्टिक और वयस्थापक (अर्थात् बुढापेको समीप नहीं आने देवे) ऐसा है ॥

कल्याणगुड।

पाठाधान्ययवान्यजाजिहबुषाचव्याग्निसिंधूद्भवैः सश्रेयस्यज-

१ यद्यपि प्रमेह रोग बीस प्रकारके है परंतु भेडादि ग्रथोंके अनुसार इक्कीस प्रकारके हैं। और किसीके मतसे छब्बीस प्रकारके हैं ॥

मोदकीटरिपुभिः कृत्वा जटासंयुतैः॥ सव्योषैः सफलत्रिकैः सत्रुटि-भिस्त्वक्पत्रजैरौषधैः प्रत्येकं पलिकैः सुतैलकुडवैः सार्द्धत्रिवृन्मु-ष्टिभिः ॥ सर्वैरामलकीरसस्य तुलया सार्धं तुलार्ध गुडः संपाच्यो भिषजावलेहवद्यं प्राग्भोजनाद्भक्ष्यते ॥ ये केचिद्ग्रहणीगदाः सगुदजाः कासाः सशोषामयाः सश्वासश्वयथुश्चिरोदररुजः कल्याणकस्ताञ्जयेत् ॥

अर्थ–आमलेका रस ४०० तोले और गुड २०० तोले इन दोनोंका पाक करके इस पाकमें पाढ, धनिया, अजवायन, जीरा, हाऊवेर, चव्य, चित्रक, सैंधानिमक, गजपीपल, अजमोद, वायविडंग, पीपरामूल, सोंठ, काली मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आवला, इलायची, दालचीनी, पत्रज ये औषध चार २ तोले ले, फिर १६ तोले तेल और चार तोले निसोथ डालके सबको एकत्र करके पचावे। जब अवलेहके समान हो जावे तब उतारके चिकने बासनमें भरके धर रक्खे। इसको भोजनके पूर्व एक तोला नित्य भक्षण करे। इसको कल्याणगुड कहते हैं । यह संग्रहणी, बवासीर, श्वास, खाँसी, शोष, सूजन और उदर इन सबको नाश करे।

भूनिम्बादिचूर्ण।

भूनिंबकौटजकटुत्रिकमुस्तातिक्ताः कर्षांशकाः सशिखिमूलपिचु-द्वयाश्च ॥ त्वक्कौटजीं पलचतुष्कमितां गुडांभः पीतं नृणामिह हरेद्ग्रहणीविकारान् ॥

अर्थ–चिरायता, इन्द्रजौ, सोंठ, काली मिरच, पीपर, नागरमोथा और कुटकी ये औषध प्रत्येक एक २ तोला लेवे, चीतेकी छाल दो तोले और कूडेकी छाल १६ तोले इनका चूर्ण एकत्र करके गुडके जलसे भक्षण करे तो संग्रहणीजनित विकार संपूण नाश होवे ॥

अतिविषादिकाढा।

अतिविषाघनवालकधातकीकुटजदाडिमलोध्रमथोदकी ॥ विहितमे-भिरिदं सलिलं पिबेद्ग्रहणिकाविजितः प्रसभं नरः ॥ सर्वज्वरहरं ज्ञेयं ग्रहणीवेगनाशनम् ॥ अरोचमांद्यदलनं धातुवर्धनकारकम् ॥

अर्थ-अतीस, नागरमोथा, नेत्रवाला, धायके फूल, कूडेकी छाल, लोध और पाढ इनका काढा करके पीवे तो संग्रहणी, सर्वज्वर, अरुचि और मंदाग्नि इनको नाश करे तथा धातुकी वृद्धि करे है ॥

नागरादिकाढा।

नागरोशीरधनिका यवान्यातिविषा घना ॥
श्रीपर्ण्यौ च शृतं चैषां दीपनं पाचनं स्मृतम् ॥

अर्थ-सोंठ, खस, धनिया, अजवायन, अतीस, नागरमोथा, सालपर्णी, पृष्ठपर्णी इनका काढा दीपन और पाचन है ॥

पुनर्नवादिकाढा।

पुनर्नवावह्लिजबाणपुंखाविश्वाग्निपथ्याचिरिबिल्वबिल्वैः ॥
कृतः कषायः शमयेदशेषान्दुर्नामगुल्मग्रहणीविकारान् ॥

अर्थ-साँठकी जड, काली मिरच, सरफोंका, सोंठ, चीतेकी छाल, जंगी हरड, कंजेकी छाल, बेलगिरी इनका काढा करके पीवे तो बवासीर और गोला, तथा संग्रहणी इन सबका नाश करे ॥

शुंठ्यादिकाढा।

शुंठीं समुस्तातिविषां गुडूचीं पिबेज्जलेन क्वथितां समांशाम् ॥
मंदानलत्वे सततामवाते सामानुबधे ग्रहणीगदे च ॥

अर्थ-सोंठ, नागरमोथा, अतीस और गिलोय इनका काढा मंदाग्नि, आमवात और आमसहित संग्रहणी इनका नाशक है ॥

तालीसादिचूर्ण।

तालीसोग्रनिशाषडूषणनिशा बिल्वाजमोदा शठी चातुर्जातलवंगधातकिविषा जातीफलं दीप्यकम् ॥ पाठा मोचरसाम्लपंचलवणा जातीद्वयं वेल्लकं वृक्षाम्लाम्लवरा पलाशतरुजं मांस्यबुंदं वालकम् ॥ ऐंद्री ब्रह्मसुवर्चला दृढपदा कुष्ठं समस्तैः समं बल्लया सर्वसमा जयाखिलसमा मत्स्यंडिका वा सिता॥ चूर्णोऽयं ग्रहणीक्षयादिकसनश्वासारुचिप्लीहहृद्दुर्नामातिसृतिज्वरार्तिपवनस्थौल्यप्रमेहप्रणुत् ॥ तीव्रापस्मृतिपांडुगुल्मजठरश्लेष्मोत्थपित्तोद्भवोन्मा-

दाध्मानविषूचि हंति सकलं मासार्धसंसेवनात् ॥ एवं तालिस-
युक्तमेव विहितं चूर्ण सुसिद्धं भुवि बालानां च विशेषतो हितक-
रं संस्पर्शवाणिप्रदम् ॥ मांद्यध्वंसविधायकं विजयते सर्वामयध्वं-
सकं पुष्ट्यायुर्बलकांतिधीस्मृतिमहामेधाविलासप्रदम् ॥

अर्थ—तालीसपत्र, वच, हलदी, सोंठ, काली मिरच, पीपल, पीपरामूल, चीतेकी छाल, चव्य, आमियाहलदी, बेलगिरी, अजमोद, कचूर, चातुर्जात, लौंग, धायके फूल, अतीस, जायफल, अजवायन, पाढ, मोचरस, तंतडीक, पाँचों निमक, जीरा, कालाजीरा, वाडविडंग, अमलवेत, इमली, त्रिफला, पलाशपापडा, जटामांसी, खाखसा, नेत्रवाला, इलायची, ब्राह्मी, इन्द्रजव, भूय आवला और कूठ ये सब औषध समान भाग लेवे तथा सबकी बराबर खिरेटीकी छाल तथा इसको भी मिलायके सबके समान हरडका वक्कल लव और सब चूर्णके समान मिश्री लेनी चाहिये इन सबको चूर्ण कर बलाबल विचारके १५ दिनपर्यंत सेवन करे तो संग्रहणी, क्षय, खांसी, श्वास, अरुचि, प्लीहा, बवासीर, पित्तव्याधी, उन्माद, पेटका फूलना और विषूचिका इनको नष्ट करे । इस प्रकार यह तालीसादिचूर्ण इस पृथ्वीमें सिद्ध औषध है तथा बालकोंको यह परमोपयोगी होता है। यह वाणीका देनेवाला है तथा मंदाग्नि और संपूर्ण रोग इनको नाश करे तथा पुष्टि, आयुष्य, बल, कांति, बुद्धि और स्मरण तथा धारणशक्तिको देय है ॥

व्योषादिचूर्ण ।

व्योषं दीप्याजमोदा क्रिमिरिपुदहनं रामठं चाश्वगंधं सिंधूत्थं जार-
के द्वे रुचककलयुतं धान्यकं तुल्यभागम् ॥ भृंगीचूर्णं लवंगं
घृतमधुसहितं शाणमात्रं च दद्याद्दीप्तिं पुष्टिं च कांतिं बलमपि
कुरुते नाशयेत्संग्रहाख्यम् ॥

अर्थ—सोंठ, मिरच, पीपल, अजवायन, अजमोद वाडविडंग, चीतेकी छाल, हींग, असगंध, सैंधानिमक, जीरा, काला जीरा, काला नोन, बेरकी छाल, धनिया इन सबकी बराबर भांगका चूर्ण लेवे तथा लौंगका चूर्ण मिलायके [illegible]त्र करे इसमेंसे तीन मासे घी और सहत इनके साथ देवे तो अग्निको [illegible] करे, पुष्टि, कांति और बल करे तथा संग्रहणीका नाश करे ॥

बिल्वादिदुग्ध ।

[illegible]द्रशक्रयवबालकमोचसिद्धमाजं पयः पिबति यो दिवस-

त्र्यं च ॥ सोऽतिप्रवृद्धचिरकृद्ग्रहणीविकारं मासं सशोणितमसाध्यमपि क्षिणोति ॥

अर्थ—बेलगिरी, नागरमोथा, इन्द्रजव, नेत्रवाला और मोचरस ये औषध मिलायके औटाया हुआ बकरीका दूध तीन दिन पीवे तो उसके संग्रहणीसंबंधी विकार नाश होवे। यदि १ महीने पर्यंत सेवन करे तो असाध्य दुष्ट रुधिरको नष्ट करे ॥

दशमूलादिकाढा।

विश्वौषधस्य गर्भेण दशमूलजलं शृतम् ॥
निहन्यात्तेन श्वयथुं ग्रहणीं साममामयम् ॥

अर्थ—दशमूल और सोंठ इनका काढा करके पीवे तो सूजन और आमसंग्रहणी इनको नष्ट करे है ॥

मसूरादियोग।

मसूरायाः कषायेण बिल्वगर्भं विपाचयेत् ॥
हंति कुक्ष्यामयान्सर्वान्ग्रहणीपांडुकामलान् ॥

अर्थ—मसूरके काढेमें बेलगिरीको डालके औटावे जब बेलगिरी सीज जाय तब उतारके कपडेसे छानके पीवे तो संपूर्ण कूखके रोग, संग्रहणी, पांडुरोग और कामला इनका नाश करे ॥

कुटजावलेह।

कुटजस्य तुलां दत्त्वा चतुर्द्रोणांभसा पचेत् ॥ द्रोणशेषे रसे तस्मिन्पूते गुडतुलार्धकम् ॥ घृतं च टंकवत्तत्र क्षिप्त्वा मृद्वग्निना पचेत् ॥ समंगाबिल्वकाशिलाबिल्वार्धं च पुनर्नवा ॥ मुस्ताभल्लातकं चापि धातकी गजपिप्पली ॥ अंबष्ठा बालकं चैव द्वे बृहत्यौ सचित्रकम् ॥ सद्राक्षी पिप्पलीमूलं विडंगानि हरीतकी ॥ नागकेसरयष्टीकारलुका पत्रकं तथा ॥ विश्वा चेंद्रयवाः पाठा सूक्ष्मैला जीरकद्वयम् ॥ जातिपत्री,जातिफलं लवंगं तगरं तथा ॥ सुतो द्विपालिकैर्भागैर्लेहोऽयं साधयेत्ततः ॥ तक्रेण वसुतक्रं वा

पथ्यं देयं विचक्षणैः ॥ अनेन ग्रहणीरोगानतिसारान्सुदारुणान् ॥ रोगानीकविघाताय कुटजो लेह उच्यते ॥

अर्थ-चार सौ तोले कूडेकी छालको १६३८४ सोलह हजार तीन सौ चौरासी तोले जलमें डालके औटावे जब चतुर्थांश शेष रहे तब उतारके छान लेय और इसमें गुड २०० तोले घी १ टांक डालके मंदाग्निसे पचन करावे और इसमें खिरेटी, बेलगिरी और शिलाजीत ये औषध दो दो तोले लेय, तथा सोंठ, नागरमोथा, भिलावे, धायके फूल, गजपीपर, चूका, नेत्रवाला, कटेरी, बडी कटेरी, चीतेकी छाल, भारंगी, पीपरामूल, वायविडंग, जंगी हरड, नागकेशर, मुलहटी, सह्मालू, पत्रज, सोंठ, इंद्रजौ, पाढ, छोटी इलायची, जीरा, काला जीरा, जावित्री, जायफल, लवंग और तगर इन सब औषधोंका चूर्ण प्रत्येक आठ २ तोले लेके अवलेह बनावे । इस अवलेहको छाँछसे देय और पथ्यमें छाँछ पिलावे तो संग्रहणी, घोर अतिसारके रोग और अनेक प्रकारके अन्य रोगोंको दूर करे । इसको कुटजावलेह कहते हैं ॥

द्राक्षासव ।

मृद्वीकायाः पलशतं चतुर्द्रोणांभसा पचेत् ॥ द्रोणशेषे तु शीते च युते तस्मिन्प्रदापयेत् ॥ द्विशते क्षौद्रखंडाभ्यां धातक्याः प्रस्थमेव च ॥ कंकोलं च लवंगं च फलं जात्यास्तथैव च ॥ पलांशकानि मरिचं त्वगेला पत्रकेसरम् ॥ पिप्पली चित्रकं चव्यं पिप्पलीमूलरेणुकम् ॥ घृतभांडास्थितमिदं चंदनागुरुधूपितम् ॥ कर्पूरवासितो ह्येष ग्रहणीदीपनः परः ॥ अर्शसां नाशनः श्रेष्ठ उदावर्तास्त्रगुल्मनुत् ॥ जठरं कृमिकुष्ठानि व्रणांश्च विविधांस्तथा ॥ अक्षिरोगशिरोरोगगलरोगविनाशनः ॥ ज्वरमामं महाव्याधिं पांडुरोगं सकामलम् ॥ नाम्ना द्राक्षासवो ह्येष बृंहणो बलवर्णकृत् ॥

अर्थ-४०० तोले मुनक्कादाखमें ८१९२ तोले जल डालके काढा करे जब चतुर्थांश शेष रहे तो उतारके छान लेय जब शीतल हो जावे तब इसमें शहत१०० तोले, मिश्री १०० तोले और धायके फूल ६० तोले तथा कंकोल, लौंग, जायफल, काली मिरच, दालचीनी, इलायची, पत्रज, नागकेशर, पीपल, चव्य, चित्रक, पीपरामूल, पित्तपापडा ये प्रत्येक औषध चार २ तोले मिलायके इसको घीके

चिकने पात्रमें भरके उसको चंदन और अगर इनकी धूनी देवे तथा भीमसेनी कपूर इसके भीतर डालके वासित करे । यह द्राक्षासव सेवन करनेसे दीपन करे है, और संग्रहणी, ववासीर, उदावर्त्त, गोला, उदर, कृमिरोग, कुष्ठ, व्रण, नेत्ररोग, शिरोरोग, गलेके रोग, ज्वर, आम, घोरव्याधि, पांडुरोग और कामला इनका नाश करनेमें श्रेष्ठ है ॥

बिल्वाग्निघृत ।

बिल्वाग्निचव्यार्द्रकशृंगबेरक्वाथेन कल्केन च सिद्धमाज्यम् ॥
सच्छागदुग्धं ग्रहणीगदोत्थं शोफाग्निसादारुचिनुद्वरं तत् ॥

अर्थ-बेलगिरी, चीतेकी छाल, चव्य, अदरख और सोंठ इनका काढा और कल्क तथा बकरीका दूध इनसे सिद्ध करा हुआ घृत, संग्रहणीरोग, सूजन, मंदाग्नि और अरुचि इनका नाश करनेमें उत्तम है ॥

चित्रकघृत ।

चित्रकक्वाथकल्काभ्यां ग्रहणीघ्नं शृतं हविः ॥
गुल्मशोथोदरप्लीहाशूलार्शोघ्नं प्रदीपनम् ॥

अर्थ-चीतेकी छालका काढा और कल्कसे सिद्ध करा हुआ घी सेवन करनेसे गोला, सूजन, उदररोग, प्लीहा, शूल और बवासीर इनको नष्ट करे तथा दीपन है ॥

चांङ्गेरीघृत ।

पाठा गोक्षुरकं शुंठी पिप्पली चूर्णयेत्समम् ॥ सर्वेषां षोडशंगुणै-
स्तोयैः क्वाथं प्रकारयेत् ॥ पादशेषं वस्त्रपूतमादायैतत्समं घृतम् ॥
घृतांशं चांगेरिद्रावं त्रयाणां त्रिगुणं दधि ॥ गंडारी पिप्पलीमूलं
त्र्यूषणं चव्यचित्रकम् ॥ प्रत्येकं द्विपलं चूर्णं क्षिप्त्वा सर्वं विचू-
र्णयेत् ॥ मृद्वग्निना घृतं यावत्तत्तमवतारयेत् ॥ योजयेद्भोजने
पाने ग्रहण्यामतिसारके ॥ अग्निसंदीपनं रुच्यं चांगेरीघृतमुत्तमम् ॥

अर्थ-पाढ, गोखरू, सोंठ और पीपल इनका समान भाग चूर्ण कर इसको सोलह गुने पानीमें चढायके काढा करे जब चतुर्थांश शेष रहे तब उतारके छान लेवे फिर इस काढेमें समान भाग घी मिलावे और जितना घी होय उतनाही चूकाका रस तथा इन तीनोंसे तिगुना दही तथा रक्तकांचन, पीपरामूल, सोंठ, काली मिरच,

पीपर, चव्य, चित्रककी छाल प्रत्येक आठ २ तोले कल्क करके मिलावे सबको एकत्र करके मंदाग्निपर रखके पचन करावे, जब घृत मात्र शेष रहे तब उतार लेवे इसको भोजनमें अथवा इसको पीवे तो यह उत्तम चांगेरीघृत संग्रहणी और अतिसार इनका नाश करे और अग्निदीपन तथा रुचिकारक है ॥ २७०

दाडिमाष्टक ।

पलद्वयं दाडिमस्य व्योषस्य च पलद्वयम् ॥ त्रिगंधस्य पलं चैकं खंडस्याष्टपलानि च ॥ सर्वमेकीकृतं चूर्णं प्रशस्तं दाडिमाष्टकम् ॥ दीपनं रुचिदं कण्ठ्यं संग्राह्यं ग्रहणीहरम् ॥

अर्थ—अनारदाना, सोंठ, काली मिरच, पीपल ये प्रत्येक आठ २ तोले ले, त्रिजातक ४ तोले, तथा मिश्री ३२ तोले इन सबका चूर्ण करे इसको दाडिमाष्टक कहते हैं । यह दीपन, रुचकारी, कंठको हितकारी, तथा ग्राहक है और संग्रहणीका नाश करे ॥

दूसरा पाठ ।

दाडिमस्य पलान्यष्टौ पलं सौगंधिकस्य च ॥ अजाजीनां पलं चार्धं पलार्धं धान्यकस्य च ॥ पृथक्पलांशकान्भागान्त्रिकटुग्रंथिकस्य च ॥ त्वक्क्षीरी वालकं चैव दद्यात्कर्षसमं भिषक् ॥ शर्कराया पलान्यष्टौ तदेकस्थं विचूर्णयेत् ॥ आमातिसारशमनं कासहृत्पार्श्वशूलनुत् ॥ हृद्रोगमरुचिं गुल्मं ग्रहणीमग्निमार्दवम् ॥

अर्थ—अनारदाना ३२ तोले, त्रिसुगंध ४ तोले, जीरा २ तोले, धनिया २ तोले, त्रिकटु १२ तोले, पीपरामूल ४ तोले दालचीनी, वंशलोचन और नेत्रवाला ये प्रत्येक एक २ तोला लेवे तथा मिश्री ३२ तोले लेकर सबका एकत्र चूर्ण करे तो यह (दाडिमाष्टक) चूर्ण तैयार हो । यह आमातिसार, खाँसी और हृदय, पसवाडे इनकी पीडा और हृदयरोग, अरुचि, गोला, संग्रहणी तथा मंदाग्नि इनका नाश करे ॥

लाईचूर्ण ।

कर्षं गंधकमर्धपारदमुभे कुर्याच्छुभां कज्जलीमक्षं त्र्यूषणतश्च पं-

चलवणं सार्धं च कर्षं पृथक् ॥ भृष्टं हिंगु च जीरकद्वययुतं सर्वा-
र्धभंगायुतं खादेट्टंकमितं प्रवृत्तिगदवान्तक्रस्य बिल्वेन च ॥

अर्थ–गंधक १ भाग, पारा अर्धभाग दोनोंकी कजली करे तथा सोंठ, मिरच, पीपल सब मिलायके १ तोला, पाँचों निमक प्रत्येक डेढ तोला और भुनीहुई हींग, जीरा, काला जीरा ये एक २ तोला तथा सब चूर्णसे आधा भाँगका चूर्ण लेवे सबका चूर्ण करे। इसमेंसे १ तोला चूर्ण ४ तोले छाँछसे पीवे तो संग्रहणी नष्ट होवे ॥

मुस्तादिचूर्ण।

मुस्तकातिविषाबिल्वकुटजं सूक्ष्मचूर्णितम् ॥
मधुना च समालीढं ग्रहणीं सर्वजां हरेत् ॥

अर्थ–नागरमोथा, अतीस, वेलगिरी और इन्द्रजव इनका चूर्ण करके शहतसे देवे तो यह संनिपात और संग्रहणी इनका नाश करे ॥

लवङ्गादिचूर्ण।

लवंगकंकोलमुशीरचंदनं नतांसनीलोत्पलकृष्णजीरकम् ॥ एला-
सकृष्णागरुभृंगकेसरं कणासविश्वानरुदं सहांबुना ॥ कर्पूरजाती-
फलवंशरोचनासिद्धार्थभागाः सहसूक्ष्मचूर्णितम् ॥ सरोचनं
तर्पणमग्निदीपनं बलप्रदं वृष्यतमं त्रिदोषनुत् ॥ अर्शोविबंधं
तमकं गलग्रहं सकासहिक्कारुचियक्ष्मपीनसम् ॥ ग्रहण्यती-
सारमथासृजक्षयं प्रमेहगुल्मांश्च निहंति सत्वरम् ॥

अर्थ–लौंग, कंकोल, नेत्रवाला, चंदन, तगर, नीले कमल, काला जीरा, इलायची, पीपर, अगर, भाँगरा, नागकेशर, पीपर, सोंठ, जटामांसी, खस, कपूर, जायफल, वंशलोचन और सपेद सरसों सब औषधी समान भाग लेवे सबका चूर्ण करे। यह रोचन, तृप्तिदायक, अग्निदीपक, अरुचि, क्षय, पीनस, संग्रहणी, अतीसार, रक्तक्षय, प्रमेह और गोला इनका नाश करे ॥

पाठादिचूर्ण।

पाठाविषाकुटजवृक्षफलत्वगब्दतिक्तामदारसजनागराबिल्वचूर्णम् ॥
सक्षौद्रतंदुलजलं ग्रहणीप्रवाहिरक्तप्रवाहगुदरुग्गुदजेषु दद्यात् ॥

अर्थ-पाढ, अतीस, इन्द्रजव, कूडेकी छाल, नागरमोथा, कुटकी, धायके फूल, रसोत, सोंठ, बेलगिरी इनका चूर्ण चावलोंके धोवनमें शहत मिलायके पीवे तो संग्रहणी, प्रवाहिका, गुदाके रोग और बवासीर इनको दूर करे ॥

तक्रसेवन ।

ग्रहणीरोगिणां तक्रं दीपनं ग्राहि लाघवात् ॥
पथ्यमम्लमपाकी च रक्तपित्तस्य कोपनम् ॥

अर्थ-संग्रहणीरोगवालेको छाँछका पीना दीपन, ग्राहक और हलका है तथा पथ्यकारक है, एवं खट्टी छाँछ होय तो अपाकी और रक्तपित्तको कुपित करता जाननी ॥

महालुंगादितक्रयोग ।

अरुचौ मातुलिंगस्य केसरं सार्द्रसैंधवम् ॥
दद्याद्भोजनकाले तु प्रातस्तक्रं च रोगिणे ॥

अर्थ-संग्रहणीरोगमें यदि अरुचि होनेसे महालुंग (बिजोरे) की केशर अदरख और सैंधानिमक ये भोजनकालमें देवे और प्रातःकालमें छाँछ पीवे ॥

चित्रकादितक्रयोग ।

दहनामोदसैंधवनागरमरिचं पिबाम्लतक्रेण ॥
सप्ताहादग्निबलं ग्रहण्यतीसारशूलघ्नम् ॥

अर्थ-चीतेकी छाल, अजमोद, सैंधानिमक, सोंठ और कालीमिरच ये संपूर्ण वस्तु खट्टी छाँछमें पीसके पीवे तो सातही दिनमें अग्नि दीपन होकर संग्रहणी आतिसार और शूल इनका नाश होय ॥

अन्ययोग ।

त्रिकांसं तक्रस्य द्विकुडवपटो षष्टिरभयाः पचेत्प्रस्थः सार्धं घृत-
तिलजविश्वाग्निकुडवैः ॥ समावाप्याजाजी मरिचचपलादीप्यक-
पलैर्लिहन्नान्यं वह्निं हठयाति विकारांश्च जयति ॥

अर्थ-७६८ तोले छाँछ, निमक ३२ तोले और हरड ६० तोले डालके पचन करावे, फिर उसमें घी, तिल, सोंठ और चीता ये प्रत्येक १६ तोले, तथा जीरा, काली मिरच, पीपल और अजवायन ये प्रत्येक ४ तोले मिलायके

अवलेह सिद्ध करे जब सिद्ध होजावे तब रोगीको देवे तो अग्निको बढावे और विकारोंका नाश करे ॥

शंखवटी।

चिंचाक्षारपलं पटुत्रयपलं निंबूरसे कल्कितं तस्मिञ्छंखपलं प्रतप्तमसकृन्निर्वाप्य शीर्णावधि ॥ हिंगुव्योषपलं रसामृतबलिं निःक्षिप्य निष्कांशकान्दग्ध्वा शंखवटी क्षये ग्रहणिकारुक्पक्तिशूलादिषु ॥

अर्थ-इमलीका खार ४ तोले, सैंधानिमक, बिडनोन, काला निमक ये प्रत्येक औषध चार चार तोले लेवे इन सबका नींबूके रसमें कल्क करके उसमें चार तोले शंखके टुकडेको तपायके बुझावे, फिर गरम करे और फिर बुझावे इस प्रकार करनेसे जब शंखकी भस्म होजावे तबतक करे फिर हींग, सोंठ, काली मिरच, पीपल, पारा, सिंगियाविष और गंधक ये चार २ मासे लेवे सबको पीसकर गोली बनावे। यह क्षय, संग्रहणी, पक्तिशूल इनका नाश करे ॥

जातीफलादितक्र।

जातीफलौषधशिवाविडहिंगुजीरगंधं द्विशामथितकल्कितराजिका च ॥ अंगारभर्जितसुहिंगुमरिष्टकं च तक्रेण कोलमितमामगदग्रहण्याम् ॥

अर्थ-जायफल, सोंठ, आमला, वायविडंग, हींग, जीरा ये प्रत्येक समान भाग लेवे, गंधक २ भाग, तथा छाँछमें पिसीहुई राई और लहसन ये सब एकत्र करके उस छाँछमें हींग भूनके मिलावे, इस छाँछमेंसे चार मासे देय तो आमसंग्रहणी दूर होवे ॥

वार्ताकवटी।

चतुःपलं सुधाकाण्डं त्रिपलं लवणत्रयम् ॥ वार्ताकाः कुडवं चार्कमूलाद्द्विपलं तथानलात् ॥ दग्ध्वा द्रवेण वार्ताकेर्गुटिका भोजनोत्तरम् ॥ भुक्ताभुक्तं पचेच्चाशु नाशयेद्ग्रहणीगदम् ॥ कासं श्वासं तथार्शांसि विषूचीं च हृदामयम् ॥

अर्थ-१६ तोले थूहरका टुकडा तथा सैंधानिमक, बिडानिमक, कांचियानिमक ये सब १२ तोले लेवे और बैंगन १६ तोले; आककी जड ८ तोले इन सबका

एकत्र कर अग्निमें भस्म कर लेवे फिर बैंगनके रसमें इसकी गोली बनाय लेवे इसमेंसे एक गोली भोजनके पश्चात् भक्षण करे तो भोजन करा हुआ अन्न तत्काल पचे और संग्रहणी, खांसी, श्वास, बवासीर, विषूचिका और हृदयके रोग ये सब दूर हों ॥

भल्लातकक्षार ।

भल्लातकं त्रिकटुकं त्रिफला लवणत्रयम् ॥ अंतर्धूमं द्विपलकं गोपुरीषाग्निना दहेत् ॥ सक्षारः सर्पिषा पीतो भोज्यो वाथ विचूर्णितः ॥ हृद्रोगपांडुग्रहणीगुल्मोदावर्तशूलनुत् ॥

अर्थ-भिलावे, सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आंवला, सैंधानिमक, खारी निमक, काला निमक तथा घरका धूंआ ये प्रत्येक आठ २ तोले लेवे सबको आरनें उपलोंमें रखके फूंक देवे जब जलके क्षार हो जावे, इसको घीके साथ भक्षण करे अथवा भोजनके पश्चात् खावे तो हृदयरोग, पांडुरोग, संग्रहणी, गोला, उदावर्त्त और शूल इनका नाश करै ॥

चव्यादिचूर्ण ।

चूर्णं चव्यकचित्रश्रीविश्वभेषजनिर्मितम् ॥
तक्रेण सहितं हंति ग्रहणीं दुःखकारिणीम् ॥

अर्थ-चव्य, चीतेकी छाल, बेलगिरी और सोंठ इनका चूर्ण छाँछके साथ सेवन करे तो अत्यंत दुष्ट संग्रहणीका नाश होवे ॥

रुचकादिचूर्ण ।

रुचकाग्निमरीचानां चूर्णं तक्रेण सेवितम् ॥
ग्रहण्युदरगुल्मार्शःक्षुन्मांद्यप्लीहनाशनम् ॥

अर्थ-कचियानिमक, चीतेकी छाल और काली मिरच इनका चूर्ण करके छाँछके साथ सेवन करे तो संग्रहणी, उदर, गोला, बवासीर, मंदाग्नि और प्लीहा इनको नाश करे ॥

कपित्थाष्टकचूर्ण ।

अष्टौ भागाः कपित्थस्य षड्भागा शर्करा मता ॥ दाडिमं तिंतिडीकं च श्रीफलं धातकी तथा ॥ अजमोदा च पिप्पल्यः प्रत्येकं स्युस्त्रिभागिकाः ॥ मरिचं जीरकं धान्यं ग्रंथिकं वालकं तथा ॥ सौवर्चलं यवानी च चातुर्जातं सचित्रकम् ॥ नागरं चैक-

भागाः स्युः प्रत्येकं सूक्ष्मचूर्णितम् ॥ कपित्थाष्टकसंज्ञं स्याच्चूर्णमेतद्गलामयान् ॥ अतिसारं क्षयं गुल्मं ग्रहणीं च व्यपोहति ॥

अर्थ-कैथका गुदा ८ भाग, खांड ८ भाग और अनारदाना, इमलीकी छाल, बेलगिरी, धायके फूल, अजमोद और पीपल यह छः औषध तीन तीन भाग लेवे तथा काली मिरच, जीरा, धनिया, पीपरामूल, नेत्रवाला, संचरनिमक, अजमोद, दालचीनी, इलायची, पत्रज, नागकेशर, चीतेकी छाल और सोंठ ये तेरह औषध एक एक भाग लेवे फिर सब औषधोंका बारीक चूर्ण करे। इसको कपित्थाष्टक चूर्ण कहते हैं। यह कतिपत्थाष्टक चूर्ण सेवन करनेसे कंठके रोग तथा अतिसार, क्षय, गोला और संग्रहणी ये रोग दूर होवें ॥

दूसरा लाहीचूर्ण ।

त्रिजातकव्योषवरारसेंद्रगंधाजमोदामिशिवेल्लरात्र्यः ॥ बिल्वानलाजाजिलवंगधान्यगजोपकुल्यामधुकं पटूनि ॥ हिंगुः कुबेराह्वयमोचसारौ क्षारौ जया सर्वचतुर्थभागाः ॥ इदं हि चूर्णं विनिहंति तूर्णं प्रसूतिकासंग्रहणीविकारम् ॥ समस्तरोगांतकमाग्निकारि भ्राजिष्णुताकारि सुतक्रपीतम् ॥ इमं प्रयोगं बहुधानुभूतं चकार धात्री किल कापि लाही ॥

अर्थ-दालचीनी, पत्रज, इलायची, सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आँवला, पारा, गंधक, अजमोद, सौंफ, वायविडंग, हलदी, बेलगिरी, चीतेकी छाल, जीरा, लौंग, धनिया, गजपीपल, मुलहटी, पांचों निमक, हींग, पाढ, सेमरका गोंद, सज्जीखार, जवाखार और सबसे चौगुनी शुद्ध करी भांग लेवे, सबका बारीक चूर्ण करके छाछके साथ सेवन करे तो संग्रहणी रोग, प्रसूतके रोग, मंदाग्नि इत्यादि सब रोगोंको हितकारी है। यह प्रयोग किसी लाईनामक दाईने बहुत बार अनुभव करके निर्माण करा है इसीसे इसको लाही चूर्ण कहते हैं ॥

जातिफलादिचूर्ण ।

जातीफललवंगैलापत्रत्वङ्नागकेसरैः ॥ कर्पूरचंदनतिलैस्त्वक्क्षीरीनागरामलैः ॥ तालीसपिप्पलीप्रस्थस्थूलजीरकाचित्रकैः ॥ शुंठीविडंगमरिचैः समभागेन चूर्णितैः ॥ यावंत्येतानि सर्वाणि

कुर्याद्भंगां च तावतीम् ॥ सर्वचूर्णसमा देया शर्करा च भिषग्वरैः ॥ कर्षमात्रं ततः खादेन्मधुना प्लावितं सुधीः ॥ अस्य प्रभावाद्ग्रहणी-कासश्वासारुचिक्षयाः ॥ वातश्लेष्मप्रतिश्यायाः प्रशमं यांति वेगतः ॥

अर्थ–जायफल, लौंग, इलायची, पत्रज, दालचीनी, नागकेशर, भीमसेनी कपूर, सपेद चंदन, काले तिल, वंशलोचन, तगर, आमले, तालीसपत्र, पीपल, हरड, काला जीरा, चितेकी छाल, सोंठ, वायविडंग और काली मिरच ये बीस औषध समान भाग लेवे तथा इन सब औषधोंके बराबर शुद्ध करी हुई भांग लेवे फिर सबका चूर्ण करके उस चूर्णके समान भाग मिश्री मिलाके फिर इसमेंसे १ कर्ष चूर्णको सहतमें मिलायके लेवे तो संग्रहणी, खांसी, श्वास, अरुचि, क्षय, वातकफके विकार और पीनस ये रोग तत्काल दूर हों ॥

बेलफलादिचूर्ण ।

श्रीघनवालकमोचकशक्रं चूर्णमजापयसा परिपेयम् ॥
हंति च तद्ग्रहणीभयमाशु सामगदं रुधिरेण विमिश्रम् ॥

अर्थ–बेलगिरी, नागरमोथा, नेत्रवाला, मोचरस और इन्द्रजौ इनके चूर्णको बकरीके दूधसे पीवे तो संग्रहणी तथा आमरक्त इनका नाश होवे ॥

जातीफलादिचूर्णका पाठांतर ।

जातीफलाग्निहिमवेल्लतिलेंदुजीरवंशीत्रिकत्रयमनक्षमिभो नतं च ॥
तालीसदेवकुसुमे अपि चूर्णमेषां द्विःशर्करं च समगंजमिदं ग्रहण्याम् ॥

अर्थ–जायफल, चीतेकी छाल, नेत्रवाला, वायविडंग, तिल, कपूर, जीरा, वंशलोचन, त्रिसुगंध, बहेडेके विना त्रिफला, त्रिकुटा, गजपीपर, तगर, तालीसपत्र और लौंग इनका समान भाग चूर्ण तथा चूर्णसे दुगुनी मिश्री मिलावे यह चूर्ण संग्रहणीका नाशक है ॥

ग्रहणीरोगमें पथ्य ।

निद्रा छर्दनलंघनं चिरभवा यः शालयः षष्टिका मंडो लाजकृतो मसूरतुवरी मुद्गप्रभूता रसाः ॥ निःशेषं हृतसारमेव दधिजं गोक्षीरजातं गवां छागं वा नवनीतमेव विमलं तद्वत्पयःसंभवम् ॥ छागल्याजपयोदधीनि तिलजं तैलं सुरा माक्षिकं शालूकं लकुचं च दाडिमयुगं नव्यानि भव्यानि च ॥ रंभायाः कुसुमं फलं च तरुणं बिल्वं

च शृंगाटकं चांगेरी विजया कपित्थकुटजाजाजी कसेरूणि च ॥ न्यग्रोधस्य फलं च तक्रममलं जातीफलं जबांवं धान्याकानि च तिंदुकानि च महानिंबोऽरुणा फेनवत् ॥ क्रव्यालाबुशशैणतित्तिररसाः क्षुद्रा झषाः सर्वशो डिंडीशो मधुरालिका च खलिपाः सर्वः कषायो रसः ॥

अर्थ-निद्रा, वमन, लंघन, पुराने सांठीचावल, खीलोंका मंड और मसूर अरहर, मूंग इनका रस तथा निःशेष मक्खन निकाली हुई छाँछ, गौका बकरीका और भेडका दूध, मक्खन, दही, तथा तिलीका तेल, मद्य, शहत, कमलकंद (भसीडा), बडहर, खट्टे और मीठे अनार, केलेका फूल, पुराना केला, बेलका फल, सिंघाडे, चूका, भांग, कैथ, कूडा, जीरा, कसेरू, बडके फल, उत्तम छॉछ, जायफल, जामुन, धनिया, तेंदू, कुचला, बकायन, अरुणा (मँजीठ), अफीम, मांस, सपेद घीया, शशा, हरिण, तीतरपक्षी इनका मांसरस, संपूर्ण प्रकारकी छोटी मच्छी, ढेडस, साली, कोकिल, बिलमें रहनेवाले जीवोंका मांस और संपूर्ण कषेले पदार्थ ये संग्रहणी रोगपर पथ्य कहे हैं ॥

ग्रहणीरोगमें अपथ्य।

रक्तसृतिं जागरमंबुपानं स्नानं स्त्रियं वेगविनिग्रहश्च ॥ नस्यांजनं स्वेदनधूमपानं श्रमं विरुद्धांजनमातपं च ॥ गोधूमनिष्पावकलायमाषयवार्द्रकं छत्रकराजमाषाः ॥ उपोदकी वास्तुककाकमाची कूष्मांडतुम्बी मधुशिग्रुकंदान् ॥ तांबूलमिक्षुं बदरं रसालं उर्वारुकं पूगफलं रसानाम् ॥ धान्याम्लसौवीरतुषोदकानि दुग्धं गुडं मस्तु च नारिकेलम् ॥ पुनर्नवा बार्हतबैल्वकानि सर्वाणि शाकानि च पत्रवंति ॥ दुष्टांगगोवारि कुरंगनाभी क्षारं समस्तानि सराणि चापि ॥ द्राक्षामथाम्लं लवणं रसं च गुर्वन्नपानं सकलं च पूगम् ॥ वैद्यश्चिकित्सेद्ग्रहणीविकारं विवर्जयेत्संततप्रमत्तः ॥

अर्थ-रक्तस्राव (फस्त खोलना), जागना, जल पीना, स्नान, स्त्रीसंग, मलमूत्र आदिका वेगधारण, नस्य, अंजन, पसीने निकालना, धूमपान (हुक्का पीना), श्रम करना, विरुद्ध अन्न भक्षण, अंजन, धूपमें रहना, गेहूं, चौरा, मटर, उडद, जौ, अदरख, छतोना, राजमाष, पोईका साग, वथुआ, मकोय, पेठा, तूंबा, मीठा सहँजना, जमीकंद, रतालू आदि कंद, पान, ईख, बेर, आम, ककडी,

सुपारी, रसमें धान्याम्ल, सौवीर, तुषोदक, दूध, गुड, दहीकी मलाई, नारियल, सोंठ, कटेरी, बेलगिरी, संपूर्ण पत्तोंका साग, दुष्ट.(रोगी) गौका दूध, कस्तूरी, क्षार, संपूर्ण दस्तकारक द्रव्य, दाख, खट्टे पदार्थ और निमकीन पदार्थ ये रस, भारी अन्न, पान, सुपारी ये पदार्थ संग्रहणी रोगवालेको वैद्य कदाचित् न देवे ॥

इति श्रीबृहन्निघंटुरत्नाकरे ग्रहणीरोगकर्मविपाक-
निदानचिकित्सा समाप्ता ।

अर्श–बवासीर।

ज्योतिःशास्त्राभिप्रायेण अर्शरोगनिदानम्।

योगार्णवतः ।

निर्बली यदि शीतांशुः शुभेतरसमन्वितः ॥
सप्तमे तु गुदांशस्थे स भवेदर्शरोगवान् ॥

अर्थ–निर्बली चंद्रमा अशुभग्रहोंके साथ सप्तम घरमें गुदांशमें स्थित होय तो उस प्राणीके अर्श (बवासीर) का रोग होय ॥

निर्बली हृदयाधीशो गुदाधीशोऽपि तादृशः ॥
गुदांकुरा भवंतीति जातस्य न तु संशयः ॥

अर्थ–हृदयाधीश (कर्कराशिका अधिपति) और गुदाधीश ये जिसकी लग्नमें निर्बल होके पडे हों उस प्राणीके जन्मसे ही गुदांकुर (गुदामें मस्से) होवें इसमें सदेह नहीं है ॥

हृदयाधीशसंयुक्तनवमांशकनायकः ॥
गुदाधीशेनेत्थशाली स वै रक्तार्शदायकः ॥

अर्थ–नवमांशकाधिपति हृदयाधीश करके युक्त हो, अथवा गुदाधीशके साथ इत्थशाल करता होवे तो यह ग्रह रक्तार्श अर्थात् खूनी बवासीरका करने-वाला जानना ॥

गुदाधीशदृक्काणेशनवांशेशो यदा शनिः ॥
गुदामध्ये मशकवृद्धत्वाद्रक्तजार्शकृत् ॥

अर्थ-यदि शनैश्वर गुदाधीश द्रेष्काणका अधिपति और नवमांशका अधिपति होवे तो गुदामें मस्सोंको करे और वही पूर्वोक्त शनि वलवान् होवे तो खूनी बवासीरको करता है ॥

वातार्शकारको ज्ञेयो गुदेशे शुष्कराशिगे ॥
शुभेतरसमायोगे गुदाभ्रष्टो भवेन्नरः ॥

अर्थ-गुदाका अधिपति यदि शुष्कराशिमें[1] बैठा होवे तो वातार्श अर्थात् वादीकी बवासीर करे है और वही गुदाधीश पापग्रहोंके साथ बैठा होय तो उसकी गुदा भ्रष्ट अर्थात् कांच निकलनेका रोग होवे ॥

रुधिरे रुधिरस्थाने रुधिरांशे धरागृहे ॥
यस्य योगे त्वियं रीती रक्तार्शी स नरो भवेत् ॥
रक्तार्शेण मृतिस्तस्य शून्यमार्गे शुभग्रहाः ॥
अष्टेशे शनिवर्गे वा शस्त्रौषधकृता मृतिः ॥

अर्थ-यदि शून्य मार्गमें शुभ ग्रह बैठे होवें तो उस प्राणीकी खूनी बवासीर करके मत्यु होवे ॥

बवासीरका कर्मविपाक।

दत्त्वाथ वेतनं योऽध्येत्यादायापि च वेतनम् ॥
ध्यापयेच्च जुहुयाद्वा जपेद्वार्शोयुतो भवेत् ॥

अर्थ-जो प्राणी वेतन (नौकरी तनख्वा) देकर पढता है अथवा तनख्वा लेकर पढाताहै किंवा नोकरी ठहरायकर हवन अथवा जप करता है वह अर्श (बवासीर) रोगी होताहै ॥

सामान्यबवासीरका निदान।

पृथग्दोषैः समस्तैश्च शोणितात्सहजानि च ॥
अर्शांसि षट्प्रकाराणि विद्याद्गुदवलित्रये ॥

अर्थ-वादी, पित्त , कफ, सन्निपात, रक्तज और सहज ऐसे छः प्रकारकी बवासीररोग गुदाकी त्रिवलियोंमेंसे किसी एक वलीमें होता है ॥

---

१ शुष्कराशि जातकके ग्रथोसे विचार लेना।

बवासीरकी संप्राप्ति और रूप ।

दोषास्त्वङ्मांसमेदांसि संदूष्य विविधाकृतीन् ॥
मांसांकुरानपानादौ कुर्वंत्यर्शांसि ताञ्जगुः ॥

अर्थ-वातादि दोष कुपित हो त्वचा, मांस और मेद इनको दूषित कर अनेक प्रकारके मांसांकुर (मस्से) गुदामें उत्पन्न करते हैं उसको अर्श अर्थात् बवासीर कहते हैं ॥

बवासीरका पूर्वरूप ।

विष्टंभोऽगस्य दौर्बल्यं कुक्षेराटोप एव च ॥ कार्श्यमुद्गारबाहुल्यं सक्थिसादोऽल्पविट्कता ॥ ग्रहणीदोषपाण्ड्वर्तेराशंका चोदरस्य च ॥ पूर्वरूपाणि निर्दिष्टान्यर्शसामभिवृद्धये ॥

अर्थ-मलका प्रतिबंध, शरीरकी दुर्बलता, कुखमें गुडगुडाहट शब्द, कृशता, अत्यंत डकारोंका आना, पैरोंकी जांघोंका रहजाना, मल होनेपर भी थोडा उतरना, तथा संग्रहणी, पांडुरोग तथा उदररोग होगया ऐसा प्रतीत होना इत्यादि लक्षण बवासीर होनेवालेके प्रथम होते हैं ॥

चिकित्साक्रम ।

अर्शोऽतिसारग्रहणीविकाराः प्रायेण चान्योन्यनिदानभूताः ॥
सन्नेऽनले संति न संति दीप्ते रक्षेदतस्तेषु विशेषतोऽग्निः ॥

अर्थ-बवासीर, अतिसार और संग्रहणी ये विकार प्रायः अन्योन्यके आश्रयसे होते हैं तथा ये रोग अग्नि प्रदीप्त होनेसे नहीं होते किंतु मंदाग्नि होनेसे होते हैं इसवास्ते इन विकारोंमें विशेषता करके जठराग्निका संरक्षण वैद्यको करना चाहिये ॥

तथा दूसरा क्रम ।

दुर्नाम्नां साधनोपायो चतुर्धा परिकीर्तितः ॥
भेषजक्षारशस्त्राग्निसाध्यत्वं याप्यमुच्यते ॥

अर्थ-बवासीरके यत्न (इलाज) चार प्रकारके हैं, अर्थात् चार प्रकारसे बवासीर अच्छा हो सकताहै जैसे औषध (जडी बूटी आदि), क्षार (जवाखारादि), शस्त्र (चीरना फाडना) और अग्नि (दागना आदि) है ॥

तथा अन्यक्रम।

अर्शसामौषधैः क्षारैः शस्त्रेण च यथाग्निना ॥
चिकित्सा स्याच्चतुर्धैवं मुख्यं तत्रौषधं विधिः ॥

अर्थ–अर्शरोगकी औषध, क्षार, शस्त्र और अग्नि इस प्रकार चतुर्विध चिकित्सा है परंतु इन चतुर्विधोंमें औषध मुख्य है ॥

तथा।

शस्त्रैर्वाथ जलौकाभिः प्रोच्छूनकठिनार्शसः ॥
शोणितं संचितं दृष्ट्वा हरेत्प्राज्ञः पुनः पुनः ॥

अर्थ–शस्त्रसे अथवा जोंकसे सूजीहुई कठोर मस्सोंका संचित रुधिरको वारंवार कढाना चाहिये ॥

वातादिजन्य अर्शोंका यत्न।

यद्वायोरनुलोमं स्याद्यदग्निबलवृद्धये ॥
अन्नपानौषधं सर्वं तत्सेव्यं नित्यमर्शसः ॥

अर्थ–अर्श रोगपर जो वादीको अनुलोमन करे तथा जो अग्निको बढावे ऐसे अन्न पान और औषध सेवन करे ॥

स्नेहस्वेदादयो वाते पित्तेषु रेचनादयः ॥ कफे वांत्यादयोऽर्शस्सु मिश्रे मिश्रा प्रतिक्रिया ॥ पित्तवद्रक्तजे कार्यः प्रतीकारोऽर्शसो ध्रुवम् ॥

अर्थ–स्नेह, तथा पसीने निकालना ये वादीको और पित्तको दस्त कराने एवं कफको वमन कराना तथा मिश्रित दोषोंपर मिश्रित चिकित्सा करे और खूनी ववासीरपर पित्तके समान यत्न करने चाहिये ॥

अर्शांसि भिन्नवर्चांसि वातातीसारवद्विशेत् ॥
उदावर्तविधानेन गाढविट्कान्युपाचरेत् ॥

अर्थ–जिस ववासीरमें रेच और शौच इत्यादि होते हो, उसपर वातातिसारके समान और गाढविट्क ववासीर पर उदावर्त्तके समान औषध क्रिया करे ॥

वातकी बवासीरके लक्षण।

गुदजाञ्छोणितवहान्पित्तशोणितनाशनैः ॥
योगैरुपाचरेत्तत्तु विड्बंधे तु प्रशस्यते ॥

अर्थ-रुधिर बहनेवाले अर्शरोगपर रक्तपित्तनाशक उपाय और विड्बंध होय तो विड्बंधका उपचार करे ॥

वातार्शके लक्षण ।

कषायकटुतिक्तानि रूक्षशीतलघूनि च ॥ प्रमिताल्पाशनं तीक्ष्णं मद्यं मैथुनसेवनम् ॥ लंघनं देशकालौ च शीतौ व्यायामकर्म च ॥ शोको वातातपस्पर्शो हेतुर्वातार्शसो मतः ॥

अर्थ-कषेले, चरपरे, कडुवे, रूखे, शीतल, हलके, अनुमानके तथा अत्यंत अल्प भोजन और तीक्ष्ण पदार्थ, मद्य, मैथुन, लंघन, शीतल देश तथा शीतल काल, अत्यंत दंड कसरत, शोक, हवा, धूप इनका स्पर्श इत्यादिक वातार्श होनेके कारण हैं ॥

तथा ।

गुदांकुरा बह्वनिलाः शुष्काश्चिमिचिमान्विताः ॥ म्लानाः श्यावारुणास्तब्धाविशदाः परुषाः खराः ॥ मिथो विसदृशा वक्रास्तीक्ष्णा विस्फुटिताननाः ॥ बिंबीकर्कंधुखर्जूरकार्पासीफलसन्निभाः ॥ केचित्कदंबपुष्पाभाः केचित्सिद्धार्थकोपमाः ॥ शिरःपार्श्वांसकट्यूरुवंक्षणाभ्यधिकव्यथाः ॥ क्षवथूद्गारविष्टंभहृद्ग्रहारोचकप्रदाः ॥ कासश्वासाग्निवैषम्यकर्णनादभ्रमावहाः ॥ तैरार्तो ग्रथितं स्तोकं सशब्दं सप्रवाहिकम् ॥ रुक्फेनविच्छानुगतं विबद्धमुपवेश्यते ॥ कृष्णत्वङ्नखविण्मूत्रनेत्रवक्त्रं च जायते ॥ गुल्मप्लीहोदराष्ठीलासंभवस्तत एव च ॥

अर्थ-वातादिक गुदाके मस्से, स्रावरहित, चिनमिनानेवाले, पीडायुक्त, निर्जीव (कुमले हुए), श्याम और अरुणवर्ण, स्तब्ध, फैलेहुए, कठोर, खरदरे, विषम अर्थात् एकसे नहीं, टेढे, तीक्ष्ण, फटेहुए मुखके, कंदूरी, बेर, खिजूर, कपास इनके फलक समान, कोई कदंबफूलके समान गोल, कोई सरसोंके समान, इस बवासीरके होनेसे मस्तक, पँसवाडे, कमर, ऊरु, वंक्षण इनमें अत्यंत पीडा होवे, तथा छींक, डकार, मलका अवरोध, हृदय पकडेके समान पीडा और अरुचि ये होते हैं तथा खांसी, श्वास, अन्न कभी पचे कभी न पचे, कानोंमें शब्द हुआ करे तथा भ्रम ये होंय, ऐसे बवासीरसे पीडित मनुष्यका गांठदार, थोडा शब्द-

युक्त और पीडा, झाग, चिकना इन करके युक्त अल्प २ ऐसा दस्त होवे, तथा उस मनुष्यकी त्वचा, नख, मल, मूत्र, नेत्र और मुख कुछ २ काले होवें और गोला, प्लीहा, उदर, अष्ठीला अर्थात् वातग्रंथी इनकी उत्पत्ति इस बवासी-रसे होती है। अब इसका यत्न लिखते हैं॥

अर्कक्षार।

तरुणान्यर्कपत्राणि पंचैव लवणानि च ॥ युक्तानि तैलेनाम्लेन दहेत्क्षारश्च युक्तितः॥ उष्णोदकेन मद्यैर्वा पीतो वातार्शसां हितः॥

अर्थ—पुराने पके हुए आकके पत्ते और पांचों निमक इनको तेल और खटाईके साथ जलायके युक्तिसे खार निकाल ले, इसको गरम जलके साथ अथवा मद्यके साथ पीवे तो अर्शरोगीवालेको हितकारी होय॥

विडंगादितक्रयोग।

विडंगं त्रिफला त्र्यूषं त्रिसिता चोपकर्णिका ॥ कंपिल्लं नलिनीचूर्णं तुल्यक्षौद्रं लिहेदनु ॥ गुडेन सितया वाथ वातोत्थानर्शसां जयेत् ॥

अर्थ—वायविडंग, त्रिफला, त्रिकुटा, मिश्री, मूषाकर्णी, निसोथ और नलिनी (पवारी) इनका चूर्ण सहतसे अथवा गुडसे अथवा खांडके साथ खाय तो वादीकी बवासीर दूर होवे॥

लवणादिचूर्ण।

लवणोत्तमवह्निकलिंगयुतं बिडबिल्वमहापिचुमंदयुतम् ॥ पिब सप्तदिनं मथितं लुलितं यदि मर्दितुमिच्छसि वायुरुजम् ॥

अर्थ—सैंधानिमक, चीतेकी छाल, इन्द्रजव, बिडनिमक, बेलगिरी और नीमकी छाल इनका चूर्ण मिलाय सात दिन मट्ठेको पीवे तो वातसंबंधी बवा-सीरकी पीडा नाश होय॥

मरीचादिचूर्ण।

मरिचं पिप्पली कुष्ठं सैंधवं जीरनागरम् ॥ वचा हिंगु विडंगानि पथ्या वन्यजमोदकम् ॥ एतेषां कारयेच्चूर्णं चूर्णस्य द्विगुणं गुडम् ॥ खादेत्कर्षमितं चापि पिबेदुष्णजलं ततः ॥ सर्वाण्य-र्शांसि नश्यंति वातजानि विशेषतः ॥

अर्थ—काली मिरच, पीपल, कूठ, सैंधानिमक, जीरा, सोंठ, वच, हींग, वाय-

विडंग, हरड, चीतेकी छाल और अजमायन इनका चूर्ण करके दूना गुड मिलावे फिर इसमेंसे १ तोला नित्य सेवन करे ऊपरसे गरम जल पीवे तो संपूर्ण बवासीर नष्ट होवे । इनमें भी विशेष करके वादीका बवासीर नष्ट करे है ॥

सूरणमोदक ।

शुष्कात्सूरणकंदतोयमिलितं व्योषं तथा चित्रकं श्रेष्ठाजीरकरामठं समलवं दीप्याजमोदान्वितम् ॥ सर्वस्यांघ्रिकसिंधुजं परिभवेन्निंबूद्रवैर्वासरं सिद्धः सूरणमोदको गदहरः श्रेष्ठो भवेत्प्राणिनाम् ॥ शूलं संग्रहणीगदं त्वतिसृतिं दुष्टां प्रवाहीं जयेद्दीप्ताग्निं कुरुते बलं वितनुते गुल्मप्रणाशं तथा ॥ अर्शांस्युद्धतमारुतामयहरो बाले च वृद्धे हितो गर्भिण्यां च न शस्यते न निपुणैर्नो रक्तपित्तेऽपि च ॥

अर्थ—पुराने सूखे हुए सूरण (जमीकंद) के रसमें काली मिरच, पीपल, सोंठ, चीतेकी छाल, उत्तम जीरा, हींग, अजमायन और अजमोद ये समान भाग लेवे तथा सबका चौथा हिस्सा सैंधानिमक मिलायके सुखाय लेवे फिर नींबूके रससे एक दिन भावना देवे तो यह सूरणमोदक सिद्ध होवे । यह प्राणियोंके व्याधि नाश करनेमें श्रेष्ठ है तथा शूल, संग्रहणी, अतिसार, प्रवाहिका, गोला, बवासीर और वादीका प्रकोप इनको दूर करे तथा अग्नि प्रदीप्त करे, एवं बल देवे । यह सूरणमोदक निपुण वैद्य गर्भिणी और रक्तपित्तवाले रोगीको न देवे ॥

बाहुशालनामकगुड ।

इन्द्रवारुणिका मुस्तं शुंठी दंती हरीतकी ॥ त्रिवृत्सटी विडंगानि गोक्षीरश्चित्रकस्तथा ॥ तेजोह्वा च द्विकर्षाणि पृथक्द्रव्याणि कारयेत् ॥ सूरणस्य पलान्यष्टौ वृद्धदारुचतुष्पलम् ॥ चतुःपलं स्याद्भल्लातः क्राथयेत्सर्वमेकतः ॥ जलद्रोणे चतुर्थांशं गृहीयात्क्वाथमुत्तमम् ॥ क्वाथद्रव्यात्त्रिगुणितं गुडं क्षिप्त्वा पुनः पचेत् ॥ सम्यक्पक्वं च विज्ञात्वा चूर्णमेतत्प्रदापयेत् ॥ चित्रकस्त्रिवृता दंती तेजोह्वा पालिका पृथक् ॥ पृथक् त्रिपालिकाः कार्या व्योषैला मरिचत्वचः ॥ निक्षिपेन्मधुशीते च तस्मिन्प्रस्थप्रमाणितम् ॥ एवं सिद्धं भवेच्छ्रीमान्बाहुशालगुडः शुभः ॥

जयेदर्शांसि सर्वाणि गुल्मं वातोदरं तथा ॥ आमवातं प्रतिश्यायं ग्रहणीक्षयपीनसान् ॥ हलीमकं पांडुरोगं प्रमेहं च रसायनम् ॥

अर्थ–इन्द्रायनका गूदा, नागरमोथा, सोंठ, दंतीकी जड, छोटी हरड, निसोथ, कचूर, वायविडंग, गोखरू, चीतेकी छाल, तेजबल ये ग्यारह औषध दो २ कर्ष ले, सूरण (जमीकंद) आठ पल, तथा विधायरा चार पल तथा भिलावे ४ पल ले सबको कूटकर उसमें दो द्रोण जल डालके औटावे जब चतुर्थांश जल रहे तब उतारके उस जलको छान लेवे पश्चात् इस जलमें संपूर्ण औषधोंसे तिगुना गुड डालके औटावे जब पाक होजावे तब आगे लिखी हुई औषधें मिलावे जैसे चीतेकी छाल, निसोथ, दंती, तेजबल ये चार औषध एक २ पल लेवे सबको पीस उस पाकमें मिलायके एक जीव कर देवे। इसके सेवन करनेसे संपूर्ण बवासीर दूर होवे, गोलेका रोग, वातोदर, आमवादीसे अंगोंका जिकडना, तथा सरेकमा, संग्रहणी, क्षय, पीनस, हलीमक, पांडुरोग, प्रमेह ये सर्व रोग दूर होवें तथा यह बाहुशाल गुड रसायन है।

पित्तकी बवासीरका कारण।

कट्वम्ललवणोष्णानि व्यायामाग्न्यातपश्रमाः ॥ देशकालावशिशिरौ क्रोधो मद्यमसूयनम् ॥ विदाहि तीक्ष्णमुष्णं च सर्वं पानान्नभोजनम् ॥ पित्तोल्बणानां विज्ञेयः प्रकोपे हेतुरर्शसाम् ॥

अर्थ–तीक्ष्ण, खट्टा, खारी और गरम इत्यादि पदार्थोंके सेवन, व्यायाम, अग्नि तथा धूप इनका सेवन और उष्ण देश, उष्ण काल, क्रोध, मद्य, दूसरेका उत्कर्ष (बढवार) का असहन, तथा विदाही, तीक्ष्ण, गरम ऐसे अन्न पानका सेवन इत्यादि पित्तार्श होनेके कारण जानने।

पित्तकी बवासीरके लक्षण।

पित्तोत्तरा नीलमुखा रक्तपीता सितप्रभाः ॥ तन्वस्रस्राविणो विस्रास्तनवो मृदवः श्लथाः ॥ शुकजिह्वायकृत्खंडजलौकावक्त्रसन्निभाः ॥ दाहपाकज्वरस्वेदतृण्मूर्च्छारुचिमोहदाः ॥ सोष्माणो द्रवनीलोष्णपीतरक्तामवर्चसः ॥ यवमध्यहरित्पीतहारिद्रत्वङ्नखादयः ॥

अर्थ–मस्सोंका मुख नीला, लाल, पीला और सुपेदाई लिये होवे, तन

मस्सोंमेंसे महीन धारसे रुधिर चुचावे और रुधिरकी वास आवे, महीन और कोमल तथा शिथिल हो और उनका आकार तोतेकी जीभ कलेजा और जोंकके मुखके समान हो और देहमें दाह हो, गुदाका पकना, ज्वर, पसीना, प्यास, मूर्च्छा, अरुचि और मोह ये होवें और हाथके स्पर्श करनेसे गरम मालूम होवे और जिसके मलका द्रव नीला, पीला, लाल, गरम, आमसंयुक्त होय, जवके समान बीचमें मोटे हो और जिसके त्वचा, नख, नेत्रादिक हरे पीले हरतालके समान और हलदीके समान होवें ये लक्षण पित्ताधिक बवासीरके हैं ॥

तिलादिचूर्ण ।

चूर्णं तिलानां सितया समेतं हैमान्नबीजं गजकेसरं च ॥
लिहेन्नरो यो नहि तस्य दुष्टान्यर्शांसि पित्तप्रभवाणि जातु ॥

अर्थ–तिलोंका चूर्ण, लाल रतालूके बीज और नागकेशर इनका चूर्ण कर खांडके साथ देवे तो उसको पित्तकी बवासीर कदापि नहीं होवे ॥

तथा अन्यप्रयोग ।

तिलभल्लातकक्काथमनु पित्तार्शनाशकृत् ॥ सक्षौद्रः कुटजक्काथो नित्यं रात्रौ च पाययेत् ॥ पथ्यं मुद्गरसैर्देयं शालितंडुलसंयुतम् ॥

अर्थ–तिल और भिलावे इनका काढा अथवा इन्द्रजौका काढा सहत डालके पीवे और पथ्यमें मूंगकी दाल और भात देवे तो पित्तकी बवासीर नष्ट होवे ॥

भल्लातामृत ।

गुडूची लांगली शृंगी मुंडी गुंजा च केतकी ॥ षण्णां पत्ररसैर्मर्द्यं बालभल्लातबीजकम्॥ दिनैकं मर्दयेद्गाढं निष्कार्धं भक्षयेत्सदा ॥
भल्लातामृतयोगोऽयं सर्वार्शान्पित्तजाञ्जयेत् ॥

अर्थ–गिलोय, कलयारी, काकडासिंगी, मुंडी, घूंघची और केतकी इन छः वनस्पतियोंके पत्तोंके रसमें हरे भिलावेको एक दिन खूब घोटे, इसमेंसे ४ मासे नित्य भक्षण करे तो यह भल्लातामृतयोग संपूर्ण पित्तजन्य बवासीरोंका नाश करे ॥

धत्तूरादिचूर्ण ।

धत्तूरस्य फलं पक्कं पिप्पली नागराभया ॥ बालकं गुडसंयुक्तं भक्ष्यं गुंजाष्टकं निशि ॥ सितामध्वाज्यकर्षैकं पिबेत्पित्तार्शसां जये ॥

अर्थ-धतूरेके पके हुए फल, पीपल, सोंठ, हरड और नेत्रवाला इनका चूर्ण रात्रिमें आठ रत्तीको तोले भर घी और खांडके साथ सेवन करे तो पित्तकी बवासीर शांत होवे ॥

भल्लातकादिमोदक।

भल्लातकं तिलं पथ्याचूर्णं गुडसमन्वितम् ॥
मोदको भक्षयेत्कर्षं मासात्पित्तार्शसां जये ॥

अर्थ-भिलावे, तिल और हरड इनके चूर्णकी गुडसे १ तोलेकी गोली बनावे नित्य प्रति एक महीने पर्यंत सेवन करे तो पित्तकी बवासीर शांत होवे ॥

बोलबद्धरस।

गुडूचिकासत्वसमं रसेंद्रं गंधं समांशं निखिलेन बर्बरः ॥ विमर्दयेच्छालमलिकाभवाद्भिः स्याद्बोलबद्धो मधुयुक्त्रिमाषः ॥ रक्तार्शसां नाशकृदेष सूतः पित्तार्शसां पित्तजविद्रधेश्च ॥ रक्तप्रमेहस्य खुडस्य चापि स्त्रीणां प्रवाहस्य भगंदरस्य ॥

अर्थ-गिलोयसत्व, पारा और गंधक ये समान भाग लेवें, तथा तिगुनी लाल बोल ले सबको एकत्र कर इसको सेमरकी छालके रसमें खरल करें। यह बोलबद्ध रस तीन मासे सहतमें मिलायके सेवन करे तो रक्तार्श, पित्तार्श, पित्तविद्रधि, रक्तप्रमेह, रक्तपित्त और स्त्रियोंके रक्तप्रदर तथा भगंदर इनका नाश होवे ॥

लोहादिमोदक।

मृतलोहमिंद्रयवं शुंठी भल्लातचित्रकम् ॥ बिल्वमज्जाविडंगानि पथ्यातुल्यं विचूर्णयेत् ॥ सर्वतुल्यो गुडो योज्यः कर्षं भुक्त्वार्शसं जयेत् ॥

अर्थ-लोहभस्म, इन्द्रजौ, सोंठ, भिलावे, चीतेकी छाल, बेलगिरी, वायविडंग और जंगी हरड ये समान भाग लेकर चूर्ण करे तथा सब चूर्णकी बराबर गुड मिलावे इसमेंसे १० मासे बवासीर नष्ट होनेके वास्ते नित्य भक्षण करे ॥

तीक्ष्णमुखरस।

मृतसूताभ्रलोहार्कतीक्ष्णं मुंडं च गंधकम् ॥ मंडूरं च समं ताप्यं मर्द्यं कन्याद्रवैर्दिनम् ॥ अंधमूषागतं पाच्यं त्रिदिनं तुषवह्निना ॥

चूर्णितं सितया माषं खादेत्पित्तार्शसां जये ॥ रसस्तीक्ष्णमुखो नाम ह्यनुयोज्यं मधुत्रयम् ॥

अर्थ-पारेकी भस्म, अभ्रकभस्म, लोहभस्म, ताम्रभस्म कांतिलोह, मुंडलोह इनकी भस्म, गंधक, मंडूरभस्म और सुवर्णमाक्षिककी भस्म ये समान भाग लेवे एक दिन घीगुवारके रसमें खरल कर सुखायके मूसमें भरे उसको तीन दिन तुषाग्नि देवे जब शीतल हो जावे तब इसमेंसे १ मासेभर लेके खांडके साथ देवे। यह (तीक्ष्णमुख रस) सेवन करके ऊपरसे मधुत्रय सेवन करे तो पित्तकी बवासीर शांत होवे ॥

कफकी बवासीरका कारण ।

मधुरस्निग्धशीतानि लवणाम्लगुरूणि च ॥ अव्यायामो दिवास्वप्नः शय्यासनसुखे रतिः ॥ प्राग्वातसेवा शीतौ च देशकालावचिंतनम् ॥ श्लेष्मोल्बणानामुद्दिष्टमेतत्कारणमर्शसाम् ॥

अर्थ-मीठा, चिकना, शीतल, खारी, खट्टा, भारी ऐसे भोजनसे, व्यायामके न करनेसे, दिनमें सोनेसे, सेज गद्दी इनके सेवन करनेसे, पूर्वकी हवा खानेसे, शीतल देश, शीतकाल, चिंतारहित होनेसे ये कफकी बवासीर होनेके हेतु हैं ॥

कफकी बवासीरके लक्षण ।

श्लेष्मोल्बणा महामूला घना मन्दरुजः सिताः ॥ उत्सन्नोपचिता स्निग्धाः स्तब्धा वृद्धगुरुस्थिराः ॥ पिच्छिलास्तिमिताः श्लक्ष्णाः कंड्वाढ्याः स्पर्शनप्रियाः ॥ करीरपनसास्थ्याभास्तथा गोस्तनसन्निभाः ॥ वंक्षणानाहिनः पायुबस्तिनाभिविकर्षिकाः ॥ सश्वासकासहृल्लासप्रसेकारुचिपीनसाः ॥ मेहकृच्छ्रशिरोजाड्यशिशिरज्वरकारिणः ॥ क्लैब्याग्निमार्दवच्छर्दिरामप्रायविकारदाः ॥ वसाभाः सकफप्रायपुरीषाः सप्रवाहिकाः ॥ न स्रवंति न भिद्यन्ते पाण्डुस्निग्धत्वगादयः ॥

अर्थ-कफकी बवासीरके लक्षण ये हैं जैसे कि गुदाके मस्से महामूल (दूर धातुके प्रति जानेवाले), कठिन, मंद पीडाके करनेवाले, सपेद, लंबे, मोटे, चिकने, करडे, गोल, भारी, स्थिर, गाढे कफसे लिपटे, मणीके समान स्वच्छ, खुजली बहुत होय और प्यारी लगे, करील कटहर इनके कांटेके समान होंय, गायके थनके सदृश होंय, पेडूमें अफरा करनेवाले, गुदा, मूत्रस्थान और नाभि इनमें पीडा करनेवाले,

श्वास, खांसी, खाली ओकारी, लारका टपकना, अरुचि, पीनस इनको करनेवाले, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, मस्तकका भारी होना, शीतज्वर, नपुंसकपना, अग्निका मन्द होना, वमन और आम जिनमें बहुत ऐसे अतिसार, संग्रहणी आदि रोगके करनेवाले, वसा (चर्वी) और कफ मिला दस्त होवे, प्रवाहिका उत्पन्न करनेवाले और मस्सोंमेंसे रुधिर न निकले, गाढा मल होनेसेभी मस्से न फूटे और शरीरका रंग पीला और चिकना होय ये कफकी बवासीरके लक्षण हैं ॥

कफार्शकी चिकित्सा।

श्लेष्मार्शसो गुदे पार्श्वे रक्तमोक्षो जलूकया ॥
कृत्वा चार्करसैर्लेपं दाहं वात्रापि शस्यते ॥

अर्थ—कफजन्य बवासीरमें गुदका और गुदाके ओर पासका रुधिर जोंक लगायके निकाले तथा आकके रसमे औषधोंका लेप करे अथवा इस जगहभी गरम सलाईसे दाग देना उत्तम है ॥

सामान्यचिकित्सा।

सूरणं कासमर्दं च शिग्रुवार्ताकवालुकम् ॥ सुपक्वं योजयेच्छाकं पथ्यं गोधूमतंडुलम् ॥ कुसुंभमृदुपत्राणि आरनालेन पेषयेत् ॥ भक्षयेच्छाकवच्छांत्यै स्वयमाग्निरसं तथा ॥ निष्कत्रयं त्रयं नित्यं गुंजं वानंदभैरवम् ॥ काकतुंडीद्रवापूरा देवदाल्याश्च बीजकम् ॥ सगुडं गुदलेपेन शूलरोगहरं परम् ॥

अर्थ—जमीकंद, कसौंदी, सहँजना, बैंगन और वालुक (खीरा) इनके शाकको पक्क कर सेवन करे, पथ्यमें गेंहू और चावल खाय, तथा कसूमके नरम २ पत्ते काँजीमें पीस शाकके समान खाय तथा स्वयमग्निरस चार मासे अथवा एक रत्ती आनंदभैरवरस देवे और काकतुंडीके रसमें वंदालके बीज और गुडको पीसके गुदामें लेप करे तो पीडा दूर होवे ॥

बवासीरका भेद ललितरोग।

गुदद्वारात्पृष्ठदेशे जायंते पांडुरांकुराः ॥ ललितास्ते विशुष्यंते शूलरोगस्य लक्षणम् ॥ श्लेष्मार्शसामयं भेदो हन्याल्लेपरसायनैः ॥

अर्थ—गुदाद्वारके पिछाडी सपेद बवासीरके समान मस्से होते हैं उनको ललित कहते हैं, इनके सूखने पर शूलरोग होता है। यह भेद कफकी बवासीरका है। इसको लेप करके अथवा रसायन द्वारा शांत करे ॥

वंदाललेप ।

देवदाल्याश्च बीजानि सैंधवेन सुचूर्णितम् ॥
आरनालेन लेपोऽयं शूलरोगनिवृत्तये ॥

अर्थ-वंदालके बीजोंको सैंधेनिमकके साथ कांजीमें पीस लेप करे तो शूल रोग नष्ट होवे ॥

कांचनीलेप ।

कंचनी कुसुमं चूर्णं शस्त्रचूर्णं मनःशिला ॥ गजपिप्पलिसंतोयै-
र्लेपो ह्यर्शोनिपातकः ॥ पूर्ववन्निःक्षिपेद्गुह्ये लिख्वा नागस्य नालि-
कम् ॥ घृतसैंधवसंयुक्तं कटुविट्बंधनाशनम् ॥

अर्थ-हलदी और लौंग इनका चूर्ण, मनसिल और गजपीपल एकत्र जलमें पीसके लेप करे तो बवासीरके मस्से टूटके गिरपडे, अथवा पूर्व कहे प्रमाण गुदामें शीशेकी नलीसे घी और सैंधानिमक युक्त कटुपदार्थोंका काढा भरे तो विट्बंध अर्थात् मलका न उतरना दूर होवे ॥

सूरणादिलेप ।

सूरणं रजनी वह्नि टंकणं गुडामिश्रितम् ॥
पिष्टारनालकैर्लेपो हंत्यर्शांसि महांत्यपि ॥

अर्थ-जमीकंद, हलदी, चीतेकी छाल, सुहागा और गुड इनको एकत्र पीस कांजीसे गुदामें लेप करे तो अर्शके बडे २ मस्सेभी नष्ट होवें ॥

कटुतुंब्यादिलेप ।

आरनालेन संपिष्टा सबीजकटुतुंबिका ॥
सगुडा हंति लेपन अर्शांसि मूलतो ध्रुवम् ॥

अर्थ-गीली कडुई तुंबीको काँजीमें पीसे उसमें गुड मिलाय गुदामें लेप करे तो बवासीर जडसे उखाडके निश्चय गिर पडे ॥

पीलुतैलवर्ती ।

पीलुतैलेन संलिप्ता वर्तिका गुदमध्यगा ॥
पातयत्यर्शसां सिद्धं न वर्लीवेदना क्वचित् ॥

अर्थ-कपडेकी अथवा रूईकी मोटी बत्ती (कॉंकडा) बनाय उसको अखरो-

टके तेलमें डवोकर गुदामें धररक्खे तो ववासीरके मस्सोंको उखाड डाले और गुदाकी वलीमें कदाचित् पीडा नहीं करे ॥

दंत्यासव।

दशमूलाग्निदंतीनां प्रत्येकं च पलं पलम् ॥ जलद्रोणे ततः क्वाथ्य पादशेषं समुद्धरेत् ॥ गुडैला तु पलैकं तु शीतभूतं विमिश्रयेत् ॥ घृतभांडे स्थितं पक्षं यथाशक्ति पिबेत्ततः ॥ अयं दंत्यासवः ख्यातः शमने चार्शसां किल ॥ ग्रहणीं पांडुरोगं च सर्वव्याधिहरं परम् ॥

अर्थ-दशमूल, चीतेकी छाल और दंतीकी जड ये चार २ तोले लेवे उनको २०४८ तोले जलमें औटावे जव चतुर्थांश काढा होजावे तव उतारके छान लेवे जब शीतल होजावे तव गुड और इलायची चार २ तोले डालके घीके चिकने वासनमें पंद्रह दिन धर रक्खे, इस दंत्यासवको वलावल विचारके देवे तो ववासीर, संग्रहणी, पांडुरोग और सर्व व्याधि इनका नाश करे ॥

पथ्यादिगुड।

द्वात्रिंशत्पलपथ्यानां तदर्धामलकीफलम् ॥ कपित्थं स्याद्दशपलं विशाला पलपंचकम् ॥ विडंगं पिप्पली लोध्रं मरिचं सैंधवालुकम् ॥ द्विपलांशं तु प्रत्येकं जलं द्रोणचतुष्टयम् ॥ क्वाथं पादावशेषं तु शीतीभूते क्षिपेद्गुडम् ॥ पलानां द्विशतं चैव धातकीपलपंचकम् ॥ घृतभांडे स्थिते तस्मिन्यथाशक्ति पिबेत्ततः ॥ अर्शांसि ग्रहणीपांडुहृद्रोगप्लीहगुल्मनुत् ॥ मंदाग्निं चोदरं शोथं कुष्ठघ्नं परमौषधम् ॥

अर्थ-वडी हरड १२८ तोले, आंवले ६४ तोले, कैथ ४ तोले, इन्द्रायनकी जड २० तोले और वायविडंग, पीपल, लोध, काली मिरच, सैंधानिमक, आलु ये प्रत्येक आठ २ तोले लेवे, सवको जवकुट कर २०४८ तोले जलमें औटावे जब चतुर्थांश रहे तव उतारके छान लेय, जब शीतल होजावे तव ८०० तोले गुड और धायके फूल २० तोले डालके धर रक्खे। इसको यथाशक्ति सेवन करे तो ववासीर, संग्रहणी, पांडुरोग, हृदयरोग, प्लीहा, गोला, मंदाग्नि, उदर, सूजन और कुष्ठ इन सवका नाश होवे ॥

भल्लातकहरीतकी।

भल्लातकहरीतक्यो पाठा कटुकरोहिणी ॥ यवान्यजाजिकुष्ठं च

चित्रकोऽतिविषा वचा ॥ कचोरं पौष्करं मूलं हिंगु इंद्रयवं तथा ॥ शुंठी सौवर्चलं तुल्यं गवां मूत्रेण पेषयेत् ॥ छायाशुष्का च वटिका माषमात्रं च भक्षयेत् ॥ पिबेदुष्णोदकं पश्चात्कफोत्थानर्शसां जयेत् ॥

अर्थ–भिलावे, जंगी हरड, पाढ, कुटकी, अजवायन, जीरा, कूठ, चीतेकी छाल, अतीस, वच, कचूर, पुहकरमूल, हींग, इन्द्रजव, सोंठ और संचरानिमक ये औषध समान भाग लेवे सबको गौके मूत्रमें पीसके छायामें सुखायले इसको एक मासेकी गोली नित्य भक्षण करे और ऊपरसे गरम जल पीवे तो कफकी बवासीर नष्ट होवे ॥

लाङ्गल्यादिमोदक।

लांगलींद्रयवा कृष्णा वह्न्यपामार्गतंडुलाः ॥ भूनिंबसैंधवं तुल्यं सर्वस्य द्विगुणं गुडम् ॥ भक्षयेत्कर्षमात्रं तु श्लेष्मोद्भूतार्शसां जये ॥

अर्थ–कलियारी, इन्द्रजव, पीपल, चीतेकी जड, ओंगाके चावल, चिरायता और सैंधानिमक ये औषध समान भाग ले और सब चूर्णसे दूना गुड डाले इसमेंसे दश मासे सेवन करे तो यह लांगल्यादि मोदक कफकी बवासीरको नाशकरे ॥

पथ्यादिमोदक।

पथ्या शुंठी कणा वह्निः प्रत्येकं चूर्णयेत्पलम् ॥ त्वगेला पत्रकं चाथ प्रत्येकं कर्षमात्रकम् ॥ गुडं दशपलं योज्यं कर्षं भुक्त्वार्शसां जये ॥

अर्थ–हरडकी छाल, सोंठ, पीपल और चीता ये प्रत्येक चार २ तोले लेय, तथा दालचीनी, इलायची, पत्रज ये प्रत्येक एक २ तोला ले सबका चूर्ण कर इसमें गुड ४० तोले डाल कूट पीस १० मासेकी गोली बनावे। १ गोली नित्य सेवन करे तो बवासीर दूर होवे ॥

यवान्यादिमोदक।

यवान्यक्षभयाजाजीपिप्पलीं चूर्णयेत्समम् ॥
चूर्णाद्गुडं द्विधा योज्यं कर्षं भुक्त्वार्शसां जये ॥

अर्थ–अजवायन, वहेडा, हरड, जीरा और पीपल इनको समान भाग ले चूर्ण करे तथा सब चूर्णसे दूना गुड मिलावे सबको एक जीवकर दश मासेकी गोली बनावे एक गोली नित्य सेवन करे तो बवासीरको नष्ट करे ॥

भल्लातकादिलेप ।

भल्लातकगजास्थीनि दंती निंबकपोतविट् ॥
गुडसौराष्ट्रचमृतजैर्लेपः श्लेष्मार्शसां जये ॥

अर्थ-भिलावे, हाथीकी हड्डी, तथा दंती, नीम, कबूतरकी वीट, गुड, फिटकरी और सिंगियाविष इनको जलमें पीसके लेप करे तो कफकी बवासीर नष्ट होय ॥

शृंगवेरक्काथ ।

कफजे शृंगवेरस्य क्काथो नित्योपयोगिकः ॥

अर्थ-कफकी बवासीरपर अदरखका काढा नित्य उपयोगी है ॥

रक्तार्शनिदान ।

रक्तोल्बणा गुदे कीलाः पित्ताकृतिसमन्विताः ॥ वटप्ररोहसदृशा गुंजाविद्रुमसन्निभाः ॥ तेऽत्यर्थं दुष्टमुष्णं च गाढविट्कप्रपीडिताः ॥ स्रवंति सहसा रक्तं तस्य चातिप्रवृत्तितः ॥ भेकाभः पीड्यते दुःखैः शोणितक्षयसंभवैः ॥ हीनवर्णबलोत्साहो हतौजाः कलुषेंद्रियः ॥ विट्श्यावं कठिनं रूक्षमधोवायुर्न गच्छति ॥

अर्थ-गुदाके मस्सोंका रंग चिरमिटीके रंगके समान होवे अथवा वटके अंकुरसे हो और पित्तकी बवासीरके लक्षण जिसमें मिलते हों, मूँगाके सदृश हो और दस्त कठिन उतरनेसे मस्से दबे तब उन मस्सोंमेंसे दुष्ट और गरमागरम रुधिर पडे और रुधिरके बहुत पडनेसे वर्षाऋतुके मेडकोंके समान पीला रंग होजाय, रुधिरके निकलनेसे (जो प्रगट त्वचाका कठोरपना, नाडीका शिथिलपना और खट्टी वस्तु तथा शीतकी इच्छादि दुःख तिनसे पीडित होय) हीनवर्ण, बल, उत्साह, पराक्रमका नाश होय, सम्पूर्ण इन्द्रियोंका व्याकुल होना, उसका काला, कठिन और रूखा ऐसा मल होय, अपानवायु सरे नही ये लक्षण रुधिरकी बवासीरके जानने चाहिये ॥

वातादियुक्तरक्तार्शके लक्षण ।

तनु चारुणवर्णं च फेनिलं चासृगर्शसाम् ॥ कट्यूरुगुदशूलं च दौर्बल्यं यदि चाधिकम् ॥ तत्रानुबंधो वातस्य हेतुर्यदि च रूक्षणम् ॥ शिथिलं श्वेतपीतं च विट्स्निग्धं गुरु शीतलम् ॥ यद्य-

शंसां घनं चासृक्तंतुमत्पांडु पिच्छलम् ॥ गुदं सपिच्छं स्तिमितं गुरु स्निग्धं च कारणम्॥ श्लेष्मानुबंधो विज्ञेयस्तत्र रक्तार्शसां बुधैः ॥

अर्थ-बवासीरमेंसे रुधिर थोडा, अरुणवर्ण और झागसंयुक्त निकले और कमर, जांघ और गुदा इनमें दर्द होवे । यदि दुर्बलता विशेष होजावे और उसमें कोई रूक्षहेतु पहुँचा होवे तो इस रक्तार्शको वातका सम्बन्ध है ऐसा जानना । जिसमेंसे शिथिल, सफेद, पीला, चिकना, भारी और शीतल ऐसा दस्त होवे और जिसका रुधिर गाढा, तंतुयुक्त, पीला तथा बबुलेयुक्त निकले और गुदा बबूलेयुक्त गीली होवे और भारी चिकनी ऐसे कोई कारण होवे तो उस रक्तार्शको कफका सम्बन्ध जानना । शंका-क्योंजी ! पित्तके अनुबन्धकी बवासीर क्यों नहीं कही ? उत्तर-रक्तके और पित्तके प्रायःकरके समान लक्षण होनेसे नहीं कहे, क्योंकि पहले २४ के श्लोकमें कह आये हैं कि (पित्ताकृतिसमन्विताः) इति ॥

सामान्यचिकित्सा ।

स्वयमग्निरसोऽप्यत्र भक्षयेदर्शसां जये ॥
सितामध्वाज्यकर्षैकमनुपानं पिबेत्सदा ॥

अर्थ-रक्तार्शपर स्वयमग्निरस देवे और इसके ऊपर खांड, घी, शहत मिलायके एक तोला सेवन करे तो बवासीर नष्ट होवे ॥

अश्वगंधादिधूप ।

अश्वगंधोऽथ निर्गुंडी बृहती पिप्पलीफलम् ॥
धूपोऽयं स्पर्शमात्रेण ह्यर्शसां शमने ह्यलम् ॥

अर्थ-असगंध, निर्गुंडी, कटेरी और पीपल इनकी धूनी बवासीरको स्पर्श होतेही हितकारी है ॥

अर्कमूलादिधूप ।

अर्कमूलं शमीपत्रं नृकेशाः सर्पकंचुकी ॥
मार्जारचर्म चाज्यं च गुदधूपोऽर्शसां हितः ॥

अर्थ-आककी जड, छीकुराके पत्ते, मनुष्यके बाल, सर्पकी काँचली, बिल्लीकी चमडी और घी इन सबकी धूप गुदामें देनेसे हितकारी होती है ॥

पिपीलिकातैल ।

पिपीलीवदनं बिल्वं वचा यष्टिकचूरकम्॥ शताह्वा पुष्करं कुष्ठं चि-

त्रकं देवदारुकम् ॥ तुल्यांशं कारयेत्कल्कं कल्कात्तैलं चतुर्गुणम् ॥ तैलात्क्षीरं द्विधा योज्यं पचेत्तैलावशेषकम् ॥ अर्शसां वातयुक्तानां तच्छ्रेष्ठमनुवासनम् ॥ पिपील्याद्यमिदं ख्यातं लेपने मर्दने हितम् ॥

अर्थ-चैंटी, मैनफल, बेलगिरी, वच, मुलहटी, कचूर, शतावर, पुहकरमूल, कूठ, चीतेकी छाल और देवदारु ये सब समान भाग लेकर कल्क करे और कल्कसे चौगुना तेल, तथा तेलसे दूना दूध ये सब एकत्र करके औटावे जब तेलमात्र शेष रहे तब उतार लेय इस तेलकी अनुवासनबस्ती देना उत्तम है ॥

विषमुष्टिचूर्ण।

विषमुष्टिभवं बीजं षड्वा सप्ताष्ट वापि च ॥ चूर्णितं ससितं भक्ष्यं रक्तार्शोविनिवारणम् ॥ महाप्रमेहशमनं त्वग्दोषकृमिनाशनम् ॥

अर्थ-कुचलेके छः सात अथवा आठ बीजोंका चूर्ण कर बलाबल विचार थोडा थोडा खांडके साथ देवे तो खूनी बवासीर, महामेह, त्वचाके दोष और कृमि इनका नाश करे ॥

नवनीतादियोग।

नवनीततिलाभ्यासात्केसरनवनीतशर्कराभ्यासात् ॥
दधिसरमथिताभ्यासाद्गुदजाः शाम्यंति रक्तवाहाश्च ॥

अर्थ-मक्खन, तिल अथवा नागकेशर, मक्खन, खाँड, अथवा दहीकी मलाई, छॉछ इनको बराबर सेवन करे तो खूनी बवासीर शांत होवे ॥

भल्लातकामृत।

भल्लातकचतुःषष्टिपलं दुग्धं च तत्समम् ॥ दुग्धाच्चतुर्गुणं वारि पाच्यं दुग्धावशेषकम् ॥ दुग्धतुल्यं घृतं योज्यं घृतपादं सितां क्षिपेत् ॥ मधुधात्री सितातुल्यं सितार्धमभयारजः ॥ मृतलोहं गुडूचीं च प्रत्येकमभयार्धकम् ॥ क्षिपेत्स्निग्धघटे सर्वं धान्यराशौ निवेशयेत् ॥ सप्ताहादुद्धृतं तत्तु खादेन्निष्कत्रयं त्रयम् ॥ भल्लातकामृतं नाम हंति रक्तार्शसां किल ॥ क्षारं तीक्ष्णं न भोक्तव्यं तैलाभ्यंगं च वर्जयेत् ॥

अर्थ-भिलावे २५६ तोले और दूध २५६ तोले तथा दूधकी अपेक्षा चौगुना

जल तथा दूधकी बराबर घी डालके औटावे जब घी मात्र शेष रहे तब इसमें घीका चतुर्थांश मिश्री, शहत, आंवले और मिश्रीसे आधी हरडका चूर्ण, हरडके चूर्णसे आधी लोहभस्म, तथा गिलोयका सत्व डालके घीके चिकने बासनमें भरके धान्यकी राशिमें ७ दिन गाड देवे फिर काढके इसमेंसे १ तोला रोगीको देवे तो यह भल्लातकामृत नामक औषध खूनी बवासीरको नाश करे। इसपर खटाई तथा तीखा पदार्थ न खाय तथा तेलकी मालिश न करे ॥

सिद्धघृत।

द्वात्रिंशत्पलकं चाज्यं छागदुग्धं तथा दधि ॥ छागमांसरसश्चैव दाडिमस्य फलद्रवम् ॥ प्रत्येकं घृततुल्यांशं भांडे चूर्णमिदं क्षिपेत् ॥ आम्राडं त्र्यूषणं मुस्तं मज्जा बिल्वकपित्थयोः ॥ तिंतिणी धातकीपुष्पं रक्तचंदनचंदनम् ॥ उशीरं वालकं लोध्रं प्रियंगु पद्मकेसरम् ॥ मंजिष्ठा बदरी चव्यं त्वगेला पद्मकं बला ॥ यष्टि मोचरसं चैव उत्पलं प्रतिकर्षकम् ॥ सर्वमेकीकृतं पाच्यं ग्राह्यमाज्यावशेषकम् ॥ योजयेदर्शसां हंतृ ग्रहणीकृच्छ्रपांडुषु ॥ ज्वरं स्रावमतीसारं कटिशूलं च नाशयेत् ॥ इदं सिद्धघृतं नाम रक्तपित्तार्शसां हितम् ॥

अर्थ-घी १२८ तोले, बकरीका दूध, दही, बकरेके मांसका रस और अनारका रस सब घीके बराबर ले, अंबाडा, सोंठ, कालीमिरच, पीपल, नागरमोथा, बेलगिरी, कैथका गूदा, इमली, धायके फूल, लालचंदन, चंदन, नेत्रवाला, खस, लोध, फूलप्रियंगु, कमलकी केशर, मँजीठ, बेर, चव्य, दालचीनी, इलायची, पद्माख, खिरेटी, मुलहटी, मोचरस और कूठ ये प्रत्येक एक एक तोला लेवे सबको एकत्र कर औटावे जब घृत मात्र शेष रहे तब उतार लेवे। यह घी बवासीर, संग्रहणी, मूत्रकृच्छ्र, पांडुरोग, ज्वर, कमरका दर्द और पित्तार्श इनका नाश करे। इसका सिद्धघृत नाम है ॥

शिवरस।

सूतवैक्रांतशुल्वाभ्रं कांतभस्म सगंधकम् ॥ तुल्यांशं मर्दयेच्चादौ दाडिमोत्थै रसैस्तथा ॥ भक्षयेन्माषमेकं तु हंत्यर्शांसि शिवो रसः ॥

अर्थ-पारा, वैक्रांतमणि (काँसुला), तांबा, अभ्रक और कांतलोह इनकी भस्म, तथा गंधक ये सब समान भाग ले अनारके रसमें खरल कर एक मासेकी गोली बनावे १ गोली रोगीको देवे। यह शिवरस बवासीर रोगका नाश करे ॥

अपामार्गबीजादिचूर्ण ।

अपामार्गस्य बीजानि वह्नि शुंठी हरीतकी ॥ मुस्ता भूनिंबतुल्यांशं सर्वंतुल्यं गुडं भवेत् ॥ कर्षैकं भक्षयेच्चानु जीर्णांते तक्रभोजनम् ॥

अर्थ–ओंगाके बीज, चीतेकी छाल, सोंठ, हरड, नागरमोथा और चिरायता ये सब समान भाग लेके चूर्ण करे तथा सब चूर्णके समान गुड मिलावे इसमेंसे १ तोला रोगीको खानेके वास्ते देवे । इस औषधीके जीर्ण होनेपर छाँछ और भातका पथ्य देय तो सर्व प्रकारकी संग्रहणी दूर होवे ॥

लोहामृतरस ।

संग्राह्य मृतलोहस्य पलान्यष्टादशानि च ॥ त्रिकटु त्रिफला दार्वी वह्निर्मुस्ता दुरालभा ॥ किराततिक्तको निंबपटोलकटुका-मृता ॥ देवदारु विडंगानि पर्पटं प्रतिकर्षकम् ॥ मध्वाज्याभ्यां लिहेत्कर्षमर्शांसि ग्रहणीं जयेत् ॥ वातपित्तकफं रक्तं नाशये-द्रोगसंचयम् ॥ ख्यातो लोहामृतो नाम देहदार्ढ्यकरः परः ॥

अर्थ–लोहभस्म ७२ तोले, तथा त्रिकुटा (सोंठ, मिरच, पीपल), त्रिफला (हरड, बहेडा, आंवला), दारुहलदी, चीता, नागरमोथा, धमासा, चिरायता, नीमकी छाल, पटोलपत्र, कुटकी, गिलोय, देवदारु, वायविडंग और पित्तपापडा ये प्रत्येक तोला २ लेवे सबका चूर्ण कर लोहकी भस्म मिलाय देवे फिर इसमें शहत १ तोलां मिलावे और घी १ तोला मिलायके खानेको देवे तो यह लोहामृतरस बवासीर रोग, बादी, पित्त, कफ, रुधिरविकार अनेक रोगोंको नाश करे । यह रस देहको लोहेके समान दृढ करनेवाला है ॥

बिम्बीपत्रादिलेप ।

विश्वाश्वायरजैः पत्रैर्हितं लेपनमर्शसाम् ॥

अर्थ–सोंठ और देवदारुके पत्तोंको एकत्र कूट पीस बवासीरपर लेप करे तो बवासीर नष्ट होवे ॥

ज्योतिष्कबीजलेप ।

ज्योतिष्कबीजकल्केन लेपो रक्तार्शसां हितः ॥

अर्थ–मालकाँगनीके बीजोंको पीसके लेप करे तो खूनी बवासीर नष्ट होवे इसमें संदेह नहीं है ॥

गुंजाकूष्मांडलेप ।

गुंजा कूष्मांडबीजं च सूरणेन च वर्तिकाम् ॥
लेपयेच्छायया शुष्कां गुदगा ह्यर्शसां जये ॥

अर्थ-घूंघची, पेठेके बीज और जमीकंद इनको एकत्र पीसके कपडेपर लेप देवे फिर इसको छायामें सुखायके इसकी बत्ती बनावे इस बत्तीको गुदामें रखे तो बवासीर नष्ट होवे । यह प्रयोग मुख्य करके बादी बवासीरपर चलता है ॥

कनकार्णवरस ।

नवं धात्रीभवं चूर्ण पलानां शतमात्रकम् ॥ विडंगं मरिचं पाठा चव्यचित्रकवालकम् ॥ मंजिष्ठा पिप्पलीमूलं लोध्रं पूगफलं तथा ॥ प्रत्येकं पलमात्रं स्यात्पिप्पली गजपिप्पली ॥ कुष्ठं दारुनिशा मुस्ता शताह्वा सारिवाद्वयम् ॥ इंद्रवारुणिकामूलं चूर्णमर्धपलोन्मितम् ॥ चत्वारि नागपुष्पस्य पलानि चूर्णयेत्ततः ॥ चूर्णादष्टगुणं तोयं क्वाथं पादावशेषकम् ॥ आदाय वस्त्रपूतं तु तुल्यं द्राक्षारसः कृतः ॥ सिता पलशतं योज्या क्षौद्रं च पलषोडशम् ॥ घृताक्ते निक्षेपेद्भांडे शर्करागुडधूपिते ॥ त्वगेला गंधपत्राणि उशीरं नागकेसरम् ॥ वालकं क्रमुकं चूर्णं प्रतिकर्षं च निःक्षिपेत् ॥ मुखं रुद्धा स्थितं पक्षं स्यातोऽयं कनकार्णवः ॥ यथेष्टं पाययेद्द्रव्यं दीपकः सर्वरोगहा ॥ अर्शांसि ग्रहणीं पांडुं श्वयथुं च विनाशयेत् ॥

अर्थ-नवीन आंवलोंका चूर्ण ४०० तोले और वायविडंग, काली मिरच, पाढ, चव्य, चीतेकी छाल, नेत्रवाला, मँजीठ, पीपरामूल, पठानी लोध और सुपारी ये प्रत्येक चार २ तोले लेवे, पीपर, गजपीपर, कूठ, देवदारु, हलदी, नागरमोथा, शतावर, गोरीसर, कालीसर, इन्द्रायनकी जड ये प्रत्येक दो तोले लेवे, नागकेशर १६ तोले इन सबको एकत्र कूट पीस चूर्ण करे, चूर्णसे अठगुना पानी डालके काढा करे जब चतुर्थांश शेष रहे तब उतारके छान लेवे, फिर जितना काढा होवे उतनी दाखका रस मिलावे और चार सौ तोले मिश्री तथा सहत चौंसठ तोले ले फिर उत्तम चिकने बासनमें प्रथम खांड और गुड इनकी धूनी देकर सब औषध काढे समेत भरदेवे तथा उसमें दालचीनी, छोटी इलायची, पत्रज, खस,

नागकेशर, नेत्रवाला और सुपारी ये प्रत्येक तोला २ चूर्ण उसमें डालके मुख बंद करके किसी उत्तम स्थानमें धरा रहने दे, यह कनकार्णवरस कहलाता है। उसको रोगीका बलाबल विचारके वैद्य देवे और पथ्यमें यथेष्ट भोजन करे, किसी वस्तुका परहेज नहीं है। अग्निको दीपन करता है, तथा सर्व रोग, बवासीर, संग्रहणी, पांडुरोग और सूजन इनको नाश करे॥

योगराजगूगल।

कणा गजकणा वह्नि विडंगेंद्रयवायवैः॥ कटुका पिप्पलीमूलं भार्गी पाठाजमोदकम्॥ मूर्वा शुंठी हिंगु चव्यं समं सर्वांशगुग्गुलुः॥ चूर्णयेन्मधुना खादेत्कर्षांशं योगराजकम्॥ रक्तवातार्शसो गुल्मग्रहणीपांडुजिद्भवेत्॥

अर्थ-पीपल, गजपीपल, चीतेकी छाल, वायाविडंग, इन्द्रजौ, जवासा, कुटकी, पीपरामूल, भारंगीका जड, पाढकी जड, अजवायन, मूर्वा, सोंठ घाडकी, हींग और चव्य ये बराबर लेवे और सबको बराबर शुद्ध करी गूगल डाल सबको कूट पीस १ तोलेकी गोली बनायले। १ गोली शहतके साथ खाय तो खूनी बवासीर, वादी बवासीर, गोलेका रोग, संग्रहणी और पांडुरोग अर्थात् पीलिया इनको नष्ट करे। इस औषधको योगराज कहते हैं॥

रालयोग।

रालचूर्णस्य तैलेन सार्षपेण युतस्य च॥
धूपदानेन युक्त्याशों रक्तस्रावो निवर्तते॥

अर्थ-रार (राल) का चूर्ण तथा सरसों एकत्र कर धूनी देवे तो बवासीर और रुधिरका स्राव बंद होवे॥

कर्पूरधूप।

रक्तौघशांतये देयं गुदे कर्पूरधूपनम्॥

अर्थ-यदि बवासीरवालेकी गुदासे रुधिर अधिक निकलता होय तो कपूरकी धूनी देय तो रुधिर गिरना बंद होवे॥

पयसादियूष।

पयसा शृतेन यूषैः सातिलमुद्गाढकीमसूराणाम्॥
ओदनमद्यादम्लैर्मधुरैरीषत्सुगंधैश्च॥

अर्थ–तिल, गुड, अरहर और मसूर इनका कोढा अथवा यूषमें थोडीसी डालके मधुर कर तथा सुगंधित करके उसके साथ भातको खाय तो रुधिर बन्द होवे ॥

कालकलांतकवटी ।

शुद्धसूतं मृतं वंगं तालं सिंधूत्थलांगली ॥ पलं तूरी पलैकैकं लसुनं च चतुःपलम् ॥ कारवल्लया द्रवैर्मर्द्यं दिनैकं वटकीकृतम् ॥ गुंजामात्रं सदा खादेद्गुदद्वारे च तां क्षिपेत् ॥ रक्तवातकफोत्थानामर्शसां शमयेद्ध्रुवम् ॥ वटी कालकलांतेयमनुपानं च कथ्यते ॥ भल्लातत्रिफलादंतीवह्निचूर्णं समं समम् ॥ सैंधवं सर्वतुल्यं स्याद्भर्जयेत्खर्परे चिरम् ॥ मृद्वग्निना भवेत्सिद्धं कर्षं तक्रैः पिबेदनु ॥

अर्थ–पारा शुद्ध, वंगकी भस्म, हरताल, सैंधानिमक, कलियारी और अरहर ये प्रत्येक चार चार तोले लेय तथा लहसुन १६ तोले ले सबको एकत्र कर करेलेके रससे एक दिन खरल करे फिर इसकी एक एक रत्तीकी गोली बनावे नित्य प्रति एक एक गोली सेवन करे तथा एक गोली गुदामें धर रक्खे तो रक्तवात तथा कफसे प्रगट होनेवाली बवासीरोंका शीघ्र नाश होवे इस कालकलांतकवटीका अनुपान कहताहूं । भिलावे, त्रिफला, जमालगोटा, चीता और सैंधानिमक ये समान भाग ले इनके चूर्णको खिपडेमें डालके मंदाग्निपर भूने, फिर इसमेंसे १ तोला छांछके साथ पिलावे ॥

अपामार्गादिकल्क ।

अपामार्गस्य बीजानां कल्कस्तंदुलवारिणा ॥
पीतो रक्तार्शसां नाशं कुरुते नास्ति संशयः ॥

अर्थ–ओंगाके बीजोंको चावलोंके धुले हुए पानीमें पीसके कल्क करे इस कल्कके पीनेसे खूनी बवासीर नष्ट होवे इसमें संदेह नहीं है ॥

पद्मकेशरयोग ।

सपद्मकेसरक्षौद्रनवनीतं नवं लिहन् ॥
सिताकेसरसंयुक्तं रक्तार्शी सुसुखी भवेत् ॥

अर्थ–कमलकी केशर, नवीन मक्खन (लोनी), खांड और नागकेशर

ये सब समान भाग लेकर गोली बनावे इसके भक्षण करनेसे खूनी बवासी-वाला प्राणी आनंदयुक्त होवे ॥

समंगादिदूध ।

समंगोत्पलमोचाह्वतिरीटतिलचंदनैः ॥
सिद्धं छागीपयो दद्यादृदजे शोणितात्मके ॥

अर्थ–लजालू (लज्जावंती), कमल, मोचरस, पठानी लोध, तिल और चंदन इनको बकरीके दूधमें डालके दूध सिद्ध करे। इसे पीवे तो खूनी बवासीर नष्ट होवे ॥

खूनी बवासीरपर क्काथ ।

चंदनकिराततिक्तकधन्वयवासाः सनागराः कथिताः ॥
रक्तार्शसां प्रशमना दार्वीत्वगुशीरनिंबाश्च ॥

अर्थ–चंदन, चिरायता, कुटकी, जवासा, सोंठ, दारुहलदी, दालचीनी, खस और नीमकी छाल इनका काढा करके पीवे तो खूनी बवासीरको नष्ट करे ॥

द्राक्षादियोग ।

द्राक्षा हरिद्रा मधुकं मांजिष्ठा नीलमुत्पलम् ॥
अजाक्षीरेण संपीतं रक्तजार्शोविनाशनम् ॥

अर्थ–मुनक्कादाख, हलदी, मुलहटी, मँजीठ और नीला कमल इनका कल्क करके बकरीके दूधसे पीवे तो खूनी बवासीरका नाश करे ॥

त्रिकट्वादियोग ।

त्रिकटु त्रिफला दंती वह्नि भल्लातसैंधवम् ॥ सुवर्चलं च सामुद्रं
लवणं घृततैलकम् ॥ छागमज्जा वसा मूत्रं गोमूत्रं नरमूत्रकम् ॥
महिषीगर्दभाश्वानामेषां मूत्रैर्दिनत्रयम् ॥ भावयेच्छोषयेत्तच्च
रुद्धा गजपुटे पचेत्॥ निष्कद्वयं पिबेच्चाज्यै रक्तवातार्शसां जये॥
क्षीरैर्मांसरसैर्भोज्यं शूलगुल्मं च नाशयेत् ॥

अर्थ–त्रिकटु, त्रिफला, जमालगोटा, चीतेकी छाल, भिलावे, सैंधानिमक, सोरा कलमी, समुद्रका निमक, घी, तेल और बकरेकी मज्जा, चर्बी तथा मूत्र, और गो, मनुष्य, भैंस, गधा और घोडा इनके मूत्रमें उक्त औषधोंको तीन दिन धरी रहने देवे फिर सुखायके शरावसंपुटमें रखके गजपुटमें धरके फूंक देवे जब शीतल हो जावे तब निकालके इसमेंसे आठ मासे औषध घीके साथ खावे तो खूनी

बवासीर तथा बादी बवासीर शांत होवे । इसपर दूध तथा मांसरस ये भोजनमें पथ्य देवे तो यह त्रिकट्वादियोग शूल और गोला इनका नाश करे ॥

विड्बंध ।

नागेन नलिकां कृत्वा घृतसैंधवलेपिताम् ॥
गुदद्वारे क्षिपेन्नित्यं मलरोधप्रशांतये ॥

अर्थ—शीशेकी नली करके उसमें सैंधानिमक और घीका लेप करके नित्यप्रति गुदामें रक्खे तो मलरोध अर्थात् दस्तका न उतरना दूर होवे ॥

रक्तस्राव ।

धूपने लेपनेऽभ्यंगे प्रस्रवंति गुदांकुराः ॥
सपित्तदुष्टं रुधिरं ततः संपद्यते सुखम् ॥

अर्थ—बवासीरके मस्से धूप देनेसे, लेप करनेसे अथवा अभ्यंग (मालिश)से, नास लेनेसे पित्त सहवर्तमान रुधिर निकलता है उस रुधिर निकलनेसे सुख होवे ॥

प्रकारांतर ।

विबंधेऽर्शसि चोत्सिक्ते कंडूमद्रक्तवाहिनि ॥
जलौकापातनादन्यः प्रयोगो नास्ति कश्चन ॥

अर्थ—विड्बंधकर्त्ता, चारों तरफसे खुजली करता तथा रुधिर बहनेवाली बवासीरपर जोंक लगाकर रुधिर निकालनेके सिवाय दूसरा उपाय नहीं है ॥

सक्तुपिंडीबंधन ।

तेनैव सुखमाप्नोति मुच्यते स्वेदपिंडिका ॥
घृततैलाक्तसक्तूनां पिंडिकां बंधयेद्गुदे ॥

अर्थ—सत्तुकी पिंडी (पोटली) करके उसपर घी अथवा तेल चुपडकर गुदाके ऊपर बांधे तो बवासीरमेंसे पसीने निकल जावे और तत्काल सुख होजाय ॥

नासार्शचिकित्सा ।

नासानाभिसमुत्थे तु तथा मेढ्राक्षिकर्णयोः ॥
क्रिया मर्शस्सु कुर्वीत तत्र तत्र यथोदिताम् ॥

अर्थ—नाक, नाभि, शिश्नेंद्री (लिंग), नेत्र और कान इनमें बवासीर होनेसे उसमें उसी स्थानमें उचित क्रिया कही हुई करनी चाहिये ॥

रजनीचूर्णयोग ।

भावितं रजनीचूर्णं स्नुहिक्षीरैः पुनः पुनः ॥
बंधयेत्सुदृढं सूत्रं छिनत्त्यर्शो भगंदरम् ॥

अर्थ-हलदी और थूहरका दूध इनमें वारंवार सूतको भिगोकर सुखाय लेवे फेर इस सूतसे बवासीरके मस्से बांधे तो वे टूटके गिरजावें इसी प्रकार भगंदररोगमें इस सूतको बांधे तो भगंदरका नाश करे। ये दोनों रोगोंपर प्रयोग अनुभूत हैं ॥

चामखील ।

चर्मकीलं तु संस्विद्य दह्यः क्षारेण चाग्निना ॥

अथ-चर्मकील रोगको स्वेदनकरके उसको क्षारसे अथवा अग्निसे दाग दवे तो मस्से दूर हो ॥

दुग्धिकादिघृत ।

दुग्धिकाकंटकारीभ्यां कल्कं क्षीरैश्चतुर्गुणम् ॥ कल्कतुल्यं घृतं योज्यं घृतशेषं विपाचयेत् ॥ भोजने लेपने पाने जयेच्छिताशंसां किल ॥

अर्थ-दूधी और कटेरी इनका कल्क तथा उस कल्कका चौगुना दूध और कल्कके समान उसमें घी डाले फिर इसको भट्टीपर चढायके मंदाग्निसे पचन करावे इस घीको भोजनमें मिलायके भक्षण करनेको देवे तथा बवासीरमें लगावे तो उस बवासीरका नाश करे ॥

व्योषादिमोदक ।

गुडव्योषवरावेल्लतिलारुष्कराचित्रकैः ॥
अर्शांसि हंति गुटिका त्वग्विकारं च शीलिता ॥

अर्थ-गुड, सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आंवला, काले तिल, काली मिरच, भिलावे और चित्रक इनके चूर्णकी गुडसे गोली बनावे और देवे तो बवासीर और त्वचाके विकारोंको नष्ट करे ॥

गुडचतुष्क ।

गुडेन शुंठीमथवोपकुल्यां पथ्यां तृतीयामथ दाडिमं च ॥
आमेष्वजीर्णेषु गुदामयेषु वर्चोविबंधेषु च नित्यमद्यात् ॥

अर्थ-सोंठ, पीपल, हरड और अनार ये चार वस्तु क्रमसे गुडसे नित्य भक्षण करे तो आम, अजीर्ण, बवासीर और मलकी कठोरता इनको नाश करे अर्थात्

सोंठ गुड आमको, पीपल गुड अजीर्णको, हरड गुड बवासीरको एवं अनारदाना और गुड मलबंधको दूर करे है ॥

कार्पासमज्जागुटी ।

कार्पासमज्जा लशुनं सर्जिका क्षारहिंगुकम् ॥
घृतेन कोलमात्रा हि गुटिकाशोंविनाशिनी ॥

अर्थ–बिनोलेकी मिंगी, लहसन, सज्जीखार और हींग एकत्र खरल कर बेरके समान घीसे गोली बनावे। इस गोलीको भक्षण करे तो बवासीरकी पीडा दूर हो ॥

त्रिफलादिगुटिका ।

त्रिफला पंचलवणं कुष्ठं कटुकरोहिणी ॥ देवदारु विडंगानि पिचुमंदफलानि च ॥ बला चातिबला चैव द्विहरिद्रा सुवर्चला ॥ एतत्सभृतसंभारं करंजत्वग्रसेन तु ॥ पिष्ट्वा च गुटिकां कृत्वा बादरास्थिसमां बुधः ॥ एकैकां तां समुद्धृत्य रोगे रोगे पृथक्पृथक् ॥ अर्शांसि हंति तक्रेण गुल्मानम्लेन निर्हरेत् ॥ उष्णेन वारिणा पीता शांतमग्निं प्रदीपयेत् ॥ जंतुजुष्टा तु योगेन त्वग्दोषं खादिरांबुना ॥ मूत्रकृच्छ्रं तु तोयेन हृद्रोगं तैलसंयुता ॥ इंद्रस्वरससंयुक्ता सर्वज्वरविनाशिनी ॥ मातुलुंगरसेनाथ सद्यः शूलहरी स्मृता ॥ कपित्थतिंदुकानां तु रसेन सह मिश्रिता ॥ विषाणि हंति सर्वाणि पानाशनप्रयोगतः ॥ गोशकृद्रससमायुक्ता हन्यात्कुष्ठानि सर्वशः ॥ श्यामाकषायसहिता जलोदरविनाशिनी ॥ भक्तच्छन्नं हि जयति भुक्तस्योपरि योजिता ॥ अक्षरोगेषु मधुना भक्षिता धृष्यतां जयेत् ॥ लेपमात्रेण नारीणां सद्यः प्रदरनाशिनी ॥ व्यवहारे तथा द्यूते संग्राममृगयादिषु ॥ समालभ्य वरोऽप्येनां क्षिप्रं विजयमाप्नुयात् ॥

अर्थ–त्रिफला (हरड, बहेडा, आवला), कालानिमक, सेंधानिमक, खारीनिमक, कचियानिमक, रेहका निमक, कूठ, कुटकी, देवदारु, वायविडंग, नीमके फल (निंबोरी), बला, अतिबला, हलदी, दारुहलदी, सज्जीखार ये सब वस्तु एकत्र करके कंजेकी छालके रसमें खरल करके बेरकी गुठलीके समान गोली बनावे

इसको प्रत्येक रोगमें अलग २ अनुपानके साथ देवे तो अनेक रोगोंको दूर करे, जैसे ववासीरपर छांछके साथ, गोलाके रोगमें नींबूके रसके साथ, मंदाग्निके रोगमें गरमजलके साथ, कृमिरोगमें वायविडंगके काढेके साथ, त्वचा (चमडी) के दोषोंमें खैरके काढेके साथ, मूत्रकृच्छ्रमें शीतलजलके साथ, हृदयरोगमें तैलसे, संपूर्ण ज्वरोंमें कूडेके स्वरसके साथ, शूलरोगमें बिजोरेके रससे, संपूर्ण विषोंमें कैथ और तेंदू इनके रसके साथ, संपूर्ण कुष्ठरोगोंमें इन्द्रगोपकृमि (वीरबहूटी) के साथ, जलोदर अर्थात् जलंधररोगमें पीपलके काढेके साथ देनी चाहिये तथा भोजनके पचानेको भोजन करनेके पश्चात् सेवन करे तथा संपूर्ण नेत्ररोगोंमें शहतके साथ अंजन करे, तथा स्त्रियोंके प्रदरपर लेपमात्र करनेसेही उसको दूर करे तथा इस गुटिकाके स्पर्श करके जानेसे व्यवहार (व्यौपार), द्यूत (जूआ), युद्ध, कुस्ती आदि और शिकार इनमें विजयी होय अर्थात् जीत पावे ॥

गुग्गुलादिवटी।

गुग्गुलं लशुनं निंबबीजरामठनागरैः ॥
गुटी शीतोदकेनोक्ता अर्शांन्हंति च तत्क्षणात् ॥

अर्थ–गूगल, लहसन, निंबोरी, हींग और सोंठ इनकी गोली शीतल जलके साथ देनेसे तत्काल बवासीरका नाश करे ॥

चन्द्रप्रभावटी।

मृतलोहं पलद्वंद्वं लोहांशं शुद्धगुग्गुलुः ॥ द्वयोस्तुल्या सिता योज्या त्रिभिस्तुल्यं शिलाजतु ॥ तवक्षीरपलैकं तु अन्यान्कर्षांशकाञ्च्छृणु ॥ विडंगं त्रिफला त्र्यूषं भूनिंबं गजपिप्पली ॥ द्विनिशा पिप्पलीमूलं देवदारु सुवर्चलम् ॥ सैंधवं धनिका ताप्यं कचोरोऽतिविषावृता ॥ ताप्यं सज्जी यवक्षारं वचा मुस्ता सपत्रकम् ॥ दंती एला सूक्ष्मचूर्णं मधुना गुटिका कृता ॥ कर्षमात्रा सदा खादेन्नाम्ना चंद्रप्रभा वटी ॥ सर्वाशांसि निहंत्याशु पांडुरोगं भगंदरम् ॥ कृच्छ्रान्मेहान्क्षयं कासं नानारोगहरा परा ॥

अर्थ–लोहेकी भस्म ८ तोले, शुद्ध गूगल ८ तोले, खांड १६ तोले, शीलाजीत ३२ तोले, तवाखीर ४ तोले और वायविडंग, त्रिफला, त्रिकटु, चिरायता, गजपीपल, हलदी, दारुहलदी, पीपरामूल, देवदारु, संचरनिमक, सैंधानिमक, धनिया,

सोनामक्खी, कचूर, अतीस, सुवर्ण, सज्जीखार, जवाखार, वच, नागरमोथा, तमालपत्र, दंती और इलायची ये सब एक एक तोला लेवे, सबका चूर्ण कर शहतसे दश मासेकी गोली बनावे । यह चंद्रप्रभावटी संपूर्ण प्रकारकी बवासीर, पांडुरोग, भगंदर, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, क्षय, राजरोग, तथा खांसी ऐसे अनेक प्रकारके रोगोंका नाश करे ॥

सूरणपुटपाक ।

सौरणं कंदमादाय पुटपाकेन पाचयेत् ॥
सतैलगुडसंयुक्तो रसश्चार्शोविकारनुत् ॥

अर्थ-जमीकंदको पुटपाककी विधिसे पुटपाक करके सरसोंके तेल और गुड इनके साथ खानेसे बवासीरके विकारको दूर करे ॥

चित्रकादिदधि ।

त्वचं चित्रकमूलं स्यात्पिष्ट्वा कुंभं प्रलेपयेत् ॥
तक्रं वा दधि वा तत्र जातमर्शोहरं पिबेत् ॥

अर्थ-चीतेकी जडकी छालको कूटके जलसे पीस घडेके भीतर लेप करे, उसमें दही अथवा छाँछको भर देवे इसमेंसे बवासीरवाले रोगीको पिलावे तो बवासीर दूर होय ॥

कांचन्यादिविषयोग ।

कांचनी विषपाषाणं यवक्षारं च हिंगुलम् ॥ जले पिष्ट्वा न्यसेद्गुह्ये एवं कुर्याद्दिनत्रयम् ॥ क्षीरस्येदं तथा कुर्यात्क्षीराहारी घृतौदनम् ॥ अर्शोरोगं निहंत्याशु सिद्धयोग उदाहृतः ॥

अर्थ-हलदी, संखियाविष, जवाखार, हींगलू इनको जलमें पीसके गोली बनावे इस गोलीको गुदामें रक्खे और दूधकी बाफ गुदाको देवे, तथा दूध पिलावे, घी और भातका भोजन करावे इस प्रकार तीन दिन करनेसे बवासीरका नाश होय । यह सिद्धप्रयोग कहा है ॥

वृद्धदारुमोदक ।

वृद्धादारुकभल्लातशुंठीचूर्णेन पेषितः ॥
मोदकः सगुडो हन्यात्षड्विधार्शःकृता रुजः ॥

अर्थ-विधायरा, भिलावे और सोंठ इन तीन औषधोंको समान भाग ले

चूर्ण करे और सब चूर्णसे दूना गुड मिलायके गोली बनावे। इस वृद्धदारुमोदकके भक्षण करनेसे छः प्रकारकी बवासीर दूर होवे॥

सूरणवटक।

शुष्कसूरणचूर्णस्य भागान्द्वात्रिंशदाहरेत्॥ भागान्षोडश चित्रस्य शुंठ्या भागचतुष्टयम्॥ द्वौ भागौ मरिचस्यादि सर्वाण्येकत्र कारयेत्॥ गुडेन पिंडिकां कुर्यादर्शसां नाशिनीं पराम्॥

अर्थ-जमीकंदको सुखायके चूर्ण कर बत्तीस तोले लेय, चित्रक १६ भाग, कालीमिरच दो भाग लेय, सब औषधोंका चूर्ण कर उसमें गुड सब औषधोंसे दूना मिलाय गोली करे। इस गोलीको नित्यप्रति सेवन करे तो छः प्रकारकी बवासीर नष्ट होवे॥

बृहत्सूरणवटक।

सूरणो वृद्धदारुश्च भागैः षोडशभिः पृथक्॥ मुसलीचित्रकौ ज्ञेयावष्टभागमितौ पृथक्॥ शिवाबिभीतकौ धात्री विडंगं नागरं कणा॥ भल्लातः पिप्पलीमूलं तालीसं च पृथक्पृथक्॥ चतुर्भागप्रमाणानि त्वगेला मरिचं तथा॥ द्विभागमात्राणि पृथक्ततस्त्वेकत्र चूर्णयेत्॥ द्विगुणेन गुडेनाथ वटकान्कारयेद्बुधः॥ प्रबलाग्निकरा ये ते तथार्शोनाशनाः पराः॥ ग्रहणीं वातकफजां श्वासं कासं क्षयामयम्॥ प्लीहानं श्लीपदं शोफं हिक्कां मेहं भगंदरम्। निहन्युः पलितं वृष्यास्तथा मेध्या रसायनाः॥

अर्थ-जमीकंद १६ भाग, विधायरा १९ भाग, मूसली सपेद ८ भाग, चीतेकी छाल ८ भाग, हरड, बहेडा, आमला, वायविडंग, सोंठ, पीपल, भिलावे, पीपरामूल, तालीसपत्र ये नौ औषधियोंके चार चार भाग लेवे, तथा दालचीनी, इलायची और कालीमिरच ये तीन औषध दो दो भाग लेवे फिर सब औषधोंको कूट पीसके चूर्ण करे इस चूर्णसे दुगुना गुड मिलावे सबको एक जीव करके गोली बनावे, इनके सेवन करनेसे अग्नि प्रदीप्त होवे, बवासीर, तथा वात कफसे उत्पन्न भई संग्रहणी, श्वास, खाँसी, क्षय, पेटमें दहनी तरफ जो पिलहीका रोग होता है वह, श्लीपदरोग, सूजन, हिचकी, प्रमेह, भगंदर, पलितरोग (जिसमें इस प्राणीके संपूर्ण बाल सपेद हो जाते हैं) ये संपूर्ण रोग दुर होवें तथा इस गोलीके

प्रभावसे स्त्रीगमनमें इच्छा होवे, तथा बुद्धि बढे और शरीरकी वृद्धावस्था आदिकों दूर करे ॥

कोशातकीघर्षण ।

कोशातकीरजोघर्षान्निपतंति गुदोद्भवाः ॥

अर्थ-कडवी तोरईका चूर्ण बवासीरके मस्सोंपर घिसे तो बवासीरके मस्से टूटकर गिर पडें ॥

निशादिलेप ।

निशाकोशातकीचूर्णं स्नुक्पयःसैंधवान्वितम् ॥
गोमूत्रेण समायुक्तो लेपो दुर्नामनाशनः ॥

अर्थ-हलदी और कडवी तोरई इनका चूर्ण, थूहरका दूध और सैंधानिमक इन सबको एकत्र पीसके गोमूत्रमें मिलायके मस्सोंके ऊपर लेप करे तो बवासीरका नाश होवे ॥

तथा निशादि और अर्कमूलादिलेप ।

निशकोशातकीलेपः सर्वदुर्नामनाशनः ॥
अर्कपत्रं शिग्रुमूलं लेपनं हितमर्शसाम् ॥

अर्थ-हलदी और कडवी तोरई इनका अथवा आकके पत्ते तथा सहँजनेके पत्तोंको पीसके लेप करे तो बवासीरको नष्ट करे ॥

निम्बादिलेप ।

निंबाश्वत्थस्य पत्राणां लेपो दुर्नामनाशनः ॥
आरनालेन वा हन्यात्सगुडा कटुतुंबिका ॥

अर्थ-कडुवे नीमके पत्ते और पीपलके पत्ते इन दोनोंको एकत्र पीसकर लेप करे। अथवा कडवी तूंबीके पत्तोंको और गुडको कांजीमें पीसके लेप करे तो बवासीर नाश होवे इसमें संदेह नहीं है, परंतु यह मस्सोंमें लगते हैं ॥

एरण्डमूलादि ।

एरंडमूलं सुरदारु रास्ना यष्टी मधूकं मसृणं विचूर्ण्य ॥ पिष्टं
यवानां च चतुर्गुणं स्यात्साध्यं हि वह्नौ पयसा समस्तम् ॥
स्वेदोपनाहौ बहु तेन कुर्यादर्शांसि शूलं विलयं प्रयांति ॥

अर्थ-अंडकी जड, देवदारु, रास्ना, मुलहटी और मक्खन इन सबको एकत्र पीस इनमें चौगुना जौका चून मिलाय दूधमें उसनके अग्निपर रोटी वा अंगारकरी

बनावे इस गरम २ रोटीसे यदि बवासीरको सेंके अथवा गरम २ बवासीर पर बांधे तो पीडायुक्त बवासीरका नाश होवे ॥

स्नुह्यादिलेप ।

स्नुह्यग्निलांगलीदंतीमूलैर्लेपोऽर्शसां हितः ॥

अर्थ—थूहरका दूध, चीतेकी छाल, कालियारी, दंतीकी जड इनको जलमें पीसके लेप करे तो बवासीर नष्ट होवे ॥

कृष्णाशिरीषादिलेप ।

कृष्णाशिरीषबीजार्कक्षीरैः सामरसैंधवैः ॥ हरिद्राऋक्षविड्गुंजा-
गोमूत्रैः पिप्पलीयुतैः ॥ एतल्लेपत्रयं योज्यं शीघ्रमर्शोविनाशनम् ॥

अर्थ—जटामांसी, शिरसके बीज, आकका दूध, सेमरका मूसला, सैंधानिमक, हलदी, रीछकी बीट, घूंघची, गोमूत्र और पीपल इन सबको एकत्र पीसके तीन बार मस्सोंपर लेप करे तो बवासीर बहुत जल्दी नष्ट होवे ॥

अर्कादिलेप ।

आर्कं पयः सुधाकांडं कंटकालाबुपल्लवाः ॥
करंजो बस्तमूत्रेण लेपनं श्रेष्ठमर्शसाम् ॥

अर्थ—आकका दूध, थूहरका टुकडा, कुटकी, कडुई घीयाके पत्ते और कंजाके बीज इन सबको बकरेके मूत्रमें पीसके मस्सोंपर लेप करे। यह लेप बवासीर पर उत्तम है ॥

गुञ्जासूरणलेप ।

गुंजासूरणकूष्मांडबीजैर्वर्तिस्तथा गुदे ॥

अर्थ—घूंघची, जमीकंद, पेठेके बीज इन सबको जलमें पीसके सपेद कपडेपर लेप करे फिर उसको छायामें सुखाय बत्ती बनावे इस बत्तीको गुदामें रक्खे तो बवासीरका नाश होवे ॥

गौरीपाषाणलेप ।

गौरीपाषाणकर्षैकं स्नुहीकांडे विनिःक्षिपेत् ॥ पाचयेत्पुटपाकेन तत
उद्धृत्य यत्नतः ॥ रेवाचिनी च कुष्ठं च कल्कीकृत्य त्रयं समम् ॥
लेपयेत्तेन अर्शांसि निवार्यंते न संशयः ॥

अर्थ—सोमल (संखिया) को थूहरकी गीली लकडीमें भरे फिर उसको पुट-

पाककी विधिसे पक्क करे पश्चात् रेवतचीनी और कूठ ये समान भाग ले सबको पीसके बवासीरपर लेप करे तो निःसंदेह बवासीर दूर होवे ॥

न्यग्रोधपत्रलेप।

दग्ध्वा न्यग्रोधपत्राणि तैलेन सह लेपयेत् ॥

अर्थ–वडके पत्तोंकी भस्म कर उस राखको तेलमें सानके बवासीरपर लेप करे तो बवासीर नष्ट होवे ॥

कटुतुंब्यादिलेप।

कटुतुंब्यास्तथा दंत्याः शकृच्च कुक्कुटस्य च ॥ मुसल्याश्चाश्वगंधायाश्चित्रकस्य च यत्नतः ॥ मूलैस्तुल्यैः कृतं चूर्णमर्कक्षीरेण भावयेत् ॥ स्नुहीक्षीरेण मतिमान्वारिणा परिपेषयेत् ॥ वस्त्रवर्त्यां गुदं तेन समालिप्य समंततः ॥ गुदे विनिक्षिपेद्यत्नात्प्रातः सायं च बुद्धिमान् ॥ वेदना च भवेत्तीव्रा वह्निना स्वेदयेद्गुदम् ॥ नो प्रशाम्येद्यदा तेन तदा चैवोष्णवारिणा ॥ विनिवेश्य गुदं तिष्ठेद्वेदनाशमकारणात् ॥ अद्याद्वृष्यमथान्नं च शिशिरं जलमापिबेत् ॥ गुदजानां विनाशार्थं सप्ताहं तु समाहितः ॥ विधिमेनं प्रकुर्वीत गतशंकस्तु मानवः ॥

अर्थ–कडवी तूंबीके पत्ते, दंतीकी जड, मुरगेकी विष्ठा, सपेद मुसली, असगंध और चीता ये समान भाग लेवे सबका चूर्ण करके आकके दूधमें और थूहरके दूधकी भावना देवे फिर जलसे पीसके कपडेपर लेप कर उसको सुखायके बत्ती बनावे, फिर इसी बत्तीसे प्रथम पूर्वोक्त औषधोंका लेप करे फिर बत्तीको गुदामें रखदेवे इस प्रकार सायंकाल और प्रातःकाल दोनों वख्त बत्तीको धरे, इसके धरनेसे गुदामें घोर पीडा होती है उसकी शांति करनेको गुदामें स्वेदनविधि करे, यदि स्वेदन करनेसे भी पीडाशांति न होवे तो गरम जलमें बैठजावे, तथा वृष्य (पुष्टकर्त्ता) अन्नका सेवन करे अर्थात् मधुर, चिकने और मनको प्रसन्नकारी पदार्थ सेवन करे, शीतल जल पीवे इस प्रकार सात दिन करनेसे बवासीरका नाश होय। यह यत्न प्राणीको शंकारहित होकर करना चाहिये ॥

देवदालीबीजलेप।

सिंधूत्थदेवदाल्याश्च बीजं कांजिकपेषितम् ॥

गुदांकुरप्रलेपेन पाटयेत्पर्वतानपि ॥

अर्थ–सैंधानिमक और वंदाल (घघरबेल) के बीज इन दोनोंको कांजीमें पीसके बवासीरके मस्सोंके मुखपर लेप करे तो मस्से गलकर गिरपडें। इस लेपसे पर्वतभी टूट पडते हैं ॥

चव्यादिघृत।

चव्यं त्रिकटुकं पाठा क्षाराः कुस्तुंबरूणि च ॥ यवानी पिप्पलीमूल-मुभे च बिडसैंधवे ॥ चित्रकं बिल्वमभया पिष्ट्वा सर्पिर्विपाचयेत् ॥ सकृद्वातानुलोमार्थे जाते दधि चतुर्गुणम् ॥ प्रवाहिकां गुदभ्रंशं मूत्र-कृच्छ्रं परिस्रवम् ॥ गुदवंक्षणशूलं च घृतमेतद्व्यपोहति ॥

अर्थ–चव्य, सोंठ, मिरच, पीपल, पाढ, सर्व प्रकारके क्षार, धनिया, अजवायन, पपिरामूल, बिडनिमक, सैंधानिमक चीतेकी छाल, बेलका फल और हरड इन सबको एकत्र पीसके कल्क करे इस कल्कसे घी सिद्ध करे, यह घी बादीको अनुलोमन करेहै और चौगुणा दही डालके इस घीको सिद्ध करे। यह प्रवाहिका, गुदभ्रष्ट, मूत्रकृच्छ्र, गुदस्राव और गुदा, पेडु इनका दर्द नाश करे ॥

शुंठीघृत।

त्रिंशत्पलानि शुंठीनां जलद्रोणे विपाचयेत् ॥ तेन पादावशेषेण कल्केनान्यं पचेद्घृतम् ॥ दुर्नामश्वासकासघ्नं प्लीहपांड्वामयाप-हम् ॥ विषमज्वरशांत्यर्थं तृष्णारोचकनाशनम् ॥ शुंठीघृतमिति ख्यातं कृष्णात्रेयेण पूजितम् ॥ नागरेण जले पक्वं बस्तिकुक्षि-गदापहम् ॥

अर्थ–सोंठ एक सौ बीस तोले ले एक सौ बीस तोले जलमें काढा करे जब चतुर्थांश शेष रहे तब उतारके छानलेवे, फिर इसमें सोंठका कल्क मिलायके घृत पाचन करे। यह बवासीर, श्वास, खांसी, प्लीहा, पड्डुरोग, विषमज्वर, प्यास और अरुचि इनका नाश करे। यह कृष्णात्रेय करके मान्य ऐसा शुंठीघृत है। यही अदरखके रसमें सिद्ध करा हुआ घृत बस्ति (मूत्रस्थान) और कूख इनके रोगोंको नष्ट करे है ॥

लघुचव्यादिघृत।

चव्या तिक्ता कलिंगानि शताह्वा लवणानि च ॥
सर्पिरर्शोविकारघ्नं ग्रहणीदीपनं परम् ॥

अर्थ—चव्य, कुटकी, इन्द्रजौ, सतावर और पांचों निमक इन औषधोंसे सिद्ध करा हुआ घृत बवासीर और संग्रहणी इनको नष्ट करे तथा दीपनविषयमें उत्तम है ॥

ह्रीबेरघृत ।

ह्रीबेरमुत्पलं लोध्रं समंगा चव्यचंदनम् ॥ यवासातिविषा बिल्वं धातकी देवदारु च ॥ दार्वीत्वङ्नागरं मांसी मुस्ता क्षारो यवाग्रजः ॥ चित्रकश्चेति पेष्याणि चांगेरीस्वरसे घृतम् ॥ एकत्र साधयेत्सर्वं तत्सर्पिः परमौषधम् ॥ अर्शोतिसारग्रहणीपांडुरोगे ज्वरेऽरुचौ ॥ मूत्रकृच्छ्रे गुदभ्रंशे बस्त्यानाहप्रवाहिके ॥ पिच्छास्रावेऽर्शसां मूले योज्यमेतत्त्रिदोषहृत् ॥

अर्थ—नेत्रवाला, कूठ, लोध, मंजीठ, चव्य, चंदन, धमासा, अतीस, बेलफल, धायके फूल, देवदारु, दारुहलदी, दालचीनी, सोंठ, जटामांसी, नागरमोथा, जवाखार तथा चीतेकी छाल इन सब वस्तुओंको चूकाके रसमें पीसकर कल्क करे फिर कल्कके समान घी लेकर घृत सिद्ध करनेकी विधिसे बनावे । यह (चांगेरीघृत) उत्तम औषधी है । यह बवासीर, अतिसार, संग्रहणी, पांडुरोग, ज्वर, अरुचि, मूत्रकृच्छ्र, गुदभ्रंश (काँचका निकलना), बस्ति अफरा, प्रवाहिका, रक्तस्राव, बवासीरके मस्से और त्रिदोष इनपर हितकारी है तथा त्रिदोषनाशक है ॥

रोहितारिष्ट।

रोहीतकतुलामेकां चतुर्द्रोणे जले पचेत् ॥ पादशेषे रसे शीते पूते पलशतद्वयम् ॥ दद्याद्गुडस्य धातक्याः पलषोडशिका मताः ॥ पंचकोलं त्रिजातं च त्रिफलां च विनिःक्षिपेत् ॥ चूर्णयित्वा पलांशेन ततो भांडे निधापयेत् ॥ मासादूर्ध्वं च पिबतां गुदजा यांति संक्षयम् ॥ ग्रहणीपांडुहृद्रोगप्लीहगुल्मोदराणि च ॥ कुष्ठशोफारुचिहरो रोहितारिष्टसंज्ञकः ॥

अर्थ—लाल रुहेडा १ तुलाको जवकुट करके उसमें चार द्रोण जल डालके काढा करे जब चतुर्थांश जल रहे तब उतारके छान लेवे जब शीतल होजावे तब उसमें २०० दो सौ पल गुड डालके तथा धायके फूल ६ तोले डालके, पंचकोलकी

औषधी, त्रिजातककी औषधी और त्रिफला ये ग्यारह औषधोंको एक एक पल लेकर सबका चूर्ण कर उस पूर्वोक्त काढेमें डालदेवे फिर सबको एक पात्रमें भरके उसके मुखपर मुद्रा देकर एक महीने पर्यंत धरा रहने देवे, महीनेके पश्चात् मुद्राको दूर कर इस रसको निकासलेवे। इसको रोहितारिष्ट कहते हैं। इसके सेवन करनेसे बवासीर, संग्रहणी, पांडुरोग, हृदयका रोग, पेटमें दहनी तरफ पिलही होती है वह, गोलेका रोग, उदररोग, कोढ, सूजन और अरुचि ये रोग दूर होवें॥

मधुपक्वहरीतकी।

कंदबनिंबचिंचानां त्वक्चूर्णं पलषोडशम् ॥ अजागोमाहिषीमूत्रं त्वक्षोडशगुणोत्तरम् ॥ क्वाथयेत्पादशेषं तु शुद्धं कृत्वा विनिः- क्षिपेत् ॥ अभयानां शतैकं तु क्वाथयेच्च कषायकम् ॥ जीर्यते ह्यभया पश्चाद्भित्त्वा अंडं निवारयेत् ॥ भृंगी सुवर्चलं चूर्णं तुल्यं तेन प्रपूरयेत् ॥ अभयां वेष्टयेत्सूत्रैर्मधुमध्ये त्र्यहं क्षिपेत् ॥ नित्यं क्षौद्रसमं भक्ष्या त्रिदोषार्शःप्रशांतये ॥

अर्थ-कदम, नीम, इमली इनकी छालका चूर्ण चौंसठ तोले, तथा बकरी गौ भैंस इनका मूत्र एक हजार चार तोले डालके काढा करे जब चतुर्थांश शेष रहे तब उतारके काढेको छानलेवे, इसमें १०० हरड डालके औटावे जब हरड नरम होजावे तब निकालके उनके भीतरकी गुठली दूर करे और इन हर- डोंमें भांग और सज्जीखार भरके सूतसे बाँधदेवे तथा तीन दिन शहतमें डालके धरी रहने देवे फिर इसमेंसे एक हरडको निकालके भक्षण करे तो त्रिदोषजन्य बवासीर शांत होवे॥

गोजिह्वादिकाढा।

गोजिह्वामूलमेकं द्विगुणबर्हिशिखामूलकुस्तुंबराणामष्टांशे क्वाथ- तोये मधुसिकतरजोमिश्रमंते पिबेत्तत् ॥ तस्यार्शः षड्विधोऽपि हरति गुदरुजः स्रावमामानुबंधं कीलं कंडुग्रहण्यां शुलमति भिष- जा मंडलात्पथ्यसेवी ॥

अर्थ-गोभीकी जड १ भाग, मोरशिखाकी जड २ भाग, तथा धनिया इनका अष्टमांश लेकर काढा करे उसमें शहत और खांड डालके रोगीको देवे

तो यह छः प्रकारकी बवासीर, गुदाके रोग, गुदाका स्रवना, आमांश, बवासीरके मस्से, खुजली, संग्रहणी और शूल इनका नाश करे इसको एक मंडल सेवन करे तथा पथ्यसे रहे ॥

कल्याणलवण ।

भल्लातकानि त्रिफला दंती चित्रकमेव च ॥ समभागानि सर्वाणि सैंधवं द्विगुणं भवेत् ॥ कपालपुटसंपक्कं मृदुना गोमयाग्निना ॥ कल्याणनामलवणं श्रेष्ठमर्शोविकारिणाम् ॥

अथ-भिलावे, हरड, बहेडा, आमला, दंतीकी जड और चीतेकी छाल ये सब औषधी समान भाग लेवे और सैंधानिमक एक औषधसे दूना लेवे सबको एकत्र कर शरावसंपुटमें रख कपडमिट्टी कर आरने उपलोंकी मंदाग्नि देवे जब स्वांग शीतल हो जावे तब निकास लेवे। यह (कल्याण नामक) लवण बवासारपर हितकारी है ॥

तक्रादियोग ।

सतक्रं लवणं दद्याद्वातवर्चोनुलोमनम् ॥ न प्ररोहंति गुदजाः पुनस्तक्रसमाहताः ॥ तक्राभ्यासोर्शसैः कार्यो बलवर्णाग्निवृद्धये ॥ स्रोतस्सु तक्रशुद्धेषु सम्यक्फलति तद्रसः ॥ तनुपुष्टिस्तथा तुष्टिर्बलं वर्णश्च जायते ॥ वातश्लेष्मविकाराणां शतं च विनिवर्तयेत् ॥

अथ-छाँछमें निमक डालके देवे वह वायु और मल इनका अनुलोमन करे, तथा तक्रके प्रयोगसे नाश हुए (गुदाके मस्से) फिर उत्पन्न नहीं होते, बल, वर्ण और अग्नि इनकी वृद्धि होय, इसी कारण बवासीररोगवालेको छाँछ पीनेका अभ्यास करना चाहिये। छाँछसे नाडियोंके मार्ग शुद्ध होनेसे शरीरका पालन करनेवाले रसका उन नाडियोंमें उत्तम प्रकारसे संचार होताहै कि जिससे शरीरकी वृद्धि, संतोष, बल और कांति ये उत्पन्न होवें तथा अनेक वात कफके विकारोंका नाश होवे ॥

प्रकारांतर ।

विड्विबंधे हितं तक्रं यवानीविश्वसंयुतम् ॥ न प्ररोहंति गुदजाः प्रायस्तक्रसमन्विताः॥ यज्जातं गोरसक्षीराद्वह्निमूलावचूर्णितात्॥ पिबंस्तदेव तेनैव तक्रं भुज्यांकुरा अपि ॥ पिबेदहरहस्तक्रं

निरन्नो वा सकामतः ॥ सप्ताहं वा दशाहं वा मासार्धं मासमेव च ॥ बलकालविकारज्ञो भिषक्पंच प्रयोजयेत् ॥ हरीतकीं तक्रयुतां त्रिफलां वा प्रयोजयेत् ॥ चित्रकं हबुषा हिंगु दद्याद्वा तक्रसंयुतम् ॥ पंचकोलकयुक्तं वा तक्रेणैव प्रदापयेत् ॥ त्वचं चित्रकमूलस्य पिष्ट्वा कुंभं प्रलेपयेत् ॥ तक्रं वा दधि वा तत्र जातमर्शोहरं पिबेत् ॥ तक्रेणार्शांसि निघ्नंति मुसलीकटुकान्विता ॥

अर्थ–विड्विबंध अर्थात् मलकी कब्जियत पर अजवायन और सोंठ मिलायके छाँछ पीवे तो छाँछसे नाश हुए गुदांकुर (गुदाके मस्से) फिर उत्पन्न नहीं होते, जो गौके दूधसे बनी छाँछ तथा उसमें चित्रककी छालका चूर्ण डाला ऐसी केवल छाँछसेही गुदाके मस्से नष्ट होतेहैं इस कारण विना अन्नके नित्यप्रात वारंवार छाँछ पीवे सो इस प्रकार कि सात, दश, किंवा पंद्रह दिन अथवा एक महीने पर्यंत बल, काल, विकार जाननेमें कुशल वैद्य रोगीको छाँछमें देवे और छाँछमें हरड किंवा त्रिफला देवे अथवा चित्रक, हाऊवेर और हींग ये छाँछमें डालके देवे अथवा पंचकोलका चूर्ण डालके छाँछ देवे, अथवा चित्रककी छालक कल्कको उत्तम मिट्टीके पात्रके भीतर लेप करके दूध जमावे यह दही अथवा छाँछ अर्शनाशक है अथवा मूसली और कुटकी चूर्ण मिलायके छाँछ पीवे तो बवासीर नष्ट होवे ॥

अरलुत्वक् ।

अरलुत्वग्वह्निसुरेंद्रयवान् चिरबिल्वसुसैंधवशुंठियुतान् ॥
मथितेन पिबेद्यदि सप्तदिनमर्शांसि पतंति समूला निबलात् ॥

अर्थ–टेटूकी छाल, चीतेकी छाल, इन्द्रजौ, कंजा, सैंधानिमक और सोंठ इनका चूर्ण छाँछमें डालके सात दिन पीवे तो जलसे मस्से उखडके गिर जावें ॥

शर्करासव ।

दुरालभायाः प्रस्थस्य चित्रकस्य वृषस्य च ॥ पथ्यामलकयोश्चैव पाठाया नागरस्य च ॥ दद्याद्द्विपालिकान्भागाञ्जलद्रोणे विपाचयेत् ॥ पादशेषे रसे पूतं सुशीतं शर्कराशतम् ॥ दत्त्वा कुंभे दृढे स्थाप्यं मासार्धं घृतभाजनम् ॥ प्रलिप्य पिप्पलीचव्याप्रियंगुमधुसर्पिषा ॥ तस्य मात्रां पिबेत्काले शार्करस्य यथाबलम् ॥

अर्शांसि ग्रहणीरोगमुदावर्तमरोचकम् ॥ शकृन्मूत्रानिलोद्गारवि-
बंधानलमार्दवम् ॥ हृद्रोगं पांडुरोगं च सर्वरोगान्प्रणाशयेत् ॥

अर्थ–धमासा १ सेर, तथा चित्रक, अडूसा, हरड, आंवले, पाढ, सोंठ ये प्रत्येक आठ २ तोले इन सबको २०४ तोले जलमें पीसके काढा करे जब चतुर्थांश शेष रहे तब उतारके शीतल करे फिर ४०० तोले खाँड डाले फिर घीके चिकने दृढपात्रमें भरके मुख बंद कर १२ दिन उसी प्रकार ढका हुआ धरा रहने देवे, तथा उस पात्रमें पीपल, चव्य, फूल प्रियंगु, शहत और घी ये भीतर चुपड देवे, फिर इस आसवमेंसे प्रातःकाल बलाबल विचारके देवे तो बवासीर, संग्रहणी, उदावर्त्त, अरुचि इनको नाश करे तथा मल, मूत्र, अधोवायु, डकार, मंदाग्नि, हृदयरोग, पांडुरोग तथा सर्वरोग इनको नाश करे ॥

द्राक्षासव ।

द्राक्षापलशतं दत्त्वा चतुर्द्रोणांभसा पचेत् ॥ द्रोणशेषे रसे
तस्मिन्पूतशेषं प्रदापयेत् ॥ शर्करायास्तुलां दत्त्वा तत्तुल्यं
मधुनस्तथा ॥ पलानि सप्त धातक्यः स्थापयेदाज्यभाजने ॥
जातीलवंगकंकोलं लवलीफलचंदनैः ॥ कृष्णात्रितं च वै युक्त्या
भागैरर्धपलांशकैः ॥ त्रिसप्ताहाद्भवत्येवं तत्र मात्रां यथाबलम् ॥
नाम्ना द्राक्षासवो ह्येष नाशयेद्गुदकीलकान् ॥ शोषारोचकहृ-
त्पांडुरक्तपित्तभगंदरान् ॥ गुल्मोदरकृमिग्रंथिक्षतशोषज्वरांत-
कृत् ॥ वातपित्तप्रशमनं शस्तं च बलवर्णकृत् ॥

अर्थ–दाख ४०० तोले लेकर ८१७२ तोले जलमें चतुर्थांश शेष काढा करे फिर इसको छानके इसमें खांड ४०० तोले तथा शहत ४०० तोले डाले और धायके फूल ५८ ताले डालके घीके चिकने बासनमें भरके भरदेवे और इतनी वस्तु और डाले जायफल, लौंग, कंकोल, हर्फारेवडीके फल और चंदन ये प्रत्येक दो दो तोले लेवे सबको कूटके उसी पात्रमें डालके मुखको बंद कर इक्कीस दिन उसी प्रकार धरा रहनेदे, पश्चात् बलाबल विचारके इसकी मात्रा देवे यह द्राक्षासव बवासीरके मस्सोंको नाश करे तथा शोष, अरुचि, हृदयरोग, रक्तपित्त, भगंदर, गोला, उदररोग, कृमि, गांठ, क्षतक्षय, ज्वर और वातपित्त इनका नाश होय तथा बल और कांति इनको करे ॥

सन्निपातार्शधूप।

गोधूमपिष्टं पलमेकहिंगुशाणार्धभल्लातकवेदयुक्तः ॥
स्याद्धूपदाने गुदशूलनाशः स्यात्सन्निपातो गुदसंभवानाम् ॥

अर्थ-गेंहूका चून ४ तोले, हींग २ मासे और भिलावे ४ ये सब एकत्र कूट-इस गुदामे धूनी देवे तो गुदाकी पीडा, तथा सन्निपातजन्य बवासीर नष्ट होवे ॥

हपुषादितक्रारिष्ट।

हपुषां कुंचिका धान्यमजाजी कारवी सठी ॥ पिप्पली पिप्पलीमूलं चित्रको गजपिप्पली ॥ यवानी चाजमोदा च तच्चूर्णं तक्रसंयुतम् ॥ मंदाम्लं कटुकं विद्वान्स्थापयेद्धृतभाजने ॥ व्यक्ताम्लं कटुकं जातं तक्रारिष्टं कटुप्रियम् ॥ प्रपिबेन्मात्रया काले प्रातर्भोज्ये तथा तृषि ॥ दीपनं रोचनं वर्ण्यं कफवातानुलोमनम् ॥ गुदश्वयथुकण्ड्वार्तिनाशनं रोचनं बलवर्धनम् ॥

अर्थ-हाऊवेर, मेथी, धनिया, जीरा, सोंफ, कचूर, पीपर, पीपरामूल, चीतेकी छाल, गजपीपल, अजमायन और अजमोद इनका चूर्ण कुछ २ खट्टी छाँछके साथमें मिलायके घीके चिकने वासनमें भर देवे, जब वह उत्तम रीतिसे खट्टा और तीक्ष्ण होजावे तब जाने कि सिद्ध हो गया, इसको तक्रारिष्ट कहते हैं, यह चरपरे पदार्थ खानेवालोंको प्रिय है, इसमेंसे थोडा प्रातःकाल तथा भोजनके समय, तथा जिस समय प्यास लगे उस समय पीवे। यह दीपन, रुचिकारक, वर्णको उत्तम करनेवाला, तथा वायुको अनुलोमन करनेवाला है। यह गुदाके रोग, सूजन और खुजली इनका नाश करे तथा बलको बढावे ॥

भर्जितहरीतकी।

घृतसंभर्जिता पथ्या पिप्पलीगुडसंयुता ॥
भक्षयेद्वा त्रिवृद्धंति भक्षिता चानुलोमनी ॥

अर्थ-हरडको घीमें भूनके उसमें पीपलका चूर्ण और गुड मिलायके देवे अथवा निसोथ मिलायके देवे तो मलका अनुलोमन करे अर्थात् दस्त साफ करे ॥

पाठामूलयोग।

दुःस्पर्शकेन बिल्वेन यवान्या नागरेण वा ॥
एकैकेनापि संयुक्ता पाठा हंत्यर्शसो रुजम् ॥

अर्थ–धमासा, बेलगिरी, अजवायन और सोंठ इनमेंसे एकमें पाढकी जडको मिलायके देवे तो बवासीरकी पीडा नष्ट होय ॥

सर्वैं सर्वात्मकान्याहुर्लक्षणैः सहजानि च ॥

अर्थ–संपूर्ण दोषोंके लक्षण जिस बवासीरमें होवें उसको सान्निपातजन्य बवासीर जाननी तथा जन्म होनेके समयसेही जो बवासीर होवे उसको सहज अर्श कहते हैं ॥

सूरणचूर्ण ।

शर्करायुतसूरणकंदं गुंजाकेशरमेव तथान्यत् ॥
क्षौद्रयुतं नवनीतमथो वा सूदनकारणमर्शस एव ॥

अर्थ–खांड, जमीकंद, घूंघची और नागकेशर इनका चूर्ण शहत अथवा मक्खन इनके साथ देवे तो बवासीरका नाश करे ॥

वैक्रांताख्यरस ।

मृतसूताभ्रवैक्रांतकांतताम्रं समं समम् ॥ सर्वतुल्येन गंधेन मर्द्यं भल्लातकान्वितम् ॥ दिनैकं तद्द्रवैरेव वटी कार्या द्विगुंजका ॥ भक्षयेद्गुदजान्हंति द्वंद्वजं च त्रिदोषजम् ॥ प्रत्यष्टमुशलीवह्निभागाः कुष्ठस्य षोडश ॥ पिप्पली पिप्पलीमूलं क्षिपेद्भागद्वयं द्वयम् ॥ चतुष्कं तु विडंगस्तु मरिचं कटु शुंठिका ॥ ब्रह्मदंडि तथैकैकं चूर्णितं द्विगुणं गुडम् ॥ कर्षांशं भक्षयेच्चानु ह्यर्शोरोगप्रशांतये ॥ वैक्रांताख्यो रसो नाम साध्यासाध्यार्शशांतये ॥

अर्थ–पारेकी भस्म, अभ्रकभस्म, वैक्रांत (कासुले) की भस्म, कांत लोहकी भस्म और तामेकी भस्म ये समान भाग लेवे इन सबके बराबर गंधक और भिलावे ये डालके एक दिन खरल करे फिर भिलावेके तेलसे दो रत्तीकी गोली बनावे इसको अनुपानके साथ देवे और मूसली और चित्रक प्रत्येक आठ भाग, कूठ १६ भाग और पीपल २ भाग, पीपरामूल २ भाग, तथा वायविडंग ४ भाग और काली मिरच, कोथमीर, सोंठ और ब्रह्मदंडी ये प्रत्येक एक एक भाग लेव इन सबके चूर्णमें दूना गुड मिलाय एक २ तोलेकी गोली बनावे ।

इसको भोजनके प्रथम देवे तो बवासीर रोग नष्ट होवे । यह (वैक्रांत रस) साध्यासाध्य बवासीरके दूर करनेमें उत्तम है ॥

पर्पट्यादियोजना।

गोमूत्रेण समं पीत्वा गुंजाष्टौ पर्पटीरसम् ॥ ताम्रपर्पटिका तद्वद्गुडशुंठ्यभयान्विता ॥ भक्षयेदर्शसां शांत्यै ह्यनुपानं वदाम्यहम् ॥ जीवंती पुष्करं वह्निबिल्वमज्जकचोरकम् ॥ करवीरं यवक्षारं जातिचूर्णं पलं पलम् ॥ द्विपलं तिन्तिणीचूर्णं लाजाचूर्णं चतुःपलम् ॥ तिलतैलं घृतं चैव प्रत्येकं तु पलद्वयम् ॥ भ्रष्टं सर्वं प्रयोक्तव्यं कर्षैकमनुपानकम् ॥

अर्थ-पर्पटी रस ८ रत्ती गोमूत्रके साथ देवे, अथवा ताम्रपर्पटी रस गुड सोंठ और हरड इनके चूर्णके साथ देवे, अब इसका अनुपान कहताहूं, जीवंती, पुहकरमूल, चीतेकी छाल, बेलगिरी, कचूर, कोहवृक्षकी छाल, जवाखार और जीरा इन प्रत्येकका चूर्ण ४ तोले लेवे और इमली ८ तोले, खीलोंका चूर्ण १६ तोले तथा तिलोंका तेल और घी ये प्रत्येक ८ तोले लेकर सबको भूनके उससे एक तोला पश्चात् भक्षण करनेको देवे, यह इसका अनुपान है ॥

कुटजावलेह।

कुटजत्वक्तुलां द्रोणे जलस्य विपचेत्सुधीः ॥ कषायं पादशेषं च गृह्णीयाद्वस्त्रगालितम् ॥ त्रिंशत्पलं गुडस्यात्र दत्त्वा च विपचेत्पुनः ॥ सांद्रत्वमागतं ज्ञात्वा चूर्णानीमानि दापयेत् ॥ रसांजनं मोचरसं त्रिकटु त्रिफलां तथा ॥ लज्जालुं चित्रकं पाठां बिल्वमिंद्रयवान्वचाम् ॥ भल्लातकं प्रतिविषं विडंगानि च वालकम् ॥ प्रत्येकं पलसंमानं घृतस्य कुडवं तथा ॥ सिद्धशीते ततो दद्यान्मधुनः कुडवं तथा ॥ जयेदेषोऽवलेहस्तु सर्वाण्यर्शांसि वेगतः ॥ दुर्नामप्रभवान्रोगानतीसारमरोचकम् ॥ ग्रहणीं पांडुरोगं च रक्तपित्तं च कामलाम् ॥ अम्लपित्तं तथा शोफं कार्श्यं चैव प्रवाहिकाम् ॥ अनुपाने प्रयोक्तव्यमाजं तक्रं पयो दधि ॥ घृतं जलं वाजीर्णं च पथ्यभोजी भवेन्नरः ॥

अर्थ-कुडेकी छाल १ तुला ले कुचलकर १ द्रोण जलमें डालके काढा करे जब जल चौथाई शेष रहे तब उतारके कपडेमें छान लेवे फिर इसमें तीस पल

गुड डालके अवलेह बनावे जब गाढी हो जावे तब इसमें इतनी औषधें और डाले उनको कहते हैं, रसोत, मोचरस, सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडे, आमले, लजालु, चीतेकी छाल, पाढ, छोटा बेलफल, इन्द्रजौ, वच, भिलावे, अतीस, वायविडंग, नेत्रवाला ये अठारह औषधी एक एक पल लेवे सबका चूर्ण करके अवलेहके पाकमें डालदेवे तथा घी एक कुडव डालके शीतल करे जब खूब शीतल हो जावे तब उसमें शहत १ कुडव मिलावे फिर इस अवलेहको बकरीके दूधसे अथवा छाँछ घी जलके साथ सेवन करे परंतु जब भोजन करा हुआ अजीर्ण हो जाव तब इसको लेय और उत्तम पथ्य करे तो इसके प्रभावसे संपूर्ण बवासीर तत्काल दूर हो तथा दुष्ट नाम है जिन्होंका ऐसे भगंदरादिक रोग, अतिसार, अरुचि, संग्रहणी, पांडुरोग, रक्तपित्त, नेत्रोंमें कामला रोग होताहै वह, अम्लपित्त, सूजन, कृशता (देहका सूख जाना), आतिसाररोगका भेद प्रवाहिका रोग ये संपूर्ण रोग नष्ट होवें ॥

कूष्मांडावलेह ।

युक्त्या कूष्मांडखंडानि सूरणं विपचेत्सुधीः ॥
अर्शांसि गुडवातानां मंदाग्निषु प्रयुज्यते ॥

अर्थ—पेठेके टुकडे, जमीकंद इन दोनोंको युक्तिसे पचावे और रोगीको देवे तो बवासीर और गुडवात तथा मंदाग्नि इनको नाश करे ॥

भल्लातकावलेह ।

सुपक्कभल्लातफलानि सम्यग्द्विधाकृतान्याढकसंमितानि ॥ विपाच्य तोयेन चतुर्गुणेन चतुर्थशेषे व्यपनीय तानि ॥ पुनः पचेत्क्षीरचतुर्गुणेन घृतांशयुक्ते च घनं यथा स्यात् ॥ सितोपलाषोडशाभिः पलैश्च विमर्द्य संस्थाप्य दिनानि सप्त ॥ ततः प्रयुंज्यानि बलेन मात्रां जयेद्विकारानखिलान्गुदोत्थान् ॥ कचान्सुनीलान् घनकुंचिताग्रान्सुपर्णदृष्टिं च शशांककांतिम् ॥ जवो हयानां बलमुत्तमं च स्वरं मयूरस्य हुताशदीप्तिम् ॥ स्त्रीवल्लभत्वं विविध प्रभावं निरोगतां द्वित्रिशतायुषं च ॥ न चान्नपाने परिहारमस्ति न चातपे नाध्वनि मैथुने च ॥ प्रयोगकाले सकलामयानां राजाधिराजा च रसायनानाम् ॥

अर्थ–उत्तम पके और दो टुकडे करे हुए भिलावे १२४ तोले लेकर ४०९६ तोले जलमें काढा करे जब जल चतुर्थांश रहे तब उतारके छान लेवे, फिर काढेसे चौगुना दूध तथा चतुर्थांश घी डालके औटावे जब अवलेहके समान गाढा होजावे तब मिश्री ६४ तोले डालके घोट डाले और चूल्हेसे उतारके उसी प्रकार सात दिनतक धरी रहने देवे, पश्चात् अग्नि और बलाबल विचारके रोगीको देवे तो संपूर्ण गुदाके रोगोंका नाश करे तथा बाल काले होवें, गरुडके समान तीव्र दृष्टि होय, चंद्रमाके समान देहकी कांति, घोडेके समान वेग उत्तम बल, मोरके समान शब्द, अग्निके समान दीप्ति और स्त्रियोंको प्रिय, निरोगी तथा सौ वर्षसे भी अधिक उमर हो । इसके सेवन करनेवालेको किसी प्रकारके अन्न, पान, गरमी, मैथुनकी मनाही नहीं है, यह अवलेह लेनेसे संपूर्ण रोगोंका नाश करे तथा संपूर्ण रसायनोंमें राजाधिराज है ॥

स्नुहीक्षीरलेप ।

स्नुहीक्षीरनिशालेपस्तथा गोमूत्रकल्कितः ॥ योजितो गोभवक्षीरवह्निमूलावचूर्णितम् ॥ पिबंस्तदेव तेनैव भुंजानो गुदजांकुरान् ॥

अर्थ–थूहरका दूध, हलदी, गोमूत्र इनका लेप करे, तथा गौके दूधके साथ चित्रकादि चूर्ण भक्षण करे, इसपर पथ्य दूधभात भोजन करे तो बवासीर नष्ट होवे ॥

कोकंबादिचूर्ण ।

समूलपत्रकोकंबं पलद्वयमितं शुभम् ॥ भल्लातफलमज्जाया मरिचस्य पलं पलम् ॥ एतच्चूर्णीकृतं सूक्ष्मं भक्षयेत्कर्षसंमितम् ॥ अर्शांकुरान्निहंत्याशु सबाह्याभ्यंतरानपि ॥

अर्थ–कोकंबका पंचांग अर्थात् मूल, पत्र, फल, जड, छालसहित वृक्ष ८० मासे मिलायके फलकी मींगी ४० मासे और काली मिरच ४० मासे इनका चूर्ण एक कर्ष प्रमाण अर्थात् १० मासे खाय तो बाहरके तथा भीतरके मस्से नष्ट होवें ॥

समशर्करयोग ।

शुंठीकणामरिचनागदलत्वगेलं चूर्णीकृतं क्रमविवर्धितमूर्ध्वगं स्यात् ॥ खादेदिदं समसितं गुदजाग्निमांद्यगुल्मोदरश्वयथुपांडुगुदोद्भवेषु ॥

अर्थ–सोंठ घाडकी ६ भाग, पीपल ५ भाग, काली मिरच ४ भाग, पान ३ भाग, दालचीनी २ भाग और इलायची इनका चूर्ण करे और चूर्णके समान

मिश्री मिलावे इनके सेवन करनेसे बवासीर, मंदाग्नि, गोला, उदर, सूजन, पांडुरोग और गुदांकुर (मस्से) इनका नाश होय ॥

व्योषादिचूर्ण ।

व्योषाब्धरुष्करविडंगतिलाभयानां चूर्णं गुडेन सहितं सततं प्रयोज्यम् ॥ दुर्नामशोफगरकुष्ठशकृद्विबंधमग्रेर्जयत्यबलतां कृमिपांडुतां च ॥

अर्थ—सोंठ, मिरच, पीपल, भिलावे, वायविडंग, तिल और हरड इनका चूण गुडके साथ भक्षण करे तो बवासीर, सूजन, विष, कोढ, विड्बंध (मलका न उतरना), मंदाग्नि, कृमि और पांडुरोग इनका नाश होय ॥

करंजादिचूर्ण ।

करंजशुंठींद्रयवारलूतासिंधूत्थवह्निप्रतिमिश्रितानाम् ॥
तक्रेण चूर्णं पिबतोऽस्य नित्यं अर्शांसि रक्तेन पतंति सार्धम् ॥

अर्थ—कंजा, सोंठ, इन्द्रजव, अरलू, सैंधानिमक और चीता इनका चूर्ण एकत्र करके छाँछके साथ पीवे तो बवासीर और खूनी बवासीर ये गलकर गिर पडें ॥

विजयाचूर्ण ।

त्रिकत्रयवचाहिंगुपाठाक्षारौ निशाद्वयम् ॥ चव्यातिक्ताकलिंगानि शताह्वा लवणानि च ॥ ग्रंथिबिल्वाजमोदा च गणोऽष्टाविंशतिर्मतः ॥ एतानि समभागानि सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत् ॥ चूर्णं बिडालपदकं पिबेदुष्णेन वारिणा ॥ एरंडतैलसंयुक्तं लिह्याच्चूर्णमिदं नरः ॥ हन्यादर्शांसि सर्वाणि श्वासशोषभगंदरान् ॥ हृच्छूलं पार्श्वशूलं च वातगुल्मं तथोदरम् ॥ हिक्कां श्वासं प्रमेहं च पांडुरोगं सकामलम् ॥ आमवातमुदावर्तमंत्रवृद्धिं गुदकृमीन् ॥ हन्याच्च ग्रहणीरोगान्भिषग्भिर्यः प्रकीर्तितः ॥ विजयानामचूर्णोऽयं सर्वव्याधिहरः परः ॥ महाज्वरोपसृष्टानां भूतोपहतचेतसाम् ॥ अप्रजानां च नारीणां हितमेतद्धि भेषजम् ॥ ॥

अर्थ—त्रिफला (हरड, बहेडा, आंवला), त्रिकटु (सोंठ, मिरच, पीपल), त्रिजातक (इलायची, पत्रज, नागकेशर), वच, हींग, सज्जीखार, जवाखार,

हलदी, दारुहल्दी, चव्य, कुटकी, इन्द्रजव, शतावर, पांचों निमक, पीपरामूल, बेलगिरी और अजमोद ये अट्ठाईस औषध समान भाग लेवे सबका बारीक चूर्ण कर दश मासे गरम जलके साथ पीवे अथवा अंडीके तेलसे पीवे तो सर्व प्रकारकी बवासीर, श्वास, शोष, भगंदर, हृदयका शूल, पँसवाडोंका शूल, वातगोला, उदररोग, हिचकी, प्रमेह, पांडुरोग, कामला, आमवात, उदावर्त्त, अंत्रवृद्धि, बवासीर, कृमिरोग और संग्रहणी इनका नाश करे। यह (विजयाचूर्ण) सर्व व्याधिनाशक है तथा महाज्वर, भूतबाधा, तथा वंध्या स्त्रियोंको यह हितकारी है॥

देवदाल्यादियोग।

देवदालीकषायेण शौचमाचरतां नृणाम्॥
किंवा तद्धूमसेवाभिः कुतः स्युर्गुदजांकुराः॥

अर्थ-देवदाली (वंदाल) के काढेसे गुदा प्रक्षालन (धोने) से अथवा वंदालका हिम करके पीनेसे कदाचित् बवासीरके मस्से नहीं होवें, यह वैद्यरहस्य ग्रंथमें लिखा है॥

मरिचादिमोदक।

मरिचमहौषधचित्रकसूरणभागा यथोत्तरं द्विगुणाः॥
सर्वसमो गुडभागः सेव्यो वै मोदकः प्रसिद्धफलः॥

अर्थ-काली मिरच, सोंठ, चीतेकी छाल और जमीकंद ये प्रत्येक एकसे दूसरा दूना लेवे और सब चूर्णके समान गुड मिलाके गोली बांधे। यह बवासीर पर प्रसिद्ध गुणकारी है॥

प्राणप्रदमोदक।

तालीसज्वलनोषणा सचविकास्तुल्यं द्विभागा भवेत्कृष्णामूलसमन्विता त्रिपलिका शुंठी चतुर्जातकम्॥ स्यान्मुष्टिप्रमितं गुडात्त्रिगुणितैरेभिः कृतो मोदकः कासश्वासमदाग्निमांद्यगुदजप्लीहप्रमेहापहः॥

अर्थ-तालीसपत्र, चीतेकी छाल, काली मिरच, चव्य ये समान भाग लेवे, पीपल दो भाग और पीपलमूल तथा सोंठ ये बारह तोले, दालचीनी, तमालपत्र, इलायची और नागकेशर ये चार २ तोले लेवे तथा सबसे तिगुना गुड डालके लड्डू बनावे। यह खाँसी, श्वास, मंदाग्नि, बवासीर, प्लीह और प्रमेह इनको नाश करे॥

कांकायनीवटी ।

पथ्यापलस्य पलपंचकमेवमेकमेकं पलं च मरिचादपि जीरकस्य ॥ कृष्णा तदुद्भवजटा चविकाग्निशुंठी कृष्णादि पंचकमिदं पलतः प्रवृद्धम् ॥ पलाष्टभल्लातकसंप्रयुक्तं दारूकरुष्करपला द्विगुणं प्रकल्प्याः ॥ स्याद्यावशूककुडवार्द्धमतः समस्तो योज्यो गुडद्विगुणितो वटकीकृतश्च ॥ कांकायनेन मुनिना वटकः किलायमुक्तः प्रजाहिततमेन गुदामयघ्नः ॥ क्षाराग्निशस्त्रपतनैरपि ये न सिद्धाः सिद्ध्यंत्यनेन वटकेन गुदामयास्ते ॥

अर्थ–हरडकी छाल २० तोले, काली मिरच, जीरा, पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ ये प्रत्येक चार तोले लेवे और भिलावे ३२ तोले, तेलिया देवदारु ६४ तोले, तथा जवाखार ८ तोले इन सबका दूना गुड मिलायके गोली बनावे । यह कांकायनऋषिने कही गोली गुदा रोगोंकी नाशक है तथा जो बवासीर, क्षार, अग्नि और शस्त्र इनसे अच्छी नहीं हो वह इस कांकायनगोलीसे अच्छी होवे ॥

सूरणमोदक ।

चित्रकस्य पलं त्वेकं द्विपलं सूरणस्य च ॥ पलार्धं नागरस्यापि मरिचं कोलमात्रकम् ॥ भल्लातककणामूलं विडंगं त्रिफला कणा ॥ तालीससहितान्सर्वानक्षमात्रान्प्रयोजयेत् ॥ द्वे पले वृद्धदारस्य तालमूलं पलं भवेत् ॥ त्वगेला मरिचांशे च सर्वानेकत्र मर्दयेत् ॥ गुडेन मर्दयित्वा तु द्विगुणेनेह बुद्धिमान् ॥ मोदकः सूरणो नाम अक्षमात्रप्रमाणतः ॥ उपयुक्तो निहंत्याशु गुदकीलान्न संशयः ॥ अग्निवृद्धिकरः पुंसां सेव्यमानो महागुणः ॥

अर्थ–चीतेकी छाल ४ तोले, जमीकंद ८ तोले, सोंठ २ तोले, काली मिरच ८ मासे और भिलावे, पीपलमूल, वायविडंग, त्रिफला, पीपर और पत्रज ये प्रत्येक एक २ तोला लेवे तथा विधायरा ८ तोले, मूसली १ तोला, दालचीनी और इलायची ये प्रत्येक ८ मासे इन सबका एकत्र चूर्ण करे तथा सब चूर्णसे दूना गुड डाल सबको एक जीवकर लड्डू बनावे । यह (सूरणमोदक) १ तोला देनेसे तत्काल बवासीरका नाश करे तथा नित्य प्रतिसेवन करनेसे अग्निकी वृद्धि करे है ॥

लघुसूरणमोदक।

कणामरिचविश्वाग्निसूरणैस्तु गुडैः क्रमात् ॥
द्विगुणैर्मोदकोऽर्शोघ्नः परः पाचनदीपनः ॥

अर्थ–पीपर, काली मिरच, सोंठ, चीतेकी छाल और जमीकंद ये समान भाग लेय तथा सब औषधोंसे दूना गुड लेवे सबको मिलायके मोदक बनावे। यह बवासीरनाशक और दीपन तथा पाचन है ॥

अर्शकुठाररस।

संमर्द्य प्रतिसारितौ बहुरसो ताभ्यां च गंधं समं लांगल्या सितसूरणेन च पृथक्कृत्वा च तावत्पचेत् ॥ गोलं ज्वालमुपैति भांडनिहितं चुल्ल्यां मथस्त्वौषधं तस्यादर्शकुठारकः सपवनार्शःपूर्वको व्याधिषु ॥

अर्थ–पारा और लोह ये दोनों बराबर लेवे, दोनोंकी बराबर गंधक लेवे, फिर कलियारी और सपेद जमीकंदके रसमें खरल कर गोला बनाय उत्तम पात्रमें धरे, ऊपरसे संपुट बनाय नीचे अग्नि जलावे, जब गंधक जारण होजावे तब उतार औषधीको निकासलेवे। यह (अर्शकुठाररस) खूनी बादी बवासीर आदिके रोगोंको नष्ट करे ॥

अभ्रकहरीतकी।

मृताभ्रकपलं विंशं मृतलोहस्य पंचकम् ॥ गंधकस्य पलं पंच त्रिभिर्द्विगुणमाक्षिकम् ॥ पथ्याशतपलं योज्यं धात्रीपलशतद्वयम् ॥ सर्वमेकत्र संचूर्ण्य जंबीरैर्भावयेद्दिनम् ॥ भृंगीपुनर्नवाद्रावैः पातालगरुडाकुलैः ॥ भल्लातवह्निकोरंटैर्हस्तशुंडी तु लांगली ॥ क्षीरिणी जलकुंभी च प्रत्येकं प्रत्यहं द्रवैः ॥ भावयेन्मर्दयेदित्थं मध्वाज्याभ्यां विलोडयेत् ॥ स्निग्धभांडे स्थितं खादेन्नित्यं निष्कद्वयं द्वयम् ॥ सिद्धसावरयोगोऽयं त्रिदोषार्शांसि नाशयेत् ॥

अर्थ–अभ्रकभस्म ४०० तोले, गंधक २० तोले, लोहकी भस्म २० तोले, तथा सुवर्ण माक्षिक इन तीनोंसे दूना लेवे एवं हरड ४०० तोले, आंवले ८०० तोले इन सब पदार्थोंको एकत्र करके चूर्ण करे, फिर नींबूके रसमें एक दिन घोटे

तथा भांगरा, पुनर्नवा (साँठ), पातालगरुडी, भिलावे, चित्रक, पियावासा, हथ-मुंडी, कलियारी, क्षीरकाकोली और जलकुंभी इन प्रत्येकके रसकी एक एक दिन भावना देकर खरल करे, जब तैयार होजावे तब शहत और घीमें मिलाय घीके चिकने पात्रमें धर देवे । इसमेंसे १ तोला नित्य खाय यह सिद्धसावर योग त्रिदोषजन्य बवासीरका नाश करे ॥

बवासीरका मंत्र ।

ॐ भिभित्तिद्विः ॐठः निवासिनि गरलं विषं त्वजीर्णसंभवं नानाशँ नाशय २ ठंठंठं फट् स्वाहा । विधिः सप्तवाराभिमंत्रितं पानीयं पिबेत् ॥ अस्य श्रीअर्शोमूलमंत्रस्य वासिष्ठ ऋषिः रुद्रो देवता विराट्छंदः अमुकस्य अर्शोरोगपरिहारार्थं जपे विनियोगः ॥

अर्थ—ऊपर लिखे मंत्रसे ज़लको कुशाओंसे सात वार अभिमंत्रित करके पीवे तो बवासीर नष्ट होवे ॥

दूसरा मंत्र ।

ॐ काली काली महाकाली मातरो बहुभिर्गच्छ यत्किंचिद्विहितं तत् कुरु २ । य इमामर्शोघ्नीं श्रेष्ठां विद्यामधीते न तस्य कुलेऽ-र्शवान् भवति । यो दीयमानं न गृह्णाति स अंधो भवति यदि न सिद्ध्यति तदा रुद्रो ब्रह्महा भवति गुरुद्वारा सिद्धिः । अर्शरोग-निवृत्त्यर्थं सप्तवाराभिमंत्रितं जलं नित्यं प्रातःकाले पिबेत् ॥

अर्थ—इस मंत्रसे सात वार जलको अभिमंत्रित करके नित्य प्रातःकाल पीवे ॥

सूरणपुटपाक ।

मृल्लिप्तं सूरणं कंदं पक्त्वाग्नौ पुटपाकवत् ॥
अद्यात्सतैललवणं दुर्नामविनिवृत्तये ॥

अर्थ—जमीकंदपर कपडमिट्टी कर पुटपाककी विधिसे पक्व करे, तथा उसको तेल और निमक डालके खाय तो बवासीर दूर होवे ॥

काशीसादितैल ।

काशीसं लांगली कुष्ठं शुंठी कृष्णा च सैंधवम् ॥ मनःशिलाश्च मरिचं विडंगं चित्रको वृषः ॥ दंती कोशातकीबीजहेमाह्वाहरितारकः ॥

कल्कैः कर्षमितैरेतैस्तैलप्रस्थं विपाचयेत् ॥ सुधार्कपयसा दद्यात्पृथग्द्विपलसंमिते ॥ चतुर्गुणं गवां मूत्रं दत्त्वा सम्यक्प्रसाधयेत् ॥ कथितं खरनादेन तैलमर्शोविनाशनम् ॥ क्षारवत्पातयेदेतदर्शांस्यभ्यंगतो भृशम् ॥ वलिर्न दूषयत्येतत्क्षारकर्मकरं स्मृतम् ॥

अर्थ-कसीस, कलयारी, कूठ, सोंठ, पीपल, सैंधानिमक, मैनासिल, कनेर, बायाविडंग, चित्रक, अडूसा, दंती, कडुई तोरईके बीज, चोक और हरताल ये पंद्रह औषध एक एक कर्ष लेवे सबका कल्क करके तिलके तेल १ प्रस्थमें मिलाय देवे, तथा थूहरका दुध और आकका दूध इन दोनोंको आठ २ तोले लेकर डाले, तथा तेलसे चौगुना गौका मूत्र उसमें मिलावे, फिर उसको चूल्हेपर चढायके औटावे, जब तेल मात्र शेष रहे तब उतारके उस तेलको महीन वस्त्रमें छान लेवे यह तेल खरनाद ऋषिने कहा है। यह बवासीरके मस्सोंको सुमंगल खार आदिके लगानेसे जैसे दूर करे उसी प्रकार यह तेल मस्सोंको उखाड डाले है, इसके लगानेसे गुदाके आटें क्षारके लगाने समान नहीं बिगडते, न कोई उपद्रव हो, मस्से उखडकर स्वयं गिर पडते हैं॥

खूनी बवासीरका सामान्य यत्न।

रक्तार्शसामुपेक्षेत रक्तमादौ स्रवेद्भिषक् ॥
दुष्टास्रे निगृहीते स्युः शूलानाहासृगामयाः ॥

अर्थ-खूनी बवासीरके प्रथम रुधिरको बंद न करे क्योंकि उस दूषित रुधिरके रोकनेसे शूलरोग, अफरा और खूनकी बीमारी होती है॥

चंदनादिदार्व्यादिक्काथ।

चंदनकिराततिक्तकधन्वयवासाः सनागराः क्वथिताः ॥
रक्तार्शसां प्रशमना दार्वीत्वगुशीरनिंबाश्च ॥

अर्थ-चंदन लाल, चिरायता, कुटकी, धमासा और सोंठ इनका काढा करके पीवे तो खूनी बवासीर दूर होय, उस प्रकार दारुहलदी, खस और नींबका काढा गुण करे है॥

प्रयोगांतर ।

सपद्मकेशरं क्षौद्रं नवनीतं नवं लिहन् ॥
सिताकेशरसंयुक्तं रक्तार्शी स सुखी भवेत् ॥

अर्थ—कमलकी केशर, शहत, मक्खन, मिश्री और नागकेशर इनको मिलायके सेवन करे तो खूनी बवासीरवाला सुखी होय ॥

महानिंबबीजप्रयोग ।

महानिंबस्य बीजानि षडष्टदशसंख्यया ॥
चूर्णितं सितया सार्द्धं पिबेद्रक्तार्शसां हितम् ॥

अर्थ—बकायनके छः, आठ, अथवा दश बीजोंका चूर्ण करके उसमें मिश्री मिलायके पीवे तो खूनी बवासीर दूर हो ॥

पेया ।

केशरोत्पलचांगेरीसंसिद्धा या च जायते ॥
अर्शोरक्तस्रुतिं सा च लाजपेया निवारयेत् ॥

अर्थ—केशर, कमलगट्टा, चूका इनके साथ खालकी पया सिद्ध करके पीवे तो यह लाजपेया खूनी बवासीरको निवारण करे ॥

लाजापेया ।

लाजापेया पीता चुक्रिकाकेशरोत्पलैः सिद्धा ॥
हंत्याशु रक्तरोगं तथा बलापृष्ठपर्णीभ्याम् ॥

अर्थ—चूका, नागकेशर, कमलगट्टा इनको मिलायके खीलोंकी पेया पीवे तो बवासीरके खूनको बंद करे तथा खिरेटी और सालपर्णी, पृष्ठपर्णीकी पेया भी खूनको बंद करे ॥

तद्व्योषरजोयुक्तं नवनीतप्रलेपनम् ॥

अर्थ—मक्खनमें त्रिकुटेका चूर्ण मिलाके लेप करे तो बवासीरके खूनको बंद करे ॥

अपामार्गबीजयोग ।

अपामार्गस्य बीजानां कल्कस्तंदुलवारिणा ॥
पीतो रक्तार्शसां नाशं कुरुते नात्र संशयः ॥

अर्थ—ओंगाके बीजोंका कल्क करके चावलोंके धोवनके साथ पीवे तो रक्तार्श अर्थात् खूनी बवासीरको नाश करे ॥

कुशमूलादिपान ।

कुशमूलं बलायुक्तं पानं तंदुलधावनम् ॥
रुणद्धि गुदजस्रावं प्रदरं चाशु सर्वजम् ॥

अर्थ–कुशकी जड, खिरेटी इनको पीस चावलोंके धोवनके साथ पीवे तो गुदासे रुधिरके स्रावको बंद करे, तथा सन्निपातजन्य प्रदरको नष्ट करे ॥

कुटजघृत ।

कुटजफलत्वक्केशरनीलोत्पललोध्रधातकीकल्कैः ॥
सिद्धं घृतं विधेयं शूले रक्तार्शसां भिषजा ॥

अर्थ–कूडेके फलकी छाल, नागकेशर, नीला कमल, लोध और धायके फूल इनको जलमें पीसके कल्क करे, इसको घृतमें मिलायके सिद्ध करे तो यह घी वैद्योंने खूनी बवासीरपर उत्तम कहा है ॥

कुटजादिदुग्ध ।

कुटजमूलसकेशरमुत्पलं खदिरधातकिमूलशृतं पयः ॥
पिबत मृंक्षणयोगमसृग्दरं गुदजनाशनकारिरयं विधिः ॥

अर्थ–कूडेकी जड, नागकेशर, नीला कमल, खैरसार, धायकी जड इनको दूधमें डालके औटावे, फिर शीतल करके इसको पीवे तो असृग्दर (रक्तप्रदर) और बवासीर इनको नाश करे ॥

अर्शोरिमंडूर ।

अतिरक्तं यदा त्वर्शो निपातयति पीडितम् ॥ दृश्यते तच्छरीरस्य लोहकिट्टं तदानयेत् ॥ गवां मूत्रेण तत्पक्वं बहुशश्चूर्णवत्कृतम् ॥ अतिसूक्ष्मामिदं तस्य त्रिकटुत्रिफलायुतम् ॥ किट्टस्यार्द्धेन संमिश्र्य चूर्णं शर्करया युतम् ॥ दीयते त्रिदिनादूर्ध्वं रक्तं तिष्ठति नान्यथा ॥ दुग्धाच्छालिमसूरादि दीयते पथ्यभोजनम् ॥ अर्शांसि प्रशमं यांति कार्श्यं वै याति दूरतः ॥ अत्यंतबलमाप्नोति निरातंको यथेच्छया ॥ महोत्साहयुतो भूत्वा यावज्जीवेन्निरामयः ॥ उष्णाम्लं वर्जयेन्नित्यं स्त्रीणां सेवां विशेषतः ॥

अर्थ-यदि बवासीरमेंसे अत्यंत खून बहता होय और उस प्राणीको अत्यंत पीडा होय तो प्राचीन लोहेकी कीट लावे, उसको गौके मूत्रमें अनेक वार पका कर २ के बुझावे, कि जिससे चूर्णसा होजावे फिर इस कीटमें आधी मिश्री मिलावे तीन दिन धरी रहने देवे, पश्चात् रोगीको देवे तो यह गुदासे बहते हुए रुधिरको बंद कर देवे इसमें संदेह नहीं है। इसके सेवन करनेवालेको दूधके साथ शाली चावल और मसूरकी पथ्य देवे इससे बवासीर दूर हो और कृशता नष्ट होय, अत्यंत बलकी प्राप्ति होवे, निरातंक यथेच्छापूर्वक महोत्साही होकर जबतक जीवे तबतक रोगरहित होवे। इसका खानेवाला गरम पदार्थ और खटाई न खाय तथा स्त्रीगमन करनाभी निषेध है॥

कुटजादिकल्क।

कुटजत्वक्फलं तार्क्ष्यमाक्षिकं घुणवल्लभम्॥
पिबेत्तंडुलतोयेन कल्कितं वा मयूरकम्॥

अर्थ-कूडेकी छाल, इन्द्रजब, रसोत, शहत और अतीस इनको चावलके धोवनमें पीसके पीवे, अथवा ओंगाका कल्क करके चावलके धोवनसे पीवे॥

यवानीचूर्ण।

यवानीन्द्रयवं पाठा बिल्वं शुंठी रसांजनम्॥
चूर्णं शूले हितं पेयं प्रवृद्धे चातिशोणिते॥

अर्थ-अजमायन, इन्द्रजौ, पाठ, बेलगिरी, सोंठ और रसोत इनके चूर्णको शूल दूर करनेको तथा गुदाद्वारा अधिक रुधिर जाता होय तो पीवे॥

शिरीषादिकल्क।

शिरीषं पुष्पमूलं च शाल्मलेस्तिनिशस्य च॥ निर्यासस्तु पलाशस्य बदर्याः कुंकुमस्तथा॥ लोध्रं शालस्य निर्यासः कट्वंगस्तंदुलीयकः॥ मधुकार्जुनपुष्पाणि धातकीरोध्रयोरपि॥ शोभांजनं शंखनाभिं कंगुकाः पीतिकास्तथा॥ एषां कल्कं मधुयुतं पाययेत्तंडुलांबुना॥ अर्शांसि गमयत्येष रक्तपित्तात्मकानि च॥ रक्तपित्तमतीसारं रक्तार्शांसि च नाशयेत्॥

अर्थ-शिरसके फूल और जड, सेमर, तिनिसवृक्ष इनकी जड और फूल, ढाकका गोंद, बेर, केशर, लोध, राल, टेंटू, चौलाई, महुआ, कोहवृक्षके फूल,

धायके फूल, लोधके फूल, सहँजना, शंखकी नाभी, कंगु, मीठी तोरई इन सबको पीसके शहत मिलायके चावलके धोवनसे पीवे तो रक्तपित्तात्मक बवासीरको नाश करे, तथा रक्तपित्त, अतीसार और खूनी बवासीर इनको नाश करे ॥

उपायांतर।

मातुलुंगं विडंगं च शर्करासंयुतं पिबेत् ॥
कूष्मांडकावलेहं च रक्तजार्शोविनाशनम् ॥

अर्थ-बिजोरा, वायाविडंग इनको घोटकर मिश्री मिलायके पीवे, अथवा कूष्मांडावलेहको पीवे तो खूनी बवासीरको नष्ट करे ॥

निंबबीजादियोग ।

निंबबीजस्य मज्जा च शाणमाना जलेन तु ॥ संपिष्य गालितं पीतं चुल्लीमृत्स्नासमन्वितम् ॥ रक्तार्शोनाशनं श्रेष्ठमनुभूतं पुनः पुनः॥

अर्थ-निंबोरीके भीतरकी मज्जाको चार मासे ले पीसके जलमें छानके इसमें चूल्हेकी मिट्टी मिलायके पीवे तो खूनी बवासीरको दूर करे। यह प्रयोग वारंवार अनुभव करा हुआ है ॥

रसांजनादिवटी ।

रसांजनं महानिंबफलं शक्रयवं तथा ॥ मरिचं कुटजत्वक्च तथा लघ्वी हरीतकी ॥ समभागानि सर्वाणि सूक्ष्मचूर्णीकृतानि ॥ रसे कुक्कुरभृंगाख्ये मर्दयेत्तु दिनत्रयम् ॥ माषमात्रा वटी कार्या तां वटीं भक्षयेत्प्रगे ॥रक्तार्शसां नाशिनी स्यात्पथ्याशी यदि वै नरः॥

अथ-रसोत, बकायनके फल, इन्द्रजव, कालीमिरच, कूडेकी छाल, छोटा हरड ये सब समान भाग लेवे, सबका चूर्ण करके कुकरभांगरेके रसमें तीन दिन खरल करके फिर एक मासेकी गोली बनावे इसको प्रातःकाल भक्षण करे, यह रुधिरकी बवासीरको नष्ट करे, इसपर पथ्यसे रहे ॥

मरिचादिवटी ।

मरिचं खदिरं सारं गैरिकं तार्क्ष्यजं तथा ॥ समभागानि सर्वाणि सूक्ष्मचूर्णीकृतानि च ॥ कुक्कुरमर्दकरसैस्त्रिदिनं मर्दयेद्दृढम् ॥ त्रिमाषिका वटी कार्या रक्तजार्शोविनाशनम् ॥

अर्थ–मिरच, खैरसार, गेरू, रसोत ये समान भाग लेवे, सबका बारीक चूर्ण करके कुकरभांगरेके रसमें तीन दिन खरल करके तीन २ मासेकी गोली बनावे। यह खूनी बवासीरको दूर करे ॥

सूरणशोधन ।

सूरणं चक्रवत्कृत्वा सकलानि सुधीर्भिषक्॥ निंबूरसेन स्फटकीचूर्णेनालिप्य चातपे ॥ स्थापयेद्दिनमेकं तु तदा खादेद्यथासुखम्॥

अर्थ–जमीकंदके गोल २ कतरे कतरके उनपर नींबूके रसमें फिटकरीको पीसके लेप करके धूपमें धर देवे, इस प्रकार एक दिन रक्खे फिर यथासुख भक्षण करे तो यह मुखमें खुजली आदि उपद्रव नहीं करे। प्रसंगवश जमीकंदकी चटनी कहते हैं। कच्चा जमीकंद, अदरख समान भाग ले दोनोंको नींबूके रसमें पीस अनुमानका निमक मिलायके काममें लावे ॥

पूतिकं मुसली पथ्या भूनिंबा सितवत्सकम् ॥ मसूराग्निकासिंधूत्थदेवदालीसुचूर्णितम् ॥ तक्रेण पिबतस्तस्य तक्रं चैव समश्नतः ॥ मासात्पक्वफलानीव पतंत्यर्शांसि वेगतः ॥

अर्थ–लताकरंज, मूसली, हरड, चिरायता, कूडेकी छाल, मसूर, चित्रक, सैंधानिमक, देवदाली इन सबको पीस छाँछके साथ पीवे और छाँछका ही भोजन करे तो एक महीनेमें पके फलके समान बवासीरके मस्से वेगसे उखड़कर गिरजावें ॥

किंवा मरिचसंयुक्तं भक्षयेद्विषमुष्टिकम्॥ चतुर्थांशक्रमादेव वर्द्धयेच्च यथाक्रमम् ॥ यथासात्म्यं यथादेहं किंवा यावद्द्वयं भवेत् ॥ भक्षयित्वा च मरिचं वर्द्धयेच्च चतुर्गुणम् ॥ ध्रुवं मासद्वयादूर्द्ध्वं प्रपतंति गुदांकुराः॥

अर्थ–अथवा मिरचके चूर्णके साथ कुचलेका सेवन करे और चौथाई २ के क्रमसे बढावे तथा उस प्राणीकी सात्म्य देहकी व्यवस्था विचारके २ दोपर्यंत ऊपरसे मिरचोंका चूर्ण खाया करे, इस प्रकार चतुर्गुणपर्यंत बढावे इस क्रमसे २ महीनेमें अवश्य गुदाके मस्से गिरजावें ॥

बस्तौ वा नाभिदेशे वा यदा शूलः प्रजायते ॥
तदा लेपाः प्रशस्यंते फलवर्तिश्च शस्यते ॥

अर्थ–बस्ती (मूत्राशय) नाभि इनमें यदि शूल होय तो उसपर शूलनाशक लेप और फलवर्ती करनी चाहिये ॥

करंजादिचूर्ण ।

चिरबिल्वाग्निसिंधूत्थनागरेन्द्रयवारलून् ॥
तक्रेण पिबतोऽर्शांसि निपतंत्यसृजा सह ॥

अर्थ–कंजा, चित्रक, सैंधानिमक, सोंठ, इन्द्रजौ, टेंटू इनको पीसके छाँछके साथ पीवे तो रुधिरयुक्त बवासीरके मस्से टूटकर गिरजावें ॥

कुसुंभपत्रभक्षण ।

कुसुंभमृदुपत्राणि काञ्जिकेनैव पाचयेत् ॥
शाकवद्भक्षयेन्नित्यमर्शोरोगप्रशांतये ॥

अर्थ–कसूमके कोमल पत्रोंको कांजीके साथ पचायके शाकके समान नित्य भक्षण करे तो अर्शरोगकी शांति होय ॥

पथ्यादिचूर्ण ।

पथ्यानागरकृष्णाकरंजवेल्लाग्निभिः सिता तुल्यैः ॥
वडवामुख इव जनयति बहु गुर्वपि भोजनं चूर्णम् ॥

अर्थ–हरड, सोंठ, पीपल, कंजा, काली मिरच, चित्रक ये बराबर ले और सबकी बराबर मिश्री मिलायके सेवन करे तो यह बहुत भोजन करनेपरभी वडवाग्निके समान जठराग्निको बढावे ॥

चतुःसममोदक ।

सनागरारुष्करवृद्धदारुकं गुडेन यो मोदकमत्युदारकम् ॥
अशेषदुर्नामकरोगदारकं करोति वृद्धं सहसैव जाठरम् ॥

अर्थ–सोंठ, भिलावे, विधायरा इनको गुडके साथ मोदक बनाय लेवे, यह अशेष अर्थात् संपूर्ण बवासीरोंको नष्ट करे तथा तत्काल जठराग्निको बढावे ॥

हरिशंकरलोहम् ।

प्रणम्य शंकरं रुद्र दंडपाणिं महेश्वरम् ॥ जीवितारोग्यमन्विच्छन्ना-रदोऽपृच्छदीश्वरम् ॥ सुखोपायेन हे नाथ शस्त्रक्षाराग्निभिर्विना ॥ चिकित्सामर्शसां नृणां कारुण्याद्वक्तुमर्हसि ॥ नारदस्य वचः श्रुत्वा नराणां हितकाम्यया ॥ अर्शसां नाशनं श्रेष्ठं भैषज्यं शंकरोऽवदत् ॥ पांञ्चवज्रादिलोहानामादायान्यतमं शुभम् ॥ कृत्वा निर्मलमादौ

तु कुनट्या माक्षिकेन च ॥ पत्तूरमूलकल्केन लिंपेद्रसयुतेन च ॥ वह्नौ निक्षिप्य विधिवत्सारांगारेण निर्धमेत् ॥ ज्वाला च तस्य रोद्धव्या त्रिफलाया रसेन च ॥ ततो विज्ञाय गलितं शंकुनोर्ध्व समुत्क्षिपेत् ॥ त्रिफलाया रसे पूते तदाकृष्य तु निर्वपेत् ॥ न सम्यग्गालितं यत्तु तेनैव विधिना पुनः ॥ ध्मातं निर्वापयेत्तस्मिल्लोहं तत्त्रिफलारसे ॥ यल्लोहं न मृतं तत्र पाच्यं भूयोऽपि पूर्ववत् ॥ मारणान्न मृतं यच्च तत्त्यक्तव्यमलोहवत् ॥ ततः संशोष्य विधिवच्चूर्णयेल्लोहभाजने ॥ लोहेनैव तथा वत्स दृषदा सूक्ष्मार्णितम् ॥ कृत्वा लोहमये पात्रे मृदा वा लिप्तरंध्रके ॥ रसैः पंकोपमं कृत्वा तं पचेद्गोमयाग्निना ॥ पुटानि क्रमशो दद्यात्पृथगेषां विधानतः ॥ त्रिफलार्द्रकभृंगानां केशराजस्य बुद्धिमान् ॥ माणकंदकभल्लातवह्नीनां सूरणस्य च ॥ हस्तिकर्णपलाशस्य कुलिशस्य तथैव च ॥ पुटे पुटे चूर्णयित्वा लोहात्षोडशिकं पलम् ॥ तन्मात्रत्रिफलायाश्च पलेनाधिकमाहरेत् ॥ अष्टभागावशिष्टे तु रसे तस्याः पचेद्बुधः ॥ अष्टौ पलानि दत्त्वा च सर्पिषो लोहभाजने ॥ तामेव लोहदर्व्या तु चालयेद्विधिपूर्वकम् ॥ ततः पाकविधानज्ञः स्वच्छे चोर्ध्वे च सर्पिषि ॥ मृदुमध्यादिभेदेन गृह्णीयात्पाकमाहृतः ॥ आरभेत विधानज्ञः कृतकौतुकमंगलः ॥ भ्रामरं घृतसंयुक्तं विलिह्याद्रक्तिकाक्रमात् ॥ वर्द्धमानानुपानं च गव्यक्षीरेण संयुतम् ॥ गव्याभावे त्वजायाश्च स्निग्धवृष्यादि भोजनम् ॥ सद्यो वह्निकरं चैव भस्मकं च नियच्छति ॥ हंति वातं तथा पित्तं कुष्ठानि विषमज्वरम् ॥ गुल्माक्षिपांडुरोगांश्च निद्रालस्यमरोचकम् ॥ शूलं च परिणामं च प्रमेहं चापबाहुकम् ॥ श्वयथुं रुधिरस्रावं दुर्नामानं विशेषतः ॥ बलकृद्बृंहणं चैव कांतिदं स्वरबोधनम् ॥ शरीरलाघवकरमारोग्यं पुष्टिवर्द्धनम् ॥ आयुष्यं श्रीकरं चैव यशस्तेजस्करं शुभम् ॥ सश्रीकं पुत्रजननं वलीपलितनाशनम ॥ दुर्नामारिरयं नाम्ना

हष्टो वारसहस्रशः ॥ अनेनार्शांसि दह्यंते यथा तूलं च वह्निना ॥ सौकुमार्याल्पकायत्वान्मद्यसेवी यथा नरः ॥ जीर्णमद्यादियुक्तादिभोजनैः सह दापयेत् ॥ लावतित्तिरवर्त्तीरमयूरशशकादयः ॥ चटकः कलविंकश्च वर्त्तका हरितालकः ॥ श्येनकश्च बृहल्लावो वनविष्किरकादयः ॥ पारावतमृगादीनां मांसं जांगलकं शुभम् ॥ मद्गुरो रोहितः श्रेष्ठः शकुलश्च विशेषतः ॥ मत्स्यराजा इमे प्रोक्ता हितमत्स्याय देहिने ॥ वृंताकस्य फलं शस्तं पटोलं बृहतीफलम् ॥ फलं वा भीरुवेत्राग्रतालकस्तंदुलीयकम् ॥ वास्तुकं धान्याशाकं च केमुकं चक्रवर्त्तनम् ॥ नालिकेरं च खर्जूरं डाडिमं लवलीफलम् ॥ शृंगाटकं च पक्वाम्रं द्राक्षा तालफलानि च ॥ जातीकोशं लवंगं च पूगं तांबूपत्रकम् ॥ हितान्येतानि वस्तूनि लोहमेतत्समश्नताम् ॥ नाश्नीयाल्लकुचं कोलं कर्कंधुबदराणि च ॥ जंबीरबीजपूरं च तिंतिडीं करमर्दकम् ॥ अनूपानि च मांसानि क्रकरं पुंड्रकानपि ॥ हंससारसदात्यूहशंकुकंकबलाकिकाः ॥ मानकंदकरीराणि कतकं च कलिंगकम् ॥ कूष्मांडकं च ककोंटं केमुकं च विशेषतः ॥ कटुक कालशाकं च कसेरुं कर्कटीं तथा ॥ ककारादीनि सर्वाणि विदलानि च वर्जयेत् ॥ शंकरेण समाख्यातश्चूर्णराजोऽनुकंपया ॥ जगतामुपकाराय दुर्नामारिरयं ध्रुवम् ॥ स्थानादपैति मेरुश्च पृथ्वी पयाति वायुना ॥ पतंति चंद्रताराश्च मिथ्या चेदहमब्रुवम् ॥ ब्रह्मघ्नाश्च कृतघ्नाश्च क्रूरा येऽसत्यवादिनः ॥ वर्जनीयाः सधर्मेण भिषजा गुरुनिंदकाः ॥

अर्थ—शंकर, रुद्र, दंडपाणि महेश्वरको प्रणाम कर मनुष्योंकी जीवन और आरोग्यकी कांक्षा करके श्रीनारदजी जगदीश्वर (शिव) से पूँछते हुए । हे नाथ ! शस्त्र, क्षार और अग्निकर्मके विना सुखोपाय करके अर्शरोगका यत्न मनुष्योंकी करुणा विचारके आप कहियेगा । इस प्रकार नारदके वचनको सुनके मनुष्योंकी हितकी इच्छा करके अर्शरोगकी नाश करनेवाली उत्तम औषधको श्रीशंकर कहते हुए । पांडचलोह, अथवा वज्रलोह इनमेंसे जो मिले उसको

अथवा ये न मिले तो इनके समान और कोई उत्तम लोह मिले उसको लेकर उसे तेल छाँछ आदिमें शुद्ध करे फिर मनसिल और सुवर्णमक्खी डालके और पारा मिलाय चकमके रसमें सबको घोटके उन सबका कल्क करके लोहेपर लेप करदेवे फिर पक्के कोयलोंमें इसको धमावे और इसकी जो ज्वाला निकले इसको त्रिफलेके रसके छींटे दे देकर बंद करे जब जाने कि लोहा गलगया तब लोहेके काँटेसे उसको निकालके पवित्र त्रिफलेके काढेमें बुझाय देवे । इस प्रकार करनेसे भी जो कुछ रहा सहा भाग न गला होवे उसको फिर इसी प्रकार दूसरे वार गलायके बुझाय देवे और वारंवारके गलानेसे भी जो न गले उसको दुष्टलोह जानके त्यागदेवे. फिर इसको सुखायके विधिपूर्वक लोहेके खरलमें डालके लोहेके मूसलेसे घोटे फिर उसमेंसे निकाल निकालके पत्थरपर बारीक पीसलेवे, फिर इसके बारीक चूर्णको किसी लोहके पात्रमें भर और त्रिफलेके रससे कीचसा करके ढक देवे तथा मुखके छिद्रोंको बंद करके आरने उपलोंकी अग्निमें रखके फूंक देवे फिर आगे लिखी औषधोंकी क्रमपूर्वक पुट देवे, जैसे हरड, बहेडा, आंवला, अदरख, भांगरिया, जलभांगरा (कुकुरभांगरा), मानकंद, भिलावे, चित्रक, जमीकंद, हस्तिकर्ण, पलाश, थूहर इन प्रत्येककी पृथक् २ पुट देवे और पुट २ में बराबर पीस डालाकरे तथा लोहसे सोलह भाग त्रिफला लेके उसकी पुट देवे, आठ भाग शेष रहे हुए उसके काढेमें फिर इस लोहको पचावे, फिर इस लोहकी भस्मको कडाहीमें चढायके अथवा तामेकी कडाईमें चढायके इसमें ३२ तोले घी डालके पचावे और लोहेकी कलछीसे बराबर चलाता रहे इस प्रकार पाकका जाननेवाला जब घी तैलके ऊपर आजावे तब मृदु, मध्य और खर जैसा पाक करना हो उसी प्रकारका पाक करके उतार लेवे । इस प्रकार जब यह लोहकी सिद्धि होजावे तब उत्सव और स्वस्तिवाचन, पुण्याहवाचन आदि मंगल करके शहत और घीमें मिलायके एक २ रत्तीके वृद्धिक्रमसे भक्षण करे और इसके ऊपर गौका दूध पीवे यह अनुपान है यदि गौका दूध न मिले तो बकरीका दूध पीवे और इसके ऊपर चिकना और पुष्टकारी पदार्थका भोजन करे । यह तत्काल जठराग्निको करे है तथा भस्मकरोगको दूर करे । वात, पित्त, कुष्ठ, विषम ज्वर, गोला, नेत्ररोग, पांडुरोग, निद्रा, आलस्य, अरुचि, शूल, परिणामशूल, प्रमेह, अपबाहुक, वात, सूजन, रुधिरस्राव, दुर्नाम (बवासीर आदि) को विशेष करके दूर करे । यह बल करे, बृंहण है, कांति करे, स्वरको स्वच्छ करे, शरीरको हलका करे, आरोग्य और पुष्टिको बढावे, आयुष्य करे, श्री करे तथा शुभ यश और तेज करे, कांतियुक्त पुत्रोंको प्रगट करे, वली और पलितको नाश करे है । यह दुर्नामारिलोह हजारों बार अनुभव करा हुआ है । इससे बवासीर इस प्रकार नष्ट

अग्निसे रुई भस्म होती है जो सुकुमार और अल्पकायावाले, मद्यका सेवन करनेवाले हैं उनको जीर्ण मद्यादि करके युक्त भोजनमें मिलायके देवे, लवा, तीतर, बटेर, मोर, शसा (खरगोश) आदि, चिडा, घरका चिडा, बटई, हरियल, शिकरा, बडा लवा और वनमें रहनेवाले विष्कर पक्षी (कबूतर, मृग इत्यादि), जंगल जीवोंका मांस, मछलियोंमें मद्गुर, रोहित, शकुल ये मछलियोंके राजा हैं ये मत्स्य प्राणियोंके हितकारी हैं। बैंगनका शाक, परवल, कटेरीके फल, घीया, शतावर, वेतकी कोपल, देवदाली और चौलाई, बथुआ, धनियां, कैसुक चकवात ये शाक उत्तम हैं, नारियल, खजूर, अनार, निर्मली, सिंघाडे, पके आम, दाख, तालफल, जायफल, लौंग, सुपारी, पान ये सब वस्तु इस लोह सेवन करनेवालेको परम हितकारी हैं। बडहर, बेर, बडा बेर (पेंबंदी), झरियाबेर, जंभीरी, बिजोरा, इमली, करोंदा, मानकंद, करील, कतक, तरबूज, कूष्मांड (पेठा), ककोडा, केसुक, कुटकी, कालशाक, कसेरु, ककडी इत्यादि संपूर्ण ककारादिक पदार्थ और विदल अन्न इस लोह सेवन करनेवालेको वर्जित कहे हैं। यह मनुष्योंकी कृपा विचार श्रीशंकरने चूर्णराज कहाहै यह दुर्नामारि, निश्चय कहाहै। श्रीशिवजी कहतेहैं कि स्थानसे सुमेरु पर्वत हटजावे, वायुके वेगसे पृथ्वी लौटजावे और चंद्र तारागण आकाशसे गिरपडें यदि मैं असत्य कहताहूं तो। जो ब्रह्महत्यारे, कृतघ्नी, क्रूर और असत्यवादी इत्यादि दुष्ट मनुष्योंको वैद्य इस लोहको न देवे, तथा जो गुरुनिंदक हैं उनकोभी न देवे ॥

लोहविकारकी शांति।

मुनिरसपिष्टविडंगं मुनिरसलीढं चिरास्थितं घर्मे ॥
द्रावयति लोहदोषान् वह्निर्नवनीतपिंडमिव ॥

अर्थ—अगस्तियाके रसमें वायविडंगको पीसके अगस्तियाके रसके साथ पीवे और थोडी देर धूपमें बैठ जावे तो उस प्राणीके दोष इस प्रकार बहजावें जैसे मक्खनके पिंडको अग्नि बहाय देतीहै ॥

लोहपरिपाकके लक्षण।

काले मलप्रवृत्तिर्लाघवमुदरे विशुद्धिरुद्गारे ॥
अंगेषु नावसादो मनःप्रसादोऽस्य परिपाके ॥

अर्थ—यथासमय अर्थात् वख्तपर मलका उतरना, पेटमें हलकापना, शुद्ध डकारका आना, अंगोंमें किसी प्रकारकी तकलीफ न हो, और मनःप्रसन्नता ये लोहपरिपाकके लक्षण हैं ॥

लोहजीर्णका यत्न ।

क्रिमिरिपुचूर्णं लीढं सहितं स्वरसेन वंगसेनस्य ॥
क्षपयत्याचिरान्नियतं लोहाजीर्णोद्भवं शूलम् ॥

अर्थ—वायविडंगके चूर्णको अगस्तियाके स्वरसमें मिलायके पीवे तो निश्च लोहाजीर्णसे उत्पन्न हुई शूलको तत्काल नष्ट करे ॥

कीटकी शांति ।

कुर्यात्कनकबीजेन रेचनं किट्टशांतये ॥

अर्थ—धतूरेके बीजोंसे अथवा पिसोलाके बीजोंसे दस्त करावे तो कीटीक विकार शांत होय ॥

लोहव्यापत्का यत्न ।

जीर्णे लोहे पतति चूर्णं भुंजीत सिद्धसाराख्यम् ॥
लोहव्यापन्नश्यति विवर्द्धते जाठरो वह्निः ॥

अर्थ—लोहजीर्णमें सिद्धसाराख्य चूर्णका सेवन करे तो लोहकी व्यापत (उपाधि) नष्ट होय और जठराग्नि बढे ॥

सिद्धसारचूर्ण ।

मथ्यासैंधवशुंठीभागाधिकानां पृथक्समो भागः ॥
त्रिवृताभागो निंबूभाव्यं तत्सिद्धसाराख्यम् ॥

अर्थ—हरड, सेंधानिमक, सोंठ, पपिल इनको समान भाग ले, निसोथ दं भाग ले, फिर इसमें नींबूके रसकी भावना देवे तो सिद्धसार चूर्ण तैयार हो ॥

भवेद्यद्यतिसारस्तु दुग्धं पीत्वा तु तं जयेत् ॥
गुंजाद्वादशकादूर्ध्वं वृद्धिरस्य भयप्रदा ॥

अर्थ—यदि इस लोहके भक्षणसे अतिसार रोग होवे तो उस प्राणीको दूध पिलाकर अतिसार दूर करे । इस लोहकी भस्म १२ रत्तीके उपरांत भक्षण करन भयदायक है इससे बारह रत्तीसे आगे इसको न बढावे ॥

पारदभस्म ।

अधःपुष्पीकुक्कुटांडचूर्णं खर्परे कृत्वा मध्ये पारदं निक्षिप्य तदुपरि उक्तौषधयोश्चूर्णं क्षिप्त्वाधो मृद्वग्निं ज्वालयेच्च शनैः शनैः दर्व्या प्रचा-

लयेच्च एवं पारदश्च भस्मीभवति तच्च भस्म रक्तिकात्रयपरिमितं छिक्कणीसूर्यभक्ताचूर्णटंकद्वयपरिमितेन साकं भुंजीत तदा सप्ताहादर्शक्षयो भवतीति सत्यम् ॥

अर्थ-गोभी और मुरगेका अंडा दोनोंका चूर्ण करके एक खिपडेमें चढावे में पारा डालके इसी चूर्णसे ढकदेवे, नीचे आग जलावे मंद २ अग्नि देवे र धीरे २ कलछीसे चलाता रहे, इस प्रकार करनेसे पारेकी भस्म होजावे उस मको ३ रत्ती ले तथा नकछिकनी और हुरहुरका चूर्ण २ टंकमें मिलायके सेवन रे तो सातही दिनमें ववासीर नष्ट होवे यह प्रयोग सत्य है ॥

बवासीरके साध्यलक्षण ।

बाह्यायां तु वलौ जातान्येकदोषोल्बणानि च ॥
अर्शांसि सुखसाध्यानि न चिरोत्पतितानि च ॥

अर्थ-जिस ववासीरके मस्से गुदाके वाहरके आंटेमें हुए हों और एक दोषोल्बण होवें, तथा जिनको उत्पन्न हुए एक वर्ष न हुआहो, ऐसे मस्से सुखसाध्य अर्थात् सहजमें अच्छे होसकते हैं ॥

कृच्छ्रसाध्यलक्षण ।

द्वंद्वजानि द्वितीयायां वलौ यान्याश्रितानि च ॥
कृच्छ्रसाध्यानि तान्याहुः परिसंवत्सराणि च ॥

अर्थ-दो दोषसे प्रगट भईहो और दूसरी वली (अर्थात् दूसरे आंटेमें) होय और जिसको एक वर्ष व्यतीत होगयाहो ऐसी बवासीरके मस्से कृच्छ्रसाध्य होय हैं और जो वाहरकी वलीमें द्विदोषोल्बण होय और एक दोषोल्बण दूसरी वली (दूसरे आंटे) में होवे तो येभी कृच्छ्रसाध्य जानना ॥

असाध्यलक्षण ।

सहजानि त्रिदोषाणि यानि चाभ्यंतरावलिम् ॥
जायंतेऽर्शांसि संश्रित्य तान्यसाध्यानि निर्दिशेत् ॥

अर्थ-सहज कहिये जन्म होनेके समयसे जो होय अथवा तीन दोषोंसे प्रगट भईहो और जो तीसरा (अंतका) आंटा है उसमें भईहो सो बवासीर असाध्य जाननी ॥

याप्यलक्षण।

हस्ते पादे गुदे नाभ्यां मुखे वृषणयोस्तथा ॥
शोथो हृत्पार्श्वशूलं च तस्यासाध्योऽर्शसो हि सः ॥

अर्थ-जिसके हाथ, पैर, गुदा, नाभि, मुख और अंडकोश इनमें सूजन हो, हृदय और पँसवाडे दूखें वह रोगी असाध्य जानना ॥

अन्य असाध्यलक्षण।

हृत्पार्श्वशूलं संमोहश्छर्दिरंगस्य रुग्ज्वरः ॥
तृष्णा गुदस्य पाकश्च निहन्युर्गुदजातुरम् ॥

अर्थ-हृदय और पँसवाडेमें दर्द होय, इन्द्री और मन इनमें मोह होय, वमन और अंगोंमें पीडा, ज्वर, प्यास, गुदाका पकना (अर्थात् गुदाके ऊपर पीले फोडे) ये लक्षण होनेसे बवासीरवाला रोगी असाध्य जानना ॥

अन्य असाध्य लक्षण।

तृष्णारोचकशूलार्त्तमतिप्रस्रुतशोणितम् ॥
शोथातिसारसंयुक्तमर्शांसि क्षपयंति हि ॥

अर्थ-प्यास, अरुचि, शूल इनसे पीडित, जिसके अत्यंत रुधिर बहे और सूजन, अतिसार ये होंय उस रोगीका बवासीर नाश करदेयहै ॥

मेढ्रादिष्वपि वक्ष्यंते यथास्वं नाभिजान्यपि ॥
गंडूपदास्यरूपाणि पिच्छिलानि मृदूनि च ॥

अर्थ-मेढ् कहिये लिंग आदिशब्द करके नाक कान इत्यादि स्थानोंमें मेदकरके बवासीर होतीहै सो आगे कहेंगे। उसी प्रकार नाभिस्थानमेंभी अर्शरोग होताहै वह केचुएके मुखके समान गाढा और नरम होयहै ॥

चर्मकीलकी संप्राप्ति।

व्यानो गृहीत्वा श्लेष्माणं करोत्यर्शस्त्वचो बहिः ॥
कीलोपमं स्थिरखरं चर्मकीलं तु तद्विदुः ॥

अर्थ-व्यान वायु कफको लेकर त्वचामें कीलके सदृश स्थिर और खरदरी ऐसी बवासीरको करे उसको चर्मकीलक कहतेहैं। (त्वचो बहिः) इसके कहनेसे गुदा होठका त्याग कहा ॥

चर्मकीलमें वातादिके लक्षण।

वातेन तोदपारुष्ये पित्तादसितरक्तता ॥
श्लेष्मणा स्निग्धता चास्य ग्रंथितत्वं सवर्णता ॥

अर्थ-चर्मकील रोगम वादीसे उसमें सुइ चुभानेकीसी पीडा हो, पित्तसे उसका रंग काला और लाल होताहै, कफस चिकना और गांठदार होवे है तथा उसका वर्ण, त्वचाके वर्ण समान होवे है ॥

द्वंद्वजबवासीरके कारण।

हेतुलक्षणसंसर्गाद्विद्याद्द्वंद्वोल्वणानि च ॥

अर्थ-दो दोषोंके कारण और लक्षण मिले तो द्वंद्वज बवासीर भई है ऐसा जाने ॥

त्रिदोषकी बवसीरके कारण।

सर्वो हेतुस्त्रिदोषाणां लक्षणं सहजैः समम् ॥

अर्थ-पृथक् वातादि बवासीरके जो कारण कहे हैं वे सर्व त्रिदोषकी बवासीरके कारण हैं और जो सहज अर्शके अर्थात् सहज बवासीरके लक्षण सो इसके लक्षण जानने ॥

याप्यलक्षण।

शेषत्वादायुषस्तानि चतुष्पादसमान्विते ॥
याप्यंते दीप्तकालाग्नेः प्रत्याख्येयान्यतोऽन्यथा ॥

अर्थ-असाध्य बवासीर होवे परंतु रोगीकी आयुष्य बाकी हो और वह चतुष्पादसंपत्तियुक्त होवे अर्थात् वैद्य, औषध, परिचारक और रोगी ये जैसे होने चाहिये उसी प्रकारके होवे तथा रोगीकी अग्नि प्रदीप्त होवे तो याप्य कहिये शमन होजावे और इससे विपरीत होवे तो रोगीको असाध्य जानना ॥

असाध्यलक्षण।

दोषत्रयाणि सहजानि वलौ तथांतर्जातानि हंति गुदजानि पृथूदरस्य ॥ पादस्य हस्तगुदजाभ्युदरांडकोशशूनस्य पार्श्वहृदयव्यथितस्य पुंसः ॥ हृत्पार्श्वशूलवमनज्वरमोहतृष्णा पाको गुदेऽग्नितनुतारुचिरंगभंगः ॥ यस्यास्ति याति यमधाम गुदांकुरोऽध्यं शूनोदराक्षिकरपा-

दगुदांडकोशः ॥ तृष्णाशूलहृदिश्वासशोषातीसारपीडितम् ॥ आतेनिःसृतरक्तं च निहन्युर्गुदजा नरम् ॥

अर्थ-जो बवासीर त्रिदोषात्मक अथवा शरीरके साथही उत्पन्न हुईहो अर्थात् जन्मसेही होय तथा भीतरकी वली (आंटे) में तथा जिसका पेट बडा होगया हो और हाथ, पैर, गुदा, पेट और अंडकोश इनपर सूजन होवे तथा पार्श्व और हृदय इनमें शूल होय, वांति, ज्वर, मोह, प्यास, गुदाका पाक, मंदाग्नि, अरुचि और अंगनाश इन लक्षणों करके युक्त जो रोगी होवे वह मरजाय और जिस बवासीरमें अंधकार, तथा पेट, नेत्र, पैर, हाथ, गुदा, अंडकोश इनमें सूजन, प्यास, हृदयमें शूल, श्वास, शोष, अतिसार और जिसके अत्यंत रुधिर गिरे उसको बवासीर रोग नष्ट करे ॥

अर्शरोगपर पथ्य ।

विरेचनं लेपनरक्तमोक्षं क्षाराग्निशस्त्राचरितं च कर्म ॥ पुरातना लोहितशालयश्च सषाष्टिकाश्चापि यवाः कुलित्थाः ॥ पटोलधत्तूररसेन वह्निः पुनर्नवासूरणवास्तुकानि ॥ जीवंतिका दंतशठासुरावं शुंठीवयस्या नवनीततक्रम् ॥ कंकोलधात्री रुचकं कपित्थमौष्ट्राणि मूत्राज्यपयांसि चापि ॥ भल्लातकं सर्षपजं च तैलं गोमूत्रसौवीरतुषोदकानि ॥ गोधाखुलोमानि खरोष्ट्रलोमश्वावित्कुलिंगानथ धौतकीशाः ॥ तरक्षवासाश्च मृगालिकाका येऽत्यल्पमांसाः प्रसहाश्च तेऽपि ॥ वातापहं यच्च यदग्निकारि तदन्नपानं हितमर्शसेभ्यः ॥

अर्थ-जुलाब, चंदनादिलेप, रुधिर निकालना, क्षार और अग्निकर्म, शस्त्रकर्म, पुराने लाल चावल, साँठीचावल, जौ, कुलथी, पटोल (परवल), धतूरेका रस, लहसन, चीता, पुनर्नवा, जमीकंद, बथुआ, जीवंती (डोडी), चूका, सुराव आनंदकारी शब्द अथवा मद्य, सोंठ, हरड, मक्खन, छाँछ, कंकोल, आंवले, कालानोन, कैथ, ऊँटका मूत्र, घी, दूध, भिलावे, सरसोंका तेल, गोमूत्र, काँजी, तुषोदक, गोह और मूसेके बाल, गधा, ऊँट इनके बाल, श्वाविधपक्षी, कुलिंग, चांदी, वानर, जरख, अडूसा, मृग, भौंरा, कौआ तथा जो अल्पमांसवाले गीध, उल्लूक, शिकरा, बाज, चाष, भास, कुरर, तथा वातनाशक और अग्निकारी ऐसे अन्न और पान ये बवासीर रोगीको हितकारी हैं ॥

अर्शरोगमें अपथ्य।

अनूपमामिषं मत्स्यं पिण्याकं दधि पिष्टकम् ॥ माषान्करीरनिष्पावं तंदुला तुंब्युपोदिका ॥ पक्काम्रशालुकं सर्वविष्टंभीनि गुरूणि च ॥ आतपं जलपानानि वमनं बस्तिकर्म च ॥ विरुद्धानि च सर्वाणि मारुतं पूर्वदिग्भवम् ॥ वेगावरोधः स्त्रीपृष्ठयानमुत्कटकासनम् ॥ यथास्वं दोषलं चान्नमर्शसां परिवर्जयेत् ॥

अर्थ–अनूपदेशमें रहनेवाले जीवोंका मांस, मछली, खल, दही, पिष्टान्न, उडद, करीर,, चोरा, नवीन चावल, सपेद तुंबी, पोईका शाक, पक्के आम, कमलका कंद, संपूर्ण विष्टंभकारी पदार्थ, भारी पदार्थ, धूपमें डोलना, बहुत जल पीना, वमन, बस्तिकर्म, संपूर्ण विरुद्ध पदार्थ, पूर्व दिशाकी पवन, मलमूत्रादि वेगोंका रोकना, स्त्रीगमन, घोडे आदिकी पीठपर चढके जाना, ऊकरू बैठना, दोषोंका उत्पन्न करनेवाले अन्न और पान ये बवासीर रोगीको सेवन करना वर्जित है ॥

रक्तार्श और चर्मकीलपर।

यत्पथ्यं यदपथ्यं च वक्ष्यते रक्तपित्तिनाम् ॥ रक्तार्शोरोगिणां तत्तु देयं विद्याद्विशेषतः ॥ पानं यानं दिवास्वप्नं गुर्वन्नमतिभोजनम् ॥ व्यायामं कलहं चैव तीक्ष्णं क्षारविधिं त्यजेत् ॥ यद्युक्तमर्शसामादौ भेषजं पथ्यमेव च ॥ तदेव चर्मकीलानां कार्यं दोषादिभेदतः ॥

अर्थ–जो पथ्य अथवा अपथ्य रक्तपित्त रोगवालोंको कहे है वेही खूनी बवासीरवालेको विशेष करके देवे तथा पान, यान, दिनमें सोना, भारी अन्न अतिभोजन, कसरत, कलह और तीक्ष्ण खारका लगाना, तथा जो अर्शरोगपर पथ्य कहा है वे सब औषध चर्मकीलरोगपर दोषभेदसे देवे ॥

कुछ प्रयोग फारसीसे अकबरपातशाहके अनुभव करे हुए

यहांपर प्रसंगवश लिखदेतेहैं।

चावल और मुंगकी धोई दालकी खिचडी बिना निमकके अर्थात् अलोनी

जितनी खाई जावे खूब खाय इस प्रकार करनेसे सातवें दिन गुदापर पोस्तकेसे दाने प्रकट होवेंगे उनको खूब धोवे और निर्बलतासे डरे नहीं, फिर इसी प्रकार सात दिन पर्यंत केवल खिचडीही खाय तो परमात्माकी कृपासे खूनी बवासीर अवश्य जाती रहे ॥

बवासीरके रुधिरको रोके।

लाल सुरमा १॥ तोला, छोटी हरड ६ तोले । किसी किसीकी यह संमति है कि तीन तोले हरड लेवे । दोनोंको कूट पीस चूर्ण करे इसको १९ तोले गुडमें मिलायके झडबेरीके बराबर गोली बनावे । प्रातःकाल १ गोली घीके साथ और सायंकालको १ गोली जलके साथ सेवन करे इस प्रकार ५१ इक्कावन दिन पर्यंत सेवन करे तथा १४ दिनतक वातकारक और खटाईसे बचे गेहूंकी रोटी और प्याज खाय तथा तीन दिनके बाद १ गोलीको बंगले पानमें घिसके मस्सोंपर लगावे तथा लँगोट खींचकर बांधे तो यह एक सिद्ध पुरुषका बताया हुआ प्रयोग है इससे सात दिनमें बवासीर स्वयं गिरजावे । पचास दिनकी आवश्यकता नहीं रहे जो प्याज न खावे अथवा सबको रोटी और चौलाईका शाक खूब घी डालके भोजन करावे ॥

मल्हम।

केचुआ (गिडोहों) को जैतुंके तेलमें औटावे जब परिपक्क होजावे तब थोडा सिरका डालके मल्हम बना लेवे । पश्मीने कपडेकी बत्ती बनावे और इस मल्हममें भिगोकर गुदापर रखे तो मस्से दूर हों, पीडा शांत हो ॥

तथा।

स्यारकी खालको यह प्राणी अपने पास रक्खा करे तो बवासीर दूर होवे ॥

बवासीरका अजीर्ण।

बथुओंका शाक अथवा बथुओंके बीजोंको तेलमें भूनकर भोजन करे तो बवासीरका अजीर्ण सर्वथा दूर हो ॥

तैल।

कई एक बिच्छुओंको तेलमें डालके ४० दिनतक धूपमें रखा रहनेदे पश्चात् इस तेलको बवासीरके मस्सोंपर मलें तो बवासीर दूर होय ॥

फक्की।

नागकेशर और मिश्री दोनों दो दो मासे पीसके नित्य खाया करे तो बवासीरके रुधिरके जानेको चमत्कारके साथ रोके है, पथ्यसे रहे ॥

पुलटिस।

रासना, भांग प्रत्येक छः छः तोले मैदा तीन तोले प्रथम मैदाको तिलके तेलमें भूनकर तथा और दवाइयोंको वारीक पीसकर इसमें मिलाय देवे फिर जल डाल पुलटिस वनायले जव पक होजावे तव सुहाती २ गुदाके मस्सोंपर बांधे और ऊपरसे लँगोट कसके बांधलेवे तो ववासीर दूर होय ॥

अन्यविधि।

सींगडी आधपावको पावसेर कागदी नींबूके रसमें भिगोवे फिर इसको जंगली कंडोंमें जलाय लेवे कि उफान आकर सूखजावे तव उसको बारीक पीसके गौके पावभर घीमें मिलावे और नीमकी लकडीसे दही मिलाकर घीमें औटावे कि घी लाल होवे और सुगंध आने लगे तव उसमें रुई भिगोकर गुदापर रखे और लँगोट कसके बांधे एक दिनरात वंधा रक्खे इस प्रकार एक सप्ताह पर्यंत करे तो सव वढाहुआ मांस गलकर दूर होजावेगा और यदि पहले दो दिनतक सोआके बीज जलमे पकायके लगावे और पश्चात् ऊपर कहीहुई मलहम लगावे तो ववासीर वहुत शीघ्र आराम हो जावेगी.

गोली।

गीले चूनेकी गोली चनेके बरावर वनायके खवावे तो ववासीर दूर हो ॥

फक्की।

वडीमाई, बकायनके बीज, दोनोंको समान ले कूट पीस दूना सफेद बूरा मिलाकर हथेली भरके प्रातःकालही खाया करे तो खूनी आर बादी दोनों ववासीर दूर हो ॥

गुदाका पोंछना।

मल परित्याग करनेके पश्चात् गुदाको आकके पत्तोंसे पोछाकरे तो ववासीर नष्ट हो ॥

निंबतैल।

नीमके बीजोंके तेलको गुदापर मलाकरे ववासीरपर मलाकरे तो आराम होय। अथवा सोआके बीज पीसके मले तो ववासीरको नष्ट करे ॥

तैल।

काले धतूरेके पत्तोंका रस तिलमें डालके औटावे, जव रस मात्र जल जावे तेल मात्र रहे तव उसमें रुई भिगोकर ववासीरपर रक्खे ॥

माजूम ।

इन्द्रजौ, अतीस और रसोत इनको समान भाग ले कूट पीसके शहतमें मिलायके माजूम बनाय लेवे इसमेंसे १ तोला सांठी चावलोंके धोवनसे खाय तो बवासीरको बहुत गुण करे ॥

सामान्य यत्न ।

बवासीरमें साफन नामक नसकी फस्त खोले । खरबूजा अनार आदिका खाना अधिक गुणकारी है । बवासीरमें गूगलकी गोली खाना इस रोगवालेको अधिक गुण करेहै ॥

गूगलकी गोली ।

कावली हरडका वक्कल, काली हरडका वक्कल, दोनोंको समान भाग कूटकर ८॥ तोले गंधनाके जलमें उत्तम गूगल ४ तोले और ४॥ मासे पीस हरडका चूर्ण मिलाय जंगली बेरके समान गोली बनाय लेवे, इसकी मात्रा ३ मासेकी है इसके उर्दकी दाल, अथवा मूंगकी धोली दाल और रोटी पथ्य है, तथा गूगलका इतफल खानाभी इस रोगवालेको गुण करेहै ॥

चूर्ण ।

काली जिरी ४॥ तोले ले आधेको भूनले आधी कच्ची रखे दोनोंको मिलायके तीन भाग करे नित्य १ भाग खाय ऊपरसे सांठी चावलोंका धोवन पीवे तो बवासीर दूर हो ॥

बफारा और सेंक ।

सिरसकी छाल, तगर, मुलहटी, लालचंदन, आंबाहलदी, दारुहलदी, भांग, बकायनके बीज प्रत्येक १॥ तोला, पठानी लोध नौ मासे सबको कूटकर दो भाग करे, १ भागको गौके आधसेर दूधमें औटाकर बफारा लेवे और दूसरे भागको गौके घीमें मिलायके गुदापर बांधके सेंक करे तो बवासीरकी पीडा और सूजन दूर होजावेगी ॥

बवासीरको सुखाकर गिरादेवे ।

जख्मइयातको छायामें सुखाकर कूट पीसकर नित्य छः तोले गुडमें मिलायक रात्रिके समय खाकर सो रहे और इसी चूर्णको प्रातःकाल जलके साथ फकी लेवे, खटाई और बादीसे परहेज रक्खे तो एकही सप्ताहमें बवासीर अवश्य दूर हो जावे ॥

जख्महयात—एक छोटासा पौदा है पृथ्वीपर फैला हुआ होताहै और उसके नीचे सब पृथ्वी चिकनी दिखाई देती है । यह पेड गेहूंके खेतमें और नदीके

किनारेपर वहुत होताहै, इसके दो भेद हैं एकको छोटी पत्ती और बहुत बारीक होताहै बस यही लेना उचित है और दूसरा वह है कि जिसकी पत्ती मोटी होती है वह नहीं लेना चाहिये ॥

गुदापीडाको नष्ट करे।

पानीके ऊपरकी काई गुदाके ऊपर बांधे तो बवासीरसे जो गुदामें पीडा होती है वह नष्ट होय ॥

अथवा।

इमलीके बीजोंको आगमें डालकर १ मासा और बिना जले छिलकेके ३ मासेको पीस चक्ख दहीमें मिलायके सात दिनतक प्रातःकाल चाटा करे तथा बादी करता वस्तु और स्त्रीसंगसे परहेज करे तो गुदाकी पीडा नष्ट होय ॥

बवासीरके रुधिरको बंद करे।

इमलीके बीजोंके छिलकेको कूट पीस जलसे चनेके प्रमाण गोली बनावे और तीन दिनतक एक एक गोली नित्य खाय तो रुधिरके जानेको बंद करे ॥

बवासीरको नष्ट करे।

आमके पत्ते, आंवलेके पत्ते, जामनके पत्ते, मिश्री प्रत्येक तीन २ तोले, गौका दूध आधासेर, पत्तोंको कूट पीसके बिना पानीके रस निकाले यदि रस न निकले तो थोडासा दूध डालके रस निकाले फिर इस रसको दूधमें मिलायके पीवे अथवा केवल रसही पीवे फिर उसके ऊपर दूध पीवे, इस प्रकार सात दिन सेवन करे तो बवासीर अवश्य दूर होजायगी खटाई और बादी पदार्थोंसे बचता रहे। यह खूनी और बादी दोनों प्रकारकी बवासीरको दूर करे ॥

धूनी।

घूसके चमडेको किसी बरतनमें जलावे, जब धुआ निकलने लगे तब एक कपडा उसके मुखपर बांधके उसका धुआ मस्सोंको देवे और कपडेसे ऐसा बंदोबस्त करे कि अन्यत्र धुआँ न जावे तो बवासीर नष्ट होय ॥

इति श्रीबृहन्निघण्टुरत्नाकरे अर्शरोगनिदानचिकित्सा समाप्ता।

चतुर्थ भाग समाप्त।